

GOVERNMENT OF INDIA
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA.

Mar
Class No. 954
Book No ~~V14~~
N. L. 38, V124
MGIPC--88--6 LNL/56--25 7-56--50,000

SELECTIONS FROM THE GOVERNMENT RECORDS
IN THE ALIENATION OFFICE, POONA, 1004

KAIFIYATS, YADIS, &c. Date _____

Containing

HISTORICAL ACCOUNTS OF CERTAIN FAMILIES OF RENOWN IN THE DECCAN AND S. M. COUNTRY
UNDER THE MOHAMMEDAN AND MARATHA GOVERNMENTS.

~~~~~  
mt  
SELECTED BY

**The Late Rao Bahadur Ganesh Chinnaji Vád, B. A.**

Alienation Assistant to the Commissioner C. D., Poona.

AND EDITED BY

**PURSHOTAM VISHRAM MAWJEE, J. P., M. R. A. S.**

AND  


PUBLISHED WITH THE PERMISSION OF THE GOVERNMENT OF BOMBAY

BY

lb. 44b.  
**PURSHOTAM VISHRAM MAWJEE, J. P., M. R. A. S.**

\_\_\_\_\_  
[Price Rs. 2-2-0.]

## प्रस्तावना.

इ. स. १८१८ मध्ये पेशवाई नाहीशी होऊन ब्रिटिश सरकारचा अंमल झाल्यानंतर, दक्षिणेतील जहागिरदार, सरदार, इनामदार ह्यांच्या घराण्यांचा इतिहास व खानदानीची माहिती लिहून घेण्याचा प्रयत्न दक्षिणेतील पोलिटिकल एजंट ह्यांच्याकडून वेळोवेळी करण्यांत आला. सदरहू पोलिटिकल एजंट यांनी, अशा रीतीने महाराष्ट्रातील प्रत्येक जुन्या इतिहासप्रसिद्ध घराण्याकडून जी माहिती जमविली आहे, ती “ दक्षिणेतील सरदारांच्या कैफियती, यादी वगैरे ” या स्वरूपाने पुणे येथील एलिएनेशन दफ्तरी संग्रहित केलेली आहे. या कैफियती व यादी पेशव्यांच्या अस्सल दफ्तरीपैकी नसून, इ. स. १८१८ नंतर ब्रिटिश अमदानीमध्ये लिहिलेल्या आहेत, हे उघड आहे. या कैफियतींमध्ये महाराष्ट्रातील बहुतेक इतिहासप्रसिद्ध जुन्या घराण्यांची माहिती असल्यामुळे, त्या मनोरंजक व उपयुक्त आहेत असे जाणून, स्वतंत्र पुस्तकरूपाने प्रसिद्ध करण्यांत येत आहेत. ह्या सर्व कैफियती केवळ अस्सल कागदावरून लिहिलेल्या आहेत असे जरी नाही, तरी जुन्या माहितगार लोकांकडून मिळविलेली माहिती व कित्येक जुन्या घराण्यांच्या दफ्तरीतील अस्सल कागदपत्रांवरून घेतलेली माहिती त्यांत मिळण्यासारखी आहे. ज्या वेळी या कैफियती लिहिण्यांत आल्या, त्या वेळी महाराष्ट्राच्या इतिहासाची साधने अगदी अप्रसिद्ध असल्यामुळे व लेखकवर्ग बहुतेक कारकुनी पेशाचा असल्यामुळे, या कैफियतींमध्ये इतिहास दृष्टीच्या उणीवा फार राहिल्या आहेत. एवढेच नव्हे तर काहीं कैफियतींमध्ये लेखकांच्या अज्ञानामुळे घडलेले प्रमादही बरेच आहेत. तथापि, या कैफियतींतील एकंदर माहिती अनेक दृष्टींनी उपयुक्त असल्यामुळे, त्यांची गणना इतिहासाच्या साधनांमध्ये दुय्यम प्रतीत करण्यास काहींच हरकत नाही. ह्यांवरून दक्षिणेतील सरदारांच्या बहुतेक घराण्यांची थोडीबहुत माहिती प्रसिद्ध होऊन, ब्रिटिश सरकारचा अंमल झाल्यानंतर त्यांची स्थिति कशी होती त्याचेही अल्प दिग्दर्शन होतें. या माहितीचा इतिहाससंशोधकांस व सर्वसाधारण लोकांस सारखाच उपयोग होईल अशी आम्हांस उमेद आहे.

ह्या ग्रंथातील कैफियतींची पांच प्रकरणे केली आहेत:—१ ल्या प्रकरणांत, मराठे सरदार, २ व्या प्रकरणांत, ब्राह्मण व इतर सरदार, ३ व्या प्रकरणांत, स्वामी व सत्पुरुष, ४ व्या प्रकरणांत, मुसलमान सरदार व ५ व्या प्रकरणांत, परगणे वतनदार.

मूळ कैफियतींतील भाषा जशीच्या तशीच कायम ठेविली आहे. कित्येक कैफियती फारच अशुद्ध असल्यामुळे त्यांमध्ये व्याकरणदृष्ट्या जरूर तेवढेच फेरफार केले आहेत.

या पुस्तकांत प्रसिद्ध केलेल्या कैफियतींपैकी बहुतेक घराण्यांच्या हक्किकतीच्या कैफियतींची इंग्रजी टिपणे सारांशरूपाने या पूर्वीच तयार झालेली आहेत, आणि ज्या इतर कैफियती बखरीसारख्या आहेत त्यांचे इंग्रजी भाषांतर पूर्णपणे करणे अशक्य असून त्यांच्या सारांशाचे टिपण देण्यापासून इतिहास वाचनाच्या लोकांस फारसा उपयोग होण्यासारखा नाही. सबब इंग्रजी सारांश अथवा भाषांतरे या पुस्तकांत दिली नाहीत.

# INDEX.

| Serial No.               | Subject.                | Page No. | Serial No.                | Subject.                | Page No. |
|--------------------------|-------------------------|----------|---------------------------|-------------------------|----------|
| <b>1st CHAPTER.</b>      |                         |          | 7                         | Deodhar (Dhamdhere)...  | 108      |
| <b>MARATHA SIRDARS.</b>  |                         |          | 8                         | Nagapurkar Potnis ...   | 110      |
| 1                        | Angre ... ..            | 1        | 9                         | Patwardhan ... ..       | 118      |
| 2                        | Kadam Bande ... ..      | 25       | 10                        | Panse ... ..            | 122      |
| 3                        | Ghatge Kagalkar ... ..  | 31       | 11                        | Pawaskar Deshmukh ...   | 127      |
| 4                        | Ghatge Malavadikar ...  | 34       | 12                        | Parasnis... ..          | 128      |
| 5                        | Ghorpade Amir-ul-Umrao  | 41       | 13                        | Pingle Punekar ... ..   | 131      |
| 6                        | Ghorpade Gajendragadkar | 48       | 14                        | Purandare ... ..        | 134      |
| 7                        | Jadhavrao ... ..        | 52       | 15                        | Pethye ... ..           | 141      |
| 8                        | Jadhavrao Wagholikar... | 55       | 16                        | Panditrao ... ..        | 144      |
| 9                        | Jadhavrao Wadikar ...   | 57       | 17                        | Pant Pratinidhi ... ..  | 145      |
| 10                       | Jadhavrai* ... ..       | 59       | 18                        | Phadke ... ..           | 147      |
| 11                       | Daphale... ..           | 63       | 19                        | Phadnis Menavalikar ... | 148      |
| 12                       | Thorat ... ..           | 64       | 20                        | Phadnis Satara ... ..   | 150      |
| 13                       | Nimbalkar of Phaltan... | 65       | 21                        | Biniwale ... ..         | 153      |
| 14                       | Pawar ... ..            | 69       | 22                        | Bokil ... ..            | 162      |
| 15                       | Pawar Malthankar ...    | 76       | 23                        | Mujumdar ... ..         | 167      |
| 16                       | Pawar Supekar ... ..    | 77       | 24                        | Mehendale ... ..        | 171      |
| 17                       | Pawar Supekar ... ..    | 79       | 25                        | Vinchurkar ... ..       | 179      |
| 18                       | Bhonsle Akalkotkar ...  | 83       | 26                        | Rajebahadar Malegaonkar | 182      |
| 19                       | Savantwadikar ... ..    | 84       | 27                        | Ramdurgkar ... ..       | 185      |
| 20                       | Shinde Saheb-Subha ...  | 85       | 28                        | Raste ... ..            | 190      |
| 21                       | Shinde Kanerkhedkar ... | 91       | 29                        | Sadashiv Mankeshwar...  | 193      |
| 22                       | Sena Saheb Subha ...    | 92       | 30                        | Sardeshmukh Mantri ...  | 196      |
| 23                       | Choudhari ... ..        | 93       | 31                        | Hingne ... ..           | 197      |
| <b>2nd CHAPTER.</b>      |                         |          | 32                        | Holkar Diwan ... ..     | 200      |
| <b>BRAHMIN AND OTHER</b> |                         |          | 33                        | Sachiv ... ..           | 201      |
| <b>SIRDARS.</b>          |                         |          | 34                        | Sumant ... ..           | 210      |
| 1                        | Ambikar ... ..          | 97       | 35                        | Pant Pratinidhi ... ..  | 211      |
| 2                        | Ichalkaranjikar ... ..  | 97       | <b>3rd CHAPTER.</b>       |                         |          |
| 3                        | Kale ... ..             | 98       | <b>SWAMIS AND SAINTS.</b> |                         |          |
| 4                        | Khasgiwale ... ..       | 101      | 1                         | Karvirmatha Swami ...   | 213      |
| 5                        | Khasnavis Potnivi ...   | 105      | 2                         | Chaphalkar Ramadasi ... | 215      |
| 6                        | Gokhale ... ..          | 106      | 3                         | Chinchwadkar Deo ...    | 217      |

\* **ERRATUM** :—Jadhavrai is a Brahmin Sardar but his name is included through mistake in the list of Maratha Sardars.



| Serial<br>No. | Subject.                | Page<br>No. | Serial<br>No. | Subject.                | Page<br>No. |
|---------------|-------------------------|-------------|---------------|-------------------------|-------------|
| 4             | Domagaonkar Ramadasi..  | 218         | 3             | Nawab Savanoorkar ...   | 234         |
| 5             | Dhavadshikar ... ..     | 219         |               | <b>5th CHAPTER.</b>     |             |
| 6             | Swami Manchali Math ... | 225         |               | PARAGANA VATANDARS.     |             |
| 7             | Sidheshwarbowa Maharaj  | 227         | 1             | Athanikar Deshpande ... | 252         |
|               | <b>4th CHAPTER.</b>     |             | 2             | Elboorkar Desai ( Jali- |             |
|               | MAHOMEDAN SIRDARS.      |             |               | hal Desai) ... ..       | 254         |
| 1             | Nawab Kavijang Bahadur  | 230         | 3             | Nandgadkar Sardesai ... | 258         |
| 2             | Nawab Belhekar alias    |             | 4             | Bagalkotkar Desai... .. | 262         |
|               | Shivnerkar ... ..       | 230         |               |                         |             |

# अनुक्रमणिका.

| शेजनेवर. | विषयाचें नांव.               | पृष्ठ. | शेजनेवर. | विषयाचें नांव.           | पृष्ठ. |
|----------|------------------------------|--------|----------|--------------------------|--------|
|          | <b>प्रकरण १ लें.</b>         |        |          |                          |        |
|          | <b>मराठे सरदार.</b>          |        |          |                          |        |
| १        | आंगरे...                     | १      | ४        | खाजगीवाले ...            | १०१    |
| २        | कदमवांडे. ...                | २५     | ५        | खासनिवीस पोतनिवीस        | १०५    |
| ३        | वाटगे कागलकर ...             | ३१     | ६        | गोखले ...                | १०६    |
| ४        | वाटगे मलवडीकर ...            | ३४     | ७        | देवधर ( दमढेरे ) ...     | १०८    |
| ५        | घोरपडे अमिरुल उमराव ...      | ४१     | ८        | नागपुरकर पोतनीस ...      | ११०    |
| ६        | घोरपडे गजेंद्रगडकर...        | ४८     | ९        | पटवर्धन ...              | ११८    |
| ७        | जाधवराव ...                  | ५२     | १०       | पानसे... ..              | १२२    |
| ८        | जाधवराव बाघोलीकर..           | ५५     | ११       | पांक्सकर देशमुख ...      | १२७    |
| ९        | जाधवराव वाडीकर ...           | ५७     | १२       | पारसनीस ...              | १२८    |
| १०       | जाधवराई* ...                 | ५९     | १३       | पिंगळे पुणेंकर ...       | १३१    |
| ११       | डफळे ...                     | ६३     | १४       | पुरंदरे ...              | १३४    |
| १२       | श्वेरात. ...                 | ६४     | १५       | पेठ्ठे ...               | १४१    |
| १३       | फलटणचे निंबाळकर...           | ६५     | १६       | बंडितराव ...             | १४४    |
| १४       | पवार ...                     | ६९     | १७       | पंत प्रतिनिधी ...        | १४५    |
| १५       | पवार मलठणकर ...              | ७६     | १८       | फडके ...                 | १४८    |
| १६       | पवार सुपेंकर...              | ७७     | १९       | फडणीस मेणवलीकर ...       | १४९    |
| १७       | पवार सुपेंकर...              | ७९     | २०       | फडणीस सातारा ...         | १५०    |
| १८       | भोंसले अकलकोटकर...           | ८३     | २१       | बिनिवाले ...             | १५३    |
| १९       | सांवतवाडीकर ...              | ८४     | २२       | बोकील ...                | १६२    |
| २०       | शिंदे साहेबसुभा ...          | ८५     | २३       | मुजुमदार ...             | १६७    |
| २१       | शिंदे कनेरखेडकर ...          | ९१     | २४       | मेहेंदळे ...             | १७१    |
| २२       | सेनासाहेब सुभा ...           | ९२     | २५       | विंचूरकर ...             | १७९    |
| २३       | चौधरी ...                    | ९३     | २६       | राजेबहादर भालेगांवकर ... | १८२    |
|          | <b>प्रकरण २ रें.</b>         |        | २७       | रामदुर्गकर ...           | १८५    |
|          | <b>ब्राम्हण व इतर सरदार.</b> |        | २८       | रास्ते... ..             | १९०    |
| १        | आंबीकर ...                   | ९७     | २९       | सदाशिव माणकेश्वर ...     | १९३    |
| २        | इचलकरंजीकर. ...              | १७     | ३०       | सरदेशमुख मंत्री ...      | १९६    |
| ३        | काळे... ..                   | १८     | ३१       | हिंमणे ...               | १९७    |
|          |                              |        | ३२       | होळकर दिवाण ...          | २००    |
|          |                              |        | ३३       | सचीव ...                 | २०१    |

| शेजनांबर. | विषयाचें नांव.            | पृष्ठ. | शेजनांबर. | विषयाचें नांव.               | पृष्ठ |
|-----------|---------------------------|--------|-----------|------------------------------|-------|
| ३४        | सुमंत ... ..              | २१०    |           | <b>प्रकरण ४ थें.</b>         |       |
| ३५        | पंतप्रतिनिधी ( पुरवणी )   | २११    |           | <b>मुसलमान सरदार.</b>        |       |
|           | <b>प्रकरण ३ रें.</b>      |        | १         | नवाब कविजंम बहादुर ...       | २३०   |
|           | <b>स्वामी व सत्पुरुष.</b> |        | २         | नवाब बेल्लेकर उर्फ शिवनेरकर. | २३०   |
| १         | करवीरमठ स्वामी ...        | २१३    | ३         | नवाब सावनूरकर ...            | २३४   |
| २         | चाफळकर रामदासी ...        | २१५    |           | <b>प्रकरण ५ रें.</b>         |       |
| ३         | चिंचवडकर देव ...          | २१७    |           | <b>परगणे बतनदार.</b>         |       |
| ४         | डोमगांवकर रामदासी ...     | २१८    | १         | आथणीकर देशपांडे ...          | २५२   |
| ५         | धावडशीकर ....             | २१९    | २         | एलबूरकर देसाई ( ज्यालीहाल    |       |
| ६         | स्वामी मंचाळी मठ ...      | २२५    |           | देसाई ) ...                  | २५४   |
| ७         | सिद्धेश्वरबोवा महाराज ... | २२७    | ३         | नंदगडकर सरदेसाई ...          | २५८   |
|           |                           |        | ४         | बागलकोटकर देसाई ...          | २६२   |

\* चुकीची दुरुस्ती:—जाधवराई हे बाबूण सरदार आहेत. जुर्कानें त्यांचे नांव मराठे सरदारांच्या यादीमध्ये पडलें आहे.

# दक्षिणेतील सरदारांच्या कैफियती, यादी वगैरे.

## प्रकरण १ लें.

### मराठे सरदार.

#### १ आंगरे.

यादी आंगरे सरखेल यांचे दौलतीची पैदम्ती कोणे दिवसापासून कसी जाली व पुढें कोण पुरुष कसी दौलत करीत आले, त्याचा तपसील. इस्तकबिल शालीवाहन शके १५८० पंधराशें ऐशी तामायत शालीवाहन शके १७४४ सत्राशें चवेताळीस. सुा इसने अशरीन मयातैन व अलफ छ १४ रमजान ज्येष्ठमासपर्यंत अजमासं एकंदर १६४ वर्षे.

याचा तपसील एकशें चौसष्टीचा

४१ विज (य) दुर्ग, सुवर्णदुर्ग इतकेंच प्रथम संस्थान, त्याची बहिवाट वर्षे.

४७ सुवर्णदुर्ग, विज(य) दुर्ग व कुलाबा संस्थान, याची एकत्र बहिवाट चालली वर्षे.

७६ कुलाबा संस्थान एकच राहिलें. त्याची बहिवाट चालली. एकूण कुलाबा संस्थानास एकंदर आज लग वर्षे १२३ एकशें तेवीस.

१६४

सदरहू एकशें चौसष्ट वर्षांत उपभोग करीत आले त्या पुरुषांचा तपसील:—

४१ विज (य) दुर्ग व सुवर्णदुर्ग संस्थान प्रथम होतें. तितक्याचा उपभोग मूळपुरुष तुकोजी संकपाळ, आंगरवाडी पुण्याचे पश्चिमेस तीन कोसावर, तेथील राहणार, सबब आंगरे नांव पाडिलें. ते व त्यांचे पुत्र कान्होजी आंगरे यांणीं केला तीं वर्षे.

४७ संस्थान कुलाबा आल्यावर विज(य)दुर्ग संस्थानसुद्धां उपभोग केला वर्षे.

३० कान्होजी आंगरे.

३ शेकाजी आंगरे दुसरे पुत्र कान्होजीचे.

० दान्ही संस्थानें कायम, परंतु उपभोग दान्हीकड दोंबांनीं केला, पुत्र कान्होजीचे.

० तुळजाजी आंगरे विज(य)दुर्ग मण्यानी.

० मानाजी आंगरे कुलाबा स्थानी.

१२

४७

७६ कुलाबा संस्थान एकलें राहिलें, त्याचा उपभोग केला.

११ मानाजी आंगरे यांची कारकीर्द वर्षे २२. वजा सदरीं विज(य)दुर्ग संस्थानाबराबर उपभोगाचीं लिहिलीं तीं वर्षे १२, बाकीं.

३६ राघोजी आंगरे मानाजीचे पुत्र.

४ मानाजी आंगरे राघोजीचे पुत्र.

१७ बाबुराव आंगरे, येसाजी आंगरे कान्होजीचे लेकवळे, त्याचे पुत्र—याणीं मानाजीस कैदेत ठेऊन चालविलें.

३॥ मानाजी आंगरे याणीं फिरोन राज्य केलें.

४॥ राघोजी आंगरे मानाजीचे पुत्र आजतग उपभोग केला व पुढें कर्तात आहेत.

७६

१६४

या पुरुषांची वहिवाट तपसीलवार जाहिरातींत आल्या गोष्टी त्यांचा शोध, विनायकराव परशराम दिवाणजी यास जुने माहीत'गार' वगैरा आश्रयानें लागल्याप्रमाणें पुढें लिहीत आहेत. व त्याचे पुढें सगखेल यांचा मानमरातब व त्यांस राजानीं दिल्लेलीं राजचिन्हें प्राप्त आहेत तो बयाज लिहिला आहे:—

१ दौलतीस मूळ दरबारांत प्रवेश तुकोजी संकोजी संकपाळ, राहणार प्रांत पुणें या नजीक आंगरवाडीचे, सबब आंगरे हें नांव पडिलें. ते राजधानी सातारा येथें जाऊन, सातारचे राजे शिवाजी याणीं शालिवाहन शके १५६० चे सालापासोन राज्य आक्रमण करण्याचा पाया घातला, आणि राज्याभिषेक शक १५९६ त जाहला. त्या दरबारांत शिवाजीराजे याचे कारकीर्दीत शके १५८० चे सुमारांत जाऊन चाकरीस राहिले. त्यास पंचवीस असामींची सरदारी देऊन सरनोबती देऊन पुढें वाढत वाढत दोनशें असामी करून सुवर्णदुर्गसुभ्याचे तैनात केलें. तेव्हां तेथेंच तें घर बांधून चाकरी करीत होते. त्यास पुत्र जाले. त्याचें नांव कान्होजी आंगरे. सुवर्णदुर्गास सुभा अचळोजी मोहिते याचा होता, त्याजवळ होते.

१ कान्होजी आंगरे सुवर्णदुर्गास तें कर्तें जाहले. चाकरीस चांगले मर्द जाणून हे हुजूर राज्यापावेतो महशूर जाहले. कांहींका दिवशीं खान जंजीरकर याणीं सुवर्णदुर्गावर चढाई करून, बाहेर माणूस येण्याची बंदी करून, आंत खावयास गळा नाहीं यामुळें किल्लेकरी बेदिल होऊन, मोहिते याणीं हिमत सोडून किल्ला खान यास देऊं लागले. हें जाणोन आंगरे याणीं हुजूर महाराजाकडे सूचना करून तेथील धोरणावरून मोहिते याचा बंदोबस्त केला, आणि बाहेर येऊन लढाया करून एक वेळ खानाचे फौजेवर हल्ला केला. तेव्हां कान्होजी आंगरे त्याचे हाम्नीं सांपडले असतां, रात्री युक्तीनें निघोन, पाण्यांतून पोहून सुवर्ण-

दुर्गात जाऊन, फिरोन लढाया करून खानाची फौज उठविली. तेव्हां उभयताशीं तहनामा दोस्तीचा ठरून आंगरे याणीं सुवर्णदुर्गें काम चालविलें. त्याच समयांत संभाजी राजे यांची अफरातफरी जाहली. राज्यावर रामराजे आले. त्याणीं आंगरे यांची मर्दमी, चाकरी एकनिष्ठ पाहून, आरमारचाही सुभा देऊन, शिक्रे सुभा आरमार असे आंगऱ्यांचे नांवें दिले. नंतर त्याणीं समुद्रांत स्वारी शिकारी करून बेकौली यासीं लढाया करून शिकस्त तरांडीं मारून सरकार किफायत करीत गेले. व त्या प्रांतीं जे राज्यास प्रतिकूल त्यांचा बंदोबस्त करीत गेले. त्यावरून हुजूरची मर्जी आंगरे याजवर दिवसेंदिवस प्रसन्न होत चालिली. पुढें विज(य) दुर्गास राज्याचा सुभा प्रतापराव सेनापती याजकडे होता. त्याजवर शत्रूचे उपराळे होते. तेव्हां कान्होजी आंगरे आपला बंदोबस्त ठेऊन त्याचीही कुमक करीत असत. इतक्यांत शिवाजी राजे शके १६०२ चे शकांत मृत्यु पावले. त्याच सालीं त्याचे पुत्र संभाजी राजे सिंहासनाखूड जाले. त्याणीं आंगरे यांची चाकरी एकनिष्ठ पाहून, कोकणपट्टींत मर्दमीचे उपराळ्यांचे काम पडेल त्याविशीं अखत्यारीनें आंगरे यास हुकूम करीत गेले. त्या समयांत कोकणपट्टींतील किल्ले मोगलाई वगैरे अमलांतील बहुत आंगरे याणीं लढाया करून घेतले. पुढें शके १६११ चे शकांत अवरंगजेब पातशाहा येऊन संगमेश्वरीं संभाजी राजे यास धरून तुळापूर येथें नेऊन मारिलें. तेव्हां राज्य सर्व अफरातफर जाहलें. आणि झुलपुकारखान व हपसी यांस पातशाहानीं कोकणपट्टीचे बंदोबस्तास रवाना केलें. त्याणीं रायगडास घेरा बसविला. तेव्हां संभाजी राजे यांचे बंधु कनिष्ठ राजाराम हे तेथून निघोन सर्व मुत्सद्दी कारभारी सरदार सुद्धां चंदी चंदावर प्रांतीं गेले. त्याजबराबर कान्होजी आंगरे यांस बरोबर नेलें होतें. तेथें आंगरे याणीं सेवाचाकरी बहुत केली. इकडे दादा महिने रायगड लढला. नंतर तह होऊन संभाजी याचे पुत्र शाहू महाराज यांस पातशाहानीं उतरून नेलें. आणि कोकणप्रांतीचा सर्व अंमल घेऊन हपसी व मोगल यांचे हवालीं करून ठेविलें. तिकडे राजाराम याणीं फौज धरून चंदीकडील मुख्य आपले स्वाधीन ठेऊन पादशाहाचे फौजेसीं लढाई स्वारी करून होते. तेव्हां झुलपुकारखान पातशाहानीं चंदीस रवाना केले. त्याणीं वेढा चंदीस घातला. रामराजा फौजसुद्धां तेथून निघोन रांगणा किछा शांत तेथें शके १६१८ चे सालीं दाखल जाहले; आणि तमाम देशांतील वगैरे परगणे सोडवीत चालले. कोकण प्रांत सोडवणें तेव्हां कान्होजी आंगरे यांस वखें व सरगेल असा किताब देऊन कोकणचा सुभा दिल्या, आणि रवाना केलें. तेव्हां आंगरे याणीं विजयदुर्ग व सुवर्णदुर्ग हे घेऊन, तेथें जमाव करून, तमाम कोकणांत स्वारी शिकारी करूं लागले, आणि दुसरे किल्ले घेतले, व अरमार सेन्यानें पाण्यांतील स्वान्या लढाया करूं लागले. पुढें शके १६२४ चे सालीं रामराजा मृत्यु पावले. शके १६२७ चे सालीं औरंगजेब पातशाहा भागानगरीं औरंगाबादेस येऊन मृत्यु पावले. त्याचे शाहाबाज बादशाहाजादे होते. त्यास दिल्लीस राजकारण जलदीचें पडल्यामुळें फौजांमुधां दिह्नीस चालले. ते चमेली नदीपर्यंत गेले. इकडे राजाराम यांची स्त्री व त्यांचे पुत्र शिवाजी राजे व सर्व कारभारी अष्टप्रधान हे एकत्र होऊन



देशीचें राज्य सोडाविलें. कोकण आंगरे याणीं सोडाविलें. विजयदुर्ग संस्थान केलें व सुवर्ण-  
दुर्ग, रत्नागिरी वगैरे किल्ले धेतलें. रायगड किल्ला आणीक जंजिरा वगैरे जुजबीं ठिकाणें  
हपसी याजकडे व कांहीं जुजबीं ठिकाणें कर्नाळा राजकोट वगैरे मोगलाकडे व रेवदंडा  
वसई फिरंगी याजकडे असीं राहिलीं. बाकी सर्व आंगरे याणीं सोडाविलें. प्रांत कुलाबा  
येथें भिवजी गुजर मराठा होता, त्याजपासोन कुलाबा प्रांत धेऊन, समुद्राचे खडपांत पूर्वी  
चौकी होती तेथें गडगा घालून, पुढें मजबूद किल्ला केला. व प्रांत कर्नाळा येथें डोंगरावर  
माणिकगड किल्ला बांधिला. व विकटगड राजमाची व कांथळा व विसापूर व लोहगड वगैरे  
मुलुकसुद्धां किल्ले धेतले. त्यासमंत शाहूजाद चमेल तीरी गेलें. त्यांचे कैदेत शाहूराजे  
संभाजीचे पुत्र होत. त्यास त्याणीं राज्य व चौथोई सरदेशमुखी देशी सातारा पनाळा व  
सैदापूर विजापूर वगैरे देऊन, वस्त्रे देऊन, या जाग्याचा बंदोबस्त करून आमची कुमक  
करावी हें सांगून, देशीं रवाना केले. ते देशी आल्यावर ताराबाईचे मनांत राज्य  
आपण चालवावेंसं धेऊन, घरचे घरांत शाहूराजे यांची पनाळ्यास लढाई जाली.  
तेन्हां शाहूराजे यांस सर्व मिळोन, ताराबाई पळोन रांगण्यास गेली. ते समयीं  
कान्होजी आंगरे कोकणांत (होत.) त्याविराी शाहूराजांचे मनांत दिकत आली, आणि त्यास  
इशारा न करितां, बहिरोपंत पिंगळ पेशवे फौजेसुद्धां रवाना केले. त्यांची व आंगरे यांची  
लढाई हाऊन, बहिरोपंतास आंगरे याणीं कैद केले. तेन्हां बाळाजी विश्वनाथ यांस महारा-  
जांनीं आंगरे यांजकडे पाठविलें. त्यांची व आंगरे यांची स्वातरीनीं बोलणी होऊन, पिंगळे  
यांस सोडून धेतलें, व घाटावरील लोहगड वगैरे किल्ले होते ते राजमंडळाकडे ठेऊन, बाकीचें  
संस्थान आंगरे यांजकडे चालवावेंसं होऊन, शाहूमहाराजांचे भेटीस गेले. त्यांच्या भेटी जेजुरी  
मुकामीं जाल्या. राजांनीं आंगरे यांची स्वात्री करून, विजयदुर्ग व सुवर्णदुर्ग व कुलाबा विकटगड  
वगैरे सत्तावीस किल्ले, चौतीस लक्षांचा मुलूख व आरमारचा सुभा व सरखेल हें पद हीं संस्था-  
नचे अक्षयी देऊन कोकणांत रवाना केलें. तेच समयांत बाळाजी विश्वनाथ यांस पेशवाई  
शके १६३६ चे सुमारांत जाली. कान्होजी आंगरे यांचे पुत्र

२ पहिले स्त्रीस.

१ शेकोजी आंगरे.

१ संभाजी आंगरे.

२

२ दुसरे स्त्रीस.

१ मानाजी आंगरे.

१ तुळाजी आंगरे.

२

१ लेकवळे येसाजी आंगरे, धोंडजी आंगरे वगैरे. सदरहूची स्थापना येणेंप्रमाणें केली:-

२ सुवर्णदुर्ग व विजयदुर्ग प्रांतींचे कामांत,

१ शेकोजी.

१ तुळाजी.

—  
२

२ कुलाबा प्रांतीं ठेविले.

१ संभाजी.

१ मानाजी.

—  
२

—  
४

१ लेकवळे येसाजी व धोंडजी आंगरे वगैरे ते मानाजी आंगरे यांचे हवालीं. सदरहू-  
प्रमाणें स्थापना केल्यावर शालीवाहन शके १६५३ चे सालीं कान्होजी आंगरे मृत्यु पावले.  
तीस वर्षे राज्य त्याणीं केलें.

१ शेकोजी आंगरे याणीं कान्होजी आंगरे यांचे मागे तीन वर्षेपर्यंत राज्याचीं वस्त्रें  
आणोन सरखेली केली. हपसी यांचे आरमार धरून आणिलेवरून कोट धेतला. चौल  
धेतलें. व इंग्रजी सरकाराशीं तह केला नाहीं. ते मृत्यु पावले. त्यास पुत्र व कन्या नाहीं.  
त्याचे मागे संभाजी आंगरे यांस वस्त्रें सरखेलचीं जालीं.

१ संभाजी आंगरे याणीं विजयदुर्गाचे संस्थानीं जाऊन तेथील संस्थानची मालकी  
करूं लागले. कुलाबा संस्थानचा अधिकार मानाजी आंगरे करूं लागले. नंतर कांहीं दिवशीं  
कुलाबा संस्थानही आपण घ्यावें, हें संभाजी आंगरे याचे चित्तांत येऊन, लढाई करून कुला-  
बावर आले. आरमाराचा वेढा देऊन अलीबाग व हिराकोट आपण घेऊन, लढाई फार केली.  
तेव्हां मानाजीबावानीं पेशवे यांस लिहून नानासाहेब व आपासाहेब जातीनें फौज घेऊन  
कुमक मानाजीबावास शालीवाहन शके १६६२ चे सालीं आले. त्याशीं संभाजीबावानीं  
एक लढाई केली. दुसरे लढाईस पेशवे याणीं तोफचे मोर्चावर चढाई करून, मोर्चा घेऊन,  
तुळाजी आंगरे यांस धरून नेले. ती जरब खाऊन संभाजी आंगरे याणीं मानाजी आंगरे  
यांसीं बोलणें केलें कीं, तुमची व आमची भेट मात्र व्हावी, ह्मणजे आम्ही निघोन जातो.  
त्यावरून खात्री पाहून, मानाजीबावा किल्ल्याबोहर येऊन उभयतांच्या भेटी होऊन,  
कुलाबा संस्थानची मालकी मानाजीबावानीं करावी व विजयदुर्ग संस्थानची  
संभाजीबावानीं करावीसें ठरून, संभाजीबावानीं कूच करून विजयदुर्गास

गेले. ते समयी इंग्रजी तरांडीं खांदीरीचे बाग्याजवळ जंजिरेकर हपसी याचीं तरांडीं कुमकेस मानाजीबावास आलीं होती. त्यांची खानगी करून, पेशवे यांस राजमाची देऊन त्यांस खाना केले व तुळाजी आंगरे यांस सोडून संभाजीबावाकडे दिले. नंतर कांहीं दिवशीं संभाजी सातारेयास गेले. तेव्हां महाराज छत्रपती स्वामीस संभाजीनीं समजाविलें कीं, मानाजी आंगरे आमचे आज्ञेत चालत नाहीत, सबब ते संस्थान आमचे हवाली करावें. महाराजांची आज्ञा झाली कीं, पेशवे कुमकेस गेले तेव्हां तह तुमचा व मानाजीबावाचा जाल्याप्रमाणें विजयदुर्ग संस्थान तुमचेकडे, कुलाबा संस्थान मानाजीबावाकडे याप्रमाणें ठगल्याप्रमाणें उभयतांनीं चालावें. असें सांगोन मानाजी आंगरे यांस वस्त्र संस्थान कुलाबाची व वजारतमहा हा किताब देऊन संस्थानीं खाना केले. शिक्यांत नांव पेशजी कान्होजी आंगरे यांचे कारकीर्दीत होतें कीं 'शाहू कार्यधुरंधर तुकोजी तनुजन्मना कान्होजी सरखेलस्य मुद्रिकेय विराजते' असाच शिक्का मानाजीबावाचे नांवाचा जाला. व सरखेल अशीं अक्षरे तेथें वजारतमाहास्य अशीं अक्षरें शिक्यांत जालीं. व संभाजी आंगरे यांसही वस्त्रे होऊन ते विजयदुर्गास गेले. तेथें दोन वर्षेपर्यंत राज्य चालविलें आणि मृत्यु पावले त्यास पुन व कन्या नाही. तेव्हां विजयदुर्ग संस्थानचीं वस्त्रे राजाकडून तुळाजी आंगरे यांस जाहलीं.

१ तुळाजी आंगरे सुवर्णदुर्ग विजयदुर्ग संस्थानचें राज्य करान असतां, अमर्याद वटि-वाट पेशवे मुखत्यार राज्याचें कारभारी यांजबराबर केली; व हिंदुंत ब्राह्मणांस दुःख दिलें. व खयतेवर जलेली केली. यास्तव पेशवे यांने सुभ रामाजी महादेव व मदतीस मानाजी आंगरे यांणीं कंपनी इंग्रज बहादर यांचे मदतीनें लढून, तुळाजी आंगरे यांचें संस्थान दरोबस्त घेऊन त्यास कैदेत चंदनवंदन येथें ठेऊन तेथे मृत्यु पावले. त्याचा वंश कोणी राहिला नाही. बारा पंधरा वर्षे त्याणीं राज्य केले. थोरले सरखेल यांची प्रथम स्त्री लक्ष्मीबाई होती, ते कुलाब्यास मानाजीबावासुद्धां राहिली.

१ मानाजी आंगरे सातार्यास कान्होजी आंगरे याजबरोबर पेशजी गेले होते. तेव्हां महाराज छत्रपती यांचे आज्ञेवरून शिकारींत वाघ मानाजी आंगरे याणीं हल्ला करून मारिला. तेव्हांपासोन महाराजांची मर्जी मानाजीबावावर चांगली होती. घोड्यावर बसणार व पट्टा खेळणार मर्द चांगले हें ध्यानीं ठेऊन, वस्त्रे पदवीसुधां देऊन, त्यांजवर चांगली कृपा ठेवीत गेले. पुढें वसई घेण्याचे मसलतींत बाजीराव चिमाजीआपा यांस महाराजांनीं खाना केले. तेव्हां कुमकेस जाण्याविशीं मानाजीबावांस हुकूम केला. त्याप्रमाणें कुमक जाऊन लढाया करीत कामांत मेहनत फार केली. तें पेशवे याणीं महाराजाजवळ कळवून याची तारीफ केली. पुढें सन अब्दुल मया व अलफचे सालीं उरण फिरंगी याजकडून घेतले. नंतर जंजिरेकर खान याजकडील किल्ला उंदरी वगैरे कुलाबा प्रांतीं होते तेथून संस्थानीं फौज पाठऊन उपराळे करून लागले. त्यासीं लढाया देऊन त्याजवर जरब ठेऊन त्याजकडील किल्ले कांहीं घेतले.

व सिद्दीसात हपसी चालून आला, त्यास लढाईत ठार मारला. ते समर्थी मानाजीबाबांस जखम गोळीची मांडीत लागली असतां, हल्ला करून फत्ते केली; व पेशवे याजकडे पेगाब पोचवून आपासाहेबांस कुमकेस आणिलें; व पुढें त्यांचे तर्फेन रामाजी महोदेव यास फौज-सुद्धां आणोन, ते व आपण एकत्र होऊन, उंदेरी किल्ला लढोन घेतला. व येसाजी आंगरें हे व धोंडजी आंगरे थोरले सरखेल कान्होजी आंगरे यांचे लेकवळे ते मानाजीबाबांचे निस-बतीस होते. त्यांस धोंडजी आंगरे यांस कुलाब्यांत हाताखालीं कामांत ठेविले व येसाजी आंगरे यांस पेण परगणे साकसें (?) येथील कामावर ठेविलें. त्याणीं लोक त्यांचे तैनात दिले ते व जास्त ठेऊन बखेडा माजवून, मानाजीबाबा मालक त्यास दगाफटका करावा असें मनांत आणून, धोंडजी आंगरे कुलाब्यांत ते व येसाजी मिळोन बखेडा उत्पन्न केला. मानाजीबाबांस हें कळतांच मानाजीबाबा कुलाब्यांतोन निपोन, रेवदंडा फिरंगी याजकडे होता तेथें जाऊन, आपली लोकसुद्धां मजबुती करून, कुलाब्यांत हल्ल्यानें चढून येऊन, स्वारी करून, धोंडजी आंगरे यांस धरून कैदेत ठेविलें. येसाजी आंगरे यांस धरून आणिलें. त्यांचे नेत्रही गेले. येसाजीस पुत्र मावजी आंगर व बाबुराव आंगरे व कन्या पांच व स्त्री याप्रमाणें होती. ते बाहेर मोकळीच होती. तेव्हां येसाजी आंगर कैदेत तेथून पळून रेवदंड्यास गेलेवर, त्यांचें कुटुंब बाहेर तेंही त्याजकडे गेलें. पेशवे याजकडील सुभा रामाजी महोदेव पराक्रमी होते. त्याणीं आंगरे याजक-डील किल्ल्यास फितुर करून व दगाफटक्यानें हल्लेकरून पाहाडी किल्ले कांहीं माणिकगड वगैरे घेतले. तें महाराजांस कळल्यावर माणिकगड आंगरे यांस परत देविला. नंतर फिरोन कांहीं दिवशीं रामाजी महोदेव याणीं माणिकगड व कोथळा व उरण व पालीही आंगरे यांची घेतलीं. विकटकडही सन अर्बा खमसेनांत घेतला. कुलाबा व खांदेरी व सागरगड व हिराकोट हे चार किल्ले मात्र सरखेलकडे राहिले. त्यांतही किल्ले सागरगड येथें रामाजी महोदेव दिमत पेशवे यांनीं फितुर करून रात्री लोक चढवावयाची माळ लाविली. ते बातमी आंगरे यांस फुटतांच त्यांची माळ तोडून त्याजवर चढाई करून, त्यांची फौज पळविली; आणि आपण खासा स्वारी पुण्यास गेले. कदीम चालीप्रमाणें पेशवे व नानासाहेब सामोरे सवा कांस आले. भेदी होऊन तसेंच पेशवे यांचे वाड्यांत जाऊन बोलणें केलें कीं, “छत्रपती महाराजांवरावर आह्मी वडिलोपार्जीत राहून बहुत चाकरी करून मुख्य सोडवून महाराजास सोबत दिली. त्याप्रमाणें महाराजांनीं घेतलेले मुलुखापैकीं कायम संस्थान आह्मांस करून दिलें. आह्मीही महाराजांचे चाकरीस एकनिष्ठ वागत असतां, आमचे किल्ले आपण सरदारापासोन घेविले; परंतु आह्मी कांहीं बोललों नाहीं. हल्लीं सागरगडासही फौज रवाना जाली होती. त्यास, आपले सरदारांशीं आह्मी लढावे हें आह्मांस योग्य नाहीं. सबब कुलाबा संस्थान आपले हवालींकरून घेऊन आमचा बंदोबस्त पुण्यास करून द्यावा. आह्मी येथें राहतों. जात नाहीं.” येणेंप्रमाणें बोलणें जाहल्यावर पेशवे बोलले कीं, तुमचे मजीस दुःख देऊन आह्मांस कोणची गरज नाहीं. दुसरे कैकेस येथिशीं तुमची खात्री करूं. याप्रमाणें बालोन मकाणास उतरावयास आला

करून मेजवानी पाठविली. फिरोन दुसरे बैठकेस मानाजीबाबास बोलाऊन आणून पेशवे याणीं सांगितलें कीं, आज तागायत जाहलें तें जाहलें; यापुढें जे तुमची दौलत राहिली, तिजला कधीं आह्मी किंवा स्वामीचे राज्यांतून कोणी हात लावणार नाहीं. याप्रमाणें बोलले. तेव्हां मानाजीबाबा बोलले कीं, आपली मर्जी आह्मांस कबूल. परंतु दौलतदारीचा खर्च पूर्वीचें लौकिकावर आमचा बहुत, व ठिकाणें किल्ले यांचा खर्च आहं. आणि मुलूक बहुत गेला, खर्च पुरत नाहीं. यास कसं करावें ? तेव्हां पेशवे याणीं एक लक्ष रुपयांत नस्त साठ हजार व भात तीस हजाराचें व कापड दहा हजाराचें याप्रमाणें दरसाल पुण्याहून व आरमाराकरितां सायली सोटें देणशें वसईपेकीं धावयाचा ठराव करून, परस्परें मेजवान्या होऊन वस्त्रें अलंकार, हत्ती, घोडे घेऊन, निरोप घेऊन, सरखेल संस्थानीं आले. नंतर पेशवे यांचा लोभ राहून कोणे समयी सरखेलांवर शत्रूचें संकट किंवा घरफलाचें आलें, तेव्हां पेशवे यांस पत्र लिहिलें असता, जातीनें किंवा फौज पाठवून उपराळा करीत गेले. व नबाब बंदेगानअल्ली हैदराबादवाले यांचा व पेशवे यांचा बिघाडा होऊन राक्षसभुवनावर लढाई जाली. तेव्हां मानाजी आंगरे यास बराबर नेलें. पुढें तह होऊन नबाबाच्या भेटी जाहल्या. तेव्हां नाना व भाऊ उभयतां पेशवे याणीं आपलमध्यें मानाजीबाबास घेऊन, भेटीस जाऊन आपले बरोबर यांची भेट केली. हे जातीनें मर्दाने सबब बराबर नेले. पुढें हपसी जंजिरेकर याजवर मसलत करून रामाजी महादेव यांस पेशवे याणीं पाठविलें. तेव्हां मानाजी आंगरे यांस सांगितल्याप्रमाणें आरमारसुद्धां कुमकेस गेले. पन्नास हजार रुपये खर्चास राख मानाजी-बाबास रामाजी महादेव याणीं दिले. तेथें जाऊन जंजि-न्यानजीकचे किल्ले लहान बाले किल्ला वगैरे कांही घेतले. त्याच संधीत मानाजीबाबास बेआरामी जाहली, सबब कुलाब्यास निघोन आले. तेथें जास्त वाखा होऊन पांच सहा दिवसीं मृत्यु पावले. तेव्हां रामाजी महादेव याणीं पुण्यास लेहून मानाजीबाबाचे पुत्र राघोजी आंगरे यांचें वय पंचवीस वर्षांचें होतें. त्यांचे नांवें वजारतमहा या पदाचीं वस्त्रें संस्थानचीं आणून रेवदंड्यांत वस्त्रें दिलीं.

१ राघोजी आंगरे संस्थानारूढ जाल्यावर संस्थानचा बंदोबस्त नीट ठेऊन हपसी याजवर मोर्चेबंदीस निघोन गेले. कांहीं दिवस मोर्चेबंदी होती. इतक्यांत भाऊसाहेब पेशवे पानपतांत गर्दीत गेल्याची बातमी आली, व हपसी जंजिरेकर याणीं कंपनी सरकारांतोन इंग्रजी गलबतें कुमकेस आणिलीं. त्या जरबेनें फौजसुद्धां रामाजी महादेव उठोन गेले. हपसी यांचा व आंगरे यांचा त्याकालीं घरोबा जाला आंगरेही उठोन आले. येसाजी आंगरे रेवदंड्यास परागंदा होऊन गेले होते; त्यांना राघोजी आंगरे यास बोलणें लाऊन, दौलतीचे फैलांत आह्मी कधीं पडणार नाहीं; मागील जाला गोः माफ असावी; हा करार केला. तेव्हां पेश-जीची भोष्ट माफ करून कुलाब्यास त्याणीं यावें जावें, याप्रमाणें मोकळीक ठेविली; व पोटास खर्चास सांगितलें असतां देत जावें असा क्रम चालता जाहला. त्याप्रमाणें सहकुटुंब येण्याचा

जाण्याचा राबता ठेऊन सुरळीत रीतीने चालू लागले. त्यास येसाजी यांच्या पांच कन्या, त्या पांच ठिकाणीं देशांत दिल्या. पैकीं एक कन्या मैनाबाई आनंदराव शिंदे यांस दिली. पुढे हींका दिवशीं येसाजी आंगरे मृत्यु पावले. पुत्र दोघे रेवदंड्यास होते. राघोजी आंगरे संस्थानचे अधिकारी ते नानासाहेब पेशवे यांचे भेटीस गेले. त्यांच्या भेटी पुळ्याचे गणपतीस शिरस्त्र्याप्रमाणें सत्कारानें सामोरें येऊन जाल्या. चालीप्रमाणें वस्त्रें, हत्ती, घोडा, कंठी शिरपेंच वगैरे बहुत मानानें वस्त्रें व बोलणीं व मेजवाण्या परस्परें जाल्या, आणि निरोप घेऊन संस्थानीं आले. नंतर नानासाहेब मृत्यु पावले. यावर माधवरावसाहेब पेशवे यांचे भेटीस पुण्यास गेले. ते एक कोश सामोरें येऊन पूर्व सांप्रदायाप्रमाणें बहुमानयुक्त निरोप देऊन व नेमणुकेंपैकीं एवज राहिला तो दिल्या; आणि निरोप देऊन संस्थानीं रवाना केले. पुढें माधवराव यांणीं सन समान सितैनांत राघोजीबावांस पुण्यास बोलाविलें. शिरस्त्रेप्रमाणें भेटी जाल्यानंतर बेलणीं कामकाजाची होतां, आंगरे यांजवळ पेशवे यांचें बोलणें पडलें कीं, तुमचे घरीं सरखेल हा किताब विजयदुर्ग संस्थानीं व वजारतमहा हा मरातब कुलाबा संस्थानीं चालतो. त्यापैकीं विजयदुर्ग संस्थान सरकारांत घेतल्यामुळें सरखेल हा मरातब राहिला, तो तुम्हीं वडिलोपार्जित सरकारकामांत एक लक्षानें वागणूक केली, सबब तुम्हांस देतों. परंतु तुमचा शिक्षा आहे त्यांत “राजाराम कार्यधुरंधर मानाजी तनुजन्मना, राघोजी वजारतमहास्यमुद्रिकेयं विराजते” अशा मरातबाचीं अक्षरें बराबरीचे सरदारीसारखीं चालत आलीं. त्यास पृथ्वीतील हिंदुपद पाछाईतून छत्रपती महाराज यांस मोठी पदवी प्राप्त होत चालली; सबब आतां शिक्ष्यांत अक्षरें अशीं घालावी कीं, “राजारामचरणीं सादर मानाजीसुत राघोजी वजारतमहा सरखेल निरंतर” अशीं असावी. यांत महाराज स्वामींचा व आमचा बहुत संतोष. अशा बोलण्यावरून आंगरे यांनीं मान्य करून सरखेलचीं वस्त्रें व मोत्याचा तुरा पेशजीचे सांप्रदायापेक्षां जास्त दिल्या, तो घेऊन निरोप घेऊन संस्थानीं आले. त्याजवर दोन वर्षे एकदां सालांतून पुण्यास जाऊन येत होते. नंतर सन ईहिंदे सबैनांत विसाजीपंत सरसुभा पेशवे यांचे तर्फेनें कर्नाटकप्रांतीं गेले, त्याजबराबर फौज घेऊन पेशवे यांनीं सांगितल्याप्रमाणें राघोजीबावा गेले. आंगरे याचे स्वार दिवल्यास खर्चास दरमहा विसाजीपंत देत गेले. पांच चार मास राहून निरोप घेऊन संस्थानीं आले. सन सलास सबैनांत माधवराव यांचा काळ जाला. तेव्हां पेशवेगादीवर नारायणरावसाहेब आले. त्यांचे भेटीस राघोजीबावा सन अर्बा सबैनांत गेले. गणेशखिंडीचे सुमारे पेशवे सामोरें येऊन भेटी जाल्या. दुसरे दिवशीं नारायणराव याजवर गर्दी होऊन मृत्यु पावले. दादासाहेब धनीपणा करूं लागले. त्याणीं शिरस्त्रेप्रमाणें सन्मान वस्त्रें देऊन आंगरे यांस निरोप दिल्या. सन खमस सबैनांत साष्टीवर इंग्रजबहादुर याची फौज आली. तेव्हां पुण्याहून फौज रवाना जाली. व आंगरे यांसही कुमक जावयाविशीं पत्रें आल्यावरून आंगरे घरसरंजामानिशीं गेले. ते पोंचले नाहीत इतक्यांत साष्टी इंग्रजबहादुर याचे फौजेनें सही केली. तेव्हां ते संस्थानीं निघोन आल्यावर विसाजी केशव सरसुभा याणीं वसईस मसलतीकिरितां बोलाविल्यावरून वसईस विसा-



जीपंत सरसुमा यांजवर गेले. त्यांचा निरोप घेऊन आंगरे संस्थानीं आले. भाऊसाहेब पानपतचे लडाईत गर्दीस मिळाले. नंतर तीन वर्षांनीं त्यांचें नांव धारण करून कोणी पुरुष तोतया उत्पन्न होऊन बंड केले. त्यास कैद करून रत्नागिरीचे किल्ल्यावर माधवराव याणीं ठेविलें होतें. तो, माधवराव मृत्यु पावल्यावर, तेथून तीन वर्षांनीं निघोन फौज धरून, कोकणपट्टी सर करीत राजमाचीचे किल्ल्यावर गेला. तेव्हां पुण्याहून फौजा महादजी शिंदे सुभा येऊन राजमाचीस तोतयाचा मोड जाला. तेथून पळोन पनवेलीस येऊन गलबतांत पांच सातशें माणसानिशीं बसून मुंबईचे बंदरांत गेले असतां, तेथें न उतरतां कुलाबा प्रांतीचे बंदरीं उतरले. हें राघोजी-बाबांस कळतांच, आपले कारभारी यास त्याजकडे पाठवून नादाचीं बोलणीं लावून कुलाब्या-नजीक आणोन कैद करून कुलाब्यांत ठेऊन पेशवे यांस पत्रें पाठविलीं. इकडे महादजी शिंदे फौजसुद्धां पुण्याकडे जाण्यास बोरघाटानजीक खालापुरास गेले. तेथें कुलाबा प्रांतीं तोतया आल्याची बातमी येतांच, फौजसुद्धां मुकाम करून बाळाराव दिवाण याजबरोबर फौज चार हजार देऊन दुसरे दिवशीं कुलाब्यास दाखल जाहले; आणि आंगरे याजवळ बोलणें घातलें कीं, आमचे हवालीं तोतयास करावें. सरखेल यांचें बोलणें की, पेशवे यांजवळ आह्मीच दाखल करूं. परंतु बाळाराव न ऐकत. तेव्हां अडचणीची गोष्ट पडली हें जाणोन तोतयास घेऊन स्वता सरखेल निघाले. बाळाराव यांसही फौजसुद्धां बराबर घेऊन बाळापुऱास गेले. तेथें महादजी शिंदे सामोरे येऊन सरखेल यांचा सत्कार करून त्यांचीं यांचीं बोलणीं मोडीचीं होऊन, सारे बरोबरच सन सबा सबैनांत पुण्यास गेले. तेथें सामोरा खडकीचे पुलावर नाना फडणीस येऊन, भेटी होऊन, माधवराव पेशवे लहान वयांत सबब पुरंदरास होते, तेथें सरखेलसुद्धां सर्वजण जाऊन, पेशवे यांची भेट होऊन, कदीम नेमणूक लाख रुपये पावत असे त्यापैकीं दरम्यान चाळीस हजार तहकूब राहून, साठ हजार पावत असे त्यापैकीं महादजी शिंद्यांचा तैनात मुलूक होता त्यापैकीं प्रगणा हात्याणें वगैरे गांव उदेपूर पेट्यांतील लावून दिले; व कामकाजाबद्दल माणिकगड किल्ला आंगरे यांचा पूर्वी घेतला तो किल्ला व मुलुक घेतल्यापैकीं एक लक्ष रुपये यांचा मुलूख आंगरे यांस पेशवे यांहीं दिल्या; व हत्ती, घोडा, भलंकार, वस्त्रें सांप्रदायाप्रमाणें देऊन सरखेल यांची रवानगी संस्थानीं केली.

पुढें सन सलास समानीनांत माधवराव पेशवे यांचे लग्नास माघमासीं सरखेल पुण्यास गेले. तो पेशवे यांस लग्नाची हळद लागली. तेव्हां समोर येण्याचा संकोच पडल्यानें कसें करावे ह्मणोन नाना फडणीस यांचा निरोप सरखेल यास आल्यावर, या समई सामोरें यावयाचें करूं नये, आह्मीच येतो, असा सरखेलांचा निरोप गेला. परंतु पेशवे अंबारींत बसून कुंभारवेशीपर्यंत सामोरें येऊन सरखेल यांस घेऊन गेले. लग्नसमारंभास हैदराबादेहून पोलादजंग आले. त्यांस पेशवे सामोरा चानबडीस गेले. तेव्हां सरखेल यांस बराबर घेऊन गेले. लग्नसंबंधें परस्परें मेजवान्या चाली-प्रमाणें होऊन, निरोप घेऊन सरखेल संस्थानीं आले. मावजी व बाबुराव आंगरे यांची बहीण बैनाबाई शिंद्याकडे दिली. तिचे आश्रयानें ते महादजी शिंदे यांजकडे रोजगारास मथुरेचे

मुक्कामीं गेले. तेथें ते दोन घोड्यांनिशीं चाकरी करीत शिंद्याबराबर पुण्यास येऊन आपला पोटाचा बंदोबस्त संस्थान कुलाबा येथून करून द्यावा हें बोलत गेले. महादजी शिंदे यांस पेशवाईचे चालीप्रमाणें चालावयाचें, सबब हें काम होणार नाहीं असें सांगोन शिल्लेदारीत त्यांचे दोन चार घोड्यांनीं चालवीत गेले.

सरखेल यांस स्त्रिया चार. त्यांत पहिली स्त्री राजसबाई सातारकर भोसले यांची कन्या. तिचे पोटीं एक कन्या जाली. ते रवळोजी शिंदे यांस मौजे आउंथ येथें दिली. त्या कन्येस संतान पुढें नाहीं. चौथी स्त्री आनंदीबाई हे सातारकर भोसले यांची कन्या. त्यांचे पोटीं दोन पुत्रजाले. त्यांचीं नांवें मानाजी आंगरे व कान्होजी आंगरे. व एक कन्या जाली. पुढें सन सलास तिसैनांत चैत्र शुद्ध १५ पौर्णिमेस राघोजी आंगरे यांचा काळ जाला. छत्तीस वर्षे राज्य त्यांणीं केलें. त्यांचे मागें मालक मानाजी आंगरे राहिले.

१ मानाजी आंगरे मुख्य. ते दहा वर्षांचे लहान पाहून जयसिंग आंगरे हे राघोजी-बावाचे राखेचे पोटीं जाले ते वयांत थोर होते. त्याणीं संस्थानीं जाफराबादी सोरटी लोक होते ते व कोळी लोक होते ते आपलेकडे मेळऊन घेऊन, राघोजीबावाची स्त्री आनंदीबाई ते कामांत मुख्यत्वेन वागत होती व दुसरी स्त्री नर्मदाबाई त्यासुद्धां मानाजीबावा व कान्होजीबावास चौकी पाहरेनिशीं स्वाधीन ठेऊन, दोन कारभारी त्यांचे तरवारी चालवून ठार मारिलें. आणि दौलत आपण चालवूं लागले. तेव्हां आनंदीबाईंनीं नाना फडणीस यांस हा मजकूर कळविला. त्यावरून नानांनीं जयसिंगास सांगोन पाठविलें कीं, असें तुझीं करूं नये. मुलें लहान. बाई मुख्य. त्यांचे आज्ञेत राहों. तें ऐकिलें नाहीं. तेव्हां नानांनीं माधवराव फडके यांजबरोबर दहा हजार फौज व आरमार देऊन संस्थानीं पाठविलें. त्यांच्यानें बंदोबस्त जाला नाहीं. नऊ महिने लढाई होऊन पुढें तह होऊन, कांहीं मुलुक व पैका घेऊन मानाजीबावास जयसिंगां पुण्यास घेऊन यावेसें ठरवून फडके पुण्यास गेले. परंतु जयसिंग पुण्यास गेले नाहीत. तेव्हां बाईंनीं सोरटी जाफराबादी यांस फितावून पैका देऊं करून जयसिंग आंगरे यास कैद करून नाना फडणीस हे मोंगलावर स्वारीस खड्यांस गेले होते. तेथें पत्रें पाठविलीं. पत्रें पाहून जबळ गोविंदराव पिंगळे होते त्याजवळ संस्थानचे वकिलासमक्ष बोलले कीं, सरकारांतून काय करावयाचें तें त्याचें त्यांहींच केलें. ठीक जालें. पुढें पुण्यास पेशवे स्वारीहून आल्यावर सन सीत तिसैनांत अश्विनमासीं संस्थानचें पदाधिकाराचीं वस्त्रें बापू अभ्यंकर यांजबराबर मानाजी आंगरे यांचे नांवें पेशवे यांहीं पाठविलीं. त्याप्रमाणें वस्त्रें घेऊन बाईचे मुखत्यारीनें काम संस्थानचे चालत असतां, सोरटी लोकांत फितूर करून जयसिंग आंगरे कैदेतून पळोन पुण्यास गेले. परंतु नाना फडणीस याणीं कांहीं त्याचें ऐकिलें नाहीं. त्या संघांत माधवराव पेशवे हवेलीवरून उडी टाकून मृत्यु पावले. तेव्हां पेशवे यांचे दौलतींत मोठा बंखेडा जाला. शिंदे जबरदस्त जाल्यामुळे नाना फडणीस निघोन सातान्यास गेले. त्या संघांत जयसिंग आंगरे, बाबुराव आंगरे शिंद्याचे लष्करांत, त्यास मिळोन त्यांचा आश्रा घेऊन फौज ठेवून कुला-

व्यावर आले. संस्थानी लोकांत फितूर केला. कारभारी यांत कोणी जरबेचा राहिला नाही. रावोजी बाबाचे वेळचे जे होते, त्यांत कोणी आळ घालीसा नव्हता. ज्याचा तो वेगळा कारभार ओढूं लागल्याने सर्व कामाचे बंद सुटले. बाई बायको माणूस समजस होती. परंतु त्यांची जरब फौजेवर पडेना. तेव्हां फौज फितूरून जयसिंगास मिळाली. जयसिंगानीं वेढा कुलाव्यास घालून बंदी केली. तेव्हां आनंदीबाई मृत्यु पावली. मग जयसिंग याणीं कुलाबा घेऊन बंदोबस्त सर्वांचा करून कोणी ठार मारिलें. कोणी कैद केले. कोणी परागंदा जाले. मानाजीबाबा व कान्होजी बाबा मालक व त्यांची मातुश्री दुसरी नर्मदाबाई त्यास केवळ स्वाधीन ठेविलें. नंतर बाबुराव आंगरे यांचे व जयसिंगाचे वाकडें पडिलें. तेव्हां मावजी आंगरे व बाबुराव आंगरे याची बहीण मैनाबाई ती आनंदराव शिंदे यास दिल्ली होती, तिचे पोटी दौलतराव शिंदे जाले. ते महादजी शिंदे यांनीं दत्तपुत्र घेतल्यामुळे त्या गादीचा अधिकार महादजी शिंद्यामागे पावले. पेशवाईचे गादीवर मालक बाजीराव जाले. ते शिंद्याचे स्वाधीन राहिले. त्या संधीत बाबुराव आंगरे याणीं मसलत संस्थान कुलाव्यावर करून शिवंदी पाठविली. संस्थानीं गादीचीं वस्त्रे घेऊन मानाजी आंगरे होते ते लहान वयांत त्याजला बंदोबस्तांत ठेवून मुख्यत्वे कामांत कारभार जयसिंग आंगरे हे करीत होते. जाफराबादी सोरटी लोक कदीम चाकर होते. परंतु जयसिंगानीं पैका देऊन फितावून आपलेकडे करून घेतलें. तेव्हां फौज कुलाव्याहून जाऊन बाबुराव आंगरे याची फौज शिकस्त करून परत लाविली. नंतर फिरोन बाबुराव याचे तर्फेनें फौज रेवडंड्यास ठेवून तेथील आश्रयानें लढाया करूं लागले. त्याचार्हा पराभव संस्थानच्या लोकांनीं केला. तेव्हां तिसरे खेपेस दौलतराव शिंदे यांजकडील पलटणें दोन अजम अली-षानसाहेब याजबराबर व स्वार पांचशें बाबुराव याची ठेवणूक तीन हजार फौज पायदळ स्वार याप्रमाणें तोफासुधां घेऊन बराबर मुखत्यार कारभारी हरीपंत भावे हे संस्थानीं येण्यास कुरवडा घाटमाथापावेतो आले. पुण्यास संस्थानचे वकील जाऊन बाजीरावसाहेब व अमृतरावसाहेब व नानाफडणीस यांजवळ बहुत प्रकारें पुढें चालत आल्या सांप्रदायाविशीं बोलणें केलें. तेव्हां पेशवे व नानानीं शिंद्याकडे बोलणें घालून घाटमाथा पलटणें बेवीस दिवस महकूब करवून या संस्थानीं बाबुराव यांचा वारसा कसा पुरेल हीं बोलणीं बोलत होते. परंतु शिंद्यांनीं जरबेनें तेविसावे दिवशीं सांगतांच संस्थानचे वकिलास समक्ष पेशवे व नानानीं बोलावून सांगितलें कीं, आतां आमच्यानें रक्षण होत नाही, पाहिजे ती तहा करून या समई तुम्हीं आपला बचाव करावा. पुढें आमचा हात चालेल तेव्हां तुमची मदत करूं आणि आज तुम्ही धेधून निघोन जावें. तेव्हां वकील संस्थानीं आले. बाबुराव यांचीही फौज संस्थानीं दाखल जाली. दोन तीन लढाया संस्थानचे फौजेनें घेतल्या. परंतु पेशवे यांचा आश्रा तुटला व पलटणाचा जोर यामुळे संस्थानची फौज शिकस्त खाऊन पेटेंतील किल्ला, हिरा व आलीबाग पलटणांनीं घेऊन कुळाव्यावर मार चालविला. तेव्हां सोरटी लोकाहातीं पैका लागला तो व गलबतें सापडलीं तीं घेऊन निघोन गेले. जयसिंग आंगरे याणीं जरब खाऊन बाबुराव यांचे तर्फेचे कारभारी

हरीपंत भावे यांजवळ बोलणें करून त्याणीं आणशफत केल्यावरून मानाजीबाबासुधां भेटीस आले. प्रथम भेटीसच हरीपंतांनीं सर्वास कैद करून संस्थान कार्बाज करून कैदेनिशीं मानाजीबाबा व जयसिंग यास व दोन तीन दुसरे लेकवळेसुद्धां पुण्यास पाठविलें. तेथें बाबुराव याहीं मानाजीबाबास शिंद्याचे लष्करांत वानवडीस कैद आपलेजवळ ठेवून जयसिंग वगैरे यास नगरास पाठविलें. बिड्या घालून नगरचे किल्ल्यांत ठेविलें. कान्होजी आंगरे व नर्मदाबाई यांस कुलाच्यांत कैदेत ठेविली. दौलत सर्व जप्त केली. अंगावरील दागिनेसुद्धां घेतले. जयसिंग आंगरे यांची स्त्री व दोन पुत्र हे जंजिरे देरीस गेले. तेथील किल्लेदार याणीं जवळ ठेवून बाबुराव याजवळ बिघडून चालले. मानाजी आंगरे यांस वचन हरिपंतानीं दिलें असतां कैदेत ठेविलें सबब तेथून कैदेतून परागंदा होऊन अमृतराव पेशवे खडकीवर पडले. त्याचे लष्करांत गेले. तेव्हां शिंद्याचा जोरा फार, पेशवे त्याचे जखेंत; यास्तव अमृतराव यांस जरबेंचें सांगणें शिंद्याचे जातांच त्याणीं युक्तीनें मानाजीबाबास काढून देऊन दौलतराव शिंद्यांनीं महादजी शिंद्याच्या स्त्रिया कैद करून नगरचे किल्ल्यास नेत होते, त्या मार्गातोन निघोन जाऊन जुने सरदार व फौज जमवून बराबर दावा चालवीत होत्या, त्याचे लष्करांत मानाजीबाबास पोचविलें. त्याणीं खात्री करून ठेविले. परंतु, त्या बाया फौजसुद्धां हिंदुस्थानांत जावयाचा बेत करून आंगरे यास चलावें ह्मणाले. तेव्हां याचीं कुटुंबाचीं माणसें अटकेंत, हे लहान, सबब याणीं तें मान्य केलें नाहीं. आणि जुनी लहान सहान माणसें जमा करून पांचशें शिबंदी ठेवून ताबडतोब निघोन संस्थानाकडे आले. संस्थानीं बाबुराव याचे कारभारी याणीं फौज त्याजवर पाठविली. त्याशीं लढाई करून बाबुराव याची फौज शिकस्त जाली. परंतु किल्ले कोट या सरंजामानें येणार नाहीं. सबब जमाव पोस्त करावा या मसलतीकरितां रेवदंड्याचे आश्रयाचे संधानानें चौकलीस आपले प्रांतीं राहिले. तिकडून बाबुराव याहीं शिंद्याकडील एक पलटण व एक हजार मोंगल स्वार रवाना केले. ते येऊन स्वार प्रथम लढाईस गेले. ती लढाई मानाजीबाबाची फत्ते होऊन स्वार परत आले. दुसरे दिवशीं पलटण गेलें तेव्हां मानाजीबाबाची शिबंदी जरब खाऊन निघोन गेली. मानाजीबाबा दहा पांच असामी घेऊन जातीनिशीं रेवदंडा किल्यांत गेले. तो किल्ला पेशवे यांजकडे त्या काळीं किल्यांत शिबंदी वगैरे बंदोबस्त होता. तेव्हां बाबुराव याची फौज परत येऊन पुण्यास पेशवे यांस नेट पोचवून मानाजी आंगरे यास बाबुराव याणीं आपले हस्तगत करून कुलाच्यांत आणून त्याचे सर्व कुटुंब एका घरांत कैदेत ठेविलें. आणि पुण्यास पेशवे यांसी शिंद्यांनीं सांगोन बाबुराव आंगरे या संस्थानचीं वस्त्रें द्यावयास लष्करांतून पुण्यास पाठविलें असतां बाबुराव याचे बंधु मावजी आंगरे पन्नास पाऊणशें स्वार घेऊन त्यास आडवें होऊन आम्ही वडील असतां तुम्ही वस्त्रें घ्याल तर तरवार चालवूं. याप्रमाणें तंदा केला. तेव्हां बाबुराव फिरोन लष्करांत येऊन सन तिसा तिसैनांत दसयाचे दिवशीं रात्रीचीं वस्त्रें घेण्याचा बेत करून पुण्यास त्यास न कळतां जाऊन वस्त्रें संस्थानचीं घेतलीं. पूर्व चालीपेक्षां शिक्यांत सवाई हीं अक्षरें सरलेल पदावली-

कडे घातली. आणि संस्थान चालू लागलें. तीन चार वर्षेपर्यंत बखेडा राहून राज्य मानाजी आंगरे याचे नांव चाललें. पुढें बाबुराव आंगरे याचें नांव चालतें जालें.

१ बाबुराव आंगरे यास संस्थानचीं वस्त्रें जाल्यावर शिंद्याचें लष्कर वानवडीस तेथें त्याचे कामांत वागत होतें. नंतर सर्जेराव घाटगे याचें व बाबुराव याचें वांकडें पडलें. सर्जेराव याची कन्या दौलतराव शिंदे यास दिल्ली यामुळें बाबुराव याणीं चित्तांत बाशा खाऊन सन मयातैनांत संस्थानीं आले. खांदेरी किल्ला तीन वर्षेपर्यंत लढत होता. तिसरे वर्षीं आंत गझा वगैरे जिजस नाहीसिं कळतांच बाबुराव याणीं भवतालीं गलबतें आरमारी ठेविलीं. तेव्हां किल्ला कौलास ठेवून किल्लेदार जयसिंग आंगरे याचा प्रथम पुत्र मुरारजी आंगरे यास घेऊन एक पुत्र व स्त्री जयसिंगाची किल्लासुधां हवालीं केली. नंतर जैसिंग आंगरे यासही संस्थानीं आणून त्याजला ठार मारिलें. बराबर शिबंदी स्वार बहुत आणिल्यानें संस्थान ओढगस्त जालें. कारभारी संस्थान ध्यावयास हरिपंत भावे आले होते. त्याचा ऐवज देणें असतां पैका मागूं लागले. ते देईनात सबब हरिपंतास त्याचे मंडळीसुधां कैद करून खांदेरींत ठेविलें. चार महिने हरिपंतांनीं उपोषणें केलीं. तितके दिवसांत संस्थानचीं पागेचीं घोडीं चारशेंपर्यंत मेलीं. ती शंका मनांत येऊन युक्तीनें बोलणें लाऊन हरिपंताचे घरांत दागिने कापड वगैरे जप्तींत ऐवज सांपडला, त्यासुद्धां पंचवीस हजारांची भरती करून घेतली व पंचवीस हजारांचें खत मुदतीचे घेऊन त्यास सोडिलें. त्याणीं बाबुराव याची भेट न घेतां निघोन पुण्यास गेले. नंतर परशराम श्रधर याजपासून पैका कर्जाऊ घेऊन दिवाणगिरी त्यास दिल्ली. पैका घेतल्यावर कारभार त्याजकडे दरकाचें निशाण मात्र चालविलें. आंगरे याची बहीण घाटगे शिलेदार यास दिल्ली होती. ते कारभारांत होते. संस्थानीं ओढ फार जाली तेव्हां बाबुराव शिंद्याचे लष्करांत जावयास पुण्यास गेले. पेशवे बाजीराव यांची मर्जी यावर नाही, यामुळें एक महिन्यानंतर भेटले व याचे आदरांत कमीपणा करूं लागले. त्यासहित बाबुराव याचे वडील बंधु मावजी आंगरे उज्जनीस मैनाबाई शिंदे याजवळ होते. ते मृत्यु पावल्याची खबर आली. सबब मावजीचे दोन पुत्र संभाजी व शेकोजी आंगरे यांस येऊन मावजीचे स्त्री काळोसास पुण्यापासून दहा कोसावर तेथें क्रिया केली आणि आउंधास मुकाम करून होते. इतक्यांत यशवंतराव होळकर पुण्यावर आले. त्याचे दुसऱ्यावर शिंद्याची फौज आली तेव्हां बाबुराव यास लष्करांत जावयास निरोप व वस्त्रें जालीं. परंतु बाबुराव शिंद्याचे फौजेंत सामील जालें. होळकराचे लढाईत शिंद्याची व पेशवे यांची शिकस्ती होऊन सर्वजण पळाले. बाबुराव संस्थानीं पोहचले. बाजीरावही महाडाकडून रेवदंड्यास येऊन आंगरे भेटीस गेले. व काळोजी कुंजर पेशवे यांचे कारभारी व निंबाजी भास्कर शिंद्याचे वकील हे कुलाण्यास आले. फौज ठेवून या प्रांतीं पेशवे याणीं रहावें हा घाट करीत होते. परंतु पेशवे तेथें न राहतां वसईस गेले. हरिपंत पूर्वीचे दिवाण कैदेतोन सुटोन गेले. त्याणीं होळकर याचे दरबारांत पैसाव चांगला करून आंगरे याजवर मसलत केली. तेव्हां

हरिपंताजवळ बहुत प्रकारें लाचार होऊन त्याचे दस्तऐवज वगैरे परत देऊन मसलत त्याणीं महकूब केली. आंगरे होळकरशाईचे अंमलदारास सामील होऊन चालले हा संशय बाजीराव यास येऊन, इंग्रजीसरकारचे मदतीनें पुणें येथें दाखल जाल्यावर बाबुराव याचे कामांत पुरवणी कमी ठेवीत गेले. सरसुभेदार खंडेराव रास्ते याणीं मागील तेढ काढून माणिकगड तालुक्यातील काहीं मुलकांत जप्ती पाठविली. मग पुण्यास बोलणें करून ते मोकळीक करून घेतली. व इंग्रजसरकारचें मुंबईहून सांगणें पडलें कीं अरमार जाऊन लोकांचीं गलबतें जबरदस्तीनें लुटून आणितात तें आणूं नये. त्यावरून अरमार बंद जालें. यामुळें जंजिरे खांदेरी येथें खुटवा घेण्याची चाल होती ते अरमारचे जरबेविना येईना सबब तेही बंद जाली. एक लाख रुपयाचें उत्पन्न कमी जालें. वडील बंधू मावजी आंगरे याचे पुत्र संभाजी व शेकोजी हे कुलाब्यास बाबुराव याजवळ होते. त्याणीं लोकांत फितूर करून बाबुराव यास मारून आपण दौलत आटोपावी असा बेत केला. तो मनसुबा भेद होऊन बाबुराव यास कळतांच ते सारे फितुरी लोकसुधां संभाजीस कैद केलें. आणि त्यापैकीं कोणी कारणी ते ठार मारून, काहीं दिवस तसेंच बंदोबस्तानें जवळ बाळगून जवळ ठेवावें तें चांगलें नाहीं, सबब पत्रें देऊन उज्जनीस मैनाबाईकडे व्हा घोड्यानिशीं पाठविलें. मैनाबाईनीं दौलतराव यास भेटवून उज्जनीची मामलत देविली. शेकोजी व बायका बाबुराव याजवळ राहिले. मानाजी व कान्होजी आंगरे याची सावत्र मातुश्री नर्मदाबाई याणीं बाबुराव याजवळ बहुत प्रकारें खात्री करून उभयतांचीं लग्नें करून घेतलीं. पुढें सनसबा मयातैनांत मुरारजी आंगरे मुंबईस त्याचे तर्फेनें बऱ्या सोनार जाफराबादेस जाऊन पांच सातशें सोरटी घेऊन संस्थानावर आला. आंगरे याचे मेहुणे घाटगे ते फौज घेऊन त्याजवर नेले. ते शिकस्ती खाऊन पळोन गेले. दुसरे दिवशीं सोरटी याणीं पेट अलीबाग व हिराकोट घेऊन मुलकांत जप्ती केली. व कुलाब्यावर हल्ला करावयाचें योजिलें. सोरटी येणार हें पूर्वी कळल्यावरून बाबुराव याणीं मुंबईस बोलणार पाठविलें. व पुण्यास खंडेराव रास्ते यास लिहिलें. परंतु मुंबईहून उपराळा जाला नाहीं. तुमचे कामांत आम्हीं पडावें असा तुमचा आमचा संबंध नाहीं असें उत्तर मुंबईहून जालें. खंडेराव याणीं पांचशें लोक पाठविले ते हिरा सोरठ्यानीं घेतल्यावर आले. त्यांस सोरठ्यानीं लढाई करून शिकस्त केले आणि दुसरे दिवशीं तोफांची मारगिरी हिन्यावरून कुलाब्यावर चालविली. तेव्हां तोफेचे आवाज कुलाब्यास कशाचे होतात या शोधास मुंबईहून अजम हेलडी साहेबा-कडून एक चपराशी पढावावर कुलाब्यांत येऊन शोध विचारून गेला. तेच दिवशीं बिना-थकराव परशराम दिवाणजी यास बाबुराव आंगरे यांहीं मुंबईस रवाना केलें. त्याणीं धोंडो-पंत नित्सुरे लोहगडवाले यास बराबर घेऊन अजम हेलडी साहेबाचे विद्यमानें मेहरबान अजम डंकनसाहेब जनरल बहादुर यांची भेट घेऊन जालें हरद्व सांगोन ये समर्थीं कुमक करून बचाव करावा हें बोलणें केलें. त्यास जनरल साहेबीं उत्तर केलें कीं तुमचे कशांत आम्ही पडत नाहीं. नंतर फिरोन दिवाणजीनीं हरद्व संकटाचें समजाविलें. तीन वेळ एक दिवसांत भेट जाली. तिसरे वेळेस कोसलदार व जनरल साहेब एक घटकापर्यंत पसार करीत करीत



बोलोन विचार ठरऊन नंतर नक्षा काढून दिवाणजीस माहिती विचारून, आम्ही आपल्या दोन बोटी वेतों तुम्ही बोटीवर बसोन जावें. दोन साहेब बोटीवर देतो. तेथें जाऊन जाफराबादी लोक तुम्हांवर येणार नाहीत इतका मात्र बंदोबस्त तूर्त करितील. नंतर हा मजकूर कळला त्यास लेहूं. तेथून कुमक येईल तसें करूं. तेव्हां दिवाणजीनीं विचारिलें जे, इतक्या आश्रयानें आमचा बचाव जाला. परंतु बाहेरून लष्कर आणून त्याचें पारिपत्य करूं येविशीं रुकार असावा. त्यास येविशीं आमची मनाई नाही असें बोलणें होऊन बोट एक घेऊन विनायकराव दिवाणजी कुलाब्यास आले. दुसरे दिवशीं दुसरी बोट उंदेरीस होती तेथून दाखल जाली. त्या जरबेनें बाबुराव याचा बचाव जाला. परंतु सोरटी लोकांनीं सारा मुलूक जप्त केला, यामुळे किल्ल्यांत अडचण पडली. त्यांत पाणी नाही व दारू नाही. तेव्हां फिरोन विनायकराव दिवाणजीस पाठवून मेहेरबान डंकनसाहेब जनरल बहादुर यासी बोलणें केल्यावरून पाण्याचीं पिपें सरकारांतून कांहीं देविलीं. दारू खरेदी नेण्यास कांहीं परवानगी एकदा दिल्ली आणि जनरल साहेबानीं दिवाणजीस सांगितलें कीं, मुरारजी कुमांड करितो यापासून तुमचा बचाव आम्ही करितों. परंतु मानाजी आंगरे तुमचे कैदेत त्यास आपलेजवळ खुलासा ठेवावें आणि ते तुम्हास राजी हें त्याचें पत्र घेऊन पाठवावें. हें नदरेनें पहावयाबद्दल धोंडोपंत लोहगडवाले यास इकडील तर्फेनें तुम्ही बराबर घेऊन जावें. त्याप्रमाणें कबूल करून संस्थांनीं येऊन धोंडोपंताची रूबरू करून मानाजी आंगरे याचें राजीपत्र जनरलसाहेबाचे नांवें धोंडोपंताजवळ देऊन रवाना केलें. पेशवे यांसही कुमकेविशीं लिहिलें होतें. त्याणीं त्रिंबकजी डेंगळे याचे तर्फेचा सरदार व कांहीं फौज कुमक पाठविली. ती रेवडंड्यास येऊन बसली. फौज जाफरी होती व लढण्याची परवानगी नव्हती यामुळे त्याच्यानें कांहीं जाहलें नाही. खंडेराव रास्ते याजवळही बोलणें आमचें कामांत पडावें हें बाबुराव याणीं केलें होतें. परंतु पेशवे याची मर्जी आंगरे व रास्ते दोघाविशीं ठीकशी नाही. हें पाहून कामांत कसें पडावें हा विचार रास्ते करित होते. त्या संधींत कलकत्याचा हुकूम आला कीं, मुरारजी आपले इंग्रजी जाग्यांत राहून दुसरे याजवर जाजती करितो व पेशवे याचें कायम मकाण त्यास इजा देतो; सबब त्याचें पारिपत्य पेशवे यांचे रुकारानें इंग्रजी सरकारांतून करावें. अशा अन्वयाचा किंवा कांहीं कमजास्त हुकूम आला. त्यावरून अजम कर्नल क्लोज यांहीं पेशवे यांस विचारिलें. आपण पारिपत्य जाफराबादीचें करावें. अगर आम्हास सांगावें. तेव्हां बाजीराव यास पारिपत्य करणें जरूर जालें आणि आम्हीच करितों असें कबूल केलें. परंतु आपण फौज न पाठवितां खंडेराव रास्ते यासच हुकूम केला. तेव्हां खंडेराव याची तयारी होतीच. फौज पाठवून सोरटी याचें पारिपत्य करून कौल देऊन काढून दिलें. बऱ्या सोनार यास धरून बाबुराव याजकडे कुलाब्यांत पाठविलें. त्याच समयी बाबुराव यांहीं बऱ्यास दार मारिलें. परंतु इंग्रजी सरदार बोटीवर जवळ होते. त्याचे बचावानें हें सारें अर्थसाध्य जालें असतां त्यास इतलाही केला नाही. यामुळे जनरल साहेबीं वकिलाजवळ बाबुराव

यास शब्द लाविला. इंग्रजी बोटी मुंबईस रवाना केल्या. दरम्यान विनायकराव दिवाणजीशीं जनरल साहेबाचें बोलणें जालें होतें कीं, तुमचा खिसा आझीं मोकळा केल्यास खांदेरी किल्ला कंपनी सरकारांत तुम्हीं घावा. तेथें दांडी बांधाव-याची आहे. परंतु दोन महिनेयाचा वायदा. कलकत्यास लेहून हुकूम येईल तसें सांगूं. हें बोलणें जालें होतें. त्यास बाबुराव लष्करांत जातात हा निरोप घ्यावयास विनायकराव यास मुंबईस गेले, तेव्हां निरोप देऊन खांदेरी घेण्याविशीं कलकत्याचा हुकूम जाला नाही हें सांगितलें. या समयांत खंडेराव रास्ते जातीनें कुलाब्यास येऊन आंगरे यांचीं बोलणीं होऊन लाख रुपये रास्ते याचें देणें जालें सबब संस्थान त्याचे हवालीं केलें व इनामी गांव दिले. माणिकगड किल्ला मागावा हा करार प्रथम नव्हता. परंतु रास्ते यांणीं समयीं भीड घालून घेतला. पेशवे यांचा सरदार आले त्यास पेशवे यांचीं पत्रें येऊन दहा हजाराचे गांव पेशवे यांणीं सरकारांत घेऊन ते लोक उठोन गेले. सरासरी पंचवीस हजाराचा मुलूख पेशवे व रास्तेसुद्धां त्या समजांत संस्थानचा गुंतला. संस्थानीं बहुत ओढ जाली. रास्ते यांचें देणें सबब संस्थान रास्ते याचे स्वाधीन करणें प्राप्त आलें. व दौलतराव शिंदे यांचींही पत्रें बोलावण्याचीं आलीं होतीं. सबब रास्ते यांचे कारभारीयाचे हाताखालीं आपले मेहुणे घाटगे व परशराम श्रीधर दिवाणजी यांस ठेविलें. आणि विनायकराव परशराम दिवाणजी त्या समयांत इंग्रजी सरकारचे दरबारांत वगैरे मेहनत केली. सबब स्वारीची दिवाणगिरी व पालखी व अफतागीर वगैरे देऊन त्यास बराबर नेलें. स्वारींत कारभारास मुख्यार रास्ते यांचे तर्फेचे कारभारी व फौज त्याची व कांहीं घरची घेऊन लष्करांत निघोन मानाजी व कान्होजी आंगरे आपले स्वाधीन असावें जाणोन तेही बराबर घेतले. पुणेयास बाजीराव निरोप देतील न देतील या दिकतीकरितां परभारें लष्करांत जातां मार्गी शिंद्याचे महालीं वगैरे महालीं साधलें तेथें खंडण्या घेत चालले. हे बोभाट जाऊन शिंद्यास चांगलें वाटलें नाहीं. ताकीदपत्रेही आलीं. तिकडे संभाजी आंगरे यांजकडे उज्जैनची मामलत त्यांणीं रयतेस जुलूम करून पैका घेऊं लागले. व सरकारी पैका वसूल न देत व ज्याच्या नेमणुका त्यासही पैसा देईनात. यावरून दोन पलटणें व पांचशें स्वार संभाजी आंगरे यांचे जप्तीस आले. तेव्हां याची कुमक करावी ह्मणोन बाबुराव यास पत्रें संभाजीचीं महेश्वर मुक्कामीं येतांच रातोरात एक दिवसांत चाळीस कोस उज्जनीस दोनशें स्वारांनिशीं गेले. तेथें याचे भिडेनें जप्तीस आले. ते उगेच राहिले. आणि आंगरे यांणीं पत्रें शिंद्यास पाठविलीं कीं, मामलत बहाल राहिल तरी लष्करांत आम्ही येतो, नाही तर परत जातो. तेव्हां मामलत बहाल करून जप्ती उठऊन नेली. नंतर आंगरे यांणी सावकारा वगैरे मंडळीस कर्जपैका मागावयाच्या निकडी केल्या. हातीं आलें तें घेतलें आणि लष्करांत गेले. हे बोभाट जाऊन शिंद्याची मर्जी चांगली राहिली नाहीं. पुढें भेटी होऊन दौलतीचा कारभार. आंगरे यांणीं चालवावा हें बोलणीं होऊन कामास लागले. परंतु कामांत आळा न पडतां बोभाट जाला.

धरणीं कौजेचीं बसलीं. तेव्हां कदीमचे कारभार्याचे हातें काम चालवून सरदारीदाखल आंगरे यास शिंद्यानीं ठेविलें. मुरारजी मुंबईस, त्याचा बंदोबस्त असावा येविशीं इंग्रजी सरकारचे वकील लष्करांत, त्याजवळ आंगरे याचें बोलणें विनायकराव दिवाणजी घेऊन गेले. त्यांनीं जनरलसाहेबाचा जाब आणवून त्याप्रमाणें करूं असें सांगोन जाब आणवून मुरारजीस खाबयास अडीचशें रुपये दरमहा देत जावा ह्मणजे त्याचा बंदोबस्त इंग्रजी सरकारांतून ठेऊं याप्रमाणें बंदोबस्त ठरवून दिल्हा. अजम मेहेरबान साहेब अलफिस्टन बहादुर व अजम मरसन साहेब व जे साहेब त्या स्वारींत आले त्यांच्या भेटी जाफत शिंद्याचे योगें आंगरे यासी त्या स्वारींत जाऊन उज्जनीची मामलत संभाजी आंगरे यांजकडे त्याचें व मैनाबाई शिंदे उज्जनीस याचें वांकडें येऊन त्यापासून संभाजी आंगरे वेगळे राहिले. बाबुराव व मैनाबाईचा एक विचार होऊन संभाजीकडील मामलत बाबुराव यांहीं आपलेकडे घेण्याविशीं शिंद्याचीं पत्रें करून घेतलीं आणि मैनाबाईकडे पाठविलीं. तीं संभाजीचे बंधु उज्जनीस त्यांनीं मान्य न करितां बाईचे तफेचे अमलावर तोफा वगैरे शिबंदी पाठऊन सख्तीनें अंगल बालवूं लागले. तेव्हां फार जिकीरीचीं पत्रें बाईचीं लष्करांत आल्यावर बाबुराव यांनीं विनायक परशराम दिवाणजी यांस ते कामावर रवाना केलें. त्यांनीं संभाजीपासून अंगल घेतला. बाबुराव लष्करांत. त्याजवळ रास्ते यांची फौज होती त्यामुळें व मनस्वी खर्चांमुळें ओढ फार जाहली. शिंदे यांजकडून खर्च पुरेना. थोडा खर्च ठेवा ह्मणत तें हे ऐकतना. याजमुळें दोघाचें चित्त निर्मळ राहिलें नाहीं. मग रास्ते यांचे फौजेनें धरणें देऊन सख्तीचा तगादा केला. पलटण शिंद्याचें आणून उठवून लाविलें. शिंदे याची भेट फार थोडी होऊं लागली, खर्चास थोडें येऊं लागलें, तेव्हां येथें राहूं नये असें चित्तांत येऊन लग्न कन्येचें होणें या निमित्त्यानें निरोप घेऊन उज्जनीस आले. लग्न दोन कन्येचीं करून वर्षानंतर शिंद्याचे मुलीचे लग्नास लष्करांत फिरोन जाऊन तेथें सहा मास राहिले. त्याजकडून याजविशीं अनादर पडूं लागलोस पाहून व लष्करांत बेआरामी फार जाहली सबब उज्जनीस गेले. येथें येऊन रयतेवर पट्टी लग्नखर्चाबद्दल केली व रयतेस जलेली केली. हे बोभाट शिंद्याकडे जाऊन मामलतीस जसी येणार हें वकिलानीं लिहिलें. त्याजवरून विनायकराव दिवाणजी यास लष्करांत ग्वालेर मुक्कामीं पाठवून तेथील जाबसाल करून शिंद्याची मजीं साफ करून दिवाणजीस वखें शिंद्यानीं दिल्ली व आंगरे यांस पन्नास हजार रुपये खर्चास व लष्करांतून व बलमपौर्चे वगैरे घेऊन आले. उज्जनीस आले. नंतर एक वर्ष राहिले. संस्थान रास्ते याजकडे कर्जांत गुंतलें. लष्करी फौजेतून शिंदे याहीं दोन लक्ष रुपये कर्जाऐवजीं लाऊन दिल्ले. परंतु खर्चाचा पैसा गुंतोन राहिला. जातीचा खर्च भारी त्या मुबदल्यास खर्च जाला. रास्ते यास रद्द कर्ज होईना. संस्थानीं खर्च फार. जमा थोडी. तेव्हां खंडेराव यांनीं विचार केला कीं, रद्द कर्ज आपलें होय ती शुक्ति करावी. संस्थान ओढगस्त हे येऊन जालें. आपल्यास काय ? तेव्हां आंगरे यांचे मेहुणे संस्थानीं त्यास

तोड याची विचारली. त्याच्याने न होय तेव्हां परशराम दिवाणजीस पुण्यास नेऊन संस्था-  
न तुझीं आटपावे आणि आमचा पैका फिटे तें करावे. याप्रमाणें घाट उरवून दिवाणजीनीं  
आंगरे याचा रुकार संतोषानें आला तो आणून, चार हाताखालीं आणखी घेऊन रास्ते  
याचा फडशा तोडजोडीनें सावकाराकडून केला. तें रद्द कर्ज करण्यानें संस्थानीं ओढ फार पडली  
व पदरचे मंडळीसही थोडें पोचू लागलें. परंतु आंगरे याचें काम होऊन संस्थान मोकळें  
जाहलें. इतक्या संधींत खंडेराव रास्ते यांचा काळ जाला. राहिला पैका तात्याचे मागें दिवाण-  
जीनीं त्याचे पुत्रास आदा केला. मग फिरोन बोभाट लष्करांत नेमणूकवाले वगैरे रयतेचे  
जाऊन पत्रें आल्यावरून आंगरे यास बाईट वाटून आह्मास संस्थानीं जाण्यास निरोप  
द्यावा हें पत्र पाठविलें. तेव्हां शिंद्याचें पत्र निक्षून आलें कीं, वैशाखमास हल्लीं आहे तों  
लौकर निघोन जावें. पुढें परजन्य येतो सबब लौकर जावें. हें पत्र पाहतांच आंगरे याची  
मर्जी ठीक राहिली नाही. वकिलाचीं पत्रें आलीं कीं तुझावर वराता पलटणच्या होणार  
व मामलतीचे घालेमलीच्या सनदा जाहल्या. तेव्हां मैनाबाई उजनीस त्याचे विचारें येथें  
राहूं नयेसें ठरून विनायकराव दिवाणजीचे विद्यमानें कर्ज काढून संस्थानीं यावयास नि-  
घाले. ते जांबगांवास पावले. बरसात फार व बेअरामी सबब तेथेंच मुकाम केला. माणिकगड  
किल्ला व त्याखालीं मुलूख तो रास्ते याचे वडील पुत्र गोपाळराव रास्ते याजकडे त्याची रयतेस  
जलेली व संस्थानासीं बिघडून चालले सबब परशरामपंत दिवाणजी पुण्यास गेले. रास्ते  
यास समजोन सांगतां दाजी रास्ते खंडेराव याचे पुत्र लहान, त्याचे कारभारी बाळाजी-  
पंत नातू वगैरे खंडेराव याचे कारकीर्दीतील. माहीत त्यांनीं दिवाणजी सांगतलिल तसें चाला-  
वयाचें याप्रमाणें सांगितलें. गोपाळराव वादास उभे राहून रास्ते याचे कारभारी व दिवा-  
णजीस धरावें अशी तऱ्हा करूं लागले. त्यास आश्रय सदाशिव माणकेश्वर देऊं लागले  
तेव्हां पेशवेसरकारांतून कोणाचा बंदोबस्त होईल न होईल हा निवाडा ध्यानीं येईना. हें  
चित्तांत आणून दिवाणजीनीं निश्चय केला कीं, इंग्रजी सरकार हे ईश्वरी अंशाप्रमाणें चालीचे. याचे  
पदरीं आपण पडिल्यानें आपलें व आपले खावंदाचें कल्याण होईल व वाजवी निवाडा  
याच जागीं होईल, असा निश्चय करून अजम मेहेरबान अलपिष्टन साहेबबाहादर यांची  
भेट घेऊन मजकूर समजाविला. साहेबबाहादर यास या कामावांचून कांहीं दरकार नवती,  
परंतु थोरपणाकरितां मजकूर ऐकोन घेऊन पेशवेसरकारांत सांगोन चितोपंत देशमुख याज-  
कडे पंचायत सांगितली. तेथें बोलणें होतां गोपाळराव स्वतः उठोन दिवाणजीचे कारकुनाचे  
तोंडांत मारली. कारकुनानें जास्त न करितां घरीं येऊन दिवाणजीनीं साहेबबाहादर यांस  
कळविलें. मग साहेबानीं या कामाची पंचाईत चौथे मिळऊन स्वतः केली. पांच सहा मास  
फार इजा पडली. परंतु साफ निवाडा रास्त करून नंतर कसें जाहलें तत्राप रास्ते, आंगरे  
याचे कामास आले हें थोरपणानें मनांत आणून, त्याचेविशीं दिवाणजीशीं समजोन  
सांगोन त्याचे मंडळीसुद्धां न्यास नेहमीं इनाम उभयतां पुत्रांस करून देऊन, त्याचा पैका

निघाला तो ठरऊन, राहिला मुलुक व किल्ला माणिकगड संस्थानाकडे दिल्या. जामगांवाहून विनायकराव दिवाणजी पुण्यास येऊन साहेबबहादर यास भेटून, आंगरे याची तबियतीचा हवाल व आंगरे यास बरें वाईट तर आह्मास इजा पावेल वगैरे सांगोन फिरोन जामगांवीं गेले. तो सन अर्धा अशरीनांत आंगरे याचा काळ जामगांवीं जाला. बरोबर त्याचीं कुटुंबें व मानाजी व कानोजी आंगरे वगैरा मंडळ होतें. त्यास मानाजी आंगरे याणीं बाबुराव याची क्रिया केली आणि बैदाबखेडा होऊं पावेल सबब कामांत विनायकराव दिवाणजी होते त्याणीं बंदोबस्त ठेऊन सर्व खटलें संस्थानीं घेऊन आले. आणि दरबारांत संस्थानचें चांगलें व्हावें हें बोलणें चालऊन जें होईल तें जेव्हाचे तेव्हां सर्वास व आधिपत्य बाबुराव याची स्त्री काशीबाई याचें राहिलें. त्यास कळवून त्याचे हुकुमांत चालत असतां आंगरे याचे मेहुणे घाटगे होते त्याणीं व एक दोन आणखी त्यास मिळोन बाईस समजाविलें कीं, दिवाणजीचा पैका स्वारीसमंधें व रान्तेसमंधें कमकसर सवा लक्ष रुपये देणें. पेशवे किंवा इंग्रज याचे घरांत संस्थान घालावें, हीं बोलणीं बोलतात यास्तव याजला कैद करावें. त्यास साधन सदाशिव माणकेश्वर याचा रुकार आणिला. आणि दिवाणजीची मंडळी व कुटुंबें कैद करून विनायकराव यांस जंजिरे खांदीस अटकेस ठेविलें. रकम भाव सर्व जप्ती करून नेली, व मानाजी आंगरे यास बाबुराव याणीं लष्करांत नेलें होतें ते बरोबरच आले. त्यास कुलाब्यास कुटुंब कैदेत फिरोन ठेऊन पंधरा रुपये दरमहा दर खाशे माणसास नख्त कापड मुदपाखसुधा नेमणूक देऊं लागले. तेव्हां दिवाणजीचे कारकून खुद आपलें नुकसान करितील या संशयाकरितां पुण्यास ठेविले होते. त्याणीं अजम मेहेरबान अलपिष्टन साहेबबहादर यास जाला वाका अर्ज केल्यावरून दिवाणजी कांहीं दरबारांत वांकडें बोलले नाहींत. हा जुलूम त्याजवर असं दिलांत येऊन पेशवेसरकारांत पोगाम पोचऊन तेथील ताकिदीनें दिवाणजीस खुलासा होऊन आजपासून आम्हीं आपली चाकरी सोडली, बरतफीचे विडे द्यावे हें बोलोन बाईपासून घाटगे याचे विद्यमानें विडे घेऊन पुण्यास गेले. नंतर साहेबबहादर याची मुलाकत जाहली. दिवाणजी कायम आहेत हे व पुढें होईल दिवाणजीचा वंश याजवर ये हसान साहेबबहादर याहीं कंपनीसरकारांतून केलें. मुलाकत जाहल्यावर दिवाणजीस सांगितलें जें, संस्थान पेशवे यांचे ताबेंतील, सबब संस्थानसमंधें पेशवे करितील तें होईल. तुमचा पैका देणे तो वाजवी कोण मालक होईल तो होईलच. इतकें सांगोन दिवाणजीचे सालसीवर मेहेरनजर ठेवीत गेले. तिकडे संभाजी आंगरे याहीं शिंदे याचीं पत्रें पेशव्यांस घेऊन पुण्यास आले. पेशवे याणीं दिवाणजीस बोलाऊन बहुत खातरी करून सांगितलें कीं, संस्थानीचीं वस्त्रें कोणास द्यावयाचीं हा निर्णय होऊन द्यावयाचीं. त्यास तूर्त तुम्ही संस्थानीं जाऊन कारस्थानानें किल्ले कोट आपले हवालें होत असें करून सरकारांत कळवावें. त्याप्रमाणें विनायकराव दिवाणजींनीं शिबंदी-सुद्धां संस्थानीं जाण्याची तयारी केली. मानाजी आंगरे याचे इशारे दिवाणजीस आले कीं

आमचा उपयोग करावा व संभाजी आंगरे याचे बोलणार येऊन लोभ दाखऊन दिवाणजीशीं आमचे कामांत पडावें व खर्चास द्यावें. काम आमचें न जाहल्यास परत देऊं. आमचीं वस्त्रें घेऊन जावीं वगैरा खात्री दाखऊन बोलों लागले. त्यास पेशवे यांचे मर्जीअन्वये आम्हांस चालावें लागेल, वस्त्रें आम्ही घेत नाहीं, खर्चास तुम्हांस देऊं, काम न जाहल्यास आमचा ऐवज द्यावा, याप्रमाणें त्यास सांगोन पेशवे यांस इतल्ला करून विनायकराव संस्थानीं येऊन युक्तीनें संस्थानची आटप किल्ले कोटसुद्धां करून पेशवे यांस कळवितांच सन खमस अशरांत श्रावणमासीं मानाजी आंगरे यास वजारतमाहा सरखेल या पदाचीं वस्त्रें व सनदा हुजरे यांज-बराबर संस्थानीं पाठविलीं. संभाजी आंगरे याची भेट दिवाणजीचे विद्यमानें पेशवे यांची एक वेळ होऊन सदाशिव माणकेश्वर कारभारी याचे मुखें संभाजीस सांगितलें कीं, या दौलतीचा वारसा मानाजी आंगरे याचा. कांहीं कारणामुळें बाबुराव यास वस्त्रें जालीं तीं ते जिवंत तों-पर्यंत केले तसें निभाविलें. तुमचे विस्ताराचा समंध नाहीं, हें सांगितलें. तेव्हां संभाजी आंगरे याहीं दिवाणजीस सांगून खर्चास मागून दिवाणजीची मेजवानी घेऊन पैका देणें तो लष्करांतून पाठऊं असा करार करून शिंद्याचे लष्करांत गेले. पस्तीस हजार रुपये दिवाणजीचे मारफतीचें देणें राहिलें. बाबुराव यांणीं सोळा वर्षें व त्यांचे स्त्रीनें एक वर्ष एकूण सतरा वर्षें संस्थान चालविलें. पुढें मालक संस्थानीं मानाजी आंगरे जाले. बाबुराव यांस पुत्र नाहीं.

१ मानाजी आंगरे संस्थानारूढ जाहल्यावर कारभार विनायकराव दिवाणजी करीत असतां, तीन महिन्यांनंतर बाबुराव आंगरे यांची स्त्री काशीबाई त्याचे बंदोबस्ताविशीं मानाजी-बावाशीं रद्दबद्दल करून चालत आल्याप्रमाणें जातीचा बंदोबस्त पालखी, घोडी, रथ वगैरा इतमाम कायम करविला. परंतु त्याजविशीं जुने मंडळींनीं मानाजीबावाचे मनांत संशय आणिला कीं, दिवाणजी बाबुराव याजवळ होते, हे आपले लक्षांत चालतील न चालतील. याजवरून दिवाणजीची गैरत दरबारांत केली. त्याजवरून दिवाणजी पुण्यास पेशवे व इंग्रजी सरकारचे कृपेची वृद्धि राहावी याबद्दल पुण्यास होते त्यास कळलें. तेव्हां संस्थानीं एक दोन बखेडे जाहले. ते दिवाणजीचे ध्यानीं येतांच बखेडे मोडून पुण्याहून मानाजीबावाकडे जाऊन ज्या तऱ्हेनें त्याची खात्री होय ते करून, बाबुराव यांचे स्त्रीचें चालत आल्याप्रमाणें चालविलें. आठ महिने मानाजीबावाचे दिलांत मळ दिवाणजीविशीं होता, ते साफ होऊन पेशवे यास इतल्ला दिवाणजींनीं देऊन फिरोन कोणी कुभांडी मालकाचें नांव करून दरम्यान दिवाणजीचा बोभाट सांगितली सबब पेशवे यास विनंती करून त्याचे खासगींतील कारकून मानाजीबावाकडे पाठऊन विचारिलें. तेव्हां दिवाणजीचा आमचा बेमिलाफ असें सांगितलें. संस्थानचीं वस्त्रें द्यावयाचीं ठरलीं. तेव्हां खांदेरी किल्ला व दाहा हजार रुपयांचा मुलूक द्यावयाचा पेशवे यांस कबूल केल्याप्रमाणें दिल्या. मानाजीबावाचे कनिष्ठ बंधु कानोजी आंगरे यांस एक वर्ष वाखा होता ते मृत्यु पावले. सन सबा. अशरांत मानाजी आंगरे पेशवे याचे भेटीस पुण्यास जाऊन चैत्रमासीं पेशवे कोत्रुडचे बागेजवळ सामोरे



येऊन भेटी होऊन तेच दिवशीं सरखेल यास दिवाणजीसुद्धां नेण्यास कोत्रुडास बोलाऊन सरखेल व दिवाणजीस वखें दिलीं. नंतर पांच चार भेटी सरखेलच्या होऊन बोलणीं साफीचीं जाहलीं. तेव्हां खांदेरी किल्ला संस्थानाकडे परत द्यावा हीं बोलणीं सरखेल बोलले. उत्तम ओह हें पेशवे बोलले. दिवाणजीचा त्याचा एक विचार पाहून पेशवें यांसही संतोष जाला. पुढें कंपनीसरकार व पेशवे यांचे दोस्तींत कमी आल्यामुळें पुण्यासभवतीं पलटणें जाऊन साफीचा तहनामा जाला. त्या घालमेलीमुळें पेशवे यांची मजीं त्या कामांत गुंतल्यामुळें आंगरे यांचे भेटीस अडचण पडूं लागली. व मेजवानी पेशवे यांस होणें ते तूर्त करूं नये हें सांगितलें. तेव्हां मजींचा रुख पाहून सरखेलनीं सांगून पाठविलें कीं, दिवाणजीस येथें ठेऊन आह्मी संस्थानीं जातो. त्याजवरून शुक्रवारचे वाड्यांत भोजनास सरखेलीस पेशवे यांहीं बोलाऊन निरोप दिल्हा. तेव्हां गेल्यापासून चौथे महिन्यांत सरखेलची स्वारी संस्थानीं आली. दिवाणजी पुण्यास राहिले. तेथें आवा पुरंदरे यांचे मारफतीनें संस्थानाविशीं कुभांड दरम्यान उभें राहिलें. त्याचा बंदोबस्त दिवाणजीनीं दरबारचे मजींनें तेथें राखिला. पुढें अश्विनमासीं निरोपसमयीं सरखेल याजवळ बोलणेंयांत आल्याप्रमाणें खांदेरी किल्ला परत मुलुकसुद्धां देण्याच्या सनदा देऊन परत दिल्हा. व रेवदंडा तालुका येथील मामलत दिवाणजीचे नांवें करून दिल्ही. हा भेद दिवाणजीस कांहीं ठाऊक नाहीं, परंतु दिवाणजीचे मनांत जसी ईश्वराजवळ साफ चालावें, तसेंच कंपनीसरकारामुळें आपण कल्याण पावलों, सबब तेथें साफ चालावें हा भाव खचित चित्ताचा हमेशा, यास्तव इतल्ला मेहेरबान अजम अलफिष्टन साहेबबहादर यांस दिल्हा. पुढें बाजीरावसाहेब यांहीं कंपनीसरकारशीं बिघाड अश्विन वद्य एकादशीस केला. ते रात्रीस पर्वतीवर बाजीराव यांचा मुकाम, तेथें दिवाणजीनीं जाऊन संस्थानचे बचावास्तव निरोप मागितला असतां, जाऊं नये आमचे लष्करांत राहावें हें सांगणें पडलें. त्याप्रमाणें लष्करांत राहिले. मग पेशवे याणीं मनांत आणिलें कीं, दिवाणजी कंपनीसरकारचे लक्षांतील. यास आपले कामांत गुंतवावें ह्मणजे तिकडील लक्ष कमी पडेल. जाणोन अवचीतगड व उंदेरी वगैरा मामलती सांगितल्या. तेव्हां हा भाव दिवाणजीस सर्व कळला परंतु कबूल केलें. कार्तिक शुद्ध अष्टमी रविवारी लढाईत शिकस्त पाऊन पेशवे रात्री निघोन चालले. दीड कोशावर दिवाणजीनीं पेशवे यांस इतल्ला करून व साहेबबहादर याजकडे पुण्यास कारकून रवाना करून आपण निघोन संस्थानीं येऊन पेशवे याचे किल्ले दरम्यान कोणाचे हातीं जाऊं पावेनात असा बंदोबस्त ठेऊन कच्चा इतल्ला मुंबईस अजम मेहेरबान जनराल साहेबास दिल्हा. तेथोन पत्र दिवाणजीस हुशारी देऊन आलें. इतक्यांत मानाजी आंगरे यांस एकाएकीं एक दिवस वारखा होऊन दिवाणजी रेवदंड्यास बंदोबस्ताकरितां गेले होते त्यास बोलावणें पाठविलें. ते येत तो मानाजीबावा मृत्यु पावले. तेव्हां कुटुंबाचीं माणसें सरखेल साहेबाचीं सर्व बहुत दुःखित जालीं. त्याचे पुत्र राघोजी आंगरे तेव्हां बारावे वर्षाचे सुमारांत व पेशवे राज्यांत बैदा याजमुळें सर्वास संकट पडलें. संस्थानचीं वखें नसलीं तर एखादें कुभांड

करील जाणोन महाराज छत्रपती स्वामी व बाजीराव एकत्र फिरत होते. यास्तव तेथून वस्रें आणून मुंबईस इतळा जनरल साहेबास करून राघोजी आंगरे संस्थानारूढ जाले. साडे तीन वर्षे राज्य मानाजीबावानीं केलें. दिवाणजीनीं मानाजीबावा सरखेल कायम असतां सरखेल याचे विचारें थोरले सरखेल राघोजी आंगरे यांणीं छत्तीस वर्षे राज्य चालविलें. तो पाया चांगले रीतीविषयीं धरून कामाचा क्रम चालविला, व मागील कारकीर्दीचे परागंदा होऊन गेले व संकटांत होते त्यांस आणून सर्व दरक पेशजीचेप्रमाणें ज्याचे त्यास दिले. ज्यांणीं मानाजीबावाविषयीं पूर्वील कारकीर्दींत बखेडे केलें त्याणींही कौल मागितले त्यास देऊन पोटास देऊन त्याचे बंदोबस्त करून दिले.

१. राघोजी आंगरे संस्थानारूढ जाहल्यावर संस्थानचें काम चालतें जाहालें. परंतु बाजीराव यांचा कंपनीसरकाराशीं बिघाड राहून बैदा चालला होता तेव्हां दिवाणजीचे हवालीं बाजीराव यांणीं केले ते जनरल साहेबाचे हुकुमाप्रमाणें इंग्रजी सरकारचे ताबे जाहाले व अजम कर्नेल फरोदर फौज घेऊन पाली, तळगड, भोरप वगैरा किल्ले घ्यावयास आले. तेव्हां संस्थानीं लिहून आल्याप्रमाणें लोक शिबंदसिद्धां सामील राहात गेले. कंपनीसरकाराशीं रुजू राहून चालींत अंतर न केल्यामुळें कंपनीसरकारची मर्जी संस्थानिकावर व दिवाणजीवर चांगली राहात गेली. इतक्यांत महाराज छत्रपती यांस रथापून बैद्याचा बंदोबस्तही कंपनीसरकारांतून जाला. सरखेल वयानें लहान सबब त्याची मातुश्री गजराबाईसाहेब व मानाजीबावाची सावत्र मातुश्री नरमदाबाईसाहेब हीं एक जागां एक चित्तें राहून आपलें धरचालीप्रमाणें चालत आल्याप्रमाणें सर्व कुटुंबाचा आळा करून दौलतीचें काम रोज बेरोज आपण समजोन घेऊन दिवाणजीविषयीं विश्वास व कंपनीसरकारचा सर्व प्रकारें भरंवसा ठेऊन काम चालविलें. व सरखेलसाहेब यास लिहिणें व शस्त्रविद्या वगैरा यांत तयारी करीत चालले. मग दुसरे वर्षी सन तिसा अशरांत सरखेलसाहेबाचें लग्न जाहालें. जनरल साहेबांनीं मुलूक मोबदल्या प्रकर्णींकरितां अजम उडलिमसाहेब यास पाठविलें. ते शादींत सामल होते व शादीचें बोलावणें होतें सबब संस्थानिकावर मेहेरनजर याजमुळें अजम पिलसाहेब व अजम रीटसाहेब यांस शादीचे समारंभाकरितां जनरलसाहेबांनीं रवाना केलें. त्याजवरून सरखेल साहेबाचे खानदानाचे माणसास बहुत खर्च जाला. समारंभ चांगला जाला. दिवाणजीविषयीं सरखेलचीं खानदानचीं माणसें व बाईसाहेब कामांत त्याची मर्जी बहाल राहून त्याचे जातीचा सरंजाम वगैरे नेहमींचा बंदोबस्त आंगरे सरकारांतून करून त्याविषयीं मेहेरबान अलफिष्टनसाहेबबहादुर यांस लेहून त्याजकडून कंपनीसरकारतर्फेन खानी दिवाणजीधी करविली. रेवडंडा मुक्कामीं दिवाणजी जाऊन सदरीं लिहिले ते त्रिवर्ग साहेब यांमध्ये दिवाणजीचीं बोलणीं मुलूक मोबदल्याचीं जाहलीं, इंग्रजी सरकारांतून मुंबईहून सरखेलसाहेब यास बिलोरी झाडें वगैरा पाठविलीं. पुढें अजम मेहेरबान बंदेगान अल्ली अलफिष्टनसाहेब जनरल बहादुर यांचे येथें मुंबईस जाहलें. तेव्हां सरखेलसाहेबांनीं विनायकराव दिवाणजीस पाठऊन मुलाक

करून संस्थानाविषयीं मेहेरनजर जाहिरात आल्यानें सर्व बैदे बखेडे दूर होऊन संस्थानचें काम सुरळीत चालू होऊन दौलत खराब घटंत्यानें जाहाली, तिचा बंदोबस्त होत चालला. कदीम बाडिलाचे वेळचीं माणसें सर्व दरकावर कायम जाहालीं. दिवसेंदिवस सरखेलसाहेब घोडेस्वारी व हत्यार व लिहिणें वगैरा चालींत तयार होत जाऊन कामकाजाचा किता मोहर दसकत वगैरा स्वहस्तें करण्याचा राबिता ठेऊन माहितीस मजबुदी होत चालली. कंपनीसरकारचे मेहेरनजरेचे वृद्धीविषयीं दरसाल दिवाणजीस मुंबईस पाठऊन कंपनीसरकारांनीं सरखेलसाहेबाची वृद्धि व्हावी हें ध्यानीं आणून संस्थान व कंपनीसरकार या दरम्यान कसी चाल राहावी याविषयीं तहनामा ठरावांत आणिला. हल्लीं सरखेलसाहेब सोळा वर्षांचे वयांत येऊन उभयतां बायांचें लक्ष धरून, रोज बेरोज काम समजोन घेऊन, दिवाणजीचे हातें काम घेऊन सर्व खानदानाचीं माणसें त्यांचा गौरव त्यांचे दरजाप्रमाणे चालऊन कंपनीसरकारचा भरंवसा सर्व प्रकारें ठेऊन उपभोग संस्थानचा करीत आहेत.

आंगरे वजारतमहा सरखेल यांस मानमरातब वगैराचीं चिन्हें पेशवे यांचे घरीं चालत आलीं.

१ भेटीस एक कोस सामोरें येऊन वहानाखालीं उतरून गाशावर भेटून समागमें आपले मकानास उजवे बाजूस घेऊन जाऊन विडे देऊन मकानास जावयास निरोप द्यावा आणि मेजवानी पाठवावी.

१ उभयतांची बैठक जाहल्यास खडी ताजीम घेऊन गालीचावर मध्यें दोन तकीये ठेऊन उभयतां एका गालीचावर बसावें.

१ आंगरे यांचे निशाणावर शंखाचें चिन्ह.

१ झेंडा भगवे कापडाचा व ढाल भगवीच.

१ बहुमान करणें तो सरकारतर्फेचा आंगरे यांस.

१ वस्त्रें पांच.

१ कंठी मोत्याची.

१ घोडा.

१ शिरपेंच जडावी.

१ मोत्याचा तुरा.

१ हत्ती.

१ भोजनास बोलवावें.

१ सरखेलनीं मेजवानी केली असतां त्याचे मकानीं जाऊन घ्यावी.

१ राजकीय दिल्लेलीं चिन्हें.

- १ पदाचा मराठब सदरीं लिहिला आहे.
- १ मोरचेले दोन पाछाईतून दिल्लीहून महादजी शिंदे यांहीं आणिलीं.
- १ सोन्याच्या काठ्या चोपदारास.
- १ जरीपटका.
- १ साहेबनौबत हत्तीवरील.
- १ चौघडा.
- १ लगी भरजरी दोन जिभाची.

सदरहू योग्यतेस योग्य तितकीं चिन्हें चालवावींसें चालत आहे.

१ स्वतः राजे छत्रपती महाराज वखें देत गेले तेव्हां एक चादर जास्त देत गेले.

सदरहूप्रमाणें बखर अजम वार्डनसाहेब तरजुमा मुनसीखाना यास छ २४ रमजान सन खमस अशरीन जेष्ठ वद्य ११ शके १७४४ त दिल्ली असे.

## २ कदम बांडे.

कैफियत भास्करराव वगैरे इसम तीन व कृष्णराव वगैरे इसम तीन कदम बांडे यांजकडे मौजे कोपरली व ठाणें व रनाळें, तिन्ही गांव कसे चालतात, याची सनदपत्र काय आहे, वाहिवाड कशी, याचा दाखला लिहून पाठवावयासी हुकूम आला. त्यास सनदपत्रें तों बंडांत गेलीं; पुर्जा राहिला नाहीं, परंतु संपादन करणार कोण व हल्लीं खाणार कोण, इनामी किंवा कसें, दिल्ले कोणी, याची माहिती आहे. तो मजकूरः—

१ कसबे रनाळें मूळ संपादन करणार अमृतराव कदम बांडे हे प्रथम विजापुरास होते. पादशाहापाशीं शिलेदारीची चाकरी करीत असतां दरम्यान कांहीं वांकडें जाल्यामुळें जाती-नशीं सडे निघोन साताऱ्यास छत्रपती महाराजांचें कुटुंब ताराबाई राज्याचा कारभार करून होते त्यांची भेट घेतली. त्यांनीं मर्द माणूस पाहून, गंगेचे पलीकडे मोंगलाई अमलांत मोकासा आपला आहे, तो कायम करण्याविशीं सांगून रवाना केलें. त्याप्रमाणें यांणीं अंमल नंदुरबार, सुलतानपूर आदिकरून ज्याहमर्दीनिं बसविले, आणि आपण कुकुडमुढ्यास राहिले. पुढें कांहीं गैरचालीनिं चालूं लागले म्हणून मोंगलांनीं बोभाट छत्रपतीकडे सांगितला. तेथून बांड्यास हुकूम आला तो मानिला नाहीं. त्याजवरून सरकार इतराजीं होऊन दाहा हजर फौज येऊन कुकुडमुढ्यास मोर्चे लाविले. दोन महिने लढाई झाली. पुढें खावयास नाहीं सबब कुडुबें घोड्यावर पाठीशीं बांधून, सरकारचे मोर्चे उठवून निघोन निखलवाहाल माहालीं उंबराण्याची बांड्याची पाटीलकी होती तेथें येऊन राहिले. मागाहून सरकारी सरंजाम तेथें येऊन मोर्चे

लाविले. तीन दिवस लढाई होऊन गोळी लागून अमृतराम कदम ठार जाले. मागे त्यांचे चिरंजीव सवाई त्रिंबकराव कदम एक वर्षाचे होते. व सखे बंधू संताजी कदम व चुलत चुलत बंधू रघोजी कदम वगैरे त्रिवर्ग बंधू पराक्रमी मर्द मनुष्य जाणोन, सेनापती दामाडे यांनीं सरकारांत अर्ज करून याजला हुजूर बोलावून, परगणे नंदुरबार येथील निमे मोकासा व परगणे सुलतानपूर येथील मोकासा दरोबस्त चाकरीचे पोटीं लावून देऊन दोनशें स्वारांनिशीं सरकारांत असावे असा करार करून घेतला; आणि गुजराथप्रांतीं अंमल बसविण्यास पाठविले. त्यावरून पंचवीस तीस हजार फौज ठेऊन गुजराथ सर करून रनाळें मुक्कामीं आले. नंतर शाहू महाराजांची कन्या गजराबाई रघोजीबाबाचे कनिष्ठ चिरंजीव मल्हारराव कदम यास दिली. नंतर मागती गुजराथ प्रांतीं गेले. पुढें छत्रपतीचा कारभार थोरले बाजीरावसाहेब पेशवाईचा करूं लागले. त्यांचें व बांडे यांचें कांही कारणावरून वाकडें जाल्यामुळें मल्हार खुणी व पिलाजी गायकवाड यांस सुभे करून गुजराथींत पाठविले. त्यांची व बांड्याची लढाई दोन वर्षे होऊन बांडे शिकस्त खाऊन रनाळें मुक्कामीं आले. सरकार इतराजी जाणोन पेशवे यांनीं इतलाखी सरंजाम सर्व दूर करून मोकासे प्रकर्णीं स्वार मात्र कायम ठेविले, आणि जातीचे खर्चास कसबे रनाळें हा गांव इनामी कुलबाब कुलकानू करून दिल्या. त्याची सनद त्रिंबकराव कदम व संताजी कदम व रघोजी कदम व कंठाजी कदम व गोजाजी कदम पांच इसमांचें नांवें करून दिली. त्यास कमपेशांभर वर्षे जालीं; व ही वहिवाट सुरळीत चालत आली. दरम्यान सरकारांतून त्रिंबकजी डेंगळे यांजकडे नंदुरबार सुलतानपूर येथील मोकाशाची जप्ती जाली. त्यांनीं मोकाशाची जप्ती करावी; ते न करितां, इनामी गांवसुद्धां सनदेवांचेन चार वर्षे केली. त्याचे मोकळिकेचाही उद्योग चालला होता. परंतु डेंगळे याची चाल दरबारांत भारी, यामुळें दिवसगत लागले. इतक्यांत सरकार कुंपणीचा अंमल सन १२२७ चे अखेरीस आला. मजकूर समजोन घेऊन गांवची मोकळीक करून दिली. त्याप्रमाणें वहिवाट सुदामत वहिवाटप्रमाणें चालत आहे. मेळविणार व वहिवाट करणाराची वंशावळी.

१ त्रिंबकराव कदम इसम एक. त्याचे चिरंजीव सवाई अमृतराव कदम. याचे चिरंजीव बळवंतराव कदम. याचे चिरंजीव भास्करराव व खंडेराव व मार्तंडराव कदम. हल्लीं कायम रनाळेंपैकीं बुधवार पेठ व जमीन आपले हिशाप्रमाणें उपभोग करून आहेत.

संताजी कदम इसम दुसरे याचे चिरंजीव.

१ खंडेराव कदम

१ अमृतराव कदम

२

यांसी वंश

खंडेराव कदम. याचे पुत्र  
संताजी कदम. त्याचे पुत्र  
आनंदराव कदम हल्लीं  
कायम आपला हिस्सा  
खाऊन आहेत.

अमृतराव कदम. याचे चिरंजीव  
आनंदराव कदम. यांचे चिरंजीव  
अमृतराव कदम व गणपतराव कदम  
व तिसरा. एकूण तिथे बंधू हल्लीं कायम  
आपले हिशाचा उपभोग घेऊन आहेत.

१ रघोजी कदम इसम तिसरे. याचे पुत्र माधवराव कदम. त्याचे चिरंजीव भगवंतराव व कृष्णराव कदम. भगवंतराव याचे चिरंजीव दौलतराव व गोविंदराव व नारायणराव तिथे बंधू. कृष्णराव यासी संतत जाली नाही. तिघांचे वंशांचा तपशीलः—

- १ दौलतराव यांचे चिरंजीव कृष्णराव कदम. हल्लीं कायम आहेत.
- १ गोविंदराव यांचे चिरंजीव पर्वतराव कदम. हल्लीं कायम आहेत.
- १ नारायणराव यांचे चिरंजीव गोविंदराव कदम. हल्लीं कायम आहेत.

३

तिथेजण आपले हिशाचा उपभोग करून आहेत.

कलम

१ कंठाजी कदम इसम चौथे. त्याचे चिरंजीव चत्रशिंग कदम. त्याचे चिरंजीव यशवंतराव कदम. एकूण तीन जण.

- १ यशवंतराव याचे चिरंजीव तुकोजीराव व गणपतराव हल्लीं कायम आहेत.
- १ खंडेराव जातीनिशीं कायम आहेत.
- १ मल्हारराव जातीनिशीं कायम आहेत.

३

त्रिवर्ग आपले हिशाप्रमाणें उपभोग करून आहेत.

१ गोजाजी याचे चिरंजीव राणोजी कदम व हैबतराव कदम.

१ राणोजीचे चिरंजीव त्रिंब-  
कराव कदम त्यास पुत्र नाही.  
त्याची बायको कायम आहे.

१ हैबतराव यास पुत्र विठलराव कदम व राणोजी कदम दोघे, पैकीं विठलराव कदम पेशजी मृत्यु पावले. राणोजी कदम वहिवाट करून होते. ते सरकार कंपनीचा अंमल जाल्यावर एक वर्षांनीं निवर्तले. त्यांची बायको आहे. त्यांनीं पर्वतराव कदम दत्तक घेण्याचा विचार करून वहिवाट करून आहेत.

सदरहू पांच इसम आपलाले हिशाप्रमाणें रनाळें येथील वहिवाट करून उपभोग घेत आहेत. या गांवांत सरकारी अंमल कांहीं एक नाही. पाटीलकी आदिकरून सर्व वतने बांडेच करून आहेत. दुसरा कोणी नाही.

कलम

मौजे तोरखेड प्रगणे सुलतानपूर मूळ संपादन करणार राघोजी कदम व कंठाजी कदम व गोजाजी कदम त्रिवर्ग बंधू रनाळ्यास होते. तेव्हां तोरखेडकर राऊळ यांनीं बंड मातवून नंदुरबार, सुलतानपूर महालीं उपसर्ग मनस्वी केला. त्या काळीं जहागिरीचा अंमल मोगलाई होता. त्याचकडे महालचा बोभाट राऊळाचे उपसर्गाचा लिहिला गेला. त्याजवरून कदम बांडे त्रिवर्ग इसम यांसी बोलावून सनद करून दिली. त्यांत मजकूर राऊळाचें पारिपत्य तुम्ही करून गांवचा अनुभव राऊळाचा गिरासाचा अनुभव इनामी तुम्हीं घेत जावा. त्याजवरून बांडे यांनीं मसलतखर्च पदरचा करून राऊळाचें पारिपत्य केलें, आणि जागा कायम करून गांवचा व गिरासाचा उपभोग करीत आले. हा भोगवटा पाहून श्रीमंत पेशवे यांनींही सनदा इनाम करून दिल्या. त्यास कमपेश शंभर वर्षे होत आलीं. वहिवाट दरोबस्त अंमलाची बांडे करून आहेत. सरकारी अंमल कांहीं एक नाही. दरम्यान डेगळे यांनीं सनद नसतां जबरदस्तीनें अंमल बसवून चार वर्षे वहिवाट केली. त्याची मोकळीक करून घेण्याचा उद्योग चाललाच होता. परंतु डेगळे यांची मातबरी मोठी, सबब दोन रोज अधिक उणे लागले. इतक्यांत सरकारी कंपनीचा अंमल जाला. त्यांनीं मागील भोगवट्याचा मजकूर मनास आणून गांवची मोकळीक करून दिली. त्याची वहिवाट सुदामतप्रमाणें करून आहेत. पाटील कुलकर्णी आदिकरून सर्व वतने कदम बांडे करून आहेत. दुसरा कोणी नाही. संपादन करणार व हल्लीं उपभोग घेणारांची वंशावळः—

१ इसम पाहिले रघोजी कदम. यांचे चिरंजीव माधवराव कदम. त्यांचे चिरंजीव भगवंतराव व कृष्णराव कदम. पैकीं कृष्णराव यास संतती नाही, भगवंतराव यास पुत्र तीन.

१ दौलतराव, नारायणराव, गोविंदराव. यास पुत्र

१ दौलतराव याचे चिरंजीव कृष्णराव हल्लीं कायम आहेत.

१ गोविंदराव याचे चिरंजीव पर्वतराव हल्लीं कायम आहेत.

१ नारायणराव याचे चिरंजीव गोविंदराव कायम आहेत.

३

तिचे कायम आहेत. आपले हिशाची वहिवाट करून उपभोग घेतात. गांवची मालकी याच इसमांकडे. आणखी दोन इसम आहेत, त्याजकडे जातीचे बेगमीस दोन शेन्या नेमिल्या आहेत, त्या खाऊन आहेत.

१ दुसरे इसम कंठाजी कदम बांडे. त्यांचे चिरंजीव चत्रसिंग कदम बांडे. त्यांचे चिरंजीव यशवंतराव कदम व खंडेराव कदम व मल्हारराव कदम. पैकीं यशवंतराव कदम मृत्यु पावले.



त्यांचे चिरंजीव तुकाजीराव व गणपतराव कदम कायम आहेत. खंडेराव व मल्हारराव उभयतां जातीनेच कायम आहेत. त्रिवर्ग आपले हिशाप्रमाणें शेन्या खाऊन आहेत.

१ तिसरे इसम गोजाजी कदम. त्यांचे पुत्र राणोजी कदम व हैबतराव कदम. त्यांचे पुत्रः—

१ राणोजी कदम याचे पुत्र

त्रिंबकराव कदम पेशजी

मृत्यु पावले, कुटुंब आहेत.

१ हैबतराव यांचे चिरंजीव

१ विठलराव

१ राणोजी कदम

२

पैकीं विठलराव कदम मृत्यु पावले. राणोजी कदम सरकार कुंपणीचा अंमल जाल्यावर वर्षाभरानें निवर्तले. त्यांची स्त्री कायम आहे. ते परवतराव कदम यास दत्तपुत्र घेण्याचा विचार करून उपभोग घेऊन आहेत.

सदरहू उभयतां ज्याचे ते हिशाप्रमाणें वहिवाट करून आहेत.

कलम.

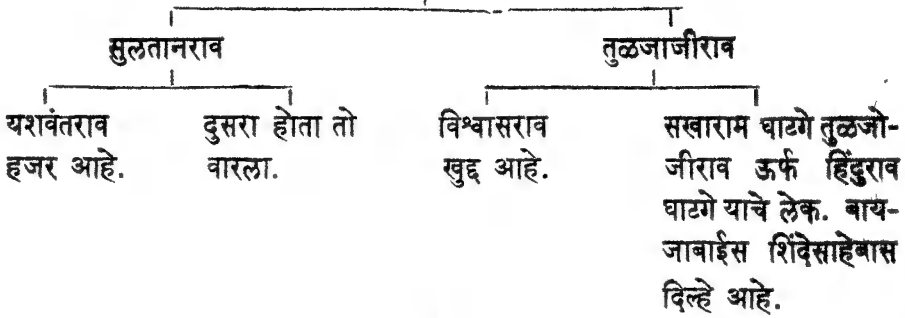
१ मौजे कोपरेल व मौजे ठाणें संपादन करणार अमृतराव कदम बांडे यांचे चिरंजीव सवाई त्रिंबकराव कदम बांडे यांजकडे पन्नास स्वार दोनशें स्वारांपैकीं लावून देऊन नंदुरबार निम्मे मोकाशापैकीं चौथाई व सुलतानपुरास गेल्या मोकाशापैकीं चौथाई लावून दिले. खेरीज वरसे व उमरपाटे जहागीर देऊन तीस स्वार नेमून चाकरी घेतली. सरदारी सामान याजकडे सबब संताजी कदमाचे हिशापैकीं दोन हजार रुपये याजकडेस देत जावे, अशी वांटणी सेनापती हातून होऊन वहिवाट चालत आली. पुढें सेनापती पेशवे यासी विन्मुख होऊन रनाळें मुक्कामीं येऊन रघोजी कदमाचे चिरंजीव माधवराव कदम बांडे यांस सामील करून घेतलें आणि स्वराज्यांत बंड करूं लागले. तेन्हां सवाई त्रिंबकराव कदम यांनीं माधवराव कदम यांस सांगितलें कीं, सेनापती सरकाराशीं बिघडून आहेत, त्याशीं आपण सामील न व्हावें. तें त्याचे ध्यानांत न येतां नंदुरबारीं जाऊन जहागीरचें ठाणें बसविलें. त्यावरून दमाजी गायकवाड पांच हजार फौजेनिशीं व आणखी इतलाखी फौज पांच हजार घेऊन सेनापतीचे पारपत्यास रनाळें मुक्कामीं आले. त्या कालीं गायकवाड्याचे चिरंजीव सयाजीबोवा यांसी त्रिंबकराव कदम याची कन्या दिल्ली. पुढें सेनापती व माधवराव कदम यांची व गायकवाडाची लढाई होऊन सेनापती व माधवराव यांनीं शिकस्त खाल्ली. त्या लढाईंत सवाई त्रिंबकराव कदम सामील न जाले, सबब सेनापती व माधवराव कदम यांनीं दंगा करून त्रिंबकराव कदम यांस ठार मारिलें. त्या कालीं त्रिंबकराव यांचे चिरंजीव सवाई अमृतराव कदम पंधरा सोळा वर्षांचे होते. ते पळून घातुशीसह गायकवाड यांचे फौजेंत आले. मार्गे सेनापती व माधवराव यांनीं बाळा बीरे लुटून नेला.

अमृतराव कदम मातुश्रीसुद्धा गायकवाडाबराबर पुण्यास येऊन थोरले माधवराव साहेब पेशवे यांची भेट घेऊन आपलें वर्तमान जाहीर केलें. त्यावरून सरकारलक्ष्यामुळे त्रिंबकराव कदम मारले जाऊन नुकसानीत आले, याचा निर्वाह जाला पाहिजे याजकरितां पेशवे यांनीं मेहरबान होऊन मौजे कोपरेल व मौजे ठाणें हरदू गांव इनामी कुलबाब व कुलकानूसुद्धां करून दिले. सनदा अमृतराव कदम यांचे नांवें करून दिल्या. त्यास कमपेश साठ वर्षे झालीं. वहिवाट चालत आली. दरम्यान सरकारांतून मोकाशाची जमीन त्रिंबकजी डेंगळे याजकडे जाली. त्यांनीं तेंच करावें तें न करितां रनाळें तोरखेड इनामगांवसुद्धां जमीन केली. कोपरलीस येऊं लागले त्या-काळीं बळवंतराव कदम बांडे यांनीं सांगितलें कीं, जमीनी सनद दाखवावी ह्मणजे ठाणें देऊं. सनद तों नाहीं मग त्यांनीं नाद सोडिला. पुढें सन १२२६ चे सालीं कादर भालदार भिळ्याचे मोहिमेवर इकडे आले. त्यांनीं कोपरेल व ठाणें यांची सनद नसतां तीन महिनेपरिंयंत ठाणें खालीं करून देण्याविशीं लढाई घेतली. कदम यांनीं सनद दाखवावी आणि ठाणें घ्यावें म्हणून सांगितलें. तें न जालें. उगीच जबरी करूं लागले. पुढें कदम यास शिबंदीचें देणें मनस्वी झालें. देण्यास ठिकाण नाहीं. लाचार जाणोन कादर भालदार यांनीं बावीस हजार रुपये दिले, ते घेऊन शिबंदीचा फडशा केला आणि ठाणें हवालीं करून देऊन कुटुंबसुद्धां निघोन ग्वालरीस गेले; आणि भिकाजी बाजीराव यासी श्रीमंताकडेस पाठविलें. ते उद्योग करून होतेच. दरम्यान सरकार कुंपणीचें व पेशव्यांचे वांकडें पडल्यामुळे श्रीमंत निघून गेले. भिकाजी बाजी माहुरापरिंयंत त्याजबराबर होते. इकडे सरकार कुंपणीचा अंमल होऊन सर्वांनीं हजर व्हावें ह्मणजे बंदोबस्त होईल ह्मणून जाहिरनामे जाले. त्याजवरून भिकाजी-पंत मालेगावचे मुक्कामी येऊन कपतान ज्यान त्रिग साहेबांची भेट घेऊन मजकूर समजाविला. त्यांनीं मागील भोगवटा पाहून हरदू गांवें सोडून सनद करून दिली; आणि पुढें आणखी बंदोबस्त करून देऊं असें सांगितलें. त्या दिवसापासून सुदामतप्रमाणें वहिवाट करून आहोंत. या गांवांत सरकारी अमल कांहीं एक नाहीं. सनदपत्रें तों गेलीं. परंतु गांव इनामी दिल्यावर पाटलांनीं आपली पाटीलकी कदमराव बांडे यांस दिली. त्या समयी पाटलांनीं बांडे यांस लेख करून दिल्या त्याची नकल हुजूर पाठविली आहे. संपादन करणार अमृतराव कदम त्याचे चिरंजीव बळवंतराव कदम त्याचे चिरंजीव भास्करराव व खंडेराव वामार्तंडराव त्रिवर्ग हल्लीं कायम आपली वहिवाट करून आहेत.

जाला मजकूर लिहून दिल्या आहे. कोपरलीस पाटील आहे, ठाण्यास पाटील आहे. त्याचे मुचलके मामलेदारांनीं जमीनदाराचे साक्षीनशीं घेतले आहेत. रनाळें तोरखेड येथें पाटील कुलकर्णी नाहीं. सर्व मालकी कदमाचीच, तेव्हां लेख कोण करून देईल? भोगवट्याची साक्ष राजाळ्याची महालाचे जमीनदारांनीं लिहून दिली आहे. सन १२३२ माहे रजब छ २७ सन १८३३ ईसवी.

## ३ घाटगे कागलकर.

कागलकर आबाजी घाटगे सर्जेराव



कागलपैकीं परगणे चिलरखंड भाऊवाठणीस जाऊन कसबा कागल व खेड मिळून सुमार ४०।५० हजाराचे मशारानिल्लेकडे होते. याशिवाय परगणेमजकूरचे देशमुखी दरो-बस्त चालत होते. ते सुमार पन्नास वर्षांखाले शिवाजीमहाराज यांणीं दरोबस्त परगणे व देशमुखीसुद्धां जप्त करून खालसातीत ठेवले होते. करितां विश्वासराव व सखाराम घाटगे दोघेही महादजी शिंदे याजकडे चाकरीस म्हणोन निघोन गेले. बाकी लोक मौजे उत्तूर व पिंपळवंडी वगैरे दोनी तिनी गांव चालत होते तेथें व आपले सोई असले जागीं जाऊन राहिले होते. कोलापुरांत महाराज कम उमरचे होते. सबब यशवंतराव शिंदे कारभार करीत होते. त्यांनीं आपले इलाखदारावरी व पराई पेशवेसरकारचे इलाखेवरी तंटाबखेडा करूं लागले. सबब याचे बंदोबस्त करणेबद्दल महादजी शिंदे यास ११८७ फसलीत पाठविलें. त्यांनीं येऊन जेर करून फौजेचे वगैरे खर्चाबद्दल २० लाख रुपये द्यावे म्हणोन तहनामेचे याद ठरविले. त्या वस्तीं सदरहू हरदो घाटगे शिंदे याजबराबर होते. सबब शिंदे याणीं कागलचें ठाणें आपले तर्फेन घाटगेचे सुपुर्द करून तहाचे यादीत घाटगे कागलकर हे पुरातन सेवक राजमंडळचे याजकडे पहिलेपासून कागल आहे. अलीकडे शेषोनारायण याचे कार-कीर्दीस महाराजांनीं सरकारांत घेतलें होतें, तें फिरोन आम्हीं घेऊन घाटगे याजकडे दिल्लें आहे, त्याजप्रमाणें चालवावें. येविशींची सनद द्यावी व घाटगे याचें वतन आहे तें त्याजप्र-माणें चालवावें. आम्हाकडे आलें होतें ह्मणोन आकस करूं नये. कलम १. यास महा-राजांनीं करार कलम लिहिलें तें:— कागलकर पुरातन सरकारचे सेवक चाकरी पूर्ववत्प्रमाणें करावी. चाकरी पूर्ववत्प्रमाणें केलेस कैलासवासी आईसाहेब यांचे वेळेस चालत आलें त्या-प्रमाणें चालविलें जाईल. येणेंप्रमाणें करार ह्मणोन लिहिले आहेत. तेव्हां यशवंतराव घाटगे कम उमरचे होते सबब देशमुखीचें वतन पुरतें चालत होतें. बाकी गांवचे हरदो घाटगे बहि-वाट करीत होते. यशवंतराव घाटगे यांस महाराजांनीं पुढें १२।१३ वर्षांनंतर लेकीस देऊन लग्न केलें. तेव्हां यशवंतराव वडील घराणेचे सबब कागल बहिवाट महाराजाचे कुमकेन करूं लागले. यशवंतराव यांस आसरा पाहून सखाराम घाटगे यांणीं दौलतराव शिंदे यांस आपले

लेकीस दिल्लें. सन १२०९ मयातैनचे सालीं शिंदेचे फौज परशरामपंत भाऊ याचे कुमकेस ह्मणोन जाऊन महाराजास फार जेर केलें. त्या वस्तीं सखाराम घाटगे यांणीं महाराजाचे सरकारास फार कुमक करून वेढा उठऊन त्या मुलाहिजेन कागल व सुमार १०।११ खेडीं महाराजाकडे होते तेसुद्धां आपले सुपूर्द करून घेऊन, महाराजांस ज्या वेळीं पाहिजे त्या वेळीं कागल सुपूर्द करूं ह्मणोन दस्तैवज लिहून दिल्ले आहेत. यशवंतरायाकडे देशमुखी सोडून, बाचणी, बेलवें, सावरडें, चारी गांव चालत होते, ते निपाणीकरांनीं देशमुखी व चार गांवचे बहिवाट करीत होते. सन सलाम अशर सन १२२२ फसलींत पुणें मुक्कामीं निपाणीकरानें जबरदस्तीन धेतले ते सोडावे ह्मणोन जबाबसाल जाहले. त्यावेळीं निपाणीकरांनीं हिंदुराव घाटगे याजकडे चालत म्हणोन सांगून त्याचे स्वाधीन केले. हिंदुराव याकडून घ्यावे तरी त्यांनीं हिंदुस्थानांत निघून गेले. सरकारचे अंमल जाहलेवर १२३० फसलींत महाराजांनीं आपले सरकाराकडे चार गांव धेतले. देशमुखीपुरता हिंदुराव याजकडे चालतो. यशवंतराव याजकडे हल्लीं कांहीं चालत नाहीं. महाराजाकडून दोन गांव बहादुरें, परीत चालत आहे.

आकरा गांवचे तपसील.

|             |            |
|-------------|------------|
| १ चंदरें    | ७ बालिगें  |
| २ निगवें    | ८ भिवसी    |
| ३ रुई       | ९ सिदनुरली |
| ४ माणगांव   | १० बोरवाड  |
| ५ साजणी     | ११ बिदरी   |
| ६ माहालावें |            |

यादी कागलकर घाटगे यांची कैफियत आबाजी घाटगे सरजेराव यांस पुत्र.

१

मुलतानराव यास पुत्र.

१ यशवंतराव १ दुसरा एक  
हाल हजर. यास होता तो वारला,  
पुत्र नाही. पुत्री त्यास अवलाद  
आहे. तिला आ- नाही.  
णखी लेंकरूं जा-  
हलें नाही.

२

तुळाजीराव ऊर्फ बोवासाहेब घाटगे यांस पुत्र

विश्वासराव यास सखाराम घाटगे यास पुत्र हाल  
पुत्र नाही. पुत्री हजर जयसिंगराव ऊर्फ हिंदुराव  
दोघी त्यापैकीं ए- घाटगे. पुत्री बायजाबाई दौलतराव  
कीस पाटणकरा- शिंदे यांस दिल्ली आहे. हालीं  
चे घरास दिलें. कागलपैकीं चिखली सखाराम  
एकीस हालीं म- घाटगे याची बायको सुंदराबाई  
हाराजास दिल्लें आहे. जयसिंगराव यास पुत्र  
आहे. नाही.

कागलचे मोकदमेस कैफियत.

१ पादशाई कारकीर्दीपासून कागलपैकीं जाहगीर चालत आहे. त्यापैकीं भाईबंदाकडे गांव आहेत. जाता कसबा कागल व गांव वगैरे मिळून सुमार ४०।५० हजार रुपयेचे व परगणेमजकूरचे देशमुखी अमलसुद्धां आबाजी घाटगे याजकडे चालत होते. ते मृत्यु पावलेवरी शिवाजी महाराज यांचे वस्तीं येसाजी शिंदे यांचे कारकीर्दीत मौजे उतूर व पिंपळवडी वगैरे दोनी तिनी गांवखेरीज बाकी गांव व कसबा व देशमुखी अमलसुद्धां जप्त केले. तेव्हां विश्वासराव घाटगे व सखाराम घाटगे यांणीं महादजी शिंदे यांजकडे जाऊन चाकरीस राहिले होते; तों इतकीयांत येसाजी शिंदेस पेशवेस बरकशी पडून ११८७ फसलींत महादजी शिंदे यांची फौज कोलापुरावरी पाठविली, त्या वस्तीं महादजी शिंदे याणीं कागल वगैरे ठाणा घालून घाटगे याजकडे देऊन पेशवेसरकारास महाराज यांचे सरकारदरबारखर्चसुद्धां २० लाख रुपये घेणेचें ठरवून तहनामेची याद केली. त्यांत घाटगेचे मोकदमेस कलम नमूद केलें असणेचें. घाटगे कागलकर हे पुरातन सेवक राजमंडळच, याजकडे पाहिलेपासून कागल आहे. अलीकडे शेषो नारायण याचे कारकीर्दीस महाराजांनीं सरकारांत घेतलें होतें, तें फिरोन आम्हीं घेऊन घाटगे याजकडे दिलें आहे, त्याप्रमाणें चालवावें. येविशींची सनद द्यावी व घाटगे याचें वतन आहे तें त्याजप्रमाणें चालवावें. आम्हाकडे आलें होतें म्हणून आकस करूं नये. कलम १. यास महाराज यांणीं करार कलम लिहिलें तें:—कागलकर पुरातन सरकारचे सेवक, चाकरी पूर्ववत्प्रमाणें करावी. चाकरी पूर्ववत्प्रमाणें केलेस कैलासवासी आईसाहेब यांचे वेळेस चालत आलें त्याप्रमाणें चालविलें जाईल. येणेंप्रमाणें करार म्हणोन लिहिले आहेत. तेव्हां यशवंतराव घाटगे याचे बापाकडे देशमुखीचें वतन बहाल ठेवून कसबे कागल व गांवगन्ने हरदो घाटगे याणीं वहिवाट करूं लागले. पुढें सुमार १२।१३ वर्षांपासून महाराजांनीं आपले मुलगीस यशवंतराव घाटगे यांस देऊन लग्न करून मशारनिलहं वडील घराणेचे म्हणोन कागल व गांवगन्ने याकडे वहिवाट होयाजोगा बंदोबस्त करून दिल्या. सबब हरदो घाटगे याणीं आपणास आसरा पाहिजे लागतो म्हणोन सखाराम घाटगे याची मुलगी बैजाबाईस दौलतराव शिंदे यांस देऊन लग्न केलें. नंतर सन १२०९ फसली मयातेनचे सालीं शिंदे यांची फौज परशरामपंत भाऊ याचे फर्जद रामचंद्रपंत आपा पटवर्धन याचे कुमकेस म्हणोन जाऊन महाराजांस फार जेर केलें. त्या वस्तीं सखाराम घाटगे याणीं दरम्यानदार होऊन जाबसाल करून वेढा उठविला. त्या मुलाहिजेनें कागल व गांवगन्ने व कागल परगणेचे ११ खंड सरकारांत होते तें सुद्धां सुमार ६९। गांव सखाराम घाटगे याजकडे देऊन १२१० फसलींत इनामपत्र तुळीं व तुमचे पुत्रपौत्रादि वंशपरंपरेनें चिरकाल पुरातन भोगवटेप्रमाणें अनभऊन राज्यासीं एकनिष्ठपणें असोन सुखरूप राहणें झणोन करून देऊन, सखाराम घाटगे याजकडून ज्या वेळेस महाराज कागल मागतील त्या वेळेस देऊं म्हणोन इम्तएवज लिहून घेतले, ते यशवंत (राव) घाटगे याजकडे दिले होते. म्हण व

यशवंतराव घाटगे याजकडे कागल परगणेचे देशमुखी व मौजे सेंडूर १ बाचणी १ बंलवल १ सावरड १ चार गांव चालत होते, ते निपाणीकर यांनीं जबरदस्तीनें घेऊन आपण वहिबद करीत होते. सन सलास अशर सन १२२२ फसलींत पुणें मुक्कामीं निपाणीकरांनं जबरदस्तीनें महाराजाचे मुलूक घेतले, ते सोडावे म्हणोन जाबसाल होऊन चिकोडी मनोली तालुकेचे दरीयाफत जाहले. त्या वेळीं निपाणीकरांनीं हिंदुराव घाटगे याजकडे सदरहू देशमुखी अमल चार गांव चालत ह्मणोन सांगून मशारनिलेहेचे सुपूर्द केले. त्या वस्तीं पेशच्यांनीं कागल आपलें ह्मणोन बोलत होते. त्याचेही दरीयाफत होऊन कागल महाराज यांचा इलाखा आहे ऐसें ठराविलें आहे. पुढें हिंदुराव याजकडून देशमुखीचे अंमल व चारी गांव घेऊन यशवंतराव घाटगेस देऊन मशारनिलेहेकडे गुजराणेस गांव आपले सरकारांतून दिल्ले हांते ते सोडून द्यावे. तरी इरादा कीं, या हिंदुराव यांनीं शिंदेसाहेब याजकडे निघोन गेले. करितां तैसेच राहिले होते. त्यापैकीं सन १२३० फसलींत आबामहाराज यांनीं सदरहू चार गांव ठाणा घालून घेतले. ते यशवंतराव घाटगेस घेऊन आपण दिल्ले ते गांव सोडावे ह्मणाले असतां ऐकिलें नाहीं. सबब गुजराणाकरितां दिल्ले होते ते गांव जम करून घेतले. त्यांनीं मुबदला सदरहू चारी गांव कांहीं घेतले नाहींत. दोघाकडून घेतले ते गांव महाराज यांचे सरकारांतच आहेत. हल्लीं यशवंतराव घाटगे याजकडे पेशजीं शिवाजी महाराज यांनीं दिल्ले ते १ बहादल व १ परीत ऐसे दोनी गांव चालत आहेत. हिंदुराव याजकडे कसबा कागल व गांव वगैरे सनदेप्रमाणें देशमुखीचे अंमलसुधां चालत आहेत. यापैकीं हालीं महाराज याणी माहे आक्टोबर महिनैत कागल तालुके मानगांवचे रयता फरारी जाहले असतांना राजमंडळ इलाखा कडोली नामें गांववालेस जामीनीवरी आणून जुलूम केलें. करितां मानगांवचे जनावर लुटून आणविलें व चाकोता नामें गांवांत मांग १०० घरवाले राहून आसपास चोरी वगैरे करीत होते. त्याकरितां महाराज यांनीं मौजेमजकुरी ठाणें ठेवणें गरज नाहीं ह्मणोन सांगितलें असतां कागलकर ( यांनीं ) ऐकिले नाहीं. करितां ठाणा घालून पाटिलाचे वाडा पाडिले व छ २६ माहे फिब्रवारी सन १८२४ इसवींत कागल तालुका निंगवें नामें गांवठाणा घातलें ह्मण. त्यास हालीं महाराज याकडील वकिलाचें ह्मणणें कागल पाहिजे तेन्हां सोडितो ह्मणोन हिंदुराव घाटगे यांचा बाप सखाराम घाटगे यांनीं दस्तैवज लिहून दिल्ले आहेत. त्यास हालीं मशारनिले याणी इकडे जाहागिरीदार हांऊन येथें असेना ते शिंदेकडे आहेत. याजकरितां घाटगेमजकूर याणी येथें असावें हें मंजूर न जाहलेस कागल सोडावें ह्मणोन ह्मणत होते.

#### ४ घाटगे मलवडीकर.

आदि सूर्यवंश घाटगे मूळपुरुष देशमुखी पिढी दरपिढी कवीम पुस्त दरपुस्त पूर्वीपासून करीत आल्याप्रमाणें मलवडी कसबे ललगुण बुधपाचेगांव याचा विस्तारः—

मूळपुरुष सर्पधननाक. याचा पुत्र बाळनाक, याचा पुत्र लोहनाक, याचा पुत्र सारंगनाक,

यावर फाटक गुमास्ते होते. यांनीं आप फितूर करून मारा घाटगे सारंगनाक वगैरे वंशा-  
वरी मारा करून कापून काढून, त्यावरी फाटक देसगत कांहीं दिवस दहा पांच वर्षे केलीं  
न केली, तों सारंगनाकाची स्त्री गरोदर राहिली होती ती, परागंदा होऊन आथर्ववेदी ब्राह्म-  
णाचे घरीं निंबांत राहिली. त्या स्त्रीस पुत्र जाहला. त्याचें नांव कामराज घाटगे. कामराजा-  
पासून घाटगेपणाची किताबत पातशाहानें दिल्ली आणि समरांत फाटक मारून आपले वत-  
नाचा भोगवटा कुलबाब देसगती करूं लागला. त्या कामराजास पुत्र सहा, १ परसनाक,  
२ लोहनाक, ३ जयनाक, ४ जैतपालनाक, ५ बागनाक, ६ लोहनाक.

पैकीं परसनाक याचा विस्तार होता त्याणें देसगत केली नाही. बागडनाक व जैत-  
पालनाक याचे वंशीं विस्तार जाहले, त्यापुढें वंशीं जावजी घाटगे देसगत करीत होते. सदरहू  
सहापैकीं एक घर कर्नाटक प्रांतीं पनाळा प्रांतीं गेलें तिकडेच राहिलें. पुढें वंश सदरहूचे  
तानाजी देसगत करीत होते. तेथें मलवडीस ठाणेदार बहुत होत गेले. त्याचा तपसील कान-  
गोचे बदलचें सदर लिहिणें जे, ज्या त्याचे आवरजे देशकुळकर्णी याजपार्शी आहेत. त्यांत  
तपसील ठाणेदार याचा आहे, त्यापैकीं तानाजीचें देशमुखी होती ते वेळेस शके १४७६  
सन खमस खमसेन तिसा मयामधें ठाणेदार कामीलखान मलवडीत होते, वर्ष २४, त्याचे कारकून.

|                               |                                      |
|-------------------------------|--------------------------------------|
| १ अलीशा ठाणेदार मुदत वर्षे २० | १ तानाजी घाटगे देसाई याचे लेक चार ४. |
| १ फत्तेखान ठाणेदार            | १ मिठोजी                             |
| १ जानू केशव मुजुमदार          | १ जगोजी                              |
| देशपांडे बापाजी गंगाधर        | १ महाळोजी                            |
| याणें केले, त्याचे पुत्र २    | १ नरसोजी.                            |
| १ राघव १ कानाव                | ४                                    |

या चवथ्याचें नकल जालें. तेव्हां परसनाक याचा पाठचा भाऊ सदरहू सहापैकीं  
लोहनाक यास पुत्र कडतोजी याचा पुत्र चिह्वाजी त्याचा पुत्र बाळोजी बाजी घाटगे देस-  
गत करूं लागले. त्यास पुत्र विस्तारः—

|                       |                      |
|-----------------------|----------------------|
| १ कोरपाळजी बाजी घाटगे | ४ राहुजी बाजी घाटगे  |
| २ कडतोजी बाजी घाटगे   | ५ महाळोजी बाजी घाटगे |
| ३ बाबाजी बाजी घाटगे   | ६ मिठोजी बाजी घाटगे  |
|                       | ७ कयाजी बाजी घाटगे.  |

पुत्र सात. पैकीं कोरपाळजीचें नकल. कडतोजीचे पुत्र बाळोजी बाजी देसगत चालूं  
लागले आणि पुढें पुंडावा करूं लागले आणि मलवडी महाल साठ गांव येथील महालजी  
जमाबंदी विजापुरास न जातां महाल तमाम लुटून खाऊं लागले. मग पांच चार वर्षे महा-



लाची तळप सोडून अमावंदीचे महालचे ऐवजाचे फडशाकरितां विजापुराची स्वारी होऊन धरून नेऊन ऐवज मागूं लागले. तेव्हां उपाय नाहीं कैदेत सांपडला सबब महालचा ऐवज इस्तकबिल तागाईत भरून देणें प्राप्त, तेव्हां सुटका ऐसा विचार पडला. सबब बाळोजी बाजी यांनीं सावकार पठाण पाहून त्याजपाशीं वतन देसगतीचे शिक्यासुद्धां ठेऊन सरकारचा दस्त महालचा भरला. त्यावरी मागती येऊन महालीं पूर्ववतपणें बहिवाटूं लागला. तेव्हां सरकारासीं बंदमस्त सबब सरकारची स्वारी सुभा येऊन बाळोजीस कैद करून विजापुरास धरून नेहलें. मेजवानी सरकारची ह्मणोन विजापुराचे सरकारानीं जिवें मारिला. तेव्हां त्याचा मुडदा जाळावयास कोणी त्याचे भाऊबंद धरभाऊ पाठचे व मिठोजी बाजीचा पुत्र बोवाजी झुंजाररावही तेथें होते, त्याणीं अग्रप्रसाद द्यावयास सिद्ध जाहलें. तेव्हां सरकारची आज्ञा जाहली. परंतु कर्जदार सावकार पठाण मातबर त्याचे धरिं वतन शिक्का वडीलपण माहण होतें. त्याणीं येऊन मुडद्यास ध्वाई दिली. ते वेळेस आमचे ऐवजाचा फडशा करून देणें अगर वतन आमचे धरिं डुले असें ह्मणोन सरकारचे कागदपत्र करून देणें अगर आपला ऐवज देणे असें पठाण बोलोन अडथळा केला. तेव्हां सरकारचे रुजवातींनीं भाऊबंदाचे जे ऐवज देऊन वृत्ती सोडवावयास जाहली. मग ज्याणें सोडवावी त्याणें वतन वडीलपण शिक्का खावा. असा करार जाहला. ते समयीं बोवाजी झुंजारराव मिठोजीचा पुत्र याणें फडशा करून सरकारी दाखल वतनशिक्का मानपान देसगतीचे मलवडी महालचे सोडून करूं लागले. त्याचा तपशील जोतीबा घाटगे याचे वादांत करणा सरकारांत आहे. त्यांत तपशील आहे. कलम.

सदरहू कडतोजीचा बाळोजी येणेंप्रमाणें मारला गेला. पुत्र नाही. नकल. तेव्हां तिसरा त्याचे पाठीचा बाबाजी बाजी घाटगे. परंतु राहुजीनें देसगत करूं लागला. देशपांडे राघोबा १ व कोनेरी १ बापाजीचे पुत्र दोघे यानीं केले तागाईत कारकीर्द शेख हैदर हिसाफनमुलूख सहा महिने ठाणें होतें. तागाईत शहा अबदुल बाबासाहेबापुढें सदरहू कडतोजीनें कज्या वडील ह्मणून करून, राहुजी पिटवून बुधास राहून आला. कलम १.

बाबाजीचा विस्तार पुत्र साबाजी बाजी एक होते. त्याचा पुत्र मलजी बाजी त्यास पुत्र साबाजी बाजी घाटगे देशमुख, त्यास महादाजी बाजी व तुळाजी बाजी. महादाजी बाजीचा पुत्र साबाजी व सुलतानजी बाजी व संभाजी बाजी व तुळाजी बाजी व रामचंद्र बाजी व नरसिंगराव बाजी घाटगे; पैकीं महादाजी बाजी यास पुत्र वडील साबाजी, यास पुत्र शिवाजी बाजी घाटगे, एकाक्ष यास पुत्र हल्लीं महादाजी घाटगे आहेत. कलम १.

राहुजी बाजीचें नकल. विस्तार नाही. महाळोजी बाजीचें नकल. विस्तार नाही. सातवा कयाजी बाजी याचा विस्तार पुत्र सोनजी त्याचा नाइकजी व जनानीस पुत्र नायकजी बाजी त्यास पुत्र आनाजी घाटगे दहिवडीकर हे सागुली याचे झुंजांत विलेसाटीं कज्या होऊन नागोजी झुंजारराव घाटगे याणें जिवें मारिलें. सबब राजश्री दादोबा प्रतिनिधी यांची हक्का होऊन नागोजी झुंजारराव हेही मृत्यु पावले. त्या अनाजीस पुत्रः—

१ जनाजी बाजी.

जनाजीचा हल्लीं नाना घाटगे  
दहिवडेकर

२ नाइकजी.

३ हणमंतराव.

नाइकजीचे पुत्र जोत्याजी बाजी.

हणमंतराव याचे पुत्र दोनः—

१ आबाजी बाजी घाटगे.

१ लक्ष्मण बाजी घाटगे.

२

एकूण दोन पुत्र हल्लीं आहेत.

मिठोजी बाजी सहावे भाऊ याचे विस्तार. पुत्र तीनः—

१ वडील बोवाजी झुंझारराव हे शूर  
बहुतयुद्ध करून कामकाज सर-  
कारचें करून सरकार पादशहांनें  
किताबत दिल्ली. तेथपासून बोवाजी  
झुंझारराव नांव पडलें. कलम.

२ कबाजी घाटगे.

३ जानोजी घाटगे मोळकर.

वडील बाबाजी झुंझारराव यास पुत्र दोनः—

१ दाउसाहेब याचें नकल. विस्तार नाही.

२ राजजी घाटगे झुंझारराव.

राजजी घाटगे यास पुत्र सातः—

१ वडील पदाजी झुंझारराव.

४ जानोजी घाटगे.

२ बाबरराज याचें नकल.

५ गैराजीबोवाचें नकल.

३ बाळाजी हा मोळकर याचे ओढ्यांत  
जानोजी, यास पुत्र मलजी त्याचे त्या

६ दामराज घाटगे.

७ कामराज.

मलजीचे ओढ्यांत घातला. कलम १

सदरहू पदाजी झुंझारराव हे विजापुरीं कांहीं सरकारी इतराजीबद्दल भावानें वगैरे मिळोन इतराजी होऊन धरून नेहलें आणि कैदेत ठेविलें. त्यावर कांहीं दिवसांन मागुती सरकारची मेहेरबानी होऊन देसगती खेरीजकरून ललगुण महालेचे गांव चार इनाम करून देऊन मामुती पांच गांवची वहिवाट करूं लागले. यावरी दरम्यान सरकार बाबती चवथाई नाडगौडी सरदेशमुखी वगैरे अंमल होतेच. ते वेळेस सरकारचे स्वराज्याचे अंमल पुढें जाहले. सबब त्याचे तर्फे मोरो शामराज व महादाजी शिवदेव वगैरे होते ते, मग स्वराज्याचीं पत्रें करून घेतलीं. शिवछत्रपतीचे नांवचीं इनामपत्रें चार व खेरीज इनाम ताराबाईसाहेब याजपासून घेतलें. कारकीर्द अखेर अवल नागोजी झुंझारराव. कलम १

३८ . दक्षिणेंतील सरदारांच्या कैफियती, यादी वगैरे. [प्रकरण

पदाजी राजे यास पुत्र तिघे. बायका तीन. वडील सगुणाबाई व सकुबाई दुसरी, तिसरी कमळजाबाई.

सकुबाईचे पुत्र:—

- १ वडील नागोजी राजे झुंझारराव घाटगे.
- १ सगुणाबाईस पुत्र संभाजी राजे घाटगे यास पुत्र.
- १ राजजी घाटगे यास पुत्र हल्ली गोपाळराव नाना घाटगे.

कमळजाबाईस पुत्र:—

- १ जिजाजी, १ शिवाजी.
- जिजाजीस पुत्र साबाजी व शिवाजी-चा पुत्र पदाजीचा शहाजीचा पुत्र सखारामचा कृष्णाजी हल्ली नाकपुरी आहेत. पदाजींचे तात्या घाटगे यास पुत्र हल्ली अकलकोटी आहे.

नागोजी राजे याचे पुत्र बाबाजी राजे यास पुत्र दोन, नागोजी व भवानजी राजे. पैकीं नागोजी बिन बाबाजी यास पुत्र नाही. नकल.

भवानजीचे पुत्र मशारानिल्ले हल्ली आहेत ते:—

- १ नागोजी झुंझारराव यांचे नकल.
- २ बाबाजी राजे यांचे नकल.
- ३ शिवाजी राजे हल्ली ओह ते काइम.
- त्यास पुत्र भवानजी राजे झुंझारराव.

कबाजी राजे यास पुत्र चार स्त्री दोघी, रखवा व मालवा.

- १ वडील रखवाचा नागोजी.
- २ दुसरा मताजी.
- ३ बाळोजी.
- १ मालवा यास पुत्र शिवाजी.

नागोजीचा विस्तार. पुत्र सखोजी व मताजी व कृष्णाजी एकूण पुत्र तीन.

सखोजीचा मिठोजीचा नागोजी

मताजीस पुत्र नाही तेव्हां नागोजीचा

व मानाजी व संताजी.

पुत्र मिठोजी दिल्ले.

कृष्णाजीचा वंश नाही. नकल. त्यास तिघांनी त्याचे स्त्रीस तीन पट्या जमीन दिल्ली. जमीन बिघे ते हल्लीं पडली आहे.

नागोजीचा पुत्र मालोजी त्यास पुत्र मिठोजी व सखाजी व मताजी व मानाजी.

१ मानाजीचे पुत्र तीन:—

१ संताजीस पुत्र हैबतराव ते हल्ली आहेत.

१ लक्षुमण घाटगे.

१ बाळाजी घाटगे.

१ राणबा घाटगे यांचा विस्तार.

लक्षुमण नकल.

बाळोजीस पुत्र एक आहे. धाकटा मूल

राणोजीचे पुत्र तिघे:—

त्याचे नांव रावजी हल्लीं बुधांत आहे.

१ बोधलेबावा.

१ नागोजी.

१ बाबाजी घाटगे यांस पुत्र तीन:—

१ सखाराम घाटगे.

१ आपाजी घाटगे.

मिठोजीची स्त्री येसूबाई तीस नकल.

१ सखजीचा पुत्र गजेंद्रगडी आहे.

१ मताजी मानाजी हल्लीं अकलूजकडे आहेत.

दुसरा मताजी यांनीं इनामगांव बुध राजापूर राजाचे पत्रें करून आणले. त्या मताजीस पुत्र तीन:—

१ कृष्णाजी.

१ रामजी.

१ कबाजी.

कृष्णाजीचे पुत्र महादाजी त्याचा पुत्र सखजी त्यास पुत्र नऊ. सखजीचे स्त्रीचें नांव आनंदीबाई निंबाळकर भोसल्याची कन्या.

१ परशरामबाबा.

६ राजजी घाटगे.

२ तुकाराम घाटगे.

७ शिवराम घाटगे.

३ जोतिबा घाटगे.

८ भुजंगराव घाटगे.

४ मालोजी घाटगे.

९ जानराव घाटगे.

५ भिवराव घाटगे.

४

५

परशरामबाबास पुत्र दोन:—

मताजी.

सुभानराव.

उभयतांचें नकल जाहलें.

तुकाराम यास पुत्र महादाजी, यास पुत्र बाळ्याबा क्षणतात हल्लीं आहेत. जोतिबा घाटगे याचें नकल.

मालोजीबाबास पुत्र दोन:—

१ बचाराम घाटगे.

१ जोतिबा घाटगे याचें नकल.

भिवराव घाटगे यास पुत्र दोन:—

१ कासीबा घाटगे याचें नकल.

१ नरसिंगराव घाटगे काइम.

राजजीराव यास पुत्र लक्ष्मणराव आहेत.

शिवरामबाबा यास पुत्र गोविंदराव हल्लीं पुसेगांवीं आहेत.

भुजंगराव यास पुत्र रघुनाथ याचें नकल.

जानराव घाटगे यास पुत्र १ नानासाहेब व १ रावसाहेब, पैकीं रावसाहेब यमाजी घाटगे अचे ओठ्यांत घातला. नानासाहेब यास पुत्र दोन:—

१ नारायणराव हे मताजी याचे  
ओढ्यांत घातले.

रामजीस पुत्रः—

१ आनंदराव यास यमाजी दिले.

त्यास पुत्र हल्लीं कायम उलजीराव आहेत.

१ भाऊसाहेब.

१ दारकुजीस पुत्रः—

१ हेमाजी.

१ आनंदराव.

१ बाळोजी.

सदरह चौधपैकीं बाळोजीराव त्यास पुत्र नाइकजी त्यास पुत्र शेखजी व निळोजी.

शेखजीस पुत्र शिवाजी त्यास

पुत्र हल्लीं गुजरार्थीत आहेत.

निळोजीस पुत्र तिघेः—

१ संभाजी घाटगे

१ नागोजी घाटगे

१ दाजी घाटगे

३

दाजीचा सभाजीचा सुलतानजीस पुत्रः—

१ मानाजी

१ साबाजी.

१ काशीबा हल्लीं आहेत.

१ जानबाचा पुत्र हल्लीं लक्ष्मण आहेत.

चवथा शिवाजी त्याचा कबाजी, त्यास पुत्र नाहीं सबब मताजीचा पुत्र कबाजी दिल्ला. त्याचा पुत्र पिराजी त्याचा पुत्र कृष्णाजीचा नकल. पिराजीचा पुत्र कबाजी. हल्लीं त्याचे पुत्र दोनः—

व्यंकटराव याचा पुत्र हल्लीं वाटणें  
यांत आहे.

१ रघुनाथराव त्याचे पुत्र जोत्याजी-  
राव हल्लीं आहेत.

जानोजी मोळकर याचा विस्तार पुत्र मलजी. त्यास पुत्र नाहीं. सबब राजजी मुंशारराव याचे पुत्र सात पैकीं बाळोजी होता तो दिल्ला त्यास पुत्रः—

१ रवळोजी.

१ रखमाजी.

रवळोजीस पुत्र नाहीं सबब  
मालोजीचा पुत्र बाळोजीबावा  
दिल्ले. त्यास पुत्र हल्लीं नागोजी  
व आंबानाथ यास पुत्र जोतिबा  
हल्लीं आहेत.

१ मालोजी.

१ कुसाजी.

मालोजीचा पुत्र बाळोजी व नारायण  
यास पुत्र दिल्ले.

१ व्यंकटराव.

१ मालोजी.

१ शिवराम हल्लीं आहेत.

## कुसाजीस पुत्रः—

१ रस्वमाजीस पुत्र बाबाजी व  
तुकाराम व हण्मंतराव.

१ सयाजीस पुत्र गोविंदराव.  
१ माधवराव यास पुत्र.

राजजी राजे झुंजारराव याच्या सातपैकीं विस्तारः—गोदाजीचें नकल. कामराज याचें नकल. बाबरराज यास पुत्र राजजीबावा आंबेकर यास पुत्र जोतिबा. यास पुत्र नाही. नकल.

कृष्णाजी यास पुत्र सिरासिंगराव त्यास पुत्र १ गोविंदराव १ रामचंद्र १ लक्ष्मणराव. हल्लीं आहेत. जानोजीस पुत्र मानसिंगबावा, गैरोजीबावा.

मानसिंगराव यास पुत्रः—

गैराजीबावा यास पुत्रः—

१ फिरगोजीबावा.

१ आपाजी.

२ रघुनाथराव.

१ रामचंद्रराव याचे पुत्र जिजाजी-  
राव घाटगे आहेत.

३ कृष्णाजी.

४ नारायण हल्लीं आहे.

त्याचे पुत्र हल्लीं आहेत.

शके १४७६ कामीलखान जाहल्यावर, शेक हैदर जाहल्यावर, ठाणेदार दिलावर-खान मुदत साल ५ जाहल्यावर, मग पुढें महमदखान सालें ४॥ पावणे पांच, बाळोजी व राहवोजी देसगत तहत कारकीर्द सालें २, खुमखान तागाईत राजेखान याचे वेळेस कोन्हेर-पंत देशपांडे बुधास आल्यावर गंगाजीराम तमाजी कोन्हेर हे करीत आहेत. कारकीर्द देशपांडे तमाजी कोन्हेर ठाणें हयबतखान मलवर्डास शके १५२० तागाईत शके १५३८ बाळोजीनं देसगत केली.

## ५ घोरपडे अमिरुल उमराव.

यादी घोरपडे अमिरुल उमराव व त्याचा इतिहास वडील वृद्ध सांगत आल्या माहितीवरून वर्णन केला आहे. तो येणेंप्रमाणेंः—

घोरपडे हें उपनाम पडण्याचे पूर्वीचें उपनाम सिसोदे भोसले होतें. नंतर अबरंगजेब बादशाहाचे समक्ष हापशी लोकांचे राज्यांत स्वारी करून किल्यावर हल्ला चढले. ते हल्ला असे कीं, किल्याच्या नंगीत घोरपड हणून जंगली जनावर राहतें, तें बसलें होतें. त्यास धरून पूर्वजानें हल्ला करून किल्ला हस्तगत झाला. त्या दिवसापासून घोरपडे असें उपनाम व निशाण बंडी हणजे काळी पांढरी मिश्रित वागवणेस पादशाहाचा हुकूम होऊन त्याप्रमाणें आजपावेतों वहिवाट चालली आहे. त्या मूळ पुरुषाचे व कोणत्या पादशाहाचे कारकीर्दीत कोणते सालांत त्याचा वाखला आतां लागत नाही. परंतु याप्रमाणें मजकूर जगप्रसिद्ध आहे. पुढें नांवाची बऱ्हे माहिती लागली ती तपशीलवार लिहिली जातात.

१ मूळ पुरुष माहाळोजीबावा घोरपडे हे हिंदुस्थानांतून या प्रांतीं दक्षिण देशांत येऊन पाटिलकी वगैरे वतन संपादन करून होते. त्यास दोघे पुत्र; एकाचें नांव भवानबावा, दुसरे संताजीबावा.

२ भवानबावा सदरी पाटिलकी वगैरे संपादन केले वृत्तीवर हल्लीं पुणें प्रांतीं जांब वगैरे ठिकाणीं आहेत. त्याचें वर्णन केलें नाहीं.

३ संताजीबावा शूर व पराक्रमी. हे दिल्लीचे पातशाईजवळ मानकरी होते. त्याचे पुत्र माहाळोजीबावा.

४ माहाळोजीबावा हेही सदर पादशाहाजवळ मानकरी याचे इरादेनीं पादशाहाचे पदरीं असतां त्यास तिघे पुत्र; संताजीबावा, बहिरजीबावा, माहाळोजीबावा एकूण ३.

५ सदर संताजीबावा व बहिरजीबावा व माहाळोजीबावा हे तिन्ही पुत्र आमचे अव्वल संपादक महान पराक्रमी व शूर आणि बुद्धिमान् होत्साते करवीर व सातारेकर महाराजांचा उत्कर्ष झाला तो या पुरुषाचे बळानें. हें पातशाहास जाहीर असून करवीर सातारकर महाराज यास पट्टाअभिषेक झाला, त्यावेळीं सदरहू आमचे हे त्रिवर्ग पुरुषाचीही बहडती झाली. येणेंप्रमाणें:—

संताजीबावा यास सेनापती हे किताब आणि पांच गांव इनाम व गर्जेद्रगड परगणा पनाळे प्रांतीं देशमुखी दिली. त्याचे वंशाचें वर्णन यांत केलेलें नाहीं.

माहाळोजीबावा हे आमचे मूळ पुरुष, हे आह्मास निपणजेचे आज्ञे होत. यासी अभिरुल उमराव हे किताब आणि पांच गांव इनाम व आजरे परगणा आणि बेळगांव प्रांत-ची देशमुखी दिली. हे आमचे अव्वल संपादक याचे वंशाचें वर्णन.

येणेंप्रमाणें पादशाहाचे हुकुमावरून करवीर व सातारकर महाराज यांनीं आमचे वंशास उत्तेजनें देऊन आपलेजवळ ठेवून घेतलें. नंतर सदरहू पुरुष आपआपले संस्थानावर राहून महाराजाबरोबर स्वारी मोहिमा वगैरे करून मुलूख काबीज करून महाराज सरकारची फारच बढती केली. यांपैकीं आमचे पूर्वज माहाळोजीबावा या प्रांतींच मृत्यु पावले. यास पुत्र शिवजीबावा.

६ शिवजीबावा मोठे राजकारणी पुरुष, आमचे निपणजे. त्यास पुत्र यशवंतराव १ एक, माद्याळकर रामचंद्रराव १ एक, मालोजीराव १ एक, असे त्रिवर्ग आमचे पणजे. यांजपैकीं संस्थानावर चुलते पणजे यशवंतराव यास ठेवून माद्याळकर याचे वंशाचें वर्णन केलें नाहीं. त्यास महाराज सरकारचे स्वारीबरोबर नेमून शिवजीबावा निपणजे हे आमचे सख्ये पणजे यांनीं मालोजीराव आपला पुत्र बराबर घेऊन कर्नाटकप्रांतीं मोहीम करण्यास गेले. बरोबर दुसरे घराणेंचें व त्यांचे वे कलमांत सांगितलेलें संस्थान राजकारणामुळें अफरातफरी झाल्याचें वर्तमान ऐकून या प्रांतीं शिवाजीबावा निपणजे येणार, इतक्यांत त्याच प्रांतीं मृत्यु पावले. त्याचे पुत्र आमचे पणजे मालोजीराव बरोबर होतेच.



७ पणजे मालोजीराव यांनीं दुसरें घराणें व शिंदोजी हिंदुराव बरोबर निपणजांनीं नेला होता. त्यास गुत्ती संस्थानांत ठेवून तिकडील कामाची बंदोबस्ती त्याजकडे सांगून पणजे मालोजीराव या प्रांतीं इकडील बंदोबस्ताकरितां आले, आणि येथील संस्थान चुलते पणजे यशवंतराव होते त्याची रवानगी गुत्ती संस्थानाकडे करून दिली. नंतर चुलते पणजे तिकडे जाऊन पोहोंचल्यावर गुत्ती संस्थानावर शिंदोजी हिंदुराव दुसरे घराणेचे पुरुष निपणजे यांनीं स्थापना करून आले होते, ते त्यांनीं तिकडील किल्ले वगैरे दुरुस्त करून होते, आबादी केली आणि इरादाही मोठा ठेविला. इतक्यांत ते मृत्यु पावले. त्यास पुत्र मुरारराव आणि आमचे चुलते पणजे यशवंतराव, मिळून गुत्ती संस्थानचें काम चालवून त्या प्रांतीं देवालय, तलाव, धर्मशाळा वगैरे कित्येक धर्मकृत्याचें काम केलें; आणि श्रीमंत पंतप्रधान यासीं दोस्ती ठेवून तिकडील पाळेगार वगैरेचा बंदोबस्त राखिला. हैदर याजब-रोबर लढाया केल्या. शेवट हैदर यांनीं गुत्ती किल्ला घेऊन धरून कपाळगडा-वर ठेविला. तेथें मृत्यु पावले. मुरारराव यास पुत्रसंतान नाहींसा झाला. चुलते पणजे यशवंतराव यास दोघे पुत्र शिवराव १ एक व व्यंकटराव १ एक हे आमचे चुलते आज्ञे. त्यांतून शिवराव यास मुरारराव यास दत्तक देऊन व्यंकटराव यांनीं पहिलें संपादन केले संस्थानावर व गुत्ती संस्थानावर नजर ठेवून जात येत होते. नंतर चुलते पणजे यशवंत-राव मृत्यु पावले, आणि चुलत आज्ञे व्यंकटराव या प्रांतीं आले असतां कर्नाटकप्रांतीं टिपूचा दंगा होऊन गुत्ती संस्थान टिपूनें हस्तगत करून घेतलें, आणि तेथील पुरुषास अटकाव केला. ते पुरुष मुरारराव हिंदुराव चुलत आज्ञे शिवराव १ आणि पणजे मालोजी-राव यांचेही कुटुंब तिकडे होतें. त्याचे पुत्र यशवंतराव हे आमचे सख्ये आज्ञे, दुसरे खंडेराव हे आमचे चुलत आज्ञे. हेही टिपूच्या हस्तगत होऊन पाडावांत सांपडले. टिपूनें दुसरीकडे जाण्यास अटकाव करून चार खासे टिपूच्या स्वाधीन झाले. त्यांतून आपले शूरत्त्वानें चुलत आज्ञे याचे पुत्र शिंदोजीराव आमचे चुलत चुलते हे टिपूचे हस्तगत न होतां या प्रांतीं येऊन सदर व्यंकटराव दोनी संस्थानांवर नजर ठेवून होते. त्यास व पणजे मालोजीराव यास गुत्तीकडील व्यवस्था सारी निवेदन करून टिपूच्या हस्तगत खास झाल्याचें सांगितलें. नंतर विचार पडून सख्ये आज्ञे यशवंतराव व चुलत आज्ञे खंडेराव हे लहान वयानें, याची पहिल्यानें श्रीमंत पंतप्रधान याचे कानावर : चुलत चुलत आज्ञे व्यंकटराव यांनीं मोकळीक करून घेऊन या प्रांतीं श्रीमंतांच्या भेटीकरितां घेऊन आले. या दंग्यांत मालोजीराव पणजे याचा काळ झाला.

८ सख्ये आज्ञे यशवंतराव व चुलत आज्ञे व्यंकटराव व चुलत चुलते शिंदोजीराव एकूण चार खासे श्रीमंताकडे मुरारराव साहेब व चुलत आज्ञे शिवराव याचे मोकळिकीविशीं वगैरे बंदोबस्ताकरितां येऊन मोकळिकी विचार चालविले असतां टिपूचे बंदोबस्ताबद्दल परशुरामपंत भाऊ पटवर्धन याची रवानगी कर्नाटकप्रांतीं फौजेसुद्धां होण्याचें मसलत होऊन

पटवर्धन कर्नाटकच्या मोहिमेस निघाले. त्या वेळेस श्रीमंतांनी आमचे सदरहू खाशेस समजूत करून भाऊबरोबर याची रवानगी करून दिली. त्याप्रमाणे भाऊबरोबर कर्नाटक-प्रांती जाऊन मुरारराव व चुलत चुलत आज्ञे शिवराव याची मोकळीक करून घेऊन गुत्ती संस्थानाविशीं खटपट चालविली असतां श्रीमंताचा टिपूचातह झाला. मुराररावसाहेब टिपूच्या बंदींत वारले. गुत्ती संस्थान तहामध्ये गुंतलें. तूर्त सोंडूर संस्थान सदर खाशेस देऊन खाशे याची समजूत करून घेऊन हरिपंततात्या फडकेबरोबर पुण्यास येऊन श्रीमंत प्रधान यांसी भेटून आणखी बेळवती, रोळी, कंकणवाडी वगैरे तालुके देऊन तूर्त समजूत करून जवळ श्रीमंतांनीं ठेऊन घेतलें. इतक्यांत चुलत आज्ञे शिवराव आणि शिंदोजीराव चुलत चुलते यासी सोंडूर संस्थानावर पाठवून सख्ये आज्ञे यशवंतराव व चुलत आज्ञे खंडेराव आणि चुलत चुलत आज्ञे व्यंकटराव श्रीमंतासंनिधानीं राहिले. नंतर सदर व्यंकटराव यासी देशीं रवाना करून तेही सावनूर वगैरे लढाईत खर्च झाले. त्यास दत्तक नाही. खंडेची स्वारीची मोहीम येऊन श्रीमंत पंतप्रधान सवाई माधवरावसाहेब यांनीं फौजबंदी करून निजाममुलुकावर चालले. त्या वेळीं माधवरावसाहेब यांची कृपा असून त्या स्वारींत आमचे सरदार खाशेनीं मर्दुमी व पराक्रम दाखविले. तेणेंकडून श्रीमंत खुशाल होऊन बक्षिसा वगैरे दिल्या. खरड्याची मोहीम फत्ते करून श्रीमंताचे स्वारीसमागमें उभयतां आज्ञे यशवंतराव खंडेराव पुण्यास आले. त्यावेळीं श्रीमंताचे मनांतून तालुके वगैरे संस्थान देऊन गुत्तीबद्दल समजूत काढावी असें बोलणें लागलें. त्यावेळीं उभयतां आज्ञे यांचें झणणें गुत्ती संस्थान प्राचीन वडिलार्जित संपादन केलेलें, टिपूकडे तहनामेंत सरकारानें साभील केलें तें आमचें आह्मांस मिळालें पाहिजे. त्यावांचून दुसरें घेणार नाहीत. झणून निग्रह धरिल्यावरून नाना फडणीस व हरिपंततात्यांनीं वगैरे तेच संस्थानाचें देणें होईल झणून आश्वासन देऊन जवळ ठेवून घेतलें. पुढें कांहीं दिवसांनीं श्रीमंत सवाई माधवरावसाहेब यांचा काल झाला. श्रीमंत बाजीरावसाहेब गादीवर आले. राज्यकारण मोठेंच मांडिलें. यांत कोणी मागील वाकबगार नाना फडणीस वगैरे कारभारी राहिले नाहीत. नाना फडणीस यांस बाजीरावसाहेब यांनीं कोंडलें; माहाडास अटकाव केला, तेथून सख्ये आज्ञे यशवंतराव यांनीं खटपट चालवून मुक्त करून आणून शिंदे अलिजाबहादर यांची व नानाची दोस्ती करून राज्यकारभार चालविणें व मनसुबीत सख्ये आज्ञे यशवंतराव असून नाना फडणीस याशीं शिंदेची भेट करविली. शिंदे यांनीं बाजीरावसाहेब यांचे सुचनेवरून कैद करून यशवंतरावास अलिजाबहादरजवळ ठेवून घेतलें. नंतर श्रीमंत बाजीरावसाहेब पंतप्रधान व शिंदे या दोन्हीकडील धोरण राखून असतां शिंदेसरकाराशीं व इंग्रजी सरकाराशीं बिघाडा येऊन अजंठ्याच्या घाटावर लढाई झाली. त्यावेळेस सख्ये आज्ञे यशवंतराव यांनीं शिंदे अलिजाबहादर यासी समजून सांगून दोन्ही सरकाराशीं सद्दा करावा हें नीट, झणोन आपण दरम्यान दोन्हीकडील इरादा राखोन इंग्रज-

सरकारच्या वित्तानुरूप तह करविला. तो तहनामा झाला त्यावेळीं आज्ञे यशवंतराव यास वसली साहेबबहादूर इंग्रजसरकाराकडील होते. त्यांनीं सख्ये आज्ञे यशवंतराव यास दरमाहा एक हजार रुपये जरनेली पेनशन करून दिली, आणि यशवंतराव हे मसलतबहादूर असें समजून इंग्रजबहादुरांनीं पेशवाईवर राजकारण चालविणेकरितां सख्ये आज्ञे यशवंतराव यास आपलेकडे शिंदेकडून बोलावून घेतलें. त्या वैषम्यानें बाजीरावसाहेब यांनीं पेशजी दिले ते, बेळवती, रोळी, कंकणवाडी वगैरे जस केलें. त्या दिवसापासून इंग्रजसरकाराशीं दोस्ती ठेवून सख्ये आज्ञे यशवंतराव यांनीं पेशवाई सर होणेंविशींच्या चांगल्या मसलती इंग्रजसरकाराशीं देऊन त्याप्रमाणें सिद्धीस नेल्या व पेशवाई इंग्रजसरकाराशीं प्राप्त झाली. त्या योग्यतेवर सख्ये आज्ञे यशवंतराव सरकारची खैरखा समजून पंचवीस हजार रुपयेची इनाम गांव पुत्रपौत्रादि पंशपरंपरा दिली. आणि पन्नास हजार रुपयांचा इनाम देणेचे संकेत होता त्यास हे पंचवीस हजार व पेशजी वसलीसाहेबांनीं जरनेली पेनशीन दिली ती बारा हजार जमेस धरून एकूण सदतीस हजार रुपये जाले. बाकी तेरा हजार मिळतील ह्मणून अश्वासन देऊन ठेवून घेतलें; आणि सरकारी कामकाजांत आज्ञे यशवंतराव वागत होते. चुलत आज्ञे खंडेराव पेशव्याचे व इंग्रजसरकारचे लढाईत बाजीरावसाहेब यांचे कारकीर्दीत स्वामीकार्यावर खर्च झाले. सख्ये आज्ञे यशवंतराव यांनीं पेशवाईत व शिंदे अलिजाबहादूर व इंग्रजसरकार यांचे कामांत अदमासें चाळीस वर्षे कामकाज करून सन १८२१ इसवी शके १७४३ चैत्र शुद्ध १५ पौर्णिमा रोजीं पुणें मुक्कामी मृत्यु पावले; व चुलत आज्ञे खंडेराव यासी शिवराव व भुजंगराव ऐसे दोन पुत्र. हे आमचे चुलत चुलते सख्ये आज्ञे यशवंतराव यास आमचे तीर्थरूप मालोजीराव व नरसिंगराव हे आमचे सख्ये चुलते असे दोन पुत्र.

१ चुलत आज्ञेचे पुत्र शिवराव व भुजंगराव वर आठ कलमांत सांगितलेले. हे आमचे चुलत चुलते. यांजपेकीं शिवराव यास सोंडूर संस्थानाकडील शिंदोजीराव चुलत चुलते याचा काळ होतांच सख्ये आज्ञेनीं पाठविला होता. ते त्या संस्थानाच्या गादीवर असून तीस वर्षे कारभार करून सन १२४९ फसली वैशाख शुद्ध १ प्रतिपदा शनिवार रोजीं मृत्यु पावले. त्याचे बंधू भुजंगराव हेही आमचे चुलत चुलते त्याचे संनिध होते. ते शिवराव याचे पूर्वीच सन १२४१ फसली माघ वद्य त्रितिया शनिवार रोजीं सोंडुरास मृत्यु पावले. शिवराव यास पुत्रसंतान नाहीं. भुजंगराव यास एक पुत्र—व्यंकटराव. ते आमचे चुलत चुलत बंधू.

१० व्यंकटराव चुलत चुलत बंधू हे सदर शिवराव चुलत चुलते कैलासवास जाल्यावर सोंडूर संस्थानचे गादीवर असून हल्लीं तेथील काम चालवीत आहेत.

११ सख्ये आज्ञे यशवंतराव याचे पुत्र आमचे तीर्थरूप मालोजीराव व चुलते नरसिंगराव वर आठ कलमांत सांगितलें तें वर्णन.

तीर्थरूप झालोजीराव यांनीं पहिले पांचवे कलमांतील अवल करवीर व सातारा महाराजाकडील राहिले. संपादन मौजे दत्तवाड इनामगांव आणि आठवे कलमांत सांगितलेली जरनेली पेनशीन बारा हजार व पंचवीस हजार रुपयांचीं इनामंची वहिवाट करून तीर्थरूप कारल्यावर तेवीस वर्षे अजमासें कारभार करून शके १७६५ सन १२५४ फसली फाल्गुन शुद्ध पंचमी रोजीं कैलासवासी झाले. हे पुरुष लौकिकवान या प्रांतीं गौरनरसाहेब सरदार लोकांच्या भेटीवस्तीं याजकडूनही सल्ला घेऊन, त्याचे त्याचे मरातबाप्रमाणें सरदार लोकांच्या मुलाकती घेणेचा इंग्रजसरकारांनीं पाठ ठेविला होता. त्यास पुत्र आह्मी वडील नारायणराव, व आमचे सख्ये बंधु यशवंतराव, व सापल बंधू खंडेराव असे त्रिवर्ग.

चुलते नरसिंगराव आठ कलमांत सांगितले. त्यास आमचे तीर्थरूपांनीं इंग्रजाकडील संपादन केले इनामपैकीं तीन गांव दिले. उपभोग करून होते. ते तारीख ४ सप्टेंबर सन १८३७ इसवी रोजीं जेजोरीस श्री देवास गेलेवेळीं पुणें मुक्कामीं मृत्यु पावले. त्यास पुत्र व्यंकटराव हे आमचे चुलत बंधू.

१२ चुलत बंधू व्यंकटराव यास बडोदेकर गायकवाड सेना खासखेल समशेरबहादूर यांनीं आपली कन्या देऊन लग्न फार समारंभानें करून पन्नास हजार रुपयांचा स्वास्था देऊन आपले सन्निध ठेवून घेतलें. ते हल्लीं बडोदें मुक्कामीं मानपानानें आहेत.

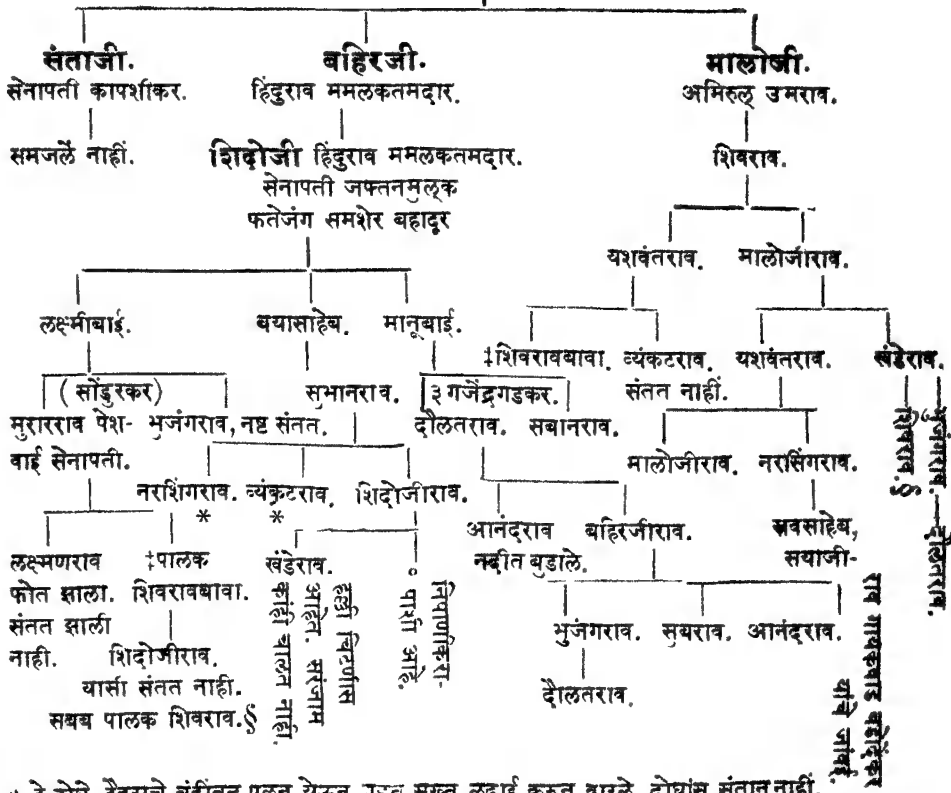
१३ आह्मी नारायणराव दहावे कलमांत सांगितलेप्रमाणें त्रिवर्ग बंधू हे करवीरकर महाराजाचे व सातारे महाराजाचे उत्कर्षावेळेस मिळालेले पांच कलमांत लिहिल्याप्रमाणें राहिला इनामगांव मौजे दत्तवाड येथें राहून, इंग्रजसरकारांनीं इनाम दिले ते उपभोग करून सख्ये बंधू व सापल बंधू लहान हे सन्निध ठेवून घेऊन इंग्रजबहादूर सरदार लोकांची भर्त्सिनुरूप दोस्ती ठेवून आहोंत.

येणेंप्रमाणें इतिहासांतील अभिप्राय पांचवे कलमांत सांगितला. मूळ पुरुषांनीं करवीर व सातारे महाराजाकडून पातशाहाचे हुकुमावरून अमिरुल उमराव ही किताब मिळविली आहे. त्याचप्रमाणें श्रीमंत पंतप्रधान यांनीं थोरवी देऊन आमचे पुरुषाची बढती करून सरदार कामकाजांत घेऊन लौकिक वाढविला. त्यांनीं कर्नाटकप्रांतीं केलेल्या सुकीर्ती अद्यापि महशूर आहेत. तसेंच आठ कलमांत सांगितले ते आमचे सख्ये आज महान प्रतापी, त्यांचा लौकिक हिंदुस्थान व दखन भरून सर्वत्रांस प्रसिद्ध आहे; आणि पुणें मुक्कामीं करनेल कुलूस साहेब यांनीं पेशवाई सर झाले वेळीं होते, आणि अलफिस्टन साहेब होते त्यांस सर्व आमची पदवीची पक्की वाकबगारी झाली असून त्या वाकबगारीवर अलीकडील सरदार गौरनेर एजंट आदिकरून आमचे खानदानीची थोरवी जाणून त्याप्रमाणें मेहेरबानी करून दोस्तीची बढती ठेविली आहे. शिवाय आमचे इरादेचे सरदार शिंदे अलिजाबहादूर व होळकर, भोसले, गायकवाड, सरलष्कर, निपाणीकर, पटवर्धन, रास्ते आदिकरून

लोकांशीं आमची थोरवी व किताब प्रसिद्ध असून वडिलार्जित तसेंच लिहिण्याचा पाठ आजपर्यंत चालला आहे.

येणेंप्रमाणें घोरपडे अमिरुल उमराव याचे इतिहासाचें वर्णन असे. तारीख २९ माहे नवंबर सन १८५१ इसवी छ मोहरम शके १७७३ विरोधीकृतनाम संवत्सरे सन १२६१ फसली कार्तिक वद्य १२ गुरुवार सुरुसन इसचे खमसेन मयातेन व अलफ.

### माहाळोजी.



\* हे दोघे हैदराचे बंदीतून पळून येऊन गेलून सख्त लढाई करून वारले. दोघांस संतान नाही.

**टीप-माहाळोजी** याचें आडनांव पहिले भोसले झणून होतें, व दिल्लीचे बादशहापाशीं बहुत अडबडें सरदारी कामावर होते. कोणा एक किल्ल्यास पादशाहा वेढा दिला, परंतु हळेंस उपाय चालेना; तेव्हां यांनीं घोरपडे किल्ल्यास लावून त्याचे जोरावें किल्लेस खुद्द हल्ला चढून ठाणा घेतलें, कारण घोरपडे झणून त्या दिवसापासून आडनांव प्राप्त झालें.

एजंट दप्तरपैकीं रुमाल नंबर २५ यांत घोरपडे यांची वंशावळ असून त्याखालीं कैफियतीदाखल टिपा आहेत त्यापैकीं उताराः—

१ संभाजी राजे यास दिल्ली पादशाहा रामराजे यास विजापूर पादशाहां यांनीं कैद केलें, तेव्हां संताजी घोरपडे यांनीं मुलखांत बंडाई केलें; बहिरजी घोरपडे विजापुरांत हिक्मत

करून मालोजी घोरपडे यास रामराजे याचे बिछानेवर निजबून राजे यास घेऊन कर्नाटकांत चंदीचंदावरास दाखल झाले. पुढें शाहूराजे यास दिल्ली पादशाहानीं चौथाई व सरदेशमुखी वतन देऊन पाठाविलेवरून स्थळास येऊन पावले. ते खबर ऐकून चंदीहून रामराजे व बहिरजी घोरपडे येऊन पावले व मालोजीही येऊन पावले.

२ उभयतां महाराज स्थळास येऊन पावलेवरी बहुत खुषी होऊन महलाजीचे मुलमे संताजी, बहिरजी व मालोजी यांची मेहनत खातीरेंत आणून:—

संताजी—यास पांच गांव इनाम व करवीर हवेलीचे, सरदेशमुखी वतन व इसाफत गांव व मलप्रभापासून तुंगभद्रेपावेतों मुलूख देऊन सेनापती किताब दिले.

बहिरजी—यास पांच गांव इनाम करवीर हवेलीचें सरदेशमुखी व इसाफत गांव व तुंगभद्रेपासून रामेश्वरपावेतों मुलूख देऊन हिंदुराव ममलकतमदार किताब दिले.

मालोजी—यास पांच गांव इनाम व अजरे व बेळगांवप्रांतचे व सरदेशमुखी व इसाफत गांव देऊन कृष्णापासून मलप्रभापावेतों मुलूख देऊन अमिरुल उमराव किताब दिले.

सवरीं तिघास मुलूख दिले म्हणोन लिहिलें आहे; परंतु दाखले पाहतां सदीं मुलखाचे चौथाई दिले असतील असें दिसत आहे.

### ६ घोरपडे गजेंद्रगडकर.

यादी घोरपडे हिंदुराव गजेंद्रगडकर यांची कैफियत. घोरपडे हे पादशाई पैवस्तींत वजीर मूळ पुरुष मालोजीराव घोरपडे पादशाहाकडे होते. त्याचे पुत्र माहाळोजीराव घोरपडे हेही पादशाईत वागले. नंतर त्याचे पुत्र बहिरजीराव घोरपडे हिंदुराव ममलकतमदार सेनापती हे श्रीमंत शिवाजीमहाराज छत्रपती शककर्ते याजकडे बहुत मेहनत करून, गजेंद्रगड व गुत्ती दौलत मिळविली. त्यांस वर्षे सुमार २५०. श्रीसुब्रह्मण्य प्रसन्न झाला. त्याचे पुत्र मुरारराव हिंदुराव ममलकतमदार सेनापती हे विजापुरचे फौजेबरोबर लढाई करून उमर २२ वर्षांमध्ये लढाईत मेले. याचा वंश नाही. त्याचे धाकटे बंधू शिंदोजीराव हिंदुराव घोरपडे ममलकतमदार सेनापती राजऋषी याप्रमाणें किताब मिळविला. त्याचे पुत्र मुरारराव हिंदुराव सेनापती गुत्तीकर. याचे धाकटे बंधू दौलतराव हिंदुराव याचे धाकटे बंधू भुजंगराव घोरपडे लढाईत पडले. उमर वर्षे २०. त्याचा वंश नाही. दौलतराव घोरपडे हिंदुराव याचे पुत्र थोरले बहिरजीराव, धाकटे पुत्र संभाजीराव, नानासाहेब ज्येष्ठ बहिरजीराव साहेबाचे पुत्र. हल्लीं राजश्री भुजंगराव आप्पासाहेब घोरपडे हिंदुराव गजेंद्रगडांत आहेत. मूळ पुरुष मालोजीराव व माहाळोजीराव हे दोघे पादशाई सेवेत या वेळेस दौलत बहुतच होती. त्या काळचीं कागदपत्रे हरएक गर्दीत तसनस झालीं. दाखला राहिला नाही. बहिरजीराव हे मूळ पुरुषाचे नातू. यांनीं छत्रपती सरकारांत सेवा करून, गजेंद्रगड व गुत्ती नैमे तालुका चाळीस लक्षांचा अनभवीत आले. त्यास अडीचशें वर्षे झालीं. पुढें मुरारराव

गुत्तीकडे याचें व हैदराचें वैमनस्य पडून तमाम मुराररायाकडील तालुका ठिपूनें घेतला. याजवर मुराररायाचे बंधु दौलतराव यांजकडीलही गजेंद्रगडसुद्धां कितेक तालुका वहा घेईं ठिपूनें अंमल केला. तो परतून पेशवे यांचे कुमकेनें दौलतरावसाहेब यांनें घेऊन आपला तालुका आपण अनुभवीत होते. त्याचा तपशील वगैरे:—० × × × एकंदर आहवाल असा आहे कीं, सदरी गजेंद्रगड किल्लाखालीं सरंजाम बेरीजने लिहिले-प्रमाणें बहुत वर्षे चालून दरम्यान हरिपंत फडके यांनीं आदावतीनें नबाब निजाम अल्लीखान बहादूर याचे व ठिपूचे व पेशवे पंतप्रधान या तिघांचे तहाचे संधीत, आमचे शुद्ध जातीचाच खर्चापुरता तालुका मामूल जहागिर समजून, सदरहु जातीपुरतें ठेवून, हें ठेवल्याचे मोबदला पेशव्यानें नबाबास आणखी सरकारी तालुका वेगळा देऊन आमचा तालुका आझांकडे ठेविला. त्यांची बेरीज हल्लीं चालती ती अजमासें:— भुजंगराव आपासाहेब व भाऊबंद वगैरे मिळून चालत आहे रुपये १३०००. गजेंद्रगडांत हल्लीं वहिवाट चालतच आहे. आणि मामूल दौलतीचा दाखला तमाम पेशवेकडील नाना फडणीस यांच्या दफ्तरास बार आहे; हल्लीं गजेंद्रगड तालुकेंत धर्मादाय ब्राह्मणांस दिल्याची सनद व शेठे महाजन यांस पेट वसाहत करणेस सनद दौलतराव घोरपडे यांनीं दिली ती अजमासें शंभर वर्षांच्या सनदा हजर आहेत. पूर्वील कागदपत्र ठिपू याचे गर्दीत तसनस झाली. परंपरा चालत आलेला मजकूर असा आहे. घोरपडे हे पादशाई सरदार त्या दिवसापासून दौलतदार, पुढें छत्रपती सरकाराकडे राज्यभार आला, त्याजकडे वागले. नंतर पेशवे हे कृपा करीत होते. त्याजवर कुंपणी सरकार सरफराज होऊन परामृष करीत आहेत. तारीख छ २१ माहे जमादिलावल ऊर्फ भाद्रपद वद्य ८ मन्मथ संवत्सरे शके १७५१ सन १८३५ इसवी.

( ब )

यादी घोरपडे हिंदुराव गजेंद्रगडकर यांची कैफियत तपशील मुरुसन सलासीन मयातेन व अलफ.

पूर्वी दक्षणेचे पादशाहा तीन, निजामशाहा व आदिलशाहा व कुतुबशाहा, त्यांमध्ये निजामशाही पादशाही बुडाली. घोरपडे हे वजीर दोन पिढींचे. विजापूर पादशाही आदिलशाहाचे कारकीर्दीत पादशाहाची पैवस्ती तीन पिढी. घोरपडे याची पिढी दोन पादशाहींत गुजरल्या. नंतर आदिलशाहा पादशाहा धाकटा त्यास लालखान पठाणानें कैद करून त्या मुलाचे नांवें आपण मुखत्यार फौजबंद होऊन मराठे सरदारास बुडवावें हा इरादा केला. त्यावेळीं शिवाजीमहाराजाचे बाप, इब्राहम आदिलशाहा पादशाहाचे कारकीर्दीस, महाराजाचे वडील निजामशाहींतून इकडे भागानगरास आले; आणि शिवाजीमहाराज यांनीं घोरपडे वजीर यास भागानगरचे मुकामी कुतुबशाहा पादशाहाचे हुजूर येणें ह्मणून हुजूरचा कौल-फरमाना पाठविला; आणि लिहिलें कीं, तक्त व छत्र विजापुरचा कोट पठाणींनीं कब्ज केला; पादशाईस पठाण जाला ही गोष्ट बरी नव्हे. कुळी दक्षिणी याची घरे बुडविली.



सबब कुतुबशाहाचे हुजूर तुल्ली आले असतां तुझांस दुगणी दौलत मिळेल. पठाणास सामील न होतां इकडे येणें. असें. मालोजी घोरपडे मुधोळकर हल्लीं होते याचे आज्ञे मालोजी व आमचे मुरारराव साहेबाचे निपणजे बहिरजी घोरपडे गजेंद्रगडकर हे उभयतां बंधूवर्म आणखी एक बंधू दतवाडकर व कापशीकर हे एकंदर गोत्र पुरुष मूळ घराणें एक फत्तसाहीत दोन पिढ्या या त्रिवर्गाचे आज्ञे वजीरी अनभवीत आले. पुढें कुतुबशाहाचे फर्माने-बखोजीव शिवाजीमहाराज यांचे लिहिल्याअन्वये लालखान पठाणाची संगत सोडून, सदरहू मालोजी घोरपडे त्रिवर्गबंधूसुद्धां कूच करून भागानगरचे मुक्कामीं जाऊन, राजे याचे विद्यमानें कुतुबशाहा पादशाहाचे भेटी घेऊन, पादशाहास व राजेस विजापुराकडे मजल दरमजल येऊन पठाणाचें पारिपत्य केलें. हिंदु पदवी जुमामदींनीं घोरपडे वजीर त्रिवर्गांनीं राखली. सबब मालोजी घोरपडे यास राजे हा किताब व बहिरजी घोरपडे यास हिंदुराव हखणोन किताब; दतवाडकर यास अमिरुल उमराव हखून मरातब, कुतुबशाही पातशाहा सरकारांतून तिनी किताब घोरपडे यांस मिळाले. त्याकाळीं दवलतही पादशाहाचे वेळीं बहुत चालत आली. पुढें पादशाहाचें व महाराजाचें कारणपरत्वे वर पडून विजापुरांत महाराजास पादशाहानें कैद केले. करवीरप्रांत पनाळगड वगैरे राजधानी किल्ले पादशाहाकडून ठाणीं बसत चाललीं ! त्यासमयीं घोरपडे दोघे चौघे बंधू एकदिल होऊन जातीचा अभिमान धरून, फौज जमावानिशीं हरएक प्रांतांत फिरत होते. तेथून संताजी घोरपडे दोघे तिघे बंधूनिशीं दरकूच फौजबंद आणि तोफेचें कूच व्हावयाजोगी फौज बहुत होती. ते थोरले संताजी कापशीकर विजापूरनजीक येऊन दाखल झाले. दोघे बंधूवर्ग घोरपडे बायकांचें सोंग घेऊन पाण्याच्या घागरी डोक्यावर घेऊन कैदखान्यांत बायकाचे मिषें जाऊन राजे पलंगावर निजले होते. तेथून बायकाचें सोंग राजास घालून एक घोरपडे, राजाचे पलंगावर राजेच निजले असे बहाणा करून गुप्त निजले. एकजण घोरपडे स्त्रियाचे वेषानें राजेसुद्धां कैदखानेंतून संताजी घोरपडे याचे फौजेंत राजेस घेऊन दाखल जाहले. पलंगावर निजले घोरपडे त्यांनीं बेआराम तबेत हखून अंगवरील पांघुरणाची मुसकट न काढितां जेवायास उठेनात. राजे भोजनास न आले हखून वरदी हुजूर पोहचली, नंतर चौकशी झाली. मुसकट पाहतांच शत्रु गेला असें समजून यास मारून तरी उपयोग नाहीं हखून पोशाख देऊन सोडून दिलें. नंतर एकंदर घोरपडे दरकूच करून करवीर प्रांतीं येऊन राजधानी हस्तगत करून करवीरकर संभाजी-राजे छत्रपती यास तस्तावर आभिषेक करून तमाम ठाणीं धेतलीं. तेव्हां हिंदु पदवी राखली, सबब संताजी घोरपडे हे वडील घराणें यास सेनापती पदवी देऊन छत्रपतीनें वस्त्रें दिलीं. उपरांतिक श्रीमहालक्ष्मीची मूर्ति यवनाचे योगें बहुत काल गुप्त होझी. ती थोरले बहिरजीचे पणतू शिंदोजी घोरपडे हिंदुराव याचे स्वप्नीं येऊन देवळांत स्थापना करावी हखून आज्ञा झाली. गुप्त स्थळही स्वप्नीं सांगितलें. त्या

ठिकाणास जाऊन ती मूर्ति पालखीत दाखल करितांच पालखी भोयास उचलेना. तव घोर-  
पडे हिंदुराव यांनीं श्रीमहालक्ष्मी देवीस अर्ज केला कीं, आमचे स्वप्नांत सांगितलेलें सवें  
असें आहे, तर आह्मी खांद्या पालखीस लावितांक्षणीं स्वारी उठावी. झणून खांद्या देतांच  
पालखी उठली. तव देवळांत स्थापना होऊन देवीचीं प्रधानकीचीं वस्त्रें घोरपडे हिंदुराव  
यांस होऊन पांच गांव व सरदेशमुखी वतन इनाम छत्रपतीनें करून दिले; ते हिंदुराव  
यांनीं सरदेशमुखी व सांगवड गांव आपलेकडे ठेवून बाकीचा चार गांव गुमास्ते माझ्या  
यांस इनाम देऊन श्रीची अर्चा चालविली. पुढें महाराजाचे कृपें पेशवे प्रबल झाले. तेव्हां  
त्यासही घोरपडे अनसरून होते. शिंदोजीराव याचे पुत्र मुरारराव थोरले, धाकटे दौलतराव  
गजेंद्रगडकर हे दोघे बंधू; त्यांत मुरारराव महापराक्रमी दैवशाली होऊन मोंगलाई  
चौथाई घेऊन छत्रपतीचे बंधू चंदीचंदावराकडे गेले. त्याचे आज्ञेरूप पेशवेचेही दोस्ती  
राखून गुची वगैरे चाळीस लक्षांची दवलत अनभवीत होते. पादशाही व शिवशाही व पेश-  
वाई वगैरे राजकारणें अनेक तऱ्हेचीं त्या धांदलींत कितेक दवलती गेल्या आल्या. कामद-  
पत्रें दप्तर तसनस झालें. असो. दरम्यान टिपूस देखील मुरारराव शत्रू प्रबल होते.  
उपर हैदराअल्लीखान हे त्रिचनापल्लीवर दावा पेशजी करीत असतांना इंग्रज-  
बहादूर यांनीं आपले कुमकेस मुराररावसाहेब यांस त्रिचनापल्ली मुक्कामी कांहीं दिवस  
घेऊन गेले होते. श्रीमंतांचे वकील मुरारराव याजकडे हमेशां राहत होते. तदनंतर थोरले  
श्रीमंताची स्वारी कर्नाटकांत आली, त्यावेळें सातारे इलाख्यांतील दाभाडे सेनापती याची  
पदवी तगैरी करून कर्नाटकचे स्वारींत मुरारराव यास सातारे राजधानींतील सेनापती पद-  
वीचीं वस्त्रें देऊन जहागीरही बहुत बेलवती, सिधनाथ, रोली, निडगुंद वगैरे देऊन, मुरार-  
राव याचे बंधू दवलतराव घोरपडे गजेंद्रगडकर याजवरही श्रीमंतांनीं बहाल मर्जी करून  
गजेंद्रगड तालुका तीन लक्षांचा किल्लेखर्चाकडे करून दिले. त्याजवर टिपूचे हैदराअल्लीखान  
वगैरे लढाई होऊन फितुरानें पुढें मुरारराव हैदराचे हस्तगत झाले. तदनंतर गजेंद्रगडही  
टिपूनें घेतला. दौलतरावसाहेब यांनीं श्रीमंताची मर्जी रक्षून इकडे कर्नाटकांत श्रीमंताचे  
स्वारीसह हरिपंत फडके वगैरे येतांच गजेंद्रगडास मोर्चा देऊन, हर युक्तीनें श्रीमंताचे  
आज्ञेप्रमाणें किल्ले गजेंद्रगड दवलतरावसाहेब यांनीं घेऊन, अंमल सुरू करून तीन  
लक्षांचा मुलूख किल्लेखर्चाकडे अनभवीत आले. त्याजवर परशुरामपंत भाऊ पटवर्धन यांची  
फार दोस्ती दवलतराव घोरपडे करीत होते. भाऊचे व हरिपंत फडक्यांचें वैमनस्य,  
घोरपडे भाऊचे दोस्त, आपले मर्जीनें वागत नाहींत; या आकसकोशीनें मोंगलाई तह करते  
वेळीं किल्ले गजेंद्रगड वगैरे पंचवीस हजाराची जहागीर जातीचे. खर्चास ठेवून, पावणेतीन लक्षांचा  
तालुका मोंगलाईकडे तहाचे संधीत त्यास दिला. त्याजवर अलीकडे इस्तकबिलपासून श्रीमंताचें  
देणें कैलासवासी थोरले माधवराव यानें गलमल, निडगुंद, इंगल वगैरे गांव पञ्चास सत्त  
हजाराचे चाळीस पञ्चास वर्षे घोरपडे गजेंद्रगडकर याजकडे गड किल्ले सेरीजकरून बांध

चालत आले. ते हल्लीं श्रीमंत बाजीराव रघुनाथ पंतप्रधान यांनीं जप्त करून जुने सरदार मोडून नवीन केले. टिपूचे लढाईमुळें कागदपत्र गजेंद्रगड वगैरेचे तसनस झाले. राजक्रांत बहुतेक गर्दी. हर पैवस्तीस पर सैनाचे होऊन घोरपडेचे वंश व वहिवाट दाखला एवढेंच राहिलें. बाकीचे कागदपत्रें शत्रूचे प्रबलांत गेलीं. सारांश घोरपडे हे पादशाहीपासून वजिरी घराणें व सुबह्मण्य नागसर्प प्रत्यक्ष मूळ पुरुषापासून प्रसन्नवरदी त्या कृपेनें पादशाईचे हुकुमानें पराक्रमशाली होऊन दौलत करीत आले. पादशाही पुण्य सरल्यावर शिवशाही छत्रपती सरकारकृपें त्याचे आज्ञेप्रमाणें बहुत दबलत जाऊन थोडक्या दौलतींत गुजारा करीत आले. राजधानी पुणें पेशवे राजेचे योगं प्रबल जाहले. याचे मर्जीनुरूप मुरारराव व दवलतराव जुरतीनें श्रीमंताचे निरोपें कोते दौलत अनभवून चालले. श्रीमंताचें पुण्य सरून कुंपणीसरकार सार्वभौम पृथ्वीपती शककर्ते सरकार इंग्रजबहादूर द्याळ, मामुल सरदारास वाढविणार, दीन दुनयाचे पादशाहा, त्याचे हुकमानुसार मुरारराव व दौलतराव यांचे नातू राजश्री भुजंगराव घोरपडे हिंदुराव हे किल्ले गजेंद्रगड मुक्कामी गरीफदारी दवलतींत श्रमून कर्जाच पेचीं येऊन सदरहू तालुकेंत भोगवटा करीत आहेत. श्रम परिहार करणार खावद समधे आहां. तारीख छ २४ माहे मोहरम मुकाबला २४ जून सुरुसन फसली १२४२ सन १८३२ इसवी. जेष्ठ वद्य ११ नंदन संवत्सरे शके १७५४.

### ७ जाधवराव.

( अ )

साहेब मुषफक मेहरबां करम फर्माय दोस्तान राबर्ट किसर साहेब बहादूर आक्विंग एजंट जिल्हा दक्षिण सलामहू.

आजी साहेब राजे रतनसिंग जाधवराव सलाम बादआज सलाम अंकी येथील खैरियत जाणून आपली शादमानी हमेशा कलमी होऊन दिल अराम करीत असावें. दिगर मजमुन आ साहेबाचें खत तारीख २९ माहे मे सन १८५२ इसवी नंबर ३८२ चें कलमी जाहालें. त्यांत आपल्यास किताब राजे हें पद आहे तें कधीं, कोणत्या बाबेनें, कोणाकडून प्राप्त झालें, त्याचा एकंदर खानदानी व पदवी थोरपणाचा इतिहास दाखल्यानिशीं लिहिण्यांत येऊन दाखला असेल तो ऐकिण्यांत पुरावा दाखल्यानिशीं पाठविला पाहिजे. पुरावा नसल्यास तैसेंच लिहून पाठवावें ह्मणून लिहिण्यांत आलें. त्यास खानदानी व थोरपणा व राजे हा किताब पूर्वीं आमचे पणजे मूळपुरुष धनाजी जाधवराव हे फौजबंद पराक्रमी. यांनीं श्रीमंत महाराज शिवाजी राजे छत्रपती यांनीं राज्य सर केले-नंतर श्रीमंत महाराज शाहूराजे यांनीं बहुत पराक्रमी फौजबंद आणि राज्य मिळविते जाणून स्नेनापत्तिव दिलें. ते समयीं बाळाजी विश्वनाथ हे धनाजी जाधवराव याचे पदरचे, यांनीं कामें मोठीं मोठीं केलीं. राज्यकर्तेपणा समजून त्यास पेशवेपद प्राप्त झालें. पेशवे

यांनीं मूळ जाणून लढाईअखेर अमोदर भेटीस पुण्यास जाणें झालें असतां येत होते. धनाजी जाधवराव यास पुत्र वडील चंद्रसेन जाधवराव व धाकटे शंभूसिंग जाधवराव हे आमचे आज्ञे. यांनीं दिल्लीस जाऊन पादशाहा याची भेट घेतली. पादशाहांनीं पराक्रमी पाहून हैदराबाद इलाख्यांत बावन्न लक्षाचे जहागिरीचे सनदापत्रें देऊन राजे ही किताब दिली. सनदापत्रें वगैरे दाखल्याचे कागद दरोबस्त होळकर दंग्यांत गेले. खानदानी व थोरपणा व राजे ही पदवी छत्रपती महाराज यांचे राज्यापासून मोंगलाईत महशूर आहे. हा सर्व अभिप्राय कंपनीसरकारांत जाहीरच आहे. मालूम व्हावें. हमेशां खत कलमी होऊन दोस्तीची मेहेर असावी. रवाना तारीख छ ७ माहे सवाल सन १२६२. जादा काय लिहिणें. प्यार मोहोबत कीजे हे किताबत.

( ब )

यादी राजे रतनसिंग जाधवराव सुरुसन सलास सलासीन मयातैन व आलफ. सरकारांतून मेहेरवान डिपुटी एजंटसाहेब यांचे कचेरींतून तारीख ८ सप्टेंबर सन १८३२ इसवीचें इज्यानिवास खत आलें. त्यांत मजकूर कीं, हजरत बंदेगान अल्ली रैट हनराबल गौरनर फौसल चाहत आहेत जे, दक्षिणेंतील जहागीरदार लोक यांची कैफियत कशी आहे, त्याची वाकबगारी व्हावी झणून सरकारांत रवाना करण्याकरितां थोडके मजकुरांत कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे. त्यांतील तपशील आपली खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर जाला ते, व फौज व जात सरंजाम आपले वडिलाकडे चालत होता व सदर सरंजाम कोणते तारखेस दिला ती तारीख, व आपले जहागिरीचे वहिवाटींत पेशवे-सरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कंपनीसरकारांतून चालत आहे, त्यांत कंपेश तफावत काय आहे ते, वगैरे यादींत दाखल करून रवाना केलें पाहिजे झणून पत्र आलें. त्याचें उत्तर लिहिण्यांत येतें, बितपशील.

१ आपली खानदानी व बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर झाला. याचें उत्तर:—श्रीमंत महाराज शिवाजी राजे छत्रपती यांनीं राज्य सर केलें, पादशाई किल्लेकोट लढाया वगैरे केल्या, ते समयीं आमचे पणजे धनाजी जाधवराव हे सरदार फौजबंद, पराक्रम-लौकिक मोठा महशूर, त्यासी सेनापती पदवी दिली. पुढें श्रीमंत महाराज शाहू राजे छत्रपती शके १६३१ सालीं दिल्लीहून दक्षिणेस आले. त्यांनीं धनाजी जाधवराव सेनापती हे फौजबंद त्यास अनुकूल करून घेऊन राज्यकारभार करूं लागले, आणि राज्याचा बंदोबस्त केला. धनाजी जाधवराव यांचे पदरीं बाळाजी विश्वनाथ होते. हे बहुत उपयोगी पडले, सबब त्यास सेनाकर्ते असा किताब झाला. पुढें मोठे मोठे कामें करितां पेशवे पद प्राप्त झालें. परंतु आपण जाधवराव यांचे पदरचे हें जाणोन होते. खानदानीची बढती धनाजी जाधवराव याजपासून व खानदानीचा लौकिक महशूर शिवाजीमहाराज यांची राज्यावर स्थापना केली त्या दिवसापासून जाहला.

२ फौज व जातसरंजाम आपले वडिलाकडे चालत होता; व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस दिला त्याचें उत्तर:—आमचे पणजे धनाजी जाधवराव सेनापती याजकडे फौजबंद उत्पन्न वगैरे मोठें; त्यासी पुत्र दोघे, चंद्रसेन जाधवराव व शंभुशिंग जाधवराव. हे आमचे आज्ञे. हे उभयतां दिल्लीस जाऊन पादशाहा याची भेट घेऊन पादशाहा यांनीं त्यांचा पराक्रम शूर असें मनांत वागवून ( पुढें फाटलें आहे ) वर्ष सुमारे झालें. तारीख लावाव-  
याची त्यास आमचे सनदापत्रें दंग्यामुळें अस्ताव्यस्त झालीं आहेत. कलम.

३ आपले जाहगिरीचे वहिवाटीत पेशवेसरकारांतून कोणते तऱ्हेनें दखलागिरी केली याचें उत्तर:—आमचे सरंजाम मोकासे अमलाचा बहुतकरून मोंगलाईत होता. त्याचा अम्मल जसा जोर पोंहोचेल तसा आम्ही घेत होतो. राहण्याचा गांव माळेगांव, त्याची वहिवाट मुखत्यारीनें आमचे आह्मी करीत आहों. यांत सरकारची दखलागिरी कांहीं एक नाहीं.

४ आपलेकडे सरंजाम हल्लीं काय चालत आहे याचें उत्तर:—

१०००० राहण्याचा गांव माळेगांव व कुगांव मोकासबाब आंबडबरसी  
फुटगांव मिळून आकार अजमास.

१०००० मोंगलाईत सरंजाम गेला त्याबद्दल बेवीस हजार रुपये याखे-  
रीज जात सरंजामास द्यावयाचा नेम बोलण्यांत आला.  
परंतु मोंगलाईबद्दल सरंजाम झणून दिला नाहीं. पेनशिन  
दहा हजार करून दिली ते वेळेस पत्रांत मजकूर कीं, खावं-  
दांनीं मोठेपणावर नजर देऊन पेनशिन दिली झणून.

२००००

याप्रमाणें चालत आहे.

कलम.

५ पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती, व हल्लीं कुंपणीसरकारांतून चालत आहे. त्यांत कपेश तफावत काय? याचें उत्तर:—आमचे तीर्थरूप आमरसिंग जाधवराव शंभर वर्षे वयाचे वृद्ध होते. त्यांनीं बाळाजी विश्वनाथ याजपासून श्रीमंत राजेश्री बाजीराव साहेबापावेतों जितक्या कारकिर्दी पेशव्यांचे घरीं झाल्या, तितक्याही कामकाजांत उपयोग करून पाहिल्या; व आपले पूर्वीचे यजमान जाधवराव आपण यांचे योगानें दौलतीस आलों, ऐसें पेशवे आठवीत होते. असागिरीवर आमची निशाणीची खुण वागवीत होते. आमचे जाधवराव पुण्यास आले असतां पेशवे यांनीं भेटीस शहराबाहेर सामोरे यावें, असा रुढा चालत होता व मातबर कामकाजाचे प्रसंगानें व फौजेचे जमितीनें राहती त्यास कंपनी सरकारांतून फौजेचा सरंजाम महकूब झाला. ( पुढें फाटलें आहे. )

### ८ जाधवराव बाघोलीकर.

यादी लक्ष्मण जाधवराव बाघोलकर सुरुसन आर्बा सलासीन मयातैन व आलफ मेहरबान वार्डिनसाहेब बहादुर डेपुटी एजंट जिल्हा दक्षिण यांचें पत्र तारीख ८ माहे सप्टेंबर सन १८३२ इसवीचें ईजानेबास खत आलें. त्यांत मजकूर जे, हजरत बंदेगानअल्ली रेट हनराबल गौरनर कौंसल चाहत आहेत कीं, दक्षिणेंतील जहागिरदार लोक यांची कैफियत कैसी आहे, याची वाकबगारी व्हावी. याजकरितां आपण सरकारांत रवाना करणेकरतां थोडके मजकुरांत कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे झणून. त्याजवरून इकडील मजकूर लिहिण्यांत येतो जे:—

१ आपली खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर जाहला झणून पत्रांत कलमी केलें त्याचें उत्तर:—आमचे निपणजे पिलाजी जाधवराव मूळ-पुरुष दौलत संपादनकर्ते. हे श्रीमंत महाराज शाहू छत्रपती दिल्लीहून आले, ते वेळेस कितीएक सरदार त्यांस राज्यावर आणावें झणून गेले होते. त्यांनीं पादशाहाची मर्जी संपादन करून महाराजास दक्षिणेस घेऊन आले. त्यांत पिलाजी जाधवराव यांनीं महाराजांचा बहुत उपयोग केला. त्याजवरून शाहू छत्रपती यांनीं कृपा करून इनाम पुणें प्रांतीं मौजे दिवें येथील मोकासा बाबती व मौजे नांदेड येथील स्वराज्य अंमल इनाम दिला. सन ११२३ साचे सालीं तारीख १३ माहे जिलकाद दिल्यानंतर पुढें औरंगाबाद प्रांतीं कनड फुलबरी वगैरे माहालाचे मोकासे दीड लक्ष रुपयांचे सरजामास दिले. त्या योगें-करून पागा पथक जाबीद राहून, सरकारांनीं कामगिरी फर्माविली तें काम महाराजांचे प्रतापें-करून बजावीत होते. दमाजी थोरात हिंणगांवकर यांनीं बाळाजी विश्वनाथ पेशवे व आबाजीपंत पुरंधरे यांस कैद केलें. त्यास कारस्थानानें व जहामर्दीनें काढून साताऱ्यास नेलें व पुढें दमाजीस धरून कैद करून साताऱ्यास नेलें. तेव्हांपासून खानदानीची बढती व लौकिक महशूर झाला. या अलीकडे बाळाजी विश्वनाथ व बाजीरावसाहेब पेशवे यांजबराबर दिल्लीच्या स्वाऱ्या केल्या. नबाबावर स्वारी करून कामकाज बजावून सरकारांत मुलूख घेतला, आणि नबाब निजामनमुलूक यांनीं आह्मांस इनामगांव मौजे गोळेगांव व मौजे मरकल येथील जाहागिरीचा अंमल इनाम दिला. त्याजवर हिंदुस्थानांत राजे छत्रसाल याजवर वक्त पडला, तेसमयीं बाजीरावसाहेब यांजबरोबर जाऊन छत्रसाल राजे यांजवर शत्रु आला होता त्याचें परिमार्जन करून संस्थान रक्षिलें. याजमुळें राजे छत्रसाल यांनीं पेशवे सरकारांत लाख रुपयांचा मुलूख बुंदेलखंडाचा दिला. आह्मांसही इनाम मौजे बासा वगैरे देहें ५ सागर प्रांतीं इनाम दिलीं. त्याजवर त्रिंबकराव दाभाडे बाजीरावसाहेब याजवर चढोन आले व त्याची जमीयत भारी होती, असें असतां त्यांशीं लढाई देऊन दाभाडे यास शिकस्त करून गारद केलें व चिमाजी आप्पाबराबर वसईचे मसलतीस पिलाजी जाधवराव बराबर होते. तेथें कामकाज भारी करून इनाम बीग वसईस सरकारांतून करून दिला, व बंगाल्याची मोहीम नानासाहेब पेशवे याजबरोबर सेनापती

होऊन केली. याप्रमाणें कोणतेही स्वारींत हरवक पिलाजी जाधवराव याचा लौकिक व पराक्रम सरकारचे पुण्यानें होत गेला. याजमुळें श्रीमंत नानासाहेब पेशवे हे पिलाजी जाधवराव यास काका म्हणत होते, व जाधवराव सरकारवाड्यांत आले असतां, सरकारचे बंदेखान्यांतील बंदे याचा खुलासा याचेबद्दल खातर करून देत होते. एवढा मोठेपणाचे रुढबा सरकारांत महाराजांचे प्रतापेंकरून ठेवीत होते.

कलम.

२ फौज व जातसरंजाम आपले वडिलाकडे चालत होता, व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस दिला, ती तारीख व आपले जाहगिरीचे वहिवाटींत पेशवेसरकारांनीं कोणते तऱ्हेनें दखलगिरी केली व आपल्याकडे सरंजाम हल्ली काय चालत आहे, म्हणून पत्रांत कलमी केलें त्याचें उत्तर:—फौज व जातीस सरंजाम शके १६४० साचे सालीं पुणें प्रांतीं बाघोली वगैरे गांव येथील जाहागीर मोकासे वगैरे अम्मल औरंगाबाद प्रांतीं कंनड व फुलबरी वगैरे माहाल ९ याचे मोकासे दीड लक्षाचे शाहू महाराज छत्रपती यांनीं दिले. त्या सालची मूळची सनदेची तारीख लावावी तर कागदपत्र अस्ताव्यस्त, याजमुळें सनदेची तारीख लाविली नाही. अलीकडे महाराजांचीं ताकीदपत्रें कंनड फुलबरी वगैरे महालाचीं आहेत. सन ११३१ साचे सालचीं त्याजवर तारीख मार्गशीर्ष बहुल ८ अष्टमीच्या लागल्या आहेत. पुढें बाजीरावसाहेब पेशवे यांनीं हिंदुस्थानांत नरवर प्रांतीं शिप्री, कुलारस वगैरे महाल मिळोन लाख रुपयांचा मूलख दिल्या. एकूण फौज व जातीस मिळोन अडीच लक्ष रुपयांचा सरंजाम चालत होता. मूळ पुरुष संपादक पिलाजी जाधवराव याचे पुत्र सटवाजी जाधवराव यास पुत्र २:—सुभानजी जाधवराव व जोत्याजी जाधवराव. यास पुत्र लाडोजी जाधवराव वाडीस राहताना. निम्मे हिस्सेदार सुभानजी जाधवराव यास पुत्र दोन, संभाजी जाधवराव व मळोजी जाधवराव हिरसा निम्मे. संभाजी जाधवराव यास पुत्र पिलाजी जाधवराव बाघोलीस राहतात. हिम्सा चौथा व मळोजी जाधवराव याचे पुत्र आह्मी, हिम्सा चौथा बाघोलीस राहत आहो. येणेंप्रमाणे आज पांच पिढ्या सरकारची सेवाचाकरी पागापथक सरंजामसुद्धां इस्तकविल तागाईत सन १२२८ लढाईअखेरपर्यंत करीत आलों, व महालमलूखही तोपर्यंत आमचे आम्हांकडे चालत होते. त्याची मुखत्यारी आमची आम्हांकडेस होती. सरकारांतून दखलगिरी करीत नव्हते. कलम.

३ पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती, व हल्ली कुंपणीसरकारांतून चालत आहे. त्यांत कमपेश तफावत काय आहे तें वगैरे यादींत दाखल करून रवाना करावें म्हणून कलमी केलें त्याचें उत्तर:—पेशवेसरकार जोपर्यंत होते, तोपर्यंत जो आमचा रुढबा होता त्याप्रमाणें चालवीत होते. पुढें कुंपणीसरकारांतून मेहरबानी करून आमचे जातीस सरंजाम लावून दिला. तो परगणे कंनड सुभा खानदेश येथील देहे १३ तेरा चौवीस हजार पांचशें पांच रुपये सवा दाहा आणे याचे तनखाचे गांव, पैकीं निम्मे पिलाजी जाधवराव याच्या स्त्रिया याजकडे देहे ६॥ साडे सहा तनखा रुपये १२२५२॥-१ बारा



हजार दोनशें बाबन्न रुपये सवा तेरा आणे. बाकी देहे ६॥ तनखा रुपये १२२५२॥—  
 बारा हजार दोनशें बाबन्न रुपये तेरा आण्यांचे देहे साडेसहा आम्हांकडेस सरंजामास चालत  
 आहेत. खेरीज पुणेप्रांतीं वाघोली वगैरे देहे सहा येथील जाहागीर मोकाशाचे अमलाचे  
 हिसे आहेत त्याचे तनख्याचे रुपये १२९७॥॥ पैकीं निम्मे पिलाजी जाधवराव याच्या  
 स्त्रिया यांजकडेस ६४८॥॥ साहाशें अठेचाळीस पावणे चौदा आणे व निम्मे  
 आम्हांकडेस ६४८॥॥ साहाशें अठेचाळीस पावणे चवदा आणे तनख्याचा अंमल  
 चालत आहे. याखेरीज इनाम सदरीं लिहिले आहेत. खेरीज जकातीचे माफिचें दस्तक व  
 दसऱ्याबद्दल पोशाख सरकारचा, बहुमानाची सनगें साडेतीन, सरकारांतून पावत आहेत, व  
 सरकार आम्हावर बहुत मेहरबानी करून मानमरातब पूर्ववत्प्रमाणें रक्षित आहेत. आम्हास  
 पुत्र दोन व बंधू तीन याप्रमाणें आहेत. त्यास साहेबानी मेहरबानगी करून दिलें, त्यांत  
 गुजारा करून सरकारचे कदमापाशीं खुषी आहेत. कलम.

येणेंप्रमाणें तीन कलमें लिहिलीं आहेत त्यांजवरून सरकारचे दिलांत येईल. मिती  
 ज्येष्ठ वद्य ५ शके १७५५ विजयनाम संवत्सर.

### ९ जाधवराव वाडीकर.

यादी लाडोजी जाधवराव वाडीकर सुरुसन सलास सलासीन मयातैन व अलफ मेहरबान  
 वार्डिनसाहेब बहादूर डेपुटी एजंट जिन्हा दक्षण यांचें पत्र तारीख ८ माहे सपटंबर सन  
 १८३२ इसवीचें ईजानिबास खत आलें. त्यांत मजकूर जे, हजरत बेदगानअली रैट  
 हनराबल गौरनर काँसल चाहात आहेत की, दक्षिणेंतील जाहागीरदार लोक यांची कैफि-  
 यत कशी आहे त्याची वाकबगारी व्हावी. याजकारितां आपण सरकारांत रवाना करण्या-  
 कारितां थोडकें मजकुरांत कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे. ह्मणून त्याजवरून इकडील  
 मजकूर लिहिण्यांत येतो. ब्रितपशील.

१ आपली खानदानीची बढती व काणंत तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर  
 जाहला ह्मणून पत्रांत कलमी केलें, याचें उत्तर:—आमचे पणजे पिलाजी जाधवराव हे श्रीमंत  
 महाराज शाहू छत्रपती दिलीहून आले, त्या वेळेस किती एक सरदार त्यास राज्यावर आ-  
 णांव ह्मणून गेले होते. त्यांनीं पादशाहाची मर्जी संपादन करून महाराजास दक्षिणेस धेऊन  
 आले. त्यांत पिलाजी जाधवराव यांनीं महाराजाच्या उपयोग बहुत केला. त्याजवरून  
 शाहू छत्रपती यांनीं कृपा करून इनाम पुणें प्रांतीं माँजे दिवें येथील .....  
 नांदड येथील स्वराज्याचा अंमल सन ११२३चे सालीं तारीख १३ माहे जिल्कादीं दिले.  
 नंतर पुढें औरंगाबाद प्रांतीं कनड फुलवरी वगैरे महालांचे मोकासे दीड लक्षांचे सरंजामास  
 दिले. त्या योगेंकरून पथक पागा जयत राहत होती. जे कामगारी सरकारानें फर्मावावी तें  
 काम महाराजांचे प्रतापानें बजावीत होते. दमाजी थोरात हिंणगांवकर यांनीं बाळाजी

विश्वनाथ व आबाजीपंत पुरंदरे यांस कैद केलें. त्यास कारस्थानानें व जवामदींनीं काढून घेऊन सातान्यास नेलें. तेव्हांपासून खानदानीची बढती व लौकिक महशूर झाला. त्या अलीकडे बाळाजी विश्वनाथ व बाजीरावसाहेब पेशवे यांजबरोबर दिल्लीच्या स्वान्या केल्या व नबाबावर स्वान्या करून कामकाजें करून सरकारांत मुलूख घेतला; आणि नबाब निजाम उलमुलूख यांनीं आह्मांस इनाम गोळेगांव व मरकल येथील जहागिरीचा अंमल इनाम दिले; व हिंदुस्थानांत राजे छत्रसाल बुंधेले याजवर वस्त पडला ते समयीं बाजीरावसाहेबाबरोबर जाऊन बुंधेले यांजवर शत्रु आला होता त्याचें परिमार्जन करून संस्थान रक्षिलें. यामुळें बुंधेले यांनीं सरकारास लाखों रुपयांचा मुलूख बुंधेलखंडचा दिला, व आह्मांस इनाम करून दिलें. व त्र्यंबकराव दामाडे बाजीरावसाहेब यांजवर चालून आले होते. त्याची जमीयत भारी असतां त्याशीं लढाई यांनीं देऊन दामाडे यांस शिकस्त करून गारद केलें, व चिमाजीआप्पाबरोबर वसईच्या मसलतींत कामकाज भारी करून इनाम मिळविलें, व बंगाल्याची मोहीम नानासाहेब पेशवे याजबरोबर सेनापती होऊन केली. ....

... वस्त पिलाजी जाधवराव याचा लौकिक व पराक्रम होत गेला, यामुळें श्रीमंत नानासाहेब पेशवे हे पिलाजी जाधवराव यांस काका ह्मणत होते व जाधवराव सरकारवाड्यांत आले असतां यांचेबद्दल खातर बंदीवानाचा बंद खुलासा दरोबस्त करावा असा मोठेपणाचा रुढा पराक्रमावर ठेवीत होते.

२ फौज व जातसरंजाम आपले वडिलाकड चालत होता, व सदरहु सरंजाम कोणते तारखेस दिला ती तारीख व आपले जहागिरीचे वहिवाटींत पेशवेसरकारांनीं कोणते तऱ्हेनें दखलमिरी केली व आपलेकडे सरंजाम हल्लीं काय चालत आहे म्हणून पत्रांत कलमीं केलें. याचें उत्तर:- फौजेस व जातसि सरंजाम शके १६४० सोळाशें चाळीसचे सालीं पुणेंप्रांतीं वाघोली वगैरें फुटगांव येथील मोकाशाचा वगैरे अंमल व अवरंगाबाद प्रांतीं कंनड फुलबरी वगैरे महालचे मोकासे एकूण दीड लक्षाचे शाहूमहाराज छत्रपती यांनीं दिले. त्यास या सालची मूळची सनदेची तारीख लावावी. तरी कागदपत्र अस्ताव्यस्त. यामुळें सनदेची तारीख लागली नाहीं. अलीकडील महाराजांचीं ताकीदपत्रें कंनड वगैरे महालांचीं आहेत. सन ११३१चे सालचीं, त्याजवर तारिखा मार्गशीर्ष बहुल ८ अष्टमीच्या लागल्या आहेत. पुढें बाजीरावसाहेब पेशवे यांनीं हिंदुस्थानांत नरवरप्रांतीं शिपरी कुलारस वगैरे महालांचा अंमल लाख रुपयांचा दिला त्याची मूळची सनद नाहीं. एकूण फौज व जात मिळून अडीच लक्षांचा सरंजाम चालत होता. मूळपुरुष ..... जाधवराव त्याचे पुत्र सटवोजी जाधवराव. त्याचे पुत्र सुभानजी जाधवराव वाघोलीकर आमचे निमे हिसेदार व आमचे तीर्थरूप जोत्याजी जाधवराव. त्याचे पुत्र आह्मी, असे चार पुरुष उपभोग शंभर वर्षे करीत होतों. तां श्रीमंत राजश्री बाजीरावसाहेब यांनीं आमचे सरंजामाची जमी पुणें प्रांतीचे मोकाशाची वगैरे व कंनड फुलबरी

वगैरे महालांची लढाई अगोदर दोन तीन वर्षे इनामसुद्धां केली. यामुळे हल्लीं सरंजाम आम्हांकडे चालत नाहीं. सरंजाम चालत होता ते समयीं आम्हीच मुखत्यारीनें वहिवाद करीत होतो. पेशवेसरकार दखलगिरी करीत नव्हते.

३ पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कुंपणीसरकारांतून चालत आहे. त्यांत कमपेश तफावत काय आहे तें वगैरे यादींत दाखल करून रवाना करावें म्हणून कलमी केलें. याचें उत्तर:-पेशवेसरकार जोंपर्यंत मातबरी ठेवीत होते तोंपर्यंत मोठीच मातबरी रक्षिली. याचा मजकूर पहिले कलमांत बंद खुलासा वगैरे मजकूर लिहिलेच आहेत. अखेर बाजीरावसाहेब यांनीं इनामसुद्धां जम केलें ही गोष्ट समजून झाली नाहीं. असें कुंपणीसरकारांनीं दिलांत आणून मेहरबानगी करून इनामगांव सोडिले व गुजान्यास पेनसील करून दिलें, व जकातीबद्दल माफीचें दस्तक व दसऱ्याचा पोशाख बहुमानाचा देऊन मातबरी सरकार ठेवीत आहेत.

येणेंप्रमाणें तीन कलमें लिहिलीं आहेत. यांजवरून इकडील मजकूर सरकारचे दिलांत येईल. मिती ज्येष्ठ शु = १३ शके १७५५ विजयनाम संवत्सरे.

## १० जाधवराई.

( अ )

यादी कैफियत गणपतराव माधव जाधवराई सुरुसन सलास सलासीन मयातैन व अलफ. कुंपणीसरकारांतून मेहरबान वार्डिन साहेब बहादूर डेपुटी एजंट जिल्हा दक्षणेचें पत्र तारीख ८ माहे सप्टेंबर सन १८३२ इसवीचें आलें. त्यांतील हासील कीं, हजरत बंदेगानअली रैट हनराबल गौरनर कौनसल चाहात आहे कीं, दक्षिणेतील जाहागीरदार लोकांची कैफियत कशी आहे, त्याची वाकबगारी व्हावी; म्हणून कलमी केलें जातें जे, आपण मेहरबानगी करून सरकारांत रवाना करण्याकरितां थोडके मजकुरांत कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे. त्यांतील तपशील:-आपले खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर जाहला तें, व फौज व जातसरंजाम आपले वडिलाकडे चालत होता, व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस दिला ती तारीख व आपले जाहागिरीतील वहिवाडींत पेशवेसरकारांतून कोणते तऱ्हेनें दखलगिरी केली तें व आपलेकडे सरंजाम हल्लीं काय चालत आहे तें व पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होते ती व हल्लीं कुंपणी-सरकारांतून चालत आहे त्यांत कंपेश व तफावत काय आहे तें वगैरे यादींत दाखल करून रवाना केलें पाहिजे. त्याजवरून कैफियत लिहिली आहे कीं, आमचे आजे सदाशिवराव हे चंद्रसेन जाधवराव यांचे पदरीं पालखीपदस्त. त्यास पुत्र आमचे तीर्थरूप माधवराव यांनीं मोंगलाई सरकारांतून कामेंकाजें करून लौकिक संपादन करून मोंगलाई सरकारांतून छ ५ माहे रमजान सन ११७१ हिजरी सन (१७६८) या रोजीं पांच हजारांची नेमणूक जहागीर

संपादन करून घेतली. नंतर नबाबाचे सरकारांतून पेशवेसरकारांत येऊन मुत्सद्दीगिरी वगैरे बाकी-लीचे कामांत होते. त्याउपरी सन (१७७१) इहिदे सवैनांत छ १२ जमादिलावलीं सरकारांतून नबाब महंमद अल्लीखान सुभे अरकाट याजकडे सरकारचे खंडणीचा ऐवज येणें. त्याजवर सरकारांतून स्वारीची योजना करून आमचे वडील माधवराव याजबरोबर हत्ती, पागा, सांडणीस्वार वगैरे फौजेची कुलमुखत्यारी देऊन रवानगी केली. त्याजवरून नबाबाकडे जाऊन बशर्थ खंडणीचा वमूल आणून सरकार खजिन्यांत दाखल केला. व चेनापट्टण व चंदावर व गदवाल व गुरापूर वगैरे संस्थानी यांजकडील दरोबस्त बोलणीं माधवराव यांचे मारफतीने सरकारांत होत होती व सन (इ. स. १७७५) सीत सवैनांत कर्नल आपटेन साहेब व मेघफरसन साहेब कलकत्याहून पेशवेसरकारचे हुजुरांत वकिलीस आलें. त्यांचें बोलणें माधवराव आपा यांचे मारफतीने होत हांतें व आम्हाकडे फौजेस म्हणून सरंजाम नाही. सरकारांतून मोहिमेवर वगैरे कामाकाजास जाणें झाल्यास सरकारांतून फौज वगैरे येत होती. तैनातीस नेहमी हत्ती व हलकारे व जासूदजाड्या वगैरे सरंजाम राहत होता. त्याची नेमणूक सरकारांतून पोहोचत होती. जातीस सरंजाम जहागीरबद्दल तैनातजाबता सन (१७६९) सवैन मया व अलफ छ २६ जिल्काद नबाबाचे सरकारांतून गांव मिळविले त्यासुद्धां जहागीर पंधरा हजाराची व खेरीज कुरण व असामी रुपये ३०० व मुत्सद्दीगिरीमुळें वगैरे अंतस्थ मिळेल त्याची याद सरकारांत समजावून पैकीं पांच हजार रुपये दरसाल बक्षीस दाखल येत होते. याप्रमाणें वहिवाट चालत होती. आम्हांकडे गांव जहागिरीच वहिवाटीस दिले त्याची दखल-गिरी पेशवेसरकारांतून करीत नव्हते. आमची आह्मी दखलगिरी मुखत्यारीनें राखीत होतो. आम्हांकडे सरंजाम वहिवाटीस चालत आहे तो वितपसीलः—

२१३० मौजे निंबगांव प्रगणे कडेवळीत हा गांव दरोबस्त.

११०० मौजे टाकळी खंडेश्वरी प्रगणे श्रीगोंदें येथील जाहागीर अंमल व खराज्य रुपये २००० पैकीं निमे शिंदे यांजकडे रुपये ११०० बाकी आम्हांकडे रुपये.

९३६ मौजे वडगांव शिंदे तर्फ हवेली प्रांत पुणें तनखादेखील सरदेशमुखी.

१६२५ मौजे वाघोली प्रगणे कसबे धारूर येथील जहागीर अंमल व बाबती.

७५ मौजे थेहवडें येथील जमीन जिर्गाईत तर्फ हवेली.

वहिवाटीस हल्लीं चालत नाहीं तो बितपशीलः—

६५६८॥ मौजे शिंगवें परगणे कुंभारी हा गांव पेशवेसरकारांतून कारकीर्द बाजीराव-साहेब यांनीं जमीचा अंमल भगवतसिंगबावा याजकडे सांगितला होता. त्याची मोकळीकेची याद छ १९ सवाल माघ मास सन इसने मयातेनांत जाहली असतां अंमल आम्हांकडे चालता झाला नाहीं.

१००३। मौजे शहा प्रगणे इंदापूर हा गांव कारकीर्द बाजीरावसाहेब यांनीं आम्हांकडून काढून गमाजी निंबाळकर याजकडे दिला होता. तो बुर करून आम्हांकडे देण्याविषयीं सनदा सन इसने मयातेन छ २७ रबिलावलच्या जाहल्या. पुढें सदाशिव माणकेश्वर याजकडे इंदापूर महाल जाहला त्यावेळेस त्यांनीं हा गांव आमचा घेऊन सरकारजमेल लाविला.

१४१९। मौजे अरणी परगणे ढोकी हा गांव लढाईअखेर आम्हांकडे चालत होता. पुढें सन १२२७ फसलीस मोंगलाई सरकारांतून गांव जप्त केला. नंतर मेहरबान बडे साहेब यांनीं आमचा सरंजाम सोडते वेळेस सदरहू गांवाबद्दल नबाबाचे सरकारांत लिहून सोडचिठ्ठी आणवून गांव आम्हांकडे चालता केला. त्याप्रमाणें सन १२३१ फसलीपावेतां वहिवाट आम्हांकडे चालत होती. पुन्हां मोंगलाई सरकारांतून चौथाईचे हिश्यामुळं गांव जप्त केला. त्याजवरून मेहरबान चापलेन-साहेब बहादूर यांनीं मोंगलाईत लिहून गांव आम्हांकडे चालता केला. त्यापुढें सन १२३२ फसलीपासून गांवचा अंमल पुन्हा मोंगलाईवाले यांनी जप्त केला. येविषयीं याद आलाहिदा पेशजी कुंपणीसरकारास दिली आहे. असें असतां बंदोबस्त होऊन आमचा गांव आम्हांकडे चालता जाहला नाहीं. त्यास मेहरबानगी करून आमचा गांव आम्हांकडे चालता करून दिला पाहिजे.

१००। मौजे रायखलें प्रगणे नलदुर्ग परभारें मोंगलाई सरकारांतून जमीस आहे.

४३। ब्रह्मकूम तैनात जाबता बेरजेचे भरतीस.

९१३४

शिवाय कलमें चालत नाहीत तींः—

१। कुरण मौजे नाणोली तर्फ चाकण प्रगणे जुन्नर हे पेशवेसरकारांतून लढाईअखेर आम्हांकडे चालत होतें. पुढें कुंपणीसरकाराचे अंमलापासून आम्हांकडे चालत नाहीं तें चालतें करून देविलें पाहिजे.

१। प्रगणे चिटगोपें येथील मुजमीची असामुची वहिवाट आम्हांकडे चालत नाही.

१। बक्षीसीदाखल पेशवेसरकारांतून रुपये ५००० येत होते ते येत नाहीत.

सदरहूपमाणें जाहागीर चालत आहे व जी चालत नाही त्याचा तपशील सदरीं लिहिला आहे. यावेरीज आमचे वडील पेशवेसरकारांत मुत्सदेगिरींत वागून संस्थानिक लोक यांचीं कामेकाजे सरकारांतून उलगडून देत होते. याजमुळे पेशवेसरकारांतून मराठवा मोठा राखीत होते. पुढें सन सवा समानीन मयांत आमचे वडील माधवराव यास देवाज्ञा झाली. नंतर आम्हांवर सरकारांनी कृपा करून जाहागीर आम्हांकडे चालविली. हल्लीं लढाईअखेर जी जाहागीर आम्हांकडे चालत आहे, त्याचा तपशील सदरीं लिहिल्याप्रमाणें चालत आहे. त्यावर गुजारा करून आहे. व सरकारांतून बहुमानाचा दसऱ्याचा पोशाख येत असतो. याप्रमाणें इकडील मजकूर आहे. तारीख ५ माहे दिसंबर सन १८३२ इसवी.

( ब )

साहेब मेहरबान दारता रावर्ट किसन साहेब बहादूर अकटिंग एजंट जिल्हा दक्षण दामोहबतहू.

छ अजदिल एखलास गणपतराव माधव जाधवराई जागीरदार निसबत कुंपणीसरकार सलाम बाजत सलाम अंकी खैरयत जाणून आपली शादमानी हमेशा कलमी करीत असलें पाहिजे. दरिविला दिगर मजमुन साहेबांकडून नंबर ३७९ तारीख २९ माहे मे सन १८५२ इसवीचा हुकूम जाला जे, सरकारचा हुकूम तारीख ३० माहे जुलई सन १८५१ इसवीचा आल्यावरून कलमीं केलें जातें जे, आपल्यास किताबत जाधवराईपद आहे तें कधीं, कोणत्या सबबेनें, कोणाकडून प्राप्त झालें त्याची, व एकंदर खानदानीची पदवी थोरपणाचा इतिहास दाखल्यानिशीं लिहून द्यावा व त्याजबरोबर दाखला असेल तोही पाठविला पाहिजे. ऐकीव मजकुराची हकीकत असेल त्याविशीं कांहीं पुरावा नसेल तर तसेंच साफ लिहून यावें म्हणून हुकूम. त्यास, पूर्वी आमचें वय तीन वर्षांचें, ते वेळेस पूर्वी माहीतगार पन्नास साठ वर्षांचे कारभारी ते बोलत होते जे, मोंगलाईत नौकर चंद्रसेन जाधवराव सरकारचे पदरीं आमचे आजे सदाशिवराव दोनशे लोकांचे सरदारी करून होते. त्याचे पुत्र माधवराव त्याचे मानसपुत्र आह्मी, आमचें नांव गणपतराव, आम्हांस वय हल्लीं बाहत्तर वर्षांचें. तेव्हां मागील हकीकत जाहीर होण्यास साहेबांस ऐकिलेली लिहितों. मोंगलाईतून जाधवराव याजवर कसाला होऊन दौलत फौजसुद्धां गारद झाली, ते वेळेस आमचे आजे गारद झाले. तेव्हां आमचे वडील तेथून निघून भालची चिटगोपें हें आमचे राहण्याचें वडिलाचें गांव, तेथें सरंजामसुद्धां येऊन राहिले. ते समर्थी नबाब सरकारांतून तीन गांव पांच हजारानी यांस जाहागीर झाली. नंतर तेथून सरंजामसुद्धां जानबासाहेब निंबाळकर नबाबाचे पदरेचे सरदार दाहा लाख रुपयांचे जाहागिरी ते कर्माळ्यास, त्याचे दिवाण माधवराव आपा याचे सासरे त्याचे भेटास आले. मोंगलाईतील तीन गांव त्यांपैकीं एक गांव कर्माळेनजीक त्या गांवचें नांव निंबगांव तेथें येऊन सरंजामसुद्धां राहिले. पुढें सवाई माधवराव यांचें लग्न होणें,

त्यावेळेस निंबाळकर यांनी पेशव्यास वस्त्रे देऊन यासमागमें देऊन पुण्यास पोचतें केलें. नंतर श्रीमंताची भेट होऊन यांचा बहुमान जाला. तेव्हां सरकारचे मनांत आलें जे, यांनी सरकारचे पदरीं असावें. त्याजवरून यास जहागीर दाहा हजार रुपयांची व एक हत्ती बक्षीस देऊन यांस चार कामें सांगितलीं. चिनापटणचे नबाबाची वकिली व चंदावरचे राजाची वकिली व सुरापुरची वकिली व कर्नेळिकडप्याचे नबाबाची वकिली सांगितली. याप्रमाणें हकीकत ऐकिल्यांतील व पाहण्यांतील आहे. ती साहेबांस जाहीर होण्याकरितां लिहिली आहे. याविरहित दाखला आह्मांपाशीं असावा, तर सरकारी मोहजब्याचें काम यांजकडेस कांहीं एक नव्हतें, तेव्हां दाखला ठेवण्याचें कारण नव्हतें. यामुळे आम्हांपाशीं कागदोपत्रीं दाखला कांहीं एक नाही. व माधवरावआपा यांस तैनात जावता पंधरा हजार रुपयाचे जहागिरीचा सरकारांनीं करून दिला. तो आह्मांपाशी होता. तो साहेबाकडे पाहणेंस पाठविला आहे. यावेगळे आह्मांपाशीं दुसरा दाखला कांहीं नाहीं. तैनातजावता त्यास शहात्तर वर्षे झालीं. तो कागद नाना फडणीस दिवाण यांचे सहीचा असे. तारीख १८ माहे जून सन १८५२ इसवी. जादा काय लिहिणें ही किताबत.

सही गणपतराव माधव जाधवराई दस्तुर खुद.

### ११ डफळे.

कैफियत यशवंतराव बिन नारायणराव राजे चव्हाण डफळे देशमुख परगणे चार सरकार विजापूर सुरुसन १२२८ फसली माह रबिलाखर कारण लिहून दिलें कैफियत ऐसा जे, अवरंगजेब पादशाहा याजपाशीं आमचे वडिलांनी सातारे मोकाशीं लढाई केली. त्या समयीं सरकारकामीं आले. ह्मणून शेठ्याजीराव राजे चव्हाण डफळे देशमुख परगणे चार सरकार विजापूर यासी महाल तपसील परगणे जत १ व परगणे करजगी १ परगणे. बरडोल १ परगणे हानवड १ चार परगणेची देशमुखी व दोन परगणेची जहागीर परगणे जत व परगणे करजगी येथील दिली. त्या तागाईत वहिवाट आजपावेतों अनभवीत आलों. शेठ्याजीराव राजे चव्हाण यांचे पुत्र बाबाजी चव्हाण यांनीं अनभव केला. त्यांचे दोधे बंधू होते. संतान नाहीं. नाबहुद. बाबाजीराव चव्हाण यांचे पुत्र खानाजीराव राजे चव्हाण देशमुख यांनीं अनभव केला. त्यांचे पुत्र यशवंतराव राजे चव्हाण डफळे देशमुख वडील यांचे बंधू रामराव राजे चव्हाण व तिसरा भगवंतराव चव्हाण. यशवंतराव चव्हाण यांचे पुत्र अमृतराव चव्हाण यांस घेऊन रामराव चव्हाण महालची वहिवाट दोधे मिळून करीत आले. अमृतराव बिन यशवंतराव चव्हाण व नारायणराव बिन रामराव चव्हाण हे दोधे मिळून संस्थानांतील कामकारभार करीत आले. अमृतराव चव्हाण यांचे पोटीं खानाजीराव चव्हाण देशमुख यांनीं अनभव केला. सन १२२४ फसली सालीं महालची हलीमाझी श्रीमंताकडून होऊन डेंगळे याजकडे जाली. खानाजीराव चव्हाण यांनीं यशवंतराव बिन नारायणराव चव्हाण हे उभयतां

महालचे बहिबाट करीत आले. खानाजीरावाची स्त्री मातुश्री रेणुकाबाई व दुसरी स्त्री मातुश्री साळुबाई हे दोघी बायका. थोरली बायकोस व खानाजीराव यांसी बनव पडेना, तेव्हां रेणुकाबाई निघोन निपाणीकडे गेली. धाकटी बायको जतेस होती. पुढें सन १२२५ सालीं खानाजीराव डफळे यांचा काल झाला, ते समई यशवंतराव चव्हाण जवळ होते. त्याचे मांडी-बर प्राण सोडिला. पोटी संतान नाही. यशवंतराव यांणीं विधीकर्म यथाविधी केलें. पुढें सहा-चार महिन्याउपरांतिक रेणुकाबाईस निपाणीहून आणविलें. परभारें अथणीस आली. गोविंद वासुदेव निसबत त्रिबकजी डेंगळ्याचे विद्यमानें बोलणीं होऊन वडीलपणा मातुश्री-कडे राखोन कामकारभार करीत जावा. त्यावरून मातुश्री रेणुकाबाई जतेस आली. आठ पंधरा दिवस एक जागीं होती. मातुश्री रेणुकाबाई यांनी गोविंद वासुदेव निसबत डेंगळे यांणीं संधान करून त्याजला संतोषविलें. आह्मी जतेस राहूं नये, याप्रमाणें धरबंद करून आम्हांसी घसघस लाविली, तेव्हां आह्मी निघोन हुजतीस आलों. आजपावेतों जतेस गेलों नाही. संस्थानास आम्ही अधिकारी आणि रेणुकाबाई परागंदा होती. खातरी करून आणून ठेविली. ऐसें असतां एक दोघे कारभारी मिळून हरएकविशीं आह्मांसीं खटखट करितात. बंदोबस्त करून देणार स्वावंद आहां. सेवाचाकरीविशीं मजकडून अंतर होणार नाही. आज्ञेप्रमाणें हजर असो.

### १२ थोरात.

साहेब मुषफक मेहरबान दोस्ता हेनरी ब्रौन साहेब बहादूर एजंट जिल्हा दक्षण सलामहू.

१ आज दिल एखलास आनंदराव थोरात दिनकरराव जहागीरदार ठाणें मौजे विर-गांव पैकीं आकोलें, जिल्हा अहमदनगर सलाम बाजद सलाम आज्याम अंकी तागाईत कार्तिक वद्य १३ सन १२६१ पावेतों साहेब आपली पादमानी हामेषा कलमी करून दिल ताजा करीत असलें पाहिजे. दिगर मजमुन साहेबाकडून पत्र तारीख २६ माह आगष्ट सन १८५१ इसवीचें आलें. त्यांत मतलब कीं, आपल्यास मरातब दिनकरराव पद आहे. हें कधीं, कोणत्या सबबेनें कोणाकडून प्राप्त झालें त्याचा, व एकंदर खानदानी व पदवी थोरपणाचा इतिहास दाखलेनशीं लिहून यावे, व त्याजबरोबर दाखला असेल तोही पाठ-विला पाहिजे. ऐकीव मजकुराची हकीकत असेल व त्याजविषयीं कांहीं पुरावा नसेल तर तसेंही साफ लिहून यावें. परंतु जुने कागदपत्रावरून व माहीतगार लोकांकडून जितके प्रयत्नपूर्वक माहिती सांपडेल तितकी सर्व लिहून यावी. त्याजवरून लिहिण्यांत येतें कीं, आमचे निपणजे कैलासवासी शक्काजीराव थोरात हे श्रीमंत महाराज राजे शाहू (?) छत्रपती यांचे पदवी सरदार होत त्यावेळेस विजापुरचे बादशाहावर छत्रपती महाराज यांची स्वारी जाऊन मोठी लढाई झाली. ते समयी महाराज छत्रपती यांचा मोड होऊन शिकस्त घेतली. ते समयी छत्रपती महाराज यांजला आमचे निपणजे आपले बसते घोड्यावर पाठीशीं



वेऊन रातोरात सातान्यास येऊन किल्ल्यावर चढले. तों दिनकर उदय झाला, सबब महाराज फार प्रसन्न होऊन दिनकरराव हें पद दिलें, व नव लक्षांच्या सनदा मोकाशे अम्मलाबद्दल दिल्या; आणि सनदेत वगैरे कागदोपत्रीं आमचे पांचवे पुरुषापासून दिनकरराव अशी पदवी लिहिण्याची वहिवाट आजपर्यंत चालत आली, व त्या वेळेपासून इंग्रजसरकारचा अम्मल होईतोपर्यंत पेशवे कारकीर्दअखेरपावेतो ज्या ज्या सनदा मिळाल्या, त्या त्याप्रत दिनकरराव असें लिहीत आले. त्याअन्वये दिनकरराव ही पदवी वडिलोपार्जित वंशपरंपरा लिहिण्याची वहिवाट आजपर्यंत चालू आहे. केवळ दिनकरराव पदवी दिल्याबद्दल कांहीं वेगळा दाखला म्हणून असावा, तर ज्या वेळेस मिळवते पुरुषानें पराक्रम करून छत्रपती महाराज यांच्या सनदा व पदवी मिळविली, ते वेळचे कांहीं कागदपत्र व सनदा होळकराच्या दंग्यांत व दुष्काळांत गेल्या. ते समयीं दिनकरराव पदवीबद्दल कांहीं सरकारांतून दाखला मिळाला असल्यास तोही गेला असेल तर आम्हांस कांहीं समजण्यांत आला नाही. परंतु छत्रपतीच्या वेळच्या कांहीं सनदा व पेशवेसरकारच्या सनदा आहेत, त्यांत दिनकरराव हें लिहिलें आहे व आजतागाईत वहिवाटही लिहिण्याची चालत आली आहे. त्यावरून सर्व साहितीचा प्रकार सरकारास कळविला आहे. जादा काय लिहिणें. प्यार मोहबत असावी हे किताबत.

सही आनंदराव थोरात दिनकरराव तर्फेनें करणार विठ्ठल रामचंद्र कारकून मुखत्यार निसंबत मशारानिले.

### १३ फलटणचे निंबाळकर.

फलटणचे निंबाळकर यासंबंधीं सारांश सन १८२१ सालीं जाला. त्यांत सद्धराण्याबद्दल हकीकत आहे ती खाली लिहिल्याप्रमाणें:—

निंबाळकर यांजकडील वंशावळीची यादी.

१ वंशावळ मुधोजी नाईक यास दुसरा पुत्र मालोजी नाईक याचा वगैरे विस्तार.

१ दुसरा पुत्र मालोजी नाईक याचा विस्तार:—

१ कुसाजी नाईक वडील,

२ गोरखोजी नाईक.

तपसील.

कुसाजीस पुत्र:—

१ मालोजी नाईक.

१ मानसिंग नाईक

१ शिवाजी नाईक

१ साबाजी नाईक

४

गोरखोजीस पुत्र दारकोजी नाईक

यासी पुत्र:—

१ गोरखोजी नाईक यास संतान

नाहीं. ते मृत्यु पावले.

१ बजाजी नाईक.

१ खंडेराव नाईक मृत्यु पावले.

तपसील

- १ मालोजी नाईक संस्थानास.  
 १ मानसिंग नाईक यास पुत्र नाही.  
 सबब शिवाजी नाईक याचा पुत्र  
 महादाजी नाईक यास ओटीत  
 घातले. महादजीनाईक यास पुत्र  
 मानसिंग नाईक यास पुत्र:-

- १ कृष्णाजी नाईक वडील.  
 १ परवतराव नाईक.  
 १ शिवाजी नाईक.

३

- १ शिवाजी नाईक यास पुत्र  
 १ महादाजी नाईक.  
 १ जानराव नाईक

२

दोन पैकीं महादाजी नाईक मान-  
 सिंग नाईक यास दिले.  
 जानराव नाईक संस्थानास  
 मालोजी नाईक यास दत्त दिले.  
 बाकी शिवाजी नाईक याचें कोणी  
 नाही.

- १ साबाजी नाईक  
 १ तुळाजी नाईक  
 १ संभाजी नाईक

२

पैकीं तुळाजी नाईक मृत्यु पावले.  
 संभाजी नाईक यास सक्रोजी  
 नाईक बिन जगदेवराव नाईक  
 यांणीं दत्तक घेतले.

४

हल्लीं एक पुत्र आहे.

- १ यशवंतराव नाईक यास जानराव  
 बिन तुकाराम नाईक गुंजवटीकर  
 याचे ओटीत घातले.

४

१ तिसरा पुत्र जगदेवराव नाईक यासी पुत्र संक्राजी नाईक ते मृत्यु पावले. त्याचा दत्त साबाजी नाईक याचा पुत्र संभाजी नाईक, यास पुत्र संक्राजी नाईक, त्यास पुत्र विठ्ठलराव नाईक आहेत.

१ चवथे पुत्र माहादाजी नाईक यासी पुत्र तुकाराम नाईक यास पुत्र जानराव नाईक व मुधोजी नाईक. एकूण उभयतां मृत्यु पावले. त्यास पुत्र नाही.

१ पांचवे पुत्र बजाजी नाईक यास पुत्र रायरोजी नाईक व बाजी धारराव एकूण उभयतां मृत्यु पावले. संतान नाही.

१ वणगोजी नाईक सहावे पुत्र यास वंश नाही.

५

१ मुधोजी बिन जानोजी नाईक निंबाळकर सन १७७६ फसली कार्तिक शुद्ध ४ चतुर्थीस फलटण मुक्कामी देवाज्ञा जाहली.

१ मुधोजी नाईक जिवंत असतां मालोजी नाईक कुसाजी नाईक याचे वडील पुत्र आणोन दत्त करून सरकारांत विनंति केली कीं, माझा वृद्धापकाल आहे, या चिरंजीवाचे हातून चाकरी घ्यावी. नंतर कांहीं दिवस चाकरी करीत असतां मुधोजी नाईक यास देवाज्ञा जाहली. पुढें सोयराजी बिन बजाजी नाईक याणीं सरकारांत किर्याद केली कीं, मालोजी नाईक दत्त जाहला नाही. ते समई सोयराजी बिन बजाजी नाईक यास सबल पक्ष सरवारामबापू याचा त्याणीं सरकारांत समजाऊन फलटणास जमी पाठविली. जमीवाले कारकून व पायदळ यांशीं सगुणाबाई मुधोजी नाईक याची स्त्री याणीं गोळीवाजविली. हा रोष सरकारचे चित्तांत येऊन सोयराजी बिन बजाजी नाईक याचे हवालीं फलटण महाल केला. त्या दिवसापासोन सोयराजी नाईक हे मुधोजी बिन बजाजी नाईक सरकारांत आपलें नांव समजाऊ लागले. सरकारचे लोक येऊन सगुणाबाईसाहेब यास फलटणांतून काढिलें. ते वेळेस बाई याणीं कागदपत्र जाळून फलटणांतून पदरचे मंडळीसुद्धां तेरढोकीस बालेघाटीं जाऊन साहा वर्षे राहिली. बाईकडून नरसिंगराव कान्हेर पुणें मुक्कामी वकिलीस होते. त्याणीं रघुनाथ बाजीराव पेशवे यांस विनंती केली कीं, सोयराजी नाईक यास मुधोजी नाईक याणीं दत्त घेतला आहे. याची चौकशी सरकारांतून बहुत जाहली. नंतर क्रियेवर ठेप ठरली. दत्तक जाहला असी जेजुरीचे कासवावर क्रिया करावी. त्याजवरून नरसिंगराव वकील याणीं जेजुरीचे कासवावर मालोजी नाईक मुधोजी नाईक याणीं दत्तक केला असी क्रिया केली. नंतर बकिलास सांगून सगुणाबाईसाहेब यास तेरढोकेहून पुण्यास आणवून मालोजी नाईक बिन मुधोजी नाईक यास बहालीच्या सनदा करून देऊन लाख रुपये नजर घेतली.

१ रघुनाथ बाजीराव प्रधान.

१ नारायणराव बल्लाळ प्रधान.

२

एकूण दोन पत्रे असल आहेत. त्या दिवसापासोन सगुणाबाईसाहेब दरोबस्त अधिकार करीत होते. मालोजी नाईक सरकारचाकरी पथकसुद्धां करीत होते.

१ मालोजी बिन मुधोजी नाईक निंबाळकर कर्नाटकचे स्वारीस हरिपंत तात्यासमा-  
यें सगुणाबाईसाहेब यांणीं चाकरीस पाठविले. तेथें सन ११८६ फसलीमध्ये स्वारींत  
कार्तिक शुद्ध ९ रोजीं मृत्यु पावले. मालोजी नाईक याचा वाखा फार जाहला. बरोबर  
सदाशिव शामराव फडणीस होते. त्यांणी हरिपंत तात्या फडके यास सांगितलें कीं, मालोजी  
नाईक याचा वाखा फार आहे. तेव्हां तात्या बोलले कीं, याचा विचार काय करावा. ते  
वेळेस सदाशिवपंत बोलले कीं, मालोजी नाईक यास चाकरीस पाठविलें ते समई बाई बोलत  
होती कीं, मालोजी नाईक याची प्रकृति अशक्त आहे; यास्तव शिवाजी नाईक याचे पुत्र  
जानराव नाईक याजला दत्त घ्यावें. परंतु स्वारीची निकड आहे. स्वारी आल्यावर करूं  
असें बोलून स्वारीबरोबर रवानगी केली. हल्ली मालोजी नाईक याचा वाखा फार आहे.  
प्रसंगीं जानराव नाईकही लष्करांत आहेत. मला आज्ञा जाहल्यास त्यास आणितों.  
बाईचें अनुमत आहे त्यापेक्षां जानराव नाईक जवळ आणावें. त्याप्रमाणें सदा-  
शिवपंत भाऊ यांणीं परशुरामभाऊ याचे गोटांतून जानराव नाईक यास आणोन मालोजी  
नाईक सावध असतां जानराव नाईक याचे तोंडांत साखर घालून साखरपानें मंडळीस वांटून  
नंतर प्रहरा दिडा प्रहरानें अगदी अंतकाल आला तेव्हां जानराव नाईक यांणी मांडी दिल्ली.  
मांडीवर प्राण गेला. नंतर पाणी पाजून उत्तरक्रिया लष्करातच केली. तेरावे दिवशीं चार-  
पांच हजार समुदाय भोजनास होऊन सरकाराकडील दुखवटा तात्यांनी गोटांत येऊन केला.  
त्यावर मोठे मोठे मंडळीहीं दुखवटे केले. मालोजी नाईक वारल्याचा मजकूर नाना फडणीस  
यांस हरिपंत तात्यांनीं लिहिला की, मालोजी नाईक यांणीं आह्मांस कळवून जानराव  
नाईक यास दत्त घेऊन मृत्यु पावले. क्रिया दिवससुद्धां जानराव नाईक यांणीं केला.  
येबिशीं पत्रे आहेत—त्याचा तपशील वर लिहिला आहे. सरकारचाकरी पथकसुद्धां जान-  
राव नाईकच करितात. त्याचें उत्तर तात्यास आलें जे, तुम्ही लिहिला मजकूर सरकारास  
बिंनती केली. उत्तम आहे. पुढें दरोबस्त मालकी सगुणाबाईसाहेबच करीत आली. चाकरी  
जानराव नाईक करीत होते. नंतर सन १२०१ फसली, अश्विन वद्य १२ स सगुणाबाई-  
साहेब यास देवाज्ञा जाहली. तेव्हां जानराव नाईक हरिपंत तात्याबरोबर पैठणचे स्वारीस  
होते. तिकडून आल्यानंतर सरकारचाकरी महालची दरोबस्त वहिवाट मुखत्यारीनें करूं  
लागले. नंतर सन १२०४ फसलीमध्ये नाना फडणीस यांणीं सांगितलें कीं, तुमचे नांवें  
सरकार नजर अद्याप जाहली नाहीं, त्यास नजर देऊन सनदा करून घ्याव्या. त्याजवरून  
लाख रुपये नजर ठरवून सरकारानीं जानराव नाईक याचे नांवें नजरेबदल ह्मणोन कृष्णाजी  
नाईक थत्ते यास लाख रुपये देऊन भरपाई करून घ्यावी असी वरात दिली. नंतर नाईक-  
साहेब यांणीं बजाबा शिरवळकर याजपाशीं कर्ज लाख रुपये घेऊन थत्ते याजकडे भरणा  
करून बरोबरी भरपाई करून घेतली आणि सनदा करून दिल्या.

## १४ पवार.

यादी राजश्री अबधुतराव पवार सुरुसन अर्बा सलासीन मयातैन व अलफ मेहर० बान जॉन वार्डिनसाहेब बहादूर डेपुटी एजंट जिल्हा दक्षिण यांचें पत्र तारीख ७ माहे सप्टेंबर सन १८३२ इसवीचें आलें कीं, हजरत बंदेगानअल्ली राईट हनरेबल, गैरबर कौंसल चाहात आहेत कीं, दक्षिणेंतील जहागीरदार लोक यांची कैफियत कशी आहे याची वाकबगारी व्हावी. सणून कलमी केलें जातें कीं, आपण मेहरबानगी करून सरकारांत रवाना करण्याकरितां थोडके मजकुरांत कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे. त्यांतील तपशील आपली खानदानीची बढती, व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर जाहला तो, फौज व जातसरंजाम आपले वडिलाकडे चालत होता, व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस दिला ती तारीख, व आपले जहागिरीचे वहिवाटींत पेशवेसरकारांतून कोणते तऱ्हेनें दखलगिरी केली तें, व आपलेकडे सरंजाम हल्लीं काय चालत आहे तें व पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती, व हल्लीं कुंपणीसरकारांतून चालत आहे त्यांत कमपेश व तफावत काय आहे तें, वगैरे यादींत दाखल करून रवाना केलें पाहिजे सणून कलमी केलें आहे. ऐसियास कलयुग प्रमाण चार लक्ष बत्तीस हजार त्यापैकीं गतकली चार हजार नऊशें तेहतीस सन १२४३ सालमजकूरपर्यंत पैकीं शककर्ते व राजकर्ते यांचा तपशीलः—

३०४४ शककर्ते युधिष्ठिर धर्मराज पांडव इंद्रप्रस्थीं दिल्लीस तीन हजार चवेचाळीस वर्षे.

१३५ शककर्ता राजा विक्रम उज्जनीस एकशें पसतीस वर्षे संवत १८९०

१७५५ शालिवाहन शके प्रतिष्ठाणीं पैठणास वर्षे सत्राशें पंचावन पैकीं राजकर्ते राजा भोज इत्यादि राजा सदल व खडगसिंग व चतुरभुज व आग्रसेन व उदियादीप व रणधौल व जगदेव पवार व अलगपाल तुवर व प्रीतिराज चव्हाण वगैरे पातशाई

५१२ १२४३

एकूण वर्षे सत्राशें पंचावन १७५५

जगदेव पवार हे श्रीदेवी उपासक निस्सीम होते. श्रीजगदंबेनें त्यासी प्रत्यक्ष दर्शन देऊन भाषण करावें. त्याचे भक्तीस्तव श्रीदेवीनें कंकाली भाटणीचे स्वरूपें करून धारेस प्रगट होऊन जगदेव पवार याजपाशीं शिरदान मागितलें. त्यांनीं ते क्षणीं तरवारीचे शस्त्रेंकरून आपलें शिर स्वहस्ते छेदून श्रीदेवीस अर्पण केलें. नंतर श्रीकालिका प्रसन्न होऊन शिर धडास मेळवून जगदेव पवार यास सजीव केलें, आणि वरदान देऊन राज्यां स्थापिलें. तें श्रीकालिकादेवीचें स्थान अद्याप धारेस आहे.

४९३३ गतकली चार हजार नऊशें तेहतीस वर्षे

बाकी शेष कली चार लक्ष सत्तावीस हजार सदुसष्ट वर्षे राहिला आहे. पैकीं सदुसष्ट वर्षांनीं भागीरथीचें महात्म्य जाईल, व आम्रवृक्षांस फळें येणार नाहींत. त्यापुढें पांच हजार वर्षांनीं “ श्रीविष्णु भगवान् त्यजिति भेदिनी ” ऐशी शास्त्रमर्यादा आहे. पवार कुलीचे वर्णधर्म याचा तपशीलः—

|                                |                                                |
|--------------------------------|------------------------------------------------|
| १ वौश सूर्यवौश.                | १ वेद ऋग्वेद.                                  |
| १ वर्ण जात क्षत्रीय.           | १ कुलीचें गोत्र अगस्ती.                        |
| १ धर्म क्षत्रीयाचा.            | १ कुलस्वामी कालभैरव.                           |
| १ आचार विप्रवत्.               | १ उपासना शर्काची.                              |
| १ यज्ञोपवित धारण.              | १ संस्थान अबूगड.                               |
| १ गायत्री अष्टपदा.             | १ धारागिरी नगर.                                |
| १ संध्या त्रिकाल.              | १ देवप्रतिष्ठेचे समयीं देवक धारतरवारीचे.       |
| १ लगीबाणावर श्रीहनुमंत मूर्ति. | १ निशाण लाल, वरता जरीपटका त्या-<br>जवर मारुती. |
| १ ढाल सवाई मारुतीसहित.         | १ ब्रीद तोडर.                                  |
| १ आलकाब पवार तोडरमल.           |                                                |
| १०                             | ९                                              |

११

सदरह अन्वयें पवारकुळीचा पूर्वीचा मार्ग ओढ आणि पवार यांनीं पूर्वापार पराक्रम केले आहेत. त्यांच्या कीर्ती रेवा दक्षणतीरपासून इंद्रप्रस्थापलीकडेस हिंदूचे हद्देपर्यंत पवार व तुवर यांचा लौकिक महेशूर आहे. त्याअन्वये पातशाहीत पवार यांचा मानमरातब मुलखांत चौथाई अंमल चालला. पवार यांनीं कारभार, खंडण्या व चाकरीस फौज दिली नाहीं; आणि इंद्रप्रस्थीं अथवा राजसंस्थानीं फौजसुद्धां आलीयास भेरी, नौबद, नगारे, वादन करीत निशाण जरीपटकासहित चालते स्वारीनें जावें. शस्त्रसहवर्तमान तसलिमांत नजर न करितां सलाम करून तकाशेजारीं उजवे बाजूस बैठक तेथें बसावें. वखें सर्वधी मानपानदान भेटी सन्मानें करून व्हावी ऐसा सांप्रदाय प्राचीन आहे, तो आमचे वडीलवडिलांनीं विदित केला. तो आमचे वडिलांनीं आह्मांस निवेदन केला आहे. त्याअन्वये चालत आलें तें लेखन केलें आहे. त्या पवार यांचा वंशज कालांतरें करून धारेकडून फौजेसहवर्तमान रेवा उतरून, तप्ती उल्लंघन करून, खानदेश प्रांतीकडून दक्षिणेंत आले. त्यांनीं गलिमाईचा क्रम चालवून मुलुखांत अंमल चालविला. सबब दक्षिणेंत गलिमाई व भोंगलाई दोन अंमल चालले. शिवाजी राजे भोंसले यांनीं गलिमाई केल्यानंतर साहयेंतकरून राज्य प्राप्त झालें. आमचे वडिलांनीं युद्धप्रसंगीं पराक्रमेंकरून राज्य मिळविलें. राजकारणीं देह समर्पण केले आहेत ह्मणून शाहूराजे यांणीं आमचे वडिलांचा पूर्ववत्प्रमाणें मानसन्मान मरातब व फौज व विश्वासराव आलकाब चौथाई

अंमल चालला. आमचे पूर्वज दक्षिणेंत येऊन राहिल्यामुळें क्षेत्रधर्माचा आचार रहित जाहला. गंधर्वविवाहाखेरीज करून सत् शुद्रवत् आचार चालला आहे. गोत्र वासिष्ठ व प्रवर तीन. वसिष्ठ, आंगिरा व प्रमोद एकूण प्रवर तीन, व यज्ञोपवित धारण करितात, व सत् शूद्राचे कन्येशीं लग्न होतात असा मार्ग चालला आहे. अज्ञानत्व आहे. त्यास गोत्र व प्रवर ध्यानास नाहीत. ते काश्यप गोत्र ह्मणतात. ऐसा अनुक्रम आहे. दक्षिणेंत आलीयावर पवारकुलीचे गोत्रज झाले त्यांचा तपशील:— वाघ व वानखडे व निंबाळकर व इंगळे व धारराव व धायवार व घुमरे व कऱ्हेकर व पाडभर व मगने व वागचवरे व शेठे व परमडे व वाघमारे वगैरे सदरहू गोत्रजांत शरीरसंबंध करूं नये याअन्वये कुलीची रीत आहे. शाहू महा-राज यांनीं गलिमाई अंमल तोच पुढें स्वराज्य व मोंगलाईनीं एकूण दुतर्फा अंमलाचा दाखला चालविला. पेशवे यांचे कारकीर्दीत दाभाडे सेनापती यांचे साह्येकरितां फौज व सरंजाम कमी झाला. लढाईचे प्रसंगीं पेशवे यांजकडे पागा व सरंजाम पाठविला होता, त्याजवरून धारेचें संस्थान व खंडण्या व चौथाईची वाटणी व दक्षिणेंतील सरंजाम चालला. कांहीं न चालला. मोहिमीस जाण्याचें मानसिक झालें, सबब फौजसरंजाम कमी होत गेला. मान-मरातब पूर्ववत्प्रमाणें चालविला. आमचे वडील फौजेसुद्धां आलीयास प्रथम भेटी शीव उल्लंघन करून घेतल्या आहेत. वाड्यांत अथवा डेऱ्यांत भेटीस आले असतां सन्मानें करून घेऊन जावें; पानदान वगैरे मानें करून पोहचावून मार्गस्त करावें. व त्या कालीं आमचे वडिलाशिवाय दुसरा फौजबंद सरदार नाही. नंतर मल्हारराव होळकर व त्यापुढें शिंदे वगैरे अवतार झाले आहेत. असं असून आमचे वडिलांनीं युद्धप्रसंगीं राजकारणीं देह अर्पण केले आहेत, याचे दाखल सरकार दमरीं असतील. ऐसा पूर्व वृत्तांत आमचे वडिलांनीं आह्मांस सांगून वौशमालिका पूर्वजांची सांगितली आहे. त्यांपैकीं नांवनिशीचा तपशील:—

- १ सुभानजी पवार यास पुत्र साबाजी पवार.
- १ साबाजी पवार यास पुत्र केरोजी पवार.
- १ केरोजी पवार याचे पुत्र साबाजी पवार.
- १ साबाजी पवार याचे पुत्र कृष्णाजी पवार.
- १ कृष्णाजी पवार यास पुत्र बुवाजी पवार, लढाईत गत झाले.
- १ बुवाजी पवार यास पुत्र संभाजी पवार.
- १ संभाजी पवार यास पुत्र तीन:—

७

युद्धप्रसंगीं वाग्वार जखमा सर्वांगीं लागल्या होत्या.

- |                  |                 |
|------------------|-----------------|
| १ उदाजी पवार.    | १ आनंदराव पवार. |
| १ जगदेवराव पवार. | ० लग्न.         |

२

१

३

आमचे पणजे संभाजी पवार असतां दयाबहादूर याची फौज ऐशी हजार शिवाय पाचदळ व तोफा सुमारे २५० साडेतीनशें अशा सरंजामानिशीं आला होता. ते समयीं आमचे आज्ञे त्रिवर्ग बंधू यांनीं खासपागा पंधरा हजार फौज घेऊन त्याशीं लढाई करून आमचे आज्ञे जगदेवराव पवार यांनीं दयाबहादूर यास जातीनें मारून हत्तीवर चढून आंबारीत जाऊन त्याचें शिर छेदून त्यास खालीं टाकिलें. ऐसे पराक्रम वारंवार युद्धप्रसंगीं केले आहेत. तेणेंकरून दर लढाईत तरवारीचे व भाले व गोळ्या व तीर वगैरे जखमा जातीस लागून सर्वांगीं होत्या. दयाबहादूर याची फौज लुटून तोफखान्यासुद्धां दरोबस्त सरंजाम आणिला तो आमचे वडिलांनीं ठेविला. राजास व्यावयाचा संप्रदाय नाही. आमचे आज्ञे त्रिवर्ग बंधू यांच्या दक्षिणेतील सरंजामाची व वतनाची व रेवा उत्तरप्रांतीं धारेच्या संस्थानाची व मुलुखाची व खंडण्याची व चौथाई वांटणीचे व मालमालीयित वगैरे जिंदगी वगैरे पागा, फौज, पिलखाने व तोफखाने वगैरे आठरा कारखान्यांची व कागदपत्र व देवधर्मासुद्धां हरबाबेची वांटणी जाली नाही. आमचे पणजे संभाजी पवार असतां आनंदराव पवार गत झाले. संभाजीराव पवार निवर्तल्यावर आमचें आज्ञे जगदेवराव पवार मृत्यु पावले. नंतर उदाजी पवार यांनीं सदरहूची वांटणी न करितां विश्वासराईचे चौथाई वांटणीपैकीं मुलाचे जातीखर्चाकडे सरंजाम खाजगत व दारकोजी पवार व चंदरराव व गोविंदराव पवार व यशवंतराव पवार यांकडे चालविला तो लढाईअखेरपर्यंत चालला. त्याचे दाखले सरकारदप्तरां आहेत. तारीख नवीन लिहून कळवावी ऐसा अर्थ नाही. खेरीज सदरीं लिहिल्याअन्वये सरंजामाची व संस्थानाची व वतनाची वगैरे हरबाबेची वांटणी झाली नाही. आमचे पणजे संभाजी पवार यांचे तीन पुत्राचे वौशाचा तपशील नांवनिशीवारः—

१ उदाजी पवार यास पुत्र चारः—

१ मैनाजी पवार.

१ दारकोजी पवार लढाईत गत झाले.

१ गोविंदराव पवार

१ चंदरराव पवार बारभाईचे गर्दीत शस्त्रे-

लढाईत मृत्यु पावले.

करून मरण पावले.

२

२

४

पैकीं तीन पुत्रांस वौश नाही. दारकोजी पवार याचे पुत्र मल्हारराव व आनंदराव पवार मलठणास होते. आनंदराव पवार अल्पवयांत मृत्यु पावले. मल्हारराव पवार यास पुत्रसंतान नाही, व त्यांनीं दत्त पुत्र घेतला नाही. त्याच्या खाशा लम्हाच्या दोन स्त्रिया होत्या. त्या मल्हारराव असतां गत झाल्या. नंतर राजसबाई खंजीरी संप्रदायाची त्याचेजवळ होती. मल्हारराव निवर्तले ते समयीं सन १२१२ सालीं आमचे येथील पुत्र मलठणचे संस्थानी जाऊन बहिवाट चालविली हणून सरंजामाची जमी सरकारांतून झाली नाही. लढाईअखेरपर्यंत सरंजाम विश्वासराईचे चौथाई



वाठणीचा व दहकचा मल्हारराव पवार यांचे नावे चालत होता, त्याचा दाखला सरकारदमरांत आहे. हल्लीं ते राजसबाई खंजीरी सांप्रदायाची मलठणास आहे. तिजकडेस अधिकार नाही. ऐशा आमचे येथें आजपावेतों होत्या; व गायकवाड सेनाखासखेल समशेरबहादूर यांचे येथें बडोद्यास आहेत. त्यांच्या पोटीं पुत्र जाला असतां त्याजकडेस मालकपणाचा अधिकार नाही. ऐसें असतां राजसबाईजवळ यशवंतराव पवार, अमृतराव पवार याचा पुत्र सुपेकर राहून निर्वाह करीत आहे. त्यास सुपेकर याचा, आह्मी असतां आमचे येथें थऊन राहण्याचा संबंध नाही; ऐसें असून यशवंतराव पवार सुपेकर सरकारनिसबत जाहागिरीचे अमलाची वहिवाट करीत आहे. ते सरकारांतून मनाई जाली पाहिजे. आमचे वतनाची वहिवाट आह्मी चालवून जिंदगी वगैरे कागदपत्रसुद्धां वगैरे हरबाबेचे राजसबाई असतां घेऊं, अथवा गत जाहल्यावर घ्यावयास येईल. मल्हारराव पवार याचे नावे सरंजाम चालत होता तो आमचा आह्मांकडे चालविला पाहिजे. याविषयीं सरकारची नजर अगर सरंजामपैकी सरकार हुकुमान्वये मान्य आहोंत. साहेबांनीं मेहरबान होऊन लिहिल्याप्रमाणें चालवावें.

१ जगदेवराव पवार यास पुत्र दोनः—

मोंगलाचे व पदरपुरचे व आनंदमोगरेचे वगैरे लढाईंत युद्धप्रसंगी जातीस जखमा लागून लोक कामास आले आहेत.

१ गोविंदराव पवार.

१ दारकोजी पवार.

२

वरील दोन पुत्रांपैकीं गोविंदराव पवार याचे पुत्र व पौत्र वौंश राहिला नाही. दारकोजी पवार याचे पुत्र हल्लीं आह्मी अवधुतराव पवार आहोंत. आह्मांसही पुत्र आहेत. विश्वासराईचे चौथाई वांठणीपैकीं सरंजाम लढाई अखेरपर्यंत चालत होता. त्याची यादी सन १२३४ श्रावणमार्सी दिली आहे; व सरकारदमरीं दाखले आहेत. महालानिहायपैकीं देहे ३८ व महाल चार व बोर एक पैकीं हिस्सा जकात व बाबतीं-सुद्धां खेरीज रोजमुरा रुपये १८३० शिवाय जाजती सन समान तिसा मया व अलफचे सालीं रुपये ४०० एकूण रुपये २२३० दोन हजार दोनशें तीस, शिवाय पोषाक व दिपवाळीचें तेल वगैरे मानमरातव पूर्ववत्प्रमाणें चालत हेत. आमचे सरंजामाची वहिवाट दखलगिरी सरकार अमलाप्रमाणें आमचे आह्मी हरबाबेची मामूल वहिवाटीप्रमाणें करीत होतो. त्यास सरकारची मनाई नाही. हल्लीं कुंपणीसरकारांतून आमचे सरंजामपैकीं जातीस सरंजाम देहे १७ सत्रा त्यांचा तफशील परगणे संगमनेरपैकीं तर्फ बलापूर देहे पांच व तर्फ देवपुर देहे तीन एकूण देहे आठ व

परगणे शेवगांवपैकी देहे आठ व परगणे कोतूलपैकी मौजे डोळसणें देहे १ एक एकूण देहे १७ सत्रा मामूल वहिवाटीचे शिरस्तेप्रमाणें तारीख १४ माहे सपटंबर सन १८२४ इसवीपासून चालत आहेत. त्याची वहिवाट दखलगिरी दुमाले खेरीज करून सरकारी अम्मलाचे गांवची पूर्ववत्प्रमाणें होत नाहीं. राबब लावणींत तजावत तफावत वगैरे हरबाबेची होऊन आमची नुकसानी होत आहे, आणि सदरहू सत्रा गांवचा कमाल आकार होत नाहीं. हल्लीं लावणीअन्वये वसूल येतो, तो सालवार एकसारखा आप्तीमुळें येत नाहीं. कम आकार होतो. तो आमचे खर्चास व उछाहास पुरत नाहीं म्हणून देण्याचा भरणा होऊन बहुत अडचणीत आलां आहोंत. येविषयीं इंग्रजी पत्र तारीख १ नवंबर सन १८२७ इसवीचें सात कलमांचें लिहिलें आहे, त्यांत मजकूर लिहिला आहे. तरी साहेब मेहरबान होऊन आमचे सरंजामपैकीं जाजती सरंजाम अथवा पोतापैकीं व उछाहाचें खर्चाकरितां श्रीदेवाकडेस गांव इनाम अगर नेमणूक मेहरबान होऊन चालविली पाहिजे, म्हणजे उछाहाचा व खर्चाचा निर्वाह होईल. दसऱ्यास पोषाख साडे तीन वस्त्रें व दिपवाळीचें तेल वगैरे चालतें केलें पाहिजे हल्लीं दोन वस्त्रें दसऱ्याचा पोषाख सरकारांतून येत आहे. कमपेश तफावतीची यादी आलाहिदा पाठविली आहे. खानदानीचें पत्र आल्याचे पूर्वी सन १२४१ सालीं यादी हुजुरांत मुंबई मुक्कामीं मलठण संस्थानी कागदपत्र आहेत त्याविषयीं केली आहे, व धारेच्या संस्थानीं कागदपत्र आहेत. आह्लांकडील दमरें बंडांत व पेंढारी यांचे लुटींत व लढाईचे गर्दीत गेलीं आहेत. कांहीं कागदपत्र गैरविल्हेस पडले आहेत सबब तारखेचा मजकूर लिहिला नाहीं. सरकारदमरीं दाखले आहेत.

( आमचे वाडिलानी यशवंतराव पवार यांनीं पेशवे याचे कारकिर्दीत भाऊसाहेब यांनीं सरकार हुकमी जरबेचा जाब ज्यावेळीं घोलले ते फौज तयार करून तोफांचे गोळे व बाण टाकून पेशवे यांचे डेरे जाळिले परंतु पेशवे यांनीं सहन करून समजून घालून मानमगनब पूर्ववत्प्रमाणे चालविले म्हणून युद्धां प्राण वेचिले आहेत. )

१ आनंदराव पवार यास दोन पुत्रः—

१ यशवंतराव पवार यास पुत्र खंडेराव पवार. याचे पुत्र आनंदराव पवार धारेच्या संस्थानीं होते. त्यास पुत्रसंतान नाहीं व त्यांनीं दत्तपुत्रही घेतला नाहीं. सरंजाम लढाई अखेरपोवतों आनंदराव पवार यांचे नावें चालत होता. त्याचा दाखला सरकारी दमरांत आहे. हल्ली त्याची खासी लग्नाची स्त्री मैनाबाई पवार धारेंस आहेत. महाल, मुलूख, संस्थान कुंपणी सरकारांतून चालत आहे. आह्ली तेथील मालक अधिकारी आहोंत. सरकारांनीं नजर अगर सरंजामपैकीं हुकूम होईल त्यास मान्य आहोंत. मेहरबान होऊन आमचे संस्थान आह्लांकडे हुकूम होऊन चालविलें पाहिजे.

( यशवंतराव पवार व रायाजी पवार व उभयतांचे वंशांनीं सदरीं लिहिलेप्रमाणें मोंगलाकडील चेडल लडाईं करून बुडविला. नंतर यशवंतराव पवार पानिपताचे लढाईंत फौजेसुद्धां गर्द होऊन गेले. यावर फत्तगडचे लडाईंत काम काज चौथाईची वांटणी घेतली आहे. )

१ रायाजी पवार यास पुत्र दोन.

१ मल्हारराव पवार यास पुत्र हल्लीं बळवंतराव, व हनुमंतराव पवार आहेत. व बळवंतराव पवार यास पुत्र आहे.

१ विठलराव पवार यास पुत्र आहे. सुंदरसीकडे आहेत.

२

२

वांटणी झाली नाहीं सबब रायाजी पवार यास यशवंतराव पवार यांनीं सरंजाम दिला नाहीं. वांटणी देण्याविषयीं पेशवे यांचें मान्य केलें नाहीं. यास्तव नवीन सरंजाम पेशवे यांनीं दिल्या होता तो चालला. रायाजी पवार गत झाल्यावर चालला नाही. डग व गर्गाड दोन महाल चालले.

विश्वासराईचे चौथाई वांटणीपैकीं देहे व परगणे नेवासेपैकीं देहे ४० चाळीस व जाहागिरीचा देहे १ याप्रमाणें लढाईअखेरपर्यंत चालत होतें, त्याचा दाखला दप्तरांत सरकारच्या आहे. हल्लीं कंपणीसरकारांतून चिरंजीव बळवंतराव पवार यांचे नांवें मोकासा खेरीजकरून जाहागिरीचा देहे १ एक व परगणे नेवासेपैकीं मोकाशाचे देहे १३ एकूण देहे सुमारे १४ चवदा चालत आहेत, व तीर्थस्वरूप विठलराव पवार यांचा सुंदरसीकडे अम्मल चालतो, व चिरंजीव राजश्री बळवंतराव पवार यास दसऱ्याचा पोषाक सरकारांतून येत आहे. सरंजामाचें उत्पन्न खर्चास पुरत नाहीं. साहेब मेहरबान होऊन ज्यास्ती सरंजाम देविला पाहिजे ह्मणजे खर्चाची निभावणी होईल.

चिरंजीव राजश्री बळवंतराव पवार यांचे नांवें परगणे नेवासेपैकीं मोकाशाचे देहे तेंरा जाहगीर मौजे आमदाबाज तर्फ कंडे व वतनाची व वाड्याची वगैरे हरबाबेची वहिवाट सरकारांतून हुकूम होऊन आह्मांकडे चालत आहे.

३

सदरहूपमाणें खानदानीचा मजकूर व वंशावळीचा व बढतीचा व कीर्ति व पराक्रमाचा व सरंजामाचा वगैरे आमचे वडिलांनीं आह्मांस विदित केला आहे, तो लेखन करून यादी रवाना केली आहे. हें साहेबांनीं अक्षरशः ध्यानास आणावी म्हणजे साकल्यार्थ निवेदन होईल. सारांश, सरकारांनीं मेहरबान होऊन सदरीं लिहिल्याअन्वये चालविलें पाहिजे. सन १८३३ इसवी मुक्काम पुणें.

तारीख छ २५ माहे रविलाखर. अधिक भाद्रपद मास सन १२४३ शके १७५५.

## १५ पवार मलठणकर.

साहेब मुषफक मेहरबान दोस्तां हेनरी ब्रौन साहेबबहादुर एजंट जिल्हा दक्षण  
सलामहू:—

१ अज दिल एखलास यशवंतराव पवार संस्थान मलठण सलाम बाजद सलाम  
अंकीं येथील खैरयत जाणून आपली शादमानी हंमेषा कलमी करीत असिलें पाहिजे.  
विगर मजमून सरकारचा हुक्म तारीख ३० जुलई सन १८५१ इसवीचा आला कीं,  
आपणास किताब विश्वासराव पद आहे. हें कधीं, कोणत्या सवबनें, कोणाकडून प्राप्त जालें,  
त्याची व एकंदर खानदानी व पदवी थोरपणाचा इतिहास दाखलेनिशीं लिहून द्यावा.  
त्याजबरोबर दाखला असेल तोही पाठविला पाहिजे. ऐकीव मजकुराची हकीकत असेल  
त्याविषयीं कांहीं पुरावा नसेल तर तसें लिहून यावें. परंतु जुने कागदावरून व माहितगार  
लोकांकडून माहिती सांपडेल ती लिहून यावी. म्हणून आसाहेबाकडून खलिता तारीख ३  
माहे दिसंबर सन १८५१ इसवी नंबर १३१८ चा आला. ऐसीयासी आमचें वडील बुवाजी  
पवार यांस श्रीमंत शिवाजी महाराज छत्रपती यांचे पुत्र राजारामसाहेब छत्रपती यांनी मुल-  
खाचा बंदोबस्त करावयास सांगितल्यावरून त्यांनीं लढाया घेऊन बंडें मांडून अंमल बसवून  
विश्वासानें बंदोबस्त केला; झणून विश्वासराव असें पद जिंजीचे किल्ल्यावर देऊन विश्वास-  
राईचा सरंजाम प्रांत दक्षण व प्रांत खानदेश वगैरेचा दिलहा. त्यावर बुवाजी पवार यांचे नातू  
उदाजी पवार आमचे पणजे यांचा पराक्रम शाहूमहाराज व पेशवे यांनी पाहून विश्वास-  
राईचे सरंजामाशिवाय, गुजराथ व माळवा व मेवाड, मारवाड, बुंदेलखंड वगैरे प्रांतांतील  
भोकासे दिले. खेरीज दहकाचा सरंजाम उदाजी पवार तक्षीमा २ व मानाजी पवार तक्षीम १  
असा साममती दिला. याप्रमाणें दिवसेंदिवस रुदवे शूरत्वानें वाढत गेले, यांजबद्दल पेशजी  
यादी एजंट कचेरींत व गौरनर कांसलांत दिल्या. त्याजबरोबर राजसनदा व पेशवें यांच्या  
सनदा दाखवून नकला एजंट कचेरींत दाखल्यास दिल्याच आहेत. विश्वासराव पदाबद्दल  
व सरंजामाचा दाखला सरकारदप्तरीं आहेत. आह्मांपाशी कागदपत्र असावे तर हमेशा  
मोहिमीवर वडिलांच्या जाण्यामुळें कागद एके ठिकाणीं राहिले नाहींत. आढळण्यांत येतात  
तसे दाखल्याकरितां देतच आहोंत. हल्लीं थोरले बाजीरावसाहेब यांच्या सनदा सांपडल्या, त्या  
चिरेजीव राजमान्य राजश्री रावसाहेब संस्थान धार यांचें लग्न झाल्यावर चैत्रमासीं आपले  
मुलाखातीस येऊं ते वस्तीं दाखविण्यांत येतील. तारीख १८ माहे जानेवारी सन १८५२  
इसवी ऊर्फ पौष वद्य १२ शके. १७७३ मुक्काम धार प्रांत माळवा. ज्यादा काय लिहणें.  
प्यार मोहोबत असों दिजे हे किताबत.

## १६ पवार सुपेकर.

यादी चंदरराव पवार सुपेकर सुरुसन अर्बा सलासीन मयातैन व अलफ. मेहेरबान जान वार्डिन साहेब बहादूर डेपुटी एजंट जिल्हा दक्षण यांचे पत्र तारीख ८ माहे सप्टेंबर सन १८३२ इसवीचे आले. त्यांत मजकूर कीं, हजरत बंदेगानअली राइट हनराबल गौरनर कौंसल चहात आहे कीं, दक्षणेतील जहागीरदार लोक यांची कैफियत कशी आहे त्याची वाकबगारी व्हावी, यास्तव आपण मेहेरबानगी करून सरकारांत रवाना करण्याकरितां थोडके मजकुरांत कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे. त्यांतील तपसील:—आपली खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर जाला तें व फौज व जातसरंजाम आपले वडिलाकडे चालत होता व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस दिल्या ती तारीख, व आपले जहागिरीचे वहिवाटींत पेशवेसरकारांतून कोणते तहनें दखलगिरी केली तें व आपलेकडे सरंजाम हल्लीं काय चालत आहे तें व पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कुंपणी-सरकारांतून चालत आहे, त्यांत कमपेश व तकावत काय आहे तें वगैरे यादींत दाखल करून रवाना केली पाहिजे. ह्मणोन त्याजवरून इकडील मजकूर लिहिण्यांत येतो तो बितपसील कलमें.

१ आपली खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर जाला याचे उत्तर:—आमचे वडील हिंदुस्थानांतून साबुसिंग पवार तद्देशांतील रजपूत आले. त्याचे पुत्र कृष्णाजी पवार पावेतो स्वतंत्रपणानें वागत होते. पुढें त्यांचे पुत्र बुबाजी पवार व रायाजी पवार व केरोजी पवार श्रीमंत महाराज शिवाजी राजे छत्रपती यांजवळ इतलाखी फौजेनिशीं कामें-काजें करून होते. शिवाजी महाराज यांचे पुत्र राजारामसाहेब छत्रपती यांनीं बुबाजी पवार यास मुलखाचा बंदोबस्त करावयास सांगितला. त्यांनीं मातबर जमेत बाळगून तापीतीरापर्यंत अंमल बसवून विश्वासानें बंदोबस्त केला, ह्मणून विश्वासराव असें पद दिलें. रुतबा वाढला. बुबाजी पवार यांचे कनिष्ठ बंधु रायाजी पवार व केरोजी पवार यांनींही रामराजे यांचे सनिध फौजेनिशीं राहिले. त्यास सेना बारा सहस्री केरोजी पवार यांस पद दिलें. नंतर श्रीमंत शाहू महाराज दिल्लीहून सरफराज होऊन दक्षिणेस आले. ते समयीं बुबाजी पवार याजवळ फौजेची जमेत भारी, कितीक सरदार, याजकडे आले. त्यास बुबाजी पवार यांनीं मोठों मोठी कामेंकाजें स्वपराक्रमें केलीं. सबब महाराजांनीं विश्वासराईचा सरंजाम चौथ पादशाहाकडून संपादन केली. त्यापैकीं फौजेचा व जातीस सरंजाम मोकाशाचा अंमल सरकार संगमनेर व खानदेशांत वगैरे दिल्या. तेव्हांपासून खानदानीची बढती व लौकिक महशूर झाल्यावर, भाउपण्यांत सरदान्या वेगळाल्या झाल्या. पुढें महाराजांनीं पराक्रम पाहून ज्यास्ती सरंजाम दहकचा ह्मणून आमचे घराण्यास एक हिस्सा व उदाजी पवार मलठणकर यास दोन हिस्से दिल्या. पुढें बाळाजी विश्वनाथ व बाजीराव बल्लाळ पेशवे यांजबरोबर दिल्लीच्या वगैरे स्वान्या व आणखी कामें आमचे वडिलांनीं केलीं.

कलम.

२ फौज व जातसरंजाम आपले वडिलाकडे चालत होता, व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस दिला ती तारीख व आपले जहागिरीचे बहिवाटीत पेशवे-सरकांतून कोणते तऱ्हेनें दखलगिरी केली ? याचें उत्तरः—बुवाजी पवार यास पुत्र दोन त्यांचीं नांवें.

१ वडील पुत्र काळोजी पवार. यास पुत्र चार त्यांचीं नांवेंः—

१ कृष्णाजी पवार विश्वासराव वडील.

१ तुकोजी पवार गणेगांवकर.

१ जिवाजी पवार हिंमणीकर.

१ मानाजी पवार सुपेकर धाकटे.

४

१ धाकटे संभाजी पवार यासी. पुत्र तीन त्यांचीं नांवेंः—

१ उदाजी पवार मलठणकर.

१ आनदराव पवार कवठकर.

१ जगदेवराव चिंतगांवकर.

२

३

पैकीं वडील काळोजी पवार याचे पुत्र चार बंधु एकत्र असतां आमचे आज मानाजी पवार राजे शाहू छत्रपती याजपाशीं इतलाखी फौजेनिशीं हेते. तेव्हां कामेंकाजें पाहून महाराज प्रसन्न होऊन दहकचा सरंजाम रुपये २०००० चा दिला. त्याच्या सनदा बहुतेक दंग्यांत गेल्या. एक सनद राजशक ६१ व दुसरी ६२ च्या आहेत. कलम.

३ स्वार असामी ६० सरंजामाचे चाकरीस याचा रोजमुरा खेरीज पावत होता. सरंजामाची बहिवाट आमची आह्मी मुखत्यारीनें केली. यामुळें पेशवेसरकारांतून कधीं दखलगिरी जाहली नाही. स्वारांनिशीं चाकरी पानपतची स्वारीपर्यंत हुजूर व बिहल शिवदेव याचे तैनातीस केली. हिंदुस्थानचे सुभे याजबरोबर मानाजी पवार पलिपडगंजनजीक दिली येथें कैलासवासी झाले. पुढें आमचे तीर्थरूप यादवराव पवार यांचे नांवें सरंजाम होऊन अंताजी माणकेश्वर व विसाजीपंत बिनीवाले व महादजी शिंदे यांजबरोबर तैनातीस सदरहू चार भावांचीं पथकें होती. त्यांजबरोबर हिंदुस्थानांत कामेंकाजें लढाया झाल्या त्या त्रिवर्ग सुभ्यास माहीत आहेत. शिंदे अलिजाबहादूर यांनीं मागील बहिवाट पाहून हिंदुस्थानांत हमीरपूर महाल लाख रुपयांचा व खंडण्यांत वाटणी पवारास देत आले. आमचे तीर्थरूप तापीतीरीं शांत झाले, तेव्हां श्रीमंत माधवरावसाहेब सवाई यांनीं आमचे नांवें सरंजाम करार करून दिला. तो कुंपणी-सरकाराचे लढाईअखेर आह्मांकडे चालत होता. कलम.

४ आपलेकडे सरंजाम हल्लीं काय चालत आहे याचें उत्तर :—पांच हजारांचा जातीचा सरंजाम आहे. त्याचे मोकासे गांव परगणे सावदे व परगणे गालणें प्रांत खानदेश येथें चालत आहे. कलम.

५ पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कुंपणीसरकारांतून चालत आहे. त्यांत कमपेश तफावत काय आहे तें वगैरे याचें उत्तर :—सदरचे कलमांत बहुतेक आलें आहे. दसऱ्याचे बहुमानापैकीं साडेतीन सनगें पावत होतीं. हल्लीं कुंपणी-सरकारांतून दोन पावतात. कलम.

एकूण पांच कलमांप्रमाणें मजकूर आहे. सरकारचे दिलांत येईल. तारीख ५ माहे जुलई सन १८३३ इसवी. मुताबक आषाढ वद्य ४ शके १७५५ विजयनाम संवत्सरे सन १२४३ फसली.

### १७ पवार सुपेकर.

यादी बुबाजी पवार विश्वासराव सुपेकर सुरुसन आर्बा सलासीन मयातैन व अलफ मेहरबान जॉन वार्डिनसाहेब बहादूर डेपुटी एजंट जिल्हा दक्षण यांचें पत्र तारीख ८ माहे सप्टेंबर सन १८३२ इसवीचें आलें. त्यांत मजकूर कीं, हजरत बंदेगानअल्ली रैट हनराबल गवरनर कौंसलांतून चाहात आहे कीं, दक्षिणेंतील जहागीरदार लोक यांची कैफियत कशी आहे त्याची वाकबगारी व्हावी; यास्तव आपण मेहरबानगी करून सरकारांत रवाना करण्याकरितां थोडके मजकुरांत कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे. त्यांतील तपसील :— आपली खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर जाला तें, व फौज व जातसरंजाम आपले वडिलाकडे चालत होता व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस दिला ती तारीख, व आपले जाहागिरीचे वहिवाटीत पेशवेसरकारांतून कोणते तहनें दखलगिरी केली तें, व आपलेकडे सरंजाम हल्लीं काय चालत आहे तें, व पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कुंपणीसरकारांतून चालत आहे त्यांत कमपेश व तफावत काय आहे तें, वगैरे यादींत दाखल करून रवाना केलें पाहिजे. म्हणून त्याजवरून इकडील मजकूर लिहिण्यांत येतो. कलमें बितपसील :—

१ आपली खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर झाला याचें उत्तर :— आमचे वडील बुबाजी पवार व केरोजी पवार महाराज शिवाजीराजे छत्रपती यांजपाशीं शिलेदारी करून होते. पुढें राजाराम राजे महाराज छत्रपती यांनीं बुबाजी पवार व केरोजी पवार यांस स्वदेशीं दमाजी व तिमाजी वगैरे यांचीं जागजागां बंडे होतीं, त्यांचे बंदोबस्तास नेमलें. त्यांनीं भारी फौजेची जमीयत बारा हजारपर्यंत मिळवून बंदोबस्त केला. तेव्हां केरोजी पवार यांस 'सेना बारा हजारी' किताब जाहला. नंतर उभयतां बंधु यांनीं भारी जमावानें गंगथडी व खानदेशप्रांतीं तापीतीरापावेतों स्वराज्याचा अम्मल सुरुवात

करून मोठीमोठी कामे विश्वासाने केलीं, सबब ' विश्वासराव ' असें पद देऊन, कित्येक महाल सरंजामास दिले. उपरांतिक बुबाजी पवार याचे पुत्र काळोजी पवार व संभाजी पवार हे छत्रपती महाराजासंनिध फौज बाळगून कामकाजें करीत होते. ते वेळेस विश्वासराईचे सरंजामाची वांटणी होऊन निमे सरंजाम केरोजी पवार विश्वासराव व चवथाई सरंजाम संभाजी पवार, बाकी चौथाई सरंजाम काळोजी पवार याजकडे याप्रमाणें भाऊपण्यांत वाहिवाट करूं लागले. काळोजी पवार यास पुत्र चार. कृष्णाजी पवार वडील, आमचे पणजे, दुसरे तुकोजी पवार, तिसरे जिवाजी पवार, चौथे मानाजी पवार, स्वदेशीं फौजेनिशीं हातें. पुढें श्रीमंत बाजीरावसाहेब पेशवे माळवंप्रांतीं मुलूख सर करावयास गेले. त्याजबरोबर तुकोजी पवार व जिवाजी पवार फौज घेऊन गेले. त्यांनीं माळवंप्रांतीं कामकाजें सरकार उपयोग केला, सबब त्याजला माळवंप्रांतीं मुलूख सर केला त्यापैकीं शिंदे व होळकर यांजबरोबर वांटणीचा सरंजाम लाखो रुपयांचा दिल्ला: तो उभयतांकडे चालत आहे. त्याखेरीज परगणे हमीरपूर प्रांत बुंदेलखंड हा महाल अंताजी माणकेश्वर याजकडे सरंजाम होता; त्याची जमी सरकारांतून झाली त्यापैकीं नवा दिला. त्यांतील तीन हिस्से त्याची चौथाई वांटणी आह्माकडे चालत होती. चवथे भाऊ मानाजी पवार यास छत्रपती महाराजांनीं दहकाचा सरंजाम मोकाशाचा खानदेशप्रांतीं दिल्ला. त्यांत तिजाई याची व दोन हिस्से उदाजी पवार याजकडे. येणेंप्रमाणें चौथा भावांकडे सरंजाम होते. ते ज्याचे त्याजकडे चालले. वडील कृष्णाजी पवार आमचे पणजे याजकडे पेशजीचा विश्वासराईपैकीं चौथाई वांटणीचा सरंजाम मोकासे स्वदेशी चालत होते. त्याचीं राजपत्रें शाहूमहाराजांनीं राजशक शके ५३ पराभवनाम संवत्सर करून दिल्लीं, व मौजे सुपें परगणे पारनेर हा गांव इनाम पुत्रपौत्रादि वंशपरंपरेनें दिल्ला. त्यास वर्षे १०७ जालीं आहेत. पुढें त्याचे पुत्र बुबाजी पवार विश्वासराव आमचे आज्ञे शाहू महाराजासंनिध फौजेनिशीं कामकाजें करीत होते. त्याजवर छत्रपती महाराज सरफराज होऊन केराजी पवार यांचे पुत्र धिराजी पवार मोगलाईत गेले. त्याजकडे विश्वासराईचा सरंजाम, चौथाई मोकासे स्वदेशीं होते तो सरंजाम त्याजकडून दूर करून, विश्वासरावपदसुद्धां सरंजाम राजशक शके ६२ राक्षसनाम संवत्सरीं बुबाजी पवार विश्वासराव यास दिल्ला. ते आमचे आज्ञे, त्याजपासून आमचे खानदानीची बढती व लौकिक महशूर जाहला. त्याचे पुत्र माधवराव पवार विश्वासराव आमचे चुलते, यास शाहूमहाराजांनीं वस्त्रें देऊन सरंजामाची फौज बाळगून महादजी शिंदे यांजबरोबर चाळीस वर्षे हिंदुस्थानांत कामकाजें करीत होते. ते वारल्यावर त्यांचे धाकटे बंधु राणोजी पवार विश्वासराव आमचे तीर्थरूप यास श्रीमंत सवाई माधवराव पेशवे यांनीं वस्त्रें देऊन सरंजामाच्या सनंदा करून दिल्ला. तो सरंजाम होळकरांचे दंग्यापर्यंत दरोबस्त चालत होता. पुढें श्रीमंत राजश्री बाजीरावसाहेब यांनीं सरंजाम कांहीं जमी करून लोकांस दिल्ला. कांहीं



सरकार जाहागिरीकडे दाबला. कांहीं राहिला तो लढाईअखेर कामदोपत्री बाहाल आहा-  
कडे चालत होता. सर्वत्र पवार मंडळींत वडील घर आमचें व विश्वासराईचें पद आमचें  
सरदारीस चालत आहे. कलम.

२. फौज व जातसरंजाम आपले वडिलाकडे चालत होता, व सदरहू सरंजाम कोणते  
तारखेस दिल्या, ती तारीख. याचें उत्तर:- आमचे वडिलाकडे फौजेस सरंजाम महाराज  
राजाराम छत्रपती राजे यांजपासून चालत होता, त्याचा तपशील:-

१ स्वदेशीं विश्वासराईचा सरंजाम मोकाशाचा महाराज राजाराम राजे छत्रपती  
यांनीं दिल्या. त्याची वांटणी भाऊबंदाकडे तपशील:-

१ चौथाई सरंजामांत इसम

१ यशवंतराव पवार मलठणकर.

१ रामचंद्रराव पवार कवठेकर, माळव्यांत आहेत.

१ बळवंतराव पवार आमदाबाजकर.

१ अवधूतराव पवार चितेगांवकर.

४

१ चौथाई सरंजाम शिबराव पवार नगरदेवळेकर.

२

बाकी निम्मे सरंजाम विश्वासराईचा खासगत वांटणीचा चालत होता. त्याचीं  
राजपत्रें शाहूमहाराज छत्रपती यांचीं, राजशक शके ६२ राक्षसनाम संवत्सरीं  
बुबाजी पवार विश्वासराव यांस करून दिल्लीं आहेत. ते महाल व गांव  
तपशील:-

१ तर्फ हवेली परगणे संगमनेर.

१ परगणे सातारे हरसूल.

१ तर्फ देवपूर परगणे संगमनेर.

१ परगणे कोतूळ.

१ तर्फ बेलापूर परगणे संगमनेर.

१ परगणे धुळें प्रांत खानदेश.

१ तर्फ राजूर परगणे आकोलें.

१ परगणे चाळीसगांव प्रांत खानदेश.

१ परगणे नाशीक.

१ परगणे झडगें प्रांत खानदेश.

१ परगणे कुंभारी.

१ वाघलीबार प्रांत खानदेश.

१ परगणे बारागांव नांदूर.

१ फुटगांव मोकासे.

१ परगणे शेवगांव.

१ जकात महालानिहाय.

यासी आकाराची बेरीज सरकारांतून लावून स्वार नेमून दिले. त्याचा बेहडा  
सन इसने सिंतेनचा करून दिल्या. ती बेरीज ७९२०२ रुपये. तपशील:-

२०९६१ सरदारीकडे जातीस.

१२५० हुजुर जे दरखदा फडणीस व मुजमदार व सबनीस व जमेनीस.



## दक्षिणेंतील सरदारांच्या कैफियती, यादी वगैरे.

[ प्रकरण

७२३९ महालमजकूर.

४७५२ साहोत्रा पंतसचीव.

४५००० स्वार असामी २२५ दर २०० प्रमाणें. खेरीज हमीरपूरचे महालचे स्वार ७५.

७९२०२

सदरहू सरंजाम हाळकराचे दंग्यापर्यंत चालत होता. पुढे श्रीमत राजश्री बाजी-रावसाहेब यांनीं कांहीं जमी करून लांकांस दिल्या. कांहीं सरकार जाहागिरी-कडे दाबला. कांहीं लढाईखेर कागदोपत्रीं बाहाल, त्याची बेरीज अजमासें १०००० रुपये.

पुढें आलीशान बडेसाहेब बहादूर यांनीं सर्वत्राचे बंदोबस्त केलें, ते वेळेस आह्लांसही जातीनें बेरजेपैकीं पांच हजार रुपये नक्त नेमणूक नगर सुभ्यास करून दिली आहे, त्याप्रमाणें पावत आहेत.

- १ हिंदुस्थानप्रांतीं परगणे हमीरपूर प्रांत बुंदेलखंड हा महाल अंताजी माणके-श्वर याजकडे होता. त्याची जमी श्रीमंतांनी केली. ते समयी पवार यास माळवे प्रांतीचे वांटणीखेरीज नवा दिला. त्या महालपैकी तीन हिस्से तुकोजी पवार व जिवाजी पवार याजकडे; बाकी चौथाई वांटणी आह्लांकडे चालत होती. त्याबद्दल चाकरी स्वार असामी ७५ करीत होता. तो महाल पेशवाई अम्मल असतां इंग्रजी सरकारांत गेला. कलम.

२

३ आपले जाहागिरीचे वहिवाटींत पेशवेसरकारांतून काणते तऱ्हेनें दखलगिरी केली त्याचें उत्तरः—स्वदेशीं सरंजाम मोकाशाचा अम्मल होता त्याची वहिवाट आह्लाी करून महालांतून अम्मल घेत होतां. मौजे सुपें परगणे पारनेर हा गांव मात्र इनाम दरो-बस्त शाहूमहाराज छत्रपती यांनीं कृष्णाजी पवार यास राजशक शके ५३ पराभवनाम संवत्सरीं दिल्या होता. त्याची वहिवाट आमचे आह्लाी मुखत्यारीनें करीत होतां. सगकांतून दखलगिरी कांहीं एक होत नव्हती. याप्रमाणे हिंदुस्थानचे हमीरपूर महालची वहिवाट आमचे आह्लाी करीत होतां. कलम.

४ आपलेकडे हल्लीं सरंजाम काय चालत आहे त्याचें उत्तरः—सरंजाम श्रीमत राजश्री बाजीराव साहेब यांनीं जमी केला, त्याचा मजकूर वर सदरीं लिहिलाच आहे. जातीचे खर्चाची नेमणूक रुपये २०९६१ पूर्वीची आहे. त्यापैकीं हल्लीं पांच हजार रुपये नगर सुभ्याहून नेमून दिले आहेत. त खर्चास पुरत नाहीत. पदरीं खर्च लवाजमा बहुत आहे. त्याचा बंदोबस्त करणार सरकार आहे. कलम.

५ पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती, व हल्लीं कुंपणीसरकारांतून चालत आहे. त्यांत कमपेश तफावत काय आहे तें वगैरे याचें उत्तर:—

१ मौजे सुपें परगणे पारनेर हा गांव राजपत्रीं शाहूमहाराज छत्रपती यांनीं इनाम दिला होता; तो श्रीमंत राजश्री बाजीराव साहेब यांनीं जप्ती करून आपले मावसभाऊ गोविंदराव परांजपे पास दिल्ला होता. त्यास इनामाची जप्ती मोठे अपराधाखेरीज काणतेही सरकारांतून होत नाही. हा विचार कुंपणीसरकारांनीं दिलांत आणून. कोणाकोणाचे गांव पिलाजी जाधवराव वाडीकर व हुजूर पागे वगैरे अशा लोकांचे गांव मेहरबानी करून सोडले. त्या रीतीनें आमचे गांवची मोफळीक खानदानीवर नजर देऊन करणार सरकार आहे. कलम.

१ सर्वत्रांचे बंदोबस्त जातीचे बेरजेप्रमाणें जाले आहेत. आमचे जातीचे बेरजेप्रमाणें बंदोबस्त जाला नाही. पांच हजार रुपये खर्चास पुरत नाहीत. खर्च पदरीं बहुत, लवाजमा आहे. हें कुंपणीसरकारांनीं दिलांत आणून जातीचे बेरजेप्रमाणें बंदोबस्त करून दिल्ला पाहिजे. कलम.

१ विश्वासराव पद शाहूमहाराज छत्रपती यांनीं बुबाजी पवार विश्वासराव आमचे आज्ञे यास राजशक शके ६२ राक्षसनाम संवत्सरीं दिले. त्यास शंभर वर्षे जालीं. त्या दिवसापासन नांवापुढें विश्वासराव पद सरकार लिहीत आले. त्याप्रमाणें कुंपणीसरकारचे कागद येत नाहीत. विसरून राहातें असें वाटतें. ते पद चालविले पाहिजे. कलम.

१ दसऱ्याचा पोशाख हुजूर असल्यास पावत होता, माधवराव पवार विश्वासराव पर्यंत दाखला सरकारात आहे. त्याप्रमाणें आम्हांस भिळाता. कलम.

४

रादरह ४ कलमांची कमपेश तफावत आहे. तिचा विचार करणें सरकारकडे आहे. एकूण पांच कलमांप्रमाणें मजकूर आहे. तो सरकारचें दिलांत येईल. तारीख १६ माहें आगष्ट सन १८३३ इसवी मुताबक अधिक भाद्रपद शुद्ध १ शके १७५५ विजय-नाम संवत्सर सन १८४३ फसली.

### १८ मोसले अकलकोटकर.

साहेब मुषफक मेहेरबान फर्माय दोस्तां हेनरी ब्रॉनसाहेब बहादूर एजंट जिल्हा दक्षिण सलामह.

छे अजी तर्फ शहाजी राजे मोसले इलाखा अकलकोट सलाम बादज सलाम अंकी येथील खैरयत तारीख २१ माहे दशंबर सन १८५१ इसवीमावेंतो जणून आपली बादमानी हमेशां कलमी करून दिले आराम करित असलें पाहिजे. विमर बजमून आम्हांकडे.

बाकडून खत तारीख २६ आगष्ट सन १८५१ इसवी नंबर १०४२ चें आलें, तें पावलें. आपणास किताब राजे हें पद आहे. हें कधीं, कोणत्या सबबीनें, कोणाकडून प्राप्त जालें याचा व एकंदर खानदान व पदवी थोरपणाचा इतिहास दाखलेनिशीं अथवा जुने माहितगार लोकांकडून लिहून यावें, झणून कलमीं केलें. ऐसीयास आमचे मूळपुरुष कैलासवासी फत्तेसिंगबाबा भोसले हे दौलत संपादनकर्ते. याविशींचा इतिहास असा आहे कीं, शाहू महाराज हे दिल्लीहून परत येतां खानदेशांत पारध झणून गांव आहे त्यानजीक मुकाम केला. तेथें लढाई होऊन तेथील पाटीळ मृत्यु पावला. त्याची स्त्री आपला मुलगा घेऊन लष्करांत महाराजापाशीं आली आणि चिरंजीवास पायावर घातलें. शाहू महाराज यांणीं त्याचें सौंदर्य व रूप पाहून राजचिन्हाचा प्रकार दिसल्यामुळें आपल्याजवळ ठेऊन घेतला. इतक्यांत त्या सरदेचा मुलूक सर जाहल्याची खबर आली. त्याजवरून महाराज बहुत खुष होऊन, मूल दैवान् आणि यशस्वी असें मनांत आणून, प्रसन्न होऊन फत्तेसिंग भोसले असें नांव ते दिवशीं ठेऊन मोठा उत्साह केला. नंतर सातान्यास सन १११७ फसली सालांत घेऊन आले. हरएक राज्यसाधनाचें काम वगैरे सेवा बहुतेक फत्तेसिंगबाबा यांणीं केली. तेव्हां अति प्रसन्न होऊन आपले कुळांत घेऊन चिरंजीव असें म्हणून आपल्यास पादशाहापासोन जाहागीर मिळाली, त्यापैकीं अकलकोटचें राज्य देऊन शिवाय फौजेचे बेगमीस अंमल व सरंजामी सरदार व दरखदार वगैरे तेनातीस देऊन पदवी दिली. त्या वेळेस छत्रचामर चौघडा इत्यादि राजचिन्हे दिलीं. नंतर कांहीं दिवस सातारा येथें राहिले. पुढें सन ११५६ फसली सालीं शाहू महाराज याचा काल जाहल्यावर कांहीं दिवस तेथें राहून सन ११६० फसली सालीं अकलकोटास आपले संस्थानावर आले. महाराजांनीं कृपाळु होऊन मानसपुत्र केलें, त्या दिवसापासून सर्वत्र राजे असें म्हणतात. या प्रकारें पदवीचा व खानदानीचा इतिहास आहे. हा मजकूर पदचे माहितगारमुखें ऐकून लिहिला आहे. दाखल्याचे कागद आहेत, परंतु सन १२४० फसलींत लढाई होऊन गर्दी जाहली, तेव्हां गैरविलेस पडल्यामुळें वखास सांपडत नाहींत. हमेशां खत पाठवून दोस्तीची बढती असावी. जादा काय लिहिणें. प्यार मोहबत कीजे हे किताबत.

### १९ सांवतवाडीकर.

यादी सुरुसन इहदे अशरीन मयातैन व अलफ वाडीकर यांनीं कलमबंदीची यादी दिली त्याचीं उत्तरेः—

१ किल्ले भरतगड व नरसिंगगड घर लोक हातें घेतले झणून दोन कलमें किल्लेचीं तपशीलवार लिहिलीं त्याचा मजकूर :—

सोमसावंत भोसले सरदेसाई याजवर त्याचा पुतण्या रावसाहेब यांनीं जबरदस्ती करून माडीवर कोंडिलें, ते समयीं सोमसावंत यांनीं दारूचे बुधले अंधरून कुटुंब

व पुत्र वंगैरे माणसें एकूण असामी २० एक ठिकाणीं होतीं. त्या वेळेस सोमसावत यांनीं आपला निदानवेळ जाणून त्या वेळेस वडील पुत्र फोंडसावत हे रेडीचे किल्ल्यांत होते. तेथेही त्या किल्ल्यास रावसाहेब यांनीं मोरचेबंदी केली होती. ऐसें संकटांत, तेव्हां आपले जिवाळेचा सोमसावत यांनीं गडी जंजीरे सिंधुदुर्ग येथें पाठविला कीं, आमचा पुत्र रेडीचे किल्ल्यांत आहे. त्याचा सांभाळ महाराजांनीं करावा. आमचा समय प्राप्त आहे. ऐसें सांगून पाठविलेवरून तोच गडी जंजीरेहून रेडीस रवाना केला. तेव्हां फोंडसावत यांनीं आपला विजमतगार आपा कामाठी व शामजी नेवरेकर ऐसे दोघे जंजिरेस पाठविले. त्याजबराबर सांगून पाठविलें कीं, वडिलांनीं सांगून पाठविल्याप्रमाणें माझा सांभाळ महाराजांनीं करावा. त्याजवरून महाराजांनीं राजश्री रत्नाकरपंत राजाज्ञा यासमागमें फौज व लोक देऊन पाठविले; ते व जंजिरेचे लोक ऐसे रेडीस जावयास गेले. सोमसावत यांनीं दारूस अग्नी देऊन वीस असामीसहीत उडाले. हें वर्तमान राजाज्ञा यास कळतांच रेडीचे मुक्कामास जाऊन किल्लेंत हुजूर निसवत व जंजिरेचे मिळून लोक १०० रेडीचे किल्ल्यांत ठेविले; आणि फोंडसावत यासी किल्लेंतून बाहीर महाराजाचे दर्शनास धेऊन करवीरास आले. ते समयीं फोंडसावत यांनीं महाराजांस तमखेसुद्धां किल्ले तपशील:-

- १ किल्ले भरतगड.
- १ ठाणें निवती.
- १ किल्ले सिदगड.
- १ किल्ले नरसिंगगड.

४

सहरहू चार किल्ल्यांस हुजूरचें ठाणें बसलें. नंतर रेडीचा किल्ला हुजूरून फोंडसावत याचे स्वाधीन करावा. चार किल्ले हुजूर असावे. याप्रमाणें करार. हें वर्तमान नारायण रुद्राजी यास समजलें, त्यावरून किल्ले सिदगड त्यानें पेशवे यांज-कडे दिला. बाकी तीन किल्ले राहिले त्यांपैकीं कांहीं दिवसांनीं निवतीचें ठाणें वाडीकर याणीं घेतलें व रेडीही घेतली. हुजूर भरतगड व नरसिंगगड आहेत.

## २० शिंदेसाहेब सुभा.

( अ )

यादी निळकंठराव शिंदे साहेबसुभा यांसी मेहेरबान ताकरीनसाहेब बहादूर सर कलेक्टर व पोलिटिकल एजंट सुभा धारवाड यांनीं धारवाड मुक्कामी हुकूम केले जे, आपले सैलतीचा मूळ पुरुषापासून भोगवदा कसकसा चालत आला, हें इस्तकविल तागाईत कैफियत लिहून

देणेस हुकूम जाला. त्यावरून बहुता दिवसांच्या वैवाटा त्याअर्थी काय स्मरणांत आहे, तें लिहून दिलें आहे. सुगसन स्वमस अशरीन मयानैन व अलफ माहे सवाल सन १२३३ फसलीपर्यंत.

प्रथम दौलत मिळविली ते मुळ पुरुष जिवाजी शिंदे हे आमचे पणजे. त्यास श्रीमन् महाराज छत्रपती यांनीं कर्नाटकप्रांत काबीज करून बंदाबस्त कर्ग्यास्तव रवाना केले. तेव्हां कर्नाटकप्रांता अमील मांगलाई होता. प्रांत विशेषकरून वसत नव्हता. थोडाबहुत वसत होता. तेव्हां कर्नाटकप्रांतीं जाऊन काबीज करून, अमील बसविले. तेव्हां तोरगलचा किल्ला घेऊन तेथें राहिले. तेथील हवा थोड्यास माननासी जहाला. सबब कसबा शिंदेगी, तर्फेतील खंडे मौजे मनोली हा गांव नवलगुंदकर देसाई यांचा. तो जागा, हवा चांगली ऐंसे पाडून, देसाई यांस मुबदला देऊन, तो गांव आपण घेऊन गांव बसविले, आणि किल्ला बांधून रहा-वयास जागा केली. तेथून कर्नाटकप्रांती स्वाभ्या करून साधलें त्या रीतीनिं खंडण्या वंगर व गांवगळा इनाम शेत मोकासबाब ह्मणून करून घेतले, आणि नवलगुंदकरांनीं शेत इनाम करून दिलीं. त्या जागीं पडेसर ह्मणून गांव बांधविलें. तेथून स्वारीचा पळा करूं लागले. त्यासमयीं सावनूरकर यांनीं कोलवाड हे गांव इनाम करून दिलें. शिरहड्डीकरांनीं आपल्यावरी धांदल होऊं नये सबब मौजे कोडलीकवाड गांव इनाम करून दिलें. तसाच कितूरकर यांनीं काहीं चारी रुपये देणेचेही दरसाल देत होते. खेरीज कसमला ह्मणून गांव इनाम करून दिलें. आणि मारडगी तरकासही मोकासबाब शेत दिलें. तसंच कुस-गलासही दिले. तालुक तालुक्यांनीं मोकासबाब ह्मणून दिले ते इकडे तोरगलचा किल्ला कडपर्यंत आमचे आज बाजीराव शिंदे, त्याचे पुत्र आमचे तीर्थरूप सुबराव शिंदेपर्यंत चालला. त्या किल्लेंत आपल्याकडून किल्लेदार ठेविले होते. त्याला आजारांनीं बहुत काहिला जाला तोपर्यंत आमचे आज बाजीराव शिंदे यांनीं अनभविले. ते काल झाले. आमचे तीर्थरूप सुबराव शिंदे यास बोलाव पाठाविला जे, आपला किल्ला आपण स्वाधीन करून घ्यावं. ऐसे मनोलीस वडील होते. त्यास बोलाव पाठाविला. तेव्हां वडील वयाने लहान होते, आणि त्यासमयीं शरिरांत स्वस्थ नव्हता. सबब जाणें जाले नाहीं. तेव्हां आमचे घराणेपैकीं भाऊवंद संभाजीराव शिंदे सेनाखासंगेल यांचे वडील होते. त्याचे स्वाधीन किल्लेचे हात (?) करून तो किल्लेदार काळ जाला. नंतर लक्षुबाई साहेब हे आमची आजी. आमचे तीर्थरूप लहान होते सबब आपणच फौज घेऊन जाऊन राजगड पाडून, तोरगल किल्लेस वेढा देऊन तोफा लाविल्या. किल्ला जेरीस आला. तेव्हां आमच्या पणज्याचे भावाची लेक जिजाबाईसाहेब यांस संभाजी महाराज छत्रपती यांस लग्न आमचे वडील जिवाजी शिंदे यांनीं मनोलात करून दिली होती. ती बाई किल्ला जेरीस आल्यासमयीं महाराजांची स्वारी घेऊन आली. तेव्हां तिघाही साहेबांचे म्हणणें पडलें जे, उभय पक्षीं आम्हांस माहेर, त्या अर्थी उभयतांनीं भांडूं नये.

मनोली संस्थान आपणाकडे आहे. तोरगल त्याजकडे द्यावे. ऐसे म्हणतांच बाईसाहेब यांची आज्ञा मान्य करून तोरगल किल्ला व किल्लेखर्चाबद्दल बनूर कर्यात दिला. आमचे पणजे (यांनी) सदरहू कामकाजे बहुत केलीं हें खातरेस आणून छत्रपती यांनीं वडिलास 'साहेबसुभा' म्हणून किताब देऊन शिके दिले आणि जरीपटका दिला. तोरगल याचा जिमा जाला. त्यासही कांहीं किताब असावा म्हणून अलीकडे 'सेनाखासखेल' म्हणून किताब दिला. आमचे वडील मनोली संस्थान व मोकासबाब व चौथाई वगैरे अनभवून राहिले. कार्य पडलें असतां हुजूर तीनशें स्वारांनिशीं चाकरी करीत होते. पुढें आमचे वडिलांचा काळ झाल्यानंतर कांहीं दिवसांनीं माधवरावसाहेब थोरले पेशवे यांची स्वारी सरंजामसुद्धां कर्नाटकप्रांतीं निघाली. मार्ग मनोलीच्या धारीवरून, तेव्हां मनोली किल्ला दारीनाळास त्याची मोकळीक होईल म्हणून खंडणीरोखा वगैरे बेसुमार होऊन, अखंडीस किल्लेस वेढा देऊन, लढून किल्ला घेतला. तेव्हां आह्मी लहान होतो. मातोश्री कृष्णाबाईसाहेब यांनी किल्ला सोडून कांही थोडेबहुत जिनजितराबें घेऊन निघाली. ती कांहीं दिवस पटवर्धन इलाखेत राहून दिवस काढले. छत्रपती यांजकडे कारकून पाठवून मजकूर कानावर घालून, अर्ज केला. तेव्हां तिकडून कांही एक बंदोबस्त जाला नाही. मग कांहीं दिवसांनंतर मातोश्रींनीं हुजूर पुणेस जावून अर्ज केला. तेव्हां एकंदर संस्थानच काढून घेतलें. त्याअर्थी कुटुंबखर्चास नेमणूक करून द्यावी हें अंतःकरणांत आणून तर्फे मनोली कर्यात सर्तागरेखंड अठरापैकीं बेटड्यांतून काढून कुटुंबखर्चाबाबत म्हणून सात गांव इनाम पेशवे यांनीं करून दिले. तेव्हां तेथे येऊन, साती गांवांस लावणी वगैरे करून, योग क्षेम करून राहिले. ते अर्जा पन्नास पंचावन वर्षे होत आलीं. इस्तकबिल इनाम गांवसंबंधे कोणा एकास पैसा दिला नाही आणि चाकरीही केली नाही.

मार्गे राजमंडळकरासमधीक तोरगलकर वगैरे येऊन आमचे गांवास धांदल केली. तेव्हां श्रींतांचे हुकुमावरान कोन्हेरीराव पटवर्धन शेडबाळकर, गणपतीराव यांचे वडील, यांनीं अकलकोटकर राजे यांचे भाऊबंद भवानराव लाखंडे यांस घोंडगीरचे मुकामावरून सरंजामेसुद्धां रवाना केला. त्यांनीं येऊन तगादा उठवून बंदोबस्त करून देऊन गेले. त्या समयी आमचे गांवकरा याद दहा पांच मेले त्या समयी पुरावा असा झाला. तदनंतर या साती इनाम गांवांत पोट भरत नाही, सबब राजमंडळांत चाकरीस राहिली. तेव्हां चाकरीपशाबद्दल यांची गांव व कांळवाड गांव व उमचगी व कोडलीकवाड असे गांव खासगी खर्चास चालवून खेरीज दरमहा खर्चासही देत होते. सरकार फौज ठेवून घेऊन रत्नाकरपंत राजाज्ञे यांनीं गोखले यांसी लढाई दिली. सवापुर मुकामावर. तेव्हां आह्मी स्वारीबरोबर होतो. लढाई झाल्यानंतर राजाज्ञे हे मनोलीस आले. आह्मी गोखले यांजकडे पाडाव सांपडलों. तेथून सुटका होऊन आल्यानंतर एक सालाविषयीं सर्वत्रांस तगादा लाविला. तेव्हां आह्मांसही तगादा केला. तेव्हां मामूल कधी दिला नाही. हे दाखला

पाहून तगादा मोकळा केला. अनंतर पेशवे यांचीही चाकरी केली. चाकरीबाबें नेमणूक खर्चही पोसा करून देऊन कांहीं दिवस चालविलें. याचा दाखला चितोपंत देशमुख यांच्या दप्तरां कर्नाटकसंबंधी हिशेबी आहे. भाऊसाहेब पटवर्धन यांचे पुत्र आपासाहेब यांनी करवीरास वेढा घालून लढले. तेव्हां आह्मी करवीरास होतो. तेव्हांही सदरहुप्रमाणें गांव खर्चास चालविले. वेढा उठल्यानंतर सर्वत्रासी एक साल झणून तगादा केला. तेव्हांही आह्मांस तगादा केला. त्या समयीही मामूल दाखला पाहून तगादा उठविला. कांहीं दिवस भाऊसाहेब पटवर्धन यांची चाकरी नेमणूक वगैरे घेऊन केली. त्यांनीही बरदास्त बहुत प्रकारें चालविली त्यानंतर रोजगारच नव्हता. इनाम गांवात स्वस्थ राहिलों. अलीकडे निपाणीकराकडे राहिलों. त्यांनीही मीजे कवतूर हा गांव आणि खेरीज दरमहा देऊन ठेऊन घेतलें होतें. असे कांहीं दिवस त्याकडे होतों. एका साली आह्मी निपाणी मुक्कामी निपाणीकरांचा निरोप घेऊन गोकर्णयात्रेस गेलों, तेव्हां निपाणीकरांचा धांदली कारभार. यांनी आह्मी यात्रेस गेल्या पाठीमागें आमचें इनाम गांवठाणें घालून कुटुंब बाहेर घातलें. जिन-जितराबें झाडून घेतले. आह्मी यात्रेहून आलों. पांच सात वर्षे कुटुंब घेऊन सांगली वगैरे गांवांनी राहिलो. नंतर पुण्यास गेलों. तेथें वेदमूर्ति मोर दीक्षित नाना यांच्या विद्यमानें बाजीरावसाहेबांस अर्ज केला. तेव्हां मामूल इनाम गांव आपले वडिलांनी दिलेला दाखला पाहून खातरेस आणून निपाणीकरांस ताकीद करून, आमचे इनाम गांव आमचे आह्मांस सन समाम अशर साली जिमा केला. गांवी कुटुंब घेऊन येऊन स्वस्थ राहिलों. नंतर निपाणीकरांकडून चिकोडी व मनोली तालुका काढून महाराज छत्रपती यांस देणेंबद्दल जनरल तामस मनरोल साहेब बहादूर यांनी जमी केली. तेव्हां आह्मी साहेबांकडे हुबळीच्या मुक्कामी भेगीस गेलों. भेट झाली. आमचा इनाम गांवचा मजकूर समजाविला. तेव्हां मामूल दाखला पुणेचा बेहेड्यावरून पाहून आमचे इनाम गांव सात आमचे आह्मांकडे दिले. नंतर जेव्हां मनोलीहून तगादा आला होता, तेव्हां करवीराकडून श्री भाऊमहाराज वकिलीस होते. त्यांसही ताकीद हरएकविषयीं आह्मांस उपद्रव होऊं नये, तेव्हां तगादा उठविला. असें जाल्यानंतर करवीराहून दहा हजार रुपयांचा रोखा करून पन्नास लोक आमचे गांवांस पाठविले. तेव्हां मामूल आह्मी कोणास पैसा दिला नाही. तेव्हां मेहेरबान चापलेन साहेब बहादूर यांजकडे धारवाडास वकिलाबरोबर पत्री मजकूर लिहून थैली पाठविली. तेव्हां मेहेरबान साहेब यांनी पुण्याचे बेहेड्याचा दाखला पाहून महाराज छत्रपती यांस थैली दिली जे, बेहेड्यांत खर्ची गांव इनाम आहेत, यांस उपद्रव होऊं नये अशी थैली दिली; आणि आह्मांसही थैली पाठविली जे, महाराज छत्रपती यांस थैली पाठविली आहे, आपणास उपसर्ग होणार नाही. ऐशी थैली आली. तेव्हां वरात उठोन गेली. त्यानंतर आणखी दुसरे साली करवीराहून हुजरे व लोक व कारकून यांससमागमें रोखा झेऊन कात झाली. तेव्हां मेहेरबान चापलेन साहेबांची स्वारी पुण्यास गेली होती.



आपण समेत होतो. साहेबांचे नावे मजकूर लिहून, थैली देऊन, बकिलास धारवाड मुकामी पाठविला. तेव्हां महाराज छत्रपती यांजकडून नारोपंत नाना वकील होते. त्यास ताकीद झाली जे, गैर मामूल होऊं नये. पत्र पाठवून वरातेस मनाई देवावे, आणि हुजरे यांस जेवणास ताट वाढून दिलें होतें तें ताट, वाट्या व तपेलें हुजरे यांनीं घेतलें होतें तें माघारें देवणेस बकिलांकडून पत्रें देवविलीं. त्यावरून वरात उठोन गेली. तें आजपर्यंत साहेबांचे मेहेरबानगीवरून, कांहीं एक कोणाचा तगादा नसतां, स्वस्थ होतो. हल्लीं महाराज छत्रपती यांची स्वारी मनोलीस आली. तेव्हां आह्मी गांवांत नव्हतो. देवास गेलों होतो. मनोलीस स्वारी आली. दुसरे दिवशीं आमचे नावे रोखा स्वारीखर्चाबद्दल ह्मणोन पंचवीस हजार २५००० व मसाला एक हजार १००० असे रोखा होऊन २७ सत्तावीस स्वार व पायाचे लोक पाठविले. तेव्हां आह्मी गांवीं नव्हतो. घरीं कुटुंबांनीं स्वारांस उतरून घेऊन रोजा व पोटगी व दाणाचारा असे दररोज पाऊणशें ऐशी रुपयेपर्यंत देत होते; आणि मनोलीस छत्रपती यांजकडे फडफर्मास देऊन कारकून व भला माणूस पाठविले. त्यांनीं फर्मास पोंहचवून, जाहीर करून, हुजुरचे कारकुनाच्या मार्फतेनें विनंती करितच होते जे, गैरमामूल होऊं नये. यजमान गांवीं नाहींत. वरातास मनाई व्हावी. यजमानसाहेबाकडे वर्तमान कळवून भेटीस आणवितों. अशी विनंती करित कारकून तेथेंच होते. स्वारास मनाई झाली नाहीं. स्वारास खर्चास देऊन गांवीं ठेवून घेतलें. मनोलीहून मनाई होत नाहीं. याप्रमाणें विचार झाला आहे, म्हणून साहेबाकडे थैली देऊन कारकुनास पाठविला. गैरमामूल रोखा वगैरे हांतां येविषयीं पेशजी मेहेरबान चापलेन साहेब बहादूर यांनीं दाखला पाहून बंदोबस्त करून दिले. सर्वस्व आधार साहेबांचा म्हणून थैली मजकूर लिहून पाठविला. साहेबाकडेस कारकून पाठविला. तो धारवाडीं राहिला. मनोलीस कारकून होते ते तेथेंच राहिले. स्वारास रोजा वगैरे खर्ची देऊन गांवांत ठेवून घेतला. असें असतां छत्रपती यांची स्वारी फौज व तोफसुद्धां मनोलीहून निघोन आमचें इनाम गांव इटनहाळ ह्मणोन आहे तेथें स्वारी गेली. ते तेथील एक दुसरा प्यादा मारून ठार करून गांव दरोबस्त गुरेढोरे व रयता वगैरे जिनजितराबें लुटून फस्त करून, तसेंच मुंगळीहाळ म्हणून ठाणेचा गांव तेथें नीट गडीपर्यंत फौज चालून गेली. तां तेथील प्यादे दोनी तिनी असामींस तोडिले. ते ठाणेंत जाऊं लागले तेव्हां ठाणेंतून गोळी घातली. मग गोळ्यागोळी होऊन बोन चार मुडदे परस्परे पडले. तेव्हां वरातेस स्वार कोण होते त्यास आणून घेतलें. तोंपर्यंत दहा दिवस दररोज पाऊणशें रुपये सुमारे खर्चास देऊन ठेवून घेतलेच हेस्ते. तसाच गोळ्यागोळींत मुंगळीहाळ ठाणा जेरीस आणून आंतील लेकांस कौल देऊन, उतरवून ठाणा घेतला. मुंगळीहाळ व इटनाळ व रासनाळ ऐसे तिनी गांव लुटून फस्त केले. मुंगळीहाळास कांहीं घरे आगी लावून जाळिलीं. गांवांतील घर उकलोन तुळ्या वगैरे काढून घेऊन गेले. कांहीं नेतात, आणि रयेता वगैरेचे दाण्याचे पेव काढून दाणे नेतात. सर्व लुगलुगी

केली. कांहीं एक झणून पदार्थ राहिला नाही. ठाणेचा जागा झणून आमची खाजबी सनगे व मांडी वगैरे जितरावे व कमत संबंधी दाणे वगैरे आणि बैल वगैरे जनावरें मनस्वी होती; ते झाडून लुटून नेले. खराबीस पारावार नाही. अशी अवस्था झाली. फौज अद्याप मुंगळीहाळावर मुकाम आहे. चेळकोप म्हणून आमचे गांवासुमारची गद्दी आहे. तेथें पांच पंचवीस काटक मात्र ठाणा रक्षून आहेत. तोही ठाणा सोडून देण्याविषयीं स्वार वगैरे जाऊन दंगा करित बसले आहेत. तेही वेढून घेणार झणून पत्रें लिहिलीं होती. सत्वर मेहेरबान साहेबास अर्ज करून लष्करांत ताकीद करवावी जे, ठाणा वगैरे झणून दंगा करूं नये असें लिहिलें आहे. त्यास सर्व प्रकारें घात झाला. याउपरी मेहेरबानगी करून बंदोबस्त करून, ठाणा व जीनजिनगी गुरे-दोरे वगैरे आमचे आह्मांस जिमा करून सांभाळ करणार साहेब आहां. मामूल दाखल्याप्रमाणें मेहेरबान चापलेनसाहेब बहादूर यांनीं बंदोबस्त करून दिलेच आणि आपण साहेबांसाठीं चालवीत आला, सबब आह्मी गांवीं स्वस्थ होतो. हल्लीं सर्वोपरी असा विचार झाला. कुटुंब निघून रानोमाळ झालें. सर्व बंदोबस्त करून देणार साहेब समर्थ. आमचा इनाम गांव कांहीं आजकालचा नव्हता. बहुत दिवस चालत आले. नरगुदकर व रामदुर्गकर वगैरेचे संस्थान तुटक होऊन बाकीचें कसें आजपर्यंत चालत आले, तसेंच आमचेंही इनाम गांव चालत आलें. केवळ सात खेडांचेच मालक पुरातनपासून ऐसे नव्हते. छत्रपती यांचे पदरी अष्टप्रधान दिले आहेत त्या मानकन्यांतील दौलत आमची. तशी दौलत काढून घेऊन पोठगी खर्चास इनाम गांव सात करून देऊन पन्नास पंचावन वर्षे झालीं. स्वस्थ कालहरण करून होतो. प्रस्तुत व्यासही ठिकाण नाहीसें करून खराबी केली. हें साहेबांनीं खातरेस घेऊन बंदोबस्त करून देणार साहेब समर्थ आहां. सदरहू मालुमात आमचे वडील सांगत होते. ते पूर्वजांच्या अलीकडील माहिती आह्मांस खास आहे असा विचार असून हे मालुमात लिहून दिले आहे.

( ब )

यादी निळकंठराव शिंदे साहेबसुभा याजकडे सर्व इनाम चालत आहे त्याची कैफियत दिवाण बापुजीपंतीं लिहिली तें:—

१ यांचे मूळ पुरुष जिवाजी शिंदे यांनी मनाली, मुरगोड, सर्तांगरी व ठनाळ वगैरे दरोबस्त तालुके जाहगिरी मिळविले. शिवाय सरकार तालुकांत चौथाई वगैरे आपले ज्याहामदीं बसविलें झणून तर कोल्हापूर महाराजांचे घरास जिवाजी शिंदे यांची कन्या दिली. नंतर त्यांनीं धनी आपले नोकर झणून झणविला. जिवाजी शिंदेचे लेक बाजीराव शिंदे, त्याचे लेक सुबराव शिंदे, त्याचे लेक निळकंठराव शिंदे असे चारी पुरुषपेढेतो तालुका चालला. सुमार ६३ वर्षांखालीं पेशवेसरकार थोरले माधवरावसाहेब यांनीं सुबराव शिंदे यांची बाईल '.....' बाई शिंदे याजवरी खंडणीविषयीं रोखा केला. ते माधारे बाईसाहेब

नानासाहेब यांचे कारकीर्दीस प्रथम जाले म्हणून जानोजीस 'सुभा साहेब' व मुधोजीस 'धुरंधर' हें पद दिलें. पुढें जानोजीस संतान नाहीं, तेव्हां मुधोजीचे जेष्ठ चिरंजीव हल्लीचे रघोजी यास दत्तक जानोजी असतांच घेतलें. पुढें ते वारल्यावर रघोजी यास पुण्याहून वखें दिल्ली. पुढें पुरंधराहून साबाजीस सुभा याचीं वखें दिल्ली. तेव्हां साबाजीची व मुधोजीची लढाई जाली. त्यांत साबाजी पडलेयावर मागती रघोजीचा रघोजीस पुरंदराहून सुभा दिल्हा. मुधोजीस रघोजीखेरीज दोन पुत्र. खंडोजी व व्यंकोजी. मुधोजी असतां खंडोजीस सेनाबाहादर हें पद व मंडळे प्रांत सरंजामास याप्रमाणें दिल्लें. ते खंडोजी वारले. त्यास संतान नाहीं. मुधोजी वारल्यावर × × × × देऊन चंद्रपूर वगैरे सरंजाम होता तो लावून दिल्हा. रघोजीचे चिरंजीव परसोजी, व्यंकोजीचे चिरंजीव मुधोजी भोसले हे हल्लीं आहेत. सदरहूप्रमाणें ऐकण्यांत वर्तमान आहे.

### २३ चौधरी.

यादी रामचंद्रराव चौधरी सुरुसन अर्बा सलासीन मयातेन व अलफ. मेहेरबान ज्यान वार्डीन साहेब बहादुर डिप्टी एजंट जिल्हा दक्षण याचें पत्र तारीख ८ सप्टेंबर १८३२ इसवीचें आलें. त्यांत मजकूर, हजरत बंदगानअल्ली रेटहनराबल गौरनर कौसल चाहात आहेत कीं, दक्षिणेंतील जहागीरदार लोक यांची कैफियत कशी आहे त्याची वाकबगारी व्हावी म्हणून कलमी केलें जाते जे, आपण मेहेरबानी करून सरकारांत रवाना करण्याकरितां थोडके मजकुरांत कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे. त्यांतील तपशीलः— आपली खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर झाला तें, व फौज व जातसरंजाम आपले वडिलाकडे चालत होता व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस दिल्हा ती तारीख, व आपले जहागिरीचे वहिवाटींत पेशवे सरकारांतून कोणते तऱ्हेनें दखलगिरी केली तें व आपलेकडे सरंजाम हल्लीं काय चालत आहे व पेशवे सरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कंपनी सरकारांतून चालत आहे त्यांत कंपेश व तफावत काय आहे तें यादींत दाखल करून रवाना केलें पाहिजे झणोन. ऐशास आमचे तीर्थरूप कैलासवासी रूपराम चौधरी यांनीं स्वपराक्रमानें पेशवे सरकारचीं कामेकाजे करून नावलौकिक मिळविला त्याचा तपशीलः—पूर्वी चौधरी सरकारचे तोफखान्याची चौधरी करीत होते. नंतर शके १६९५ वांत श्रीमंत नारायणराव साहेब कैलासवासी जाहल्यार श्रीमंत दादासाहेब पुण्याहून स्वारीस निवाले. तेव्हां रूपराम चौधरी यांचे जिमेस रथखाना व तोफखाना करून बराबर घेऊन गेले. पुढें त्रिंबकराव पेठे फौज घेऊन दादासाहेब यांचे पाठीस लागले. त्याची व यांची गांठ सांगोलें येथें पडून लढाई मातबर. होऊन त्रिंबकराव यांस पाडाव केलें. त्या लढाईत चौधरी यांनीं तरबार चांमली केली.

स्वारी पुढें चालली. मागाहून हरिपंत तात्या फडके यांनीं फौज धरून मागें लागले. त्याची लढाई महीवर शके १६९६ वैशाखमासीं मातबर होऊन हरिपंत तात्या वगैरे फौजसुद्धां माघारे आले. दादासाहेब यांचे स्वारीबरोबर रूपराम चौधरी सुरतेस गेले. तेथें दादासाहेब कंपनीसरकारचे बहादारीनें होते. तेथून कांहीं दिवसी कोपरगांवीं आले. त्याजबरोबर चौधरी होते. दादासाहेब यांचा काळ कोपरगांवीं झाल्यावर पुण्याहून कारभारी जाऊन दौलतीचा बंदोबस्त केला. तेव्हां चौधरी याजकडे तोफखान्याचें वगैरे काम होतें. त्याचा बंदोबस्त करून तोफखाना घेऊन पुण्यास आले. चौधरी याजपाशी चारपांचशें लोक कबाड्ती कुडतीवाले मात्र होते. त्यासुद्धां पुण्यास येण्याविषयीं श्रीमंत माधवराव नारायण यांचे कारकीर्दीत सरकारचें पत्र गेल्यावरून चौधरी पुण्यास आले. नंतर राघो विश्वनाथ गोडबोले, यांचे रिसाल्यांत लोकसुद्धां चाकरीस ठेविले. पुढें सन समान समानीनांत बदामीची स्वारी जाहली. तेथें लढाई होऊन बदामी किल्ला सर करून स्वारी माघारी आली. त्यांत चौधरी यांनीं आपले लोकासुद्धां तरवार चांगली केली, हें सरकारचें नजरेस येऊन, चौधरी यांचे निसबतीचे पांच सहाशें लोक ज्याजती चाकरीस लाऊन दरमहा वाढविला. पुढें कंपनी सरकारचे मदतीस श्रीरंगपट्टणचे स्वारीसमयीं पेशवे सरकारची फौज गेली, तेव्हां राघोपंत गोडबोले पुण्यास राहून दोन हजार लोक चौधरी याजबरोबर देऊन पाठविले. तेथें लढाईत चौधरी राहून, दुष्काळ पडला सबब कोकणांत वगैरे हरएक जागा मर्दुमी करून दाण्याची पुरवणी लष्करांत बहुत केली. नंतर स्वारी परत आल्यावर शके १७१६ त खडर्चाची स्वारी जाली. तेव्हां तोफखान्यासुद्धां चौधरी सडेस्वारींत बराबर गेले. तेथेंही लढाया तलाव्याच्या वगैरे जाहल्या. त्यांत चौधरी यांनीं मर्दुमी फार केली. नंतर मथ्रुलमुलूक यांस सरकारानें कैद करून धरून आणिलें. ते समयीं बराबर बंदोबस्तास तोफखान्यासुद्धां चौधरी होते. पुढें श्रीमंत माधवराव नारायण यांचा काळ जाहला. नंतर श्रीमंत बाजीरावसाहेब यांस जुन्नराहून आणावयास परशरामभाऊ पटवर्धन गेले. त्याजबरोबर लोकसुद्धां चौधरी जाऊन बाजीरावसाहेब यांस पुण्यास घेऊन आले. नंतर बाजीरावसाहेब यांनीं चौधरी वडिलांचे वेळेचे चाकर कामेंकाजें केलेले, असें मनांत आणून, एक पलटण चौधरी याचे चाकरीस ठेविले. व आनंदवल्लीहून तपोनिधी मनोहर-गिरबाबा गोसावी यास आणून त्याजकडे अलिगोल एक पलटण चाकरीस लाविले. त्या कामाचा आवर गोसावी याजकडून न होतां पळून आनंदवल्लीस गेले. नंतर श्रीमंतांनीं चौधरी यास त्या पलटणचें काम सांगितलें व तोफखान्याचें काम व शंभर स्वारांची पागा नवी सांगितली. पहिलें एक पलटण चौधरी याजकडील होतेंच. एकूण सदरहूचे खर्चास सरंजाम अजमासें तीन साडेतीन लक्षांचा लाऊन दिला. तेव्हां जातीचे खर्चास अजमासें तेरा हजारांचे सरंजामाची नेमणूक सन मयातैनापासून जाहली. त्यांत खर्चाची वेहेबुदी न होई. सबब चौधरी यांनीं सरकारांत विनंती केली कीं, जातीचे खर्चाची नेमणूक जाहली

त्यांत खर्च निमत नाही. तेव्हां आज्ञा जाहली कीं, तुझांकडे कामें आहेत यापून तेरा हजार रुपयासुद्धां एकंदर साठ हजार रुपये दरसाल घेत जावे. त्याप्रमाणें वहिवाट होत गेली. पुढें त्रिंबक किल्ला पेशजी धोंडो महादेव नगरकर याजकडे होता. त्याजवर अंमल श्रीमंताचा न बसे. सबब दोन्ही पलटणें व तोफखाना व पागा याची नेमणूक तिकडे जाहली. तेथें लढाई होऊन किल्ला सर करून सरकारांत घेतला. पुढें खानदेशांत पेंढारी वगैरे यांचीं बंडे होऊन मुख्य उजाड जाहला, तिकडे पलटण व तोफखाना व पागा यांची नेमणूक झाली. तिकडे चौधरी जाऊन बंडाचा बंदोबस्त करून मुलकांत बस्ती केली. हिकडे माधवराव रास्ते यांचे चिरंजीव बाळासाहेब व बाबा साठे हे सरकाराशीं बघवून कोरीगड बळकावून सरकारचा अंमल उठवून देऊं लागले. याजकरितां चौधरी यास तिकडून आणून कोरीगडावर रवाना केले व आणखीही फौजा रवाना झाल्या होत्या. तेथें जातांच एक लढाई जाहली. व पुढें चार महिने राहणें त्या मुकामीं जाहलें. दररोज गोळागोळी चालली होती. दुसरे लढाईत सरकारचे दोन अडीच हजार माणूस पडले. त्यांत पलटणचे दोन अडीचशें लोक काहीं जखमी व काहीं मेले. नंतर किल्ला सर होऊन माघारे आले. पुढें काहीं दिवसीं होळकर पुण्यास येऊन बाजीराव साहेब वसईस गेले. माहाडपर्यंत चौधरीबराबर होते. तेथून श्रीमंत वसईस जाते समयी विंचूरकर व चौधरी यास बंदोबस्ताकरितां माघारे पाठविले. ते कर्नाटकांत जाऊन बंदोबस्त राखून होते. मोंगलाच्या व पेशवे सरकाराच्या फौजेच्या लढाया होऊन मोंगल आपले हद्दीतून पार केला. नंतर मेहेरबां वसलीसाहेब बहादूर व विंचूरकर व बापू गोखले व चौधरी वगैरे फौजासुद्धां पुण्यास आले व बाजीरावसाहेबही वसईहून आले. पुढें सिंहगड व त्रिंबक व पुरंदर व कांगोरी वगैरे आणखी पांच चार किल्ले यांच्या सनदा देऊन किल्ले चौधरी याचे हवालीं केले व सरकारच्या मामलती तीन चार लक्षांच्या सांगितल्या. नंतर मेहेरबां वसलीसाहेब बहादूर पुण्याहून गायलगडचे स्वारीस निघाले, तेव्हां विंचूरकर व चौधरी व गोखले, वगैरे फौजा बराबर दिल्या. ते खानदेशांत गाळण्यापावेतो गेले. तेथें बंडाची लढाई होऊन त्याचा मोड जाहला. तो इकडे भिल्लांचा दंगा ब्राह्मणवाड्यापासून नाशीक, त्रिंबक, खानदेशपर्यंत बहुत होऊन मुख्य उजाड जाहला. सबब चौधरी यांचीं पलटणें व तोफखाना व पागा याची नेमणूक तिकडे होऊन भिल्लांचा बंदोबस्त सांगितला. तेव्हां भिल्लांजवळ लढाया दहावीस होऊन भिल्लांच्या हट्या जागा जागा होत्या, त्या जाळून भिल्लांचा बंदोबस्त करीत पाठीस लागोन, रामनगरपर्यंत दोन तीन वर्षे पाठलाग करून, भिल्ल धरून बंड मोडून टाकिलें. नंतर चौधरी सन अर्बा अशर मयातैनपर्यंत सरकारचाकरी नेकीनें करून होते. पुढें त्यांची तबियत बेआराम जाहली. सबब श्रीमंतास विनंति करून मामलतीचे मुलकाच्या व किल्लाच्या सोडविण्या सरकारांत पाठवून विनंती केली कीं, माझा जमण्याचा भरंवसा दिसत नाही, याजकरितां किल्ले वगैरे माझा जीव आहे तोपर्यंत सरकारनें हवालीं करून घेऊन

घाबती घाबी. तेव्हां आज्ञा जाहली कीं, घाबरें होऊं नये. उतार तुझांस पडेल. त्याजवरून पुन्हा विमंती केली कीं, मला भरंवसा पुरत नाहीं. याजकरितां सोडचिठ्या घेऊन किल्ले हवालीं करून घ्यावे. प्रकृत चांगली जाल्यास खावंद कृपावंत होऊन. माझीं कामें मला देतील त्याजवरून सोडचिठ्या मात्र घेतल्या. पुढें आठ चार दिवसीं चौधरी मृत्य पावले. नंतर तींच कामें किल्ले वगैरे आम्हांकडे कायम ठेविलीं. नंतर सन सीत अशरांत पेठ हरसूल येथील संस्थान तेथील राजे यांनीं बळकावून कोळी व भिल्ल ठेवून मुलुकांत दंगल केला. त्याचा बंदोबस्त सरकारचे आज्ञेवरून पागा पलटणें तोफखाना घेऊन जाऊन लढाई होऊन राजाचा पराभव करून ठाणें बसवून बंदोबस्त केला. पुढें सन समान अशरांत कुंपणी सरकारचा व पेशवे सरकारचा बिघाड जाहला. तेव्हां सिंहगडास आमची स्वारी होती. तेथें दहा दिवस लढाई देऊन किल्ला लढविला. नंतर कुंपणी सरकाराशीं तह करून किल्ला हवालीं जाहला; तेव्हां तहाप्रमाणें कांहीं एक अंतर न पडतां, किल्ला हवालीं केला. याजवरून मेहेरबां खुदावंत एल्फिस्तन् साहेब बहादूर यांची मर्जी खुष जाहली. याप्रमाणें पेशवेसरकारचे कारकीर्दीअखेरपर्यंत हरवस्त कामें करून चाकरी केली. साठ हजार रुपये जातीचे खर्चाचे रूपगम चौधरी यास घेण्याविषयीं परवानगी होती. त्याप्रमाणेंच पेशवेसरकार अखेरपर्यंत परवानगीनें आम्हांकडे चालत आले. पुढें कुंपणी सरकारांतून बंदोबस्त होते वेळीं, जातीस तेरा हजार रुपये नेमणुकीचा दाखला पाहून त्यांतून चौथाई वजा करून सहा हजार तिनशें रुपये पेनशन व साडेचवतीशे रुपयास मीजे चास तर्फ खेड सुभा पुणे हा गांव सरंजामास लावून दिल्या, व शंभर स्वार सरकारांत आमचे चाकरीस लाविले. ते स्वार पुढें सरकारांतून दूर करून त्याजबद्दल आम्हांस जातीस सहा हजार रुपये पेनशन करून दिलें. येणेंप्रमाणें सरकारांतून बंदोबस्त करून दिल्या आहे. याप्रमाणें आमचे खानदानीचा मजकूर आहे. तारीख १६ आगष्ट सन १८३३ इसवी.

## प्रकरण २ रे.

### ब्राह्मण व इतर सरदार.

#### १ आंबीकर.

यादी गोपाळराव विठ्ठल व रामराव विठ्ठल आंबीकर सुरुसन आर्बा आर्बैन मयातैन व अलफ. आह्मांकडे राजपत्रीं सरंजाम चालत होता. संपादन करणार व मुळ पुरुष कोण व सरंजाम दिल्याची तारीख व हल्लीं काय चालत आहे त्याची कैफीयत लिहून देणें ह्मणोन आज्ञा जाहाली. त्याजवरून येविशींचीं कलमें लिहिलीं आहेत. तीं बीतपशीलः—

१ सरंजाम संपादन करणार मूळपुरुष दामाजी माणकेश्वर, आमचे पणजे, यांनीं श्रीमंत बाळाजी विश्वनाथ पेशवे व आबाजी त्रिंबक पुरंदरे यांस, दमाजी थोरात व चिमाजी गाईकवाड पुंड पाळेकरी यांनीं धरून नेऊन बहुत मारहाण करून जैमंगळ भुलेश्वरचे किळ्यांत नेऊन तजदी फार करीत होते. तेथें बहुत श्रम साहस करून उभयतांस सोडवून किल्ले सातारे मुक्कामीं श्रीमंत महाराज छत्रपती स्वामीपाशीं नेलें. तारीख ९ माहे अक्टोबर सन १८४३ इसवी. सन १२५३ फसली.

#### २ इचलकरंजीकर.

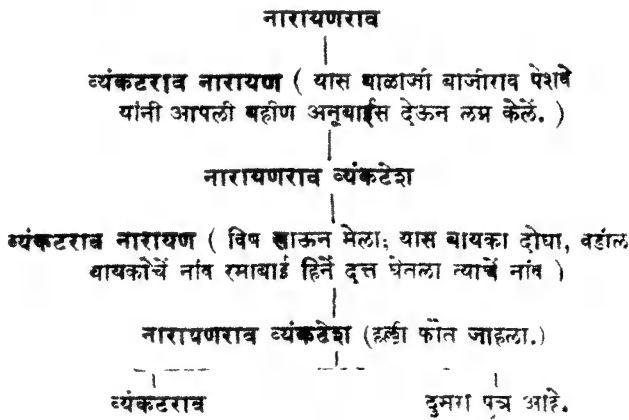
अ.

यादी नारायणराव व्यंकटेश घोरपडे इचलकरंजी सुरुसन आशरीन मयातैन व अलफ. श्रीमन्माहाराज राजश्री छत्रपती यांची स्वारी फौज सुद्धा सन इसने मयातैन सालीं इचलकरंजीस येऊन शह दिल्हा. ते समयीं राजश्री नारायणराव पाटणकर सरलष्कर यांचेविशीं बोलणें होऊन याद ठरली; त्या कराराप्रमाणें नजरेचा ऐवज पावला. बाकी देण्यांत आमचा गांव मौजे बलाळी व देशमुखी व सरदेशमुखीचा ऐवज लावून दिल्हा. करारापैकीं कुळ व जागा वाव वरकड गांव सोडून द्यावे ते दिल्ले नाहींत. बाकी ऐवज देणें त्वा ऐवजास झाडून गांव ठेवून घेवले. गांवाकडून ऐवज राहिल्याचा उगावा जाहाला असतां, गांव सोडून दिल्ले नाहींत. त्याजकरितां श्रीमंत राजश्री पंतप्रधान यांचें विनंतीपत्र गांव सोडावे याविशीं लाविलें, तें मान्य केलें नाहीं. तेव्हां लोक ठेवून गांवाकरितां सिलसिला करीत होतो. इतक्यांत अजम बसलीसाहेब यांची स्वारी कर्नाटकांत आली. त्यांचे भेटीकरितां सरकार मंडळी गेली व आम्हीही गेलों. व राजश्री पंत राजाज्ञा करविराहून आले होते. तें समयीं राजश्री रामचंद्रपंत आप्पा पटवर्धन याचे विशीं बोलणें जाहाले. गांवाविषयीं खटला करूनये, बोलण्यांत आणून गांव मोकळे करितां येतील. ऐसें सांगितलेवरून शिवंदी वूर करून

खटला मना केला. पुढें साहेबांची स्वारी माघारी फिरली, त्यासमयीं मुकाम होऊन बोलणें व्हावें, त्यास अवकाश पडला नाहीं. पुढें छत्रपती महाराज यांचा व राजश्री सरलष्कर यांचा कलह वाढून तालुका सरलष्कर यांनीं घेतला. ते समयीं आमचें गांव आम्हीं घेतले. नंतर सरलष्कर यांणीं स्वारीखर्च यावा ह्मणून सन तिसा आशर सालीं रोखे केले, त्याचे बोलणें तेथें जाहले नाहीं, सबब गांवांस ठाणीं बसविली. येविशीं पुण्यांत विनंति करून सरकारचें पत्र गांव सोडून देणेंविशीं सरलष्कर यांस घेतलें. परंतु गांव सोडून दिले नाहींत. पुढें सरकार कंपनी बहादूर याजकडील सरलष्कर यांस निकड बसली, तेव्हां गांवच्या सोड-चिठ्या सरकारांत दिल्या. ते गांव ९ पैकीं कैलासवासी सदाशिवपंत भाऊ यांनीं इंग्रजबहादूर यांचे विद्यमानें सन खमस आशर सालीं सोडून दिले गांव ४. बाकी सुटून येणें गांव ५ पांच. गांवाविशीं करविरीं महाराजास अर्ज करून सोडून घ्यावे याप्रमाणें सांगितलें. त्यापासून चार वर्षे विनंती हुजूर करीत आहों, परंतु गांव व वेतन सदरहू कराराप्रमाणें सोडीत नाहीं. याजकरितां साहेबीं मेहेरबानी होऊन गांव व वतनें सोडवून दिलीं पाहिजेत.

ब.

इचलकरंजीकर घोरपडे यांची कैफियत नारायणराव मूळपुरुष यांनीं करवीर इलाखा कापशीकर संताजी घोरपडे याजकडे चाकरीस होते, त्यांनीं आपल्या पुत्राप्रमाणें मानून दौलतीचा विभाग आपले चिरंजीवाबराबर वाटून दिले. त्याचा वंश:-



३ काळे.

यादी कैफियत कुण्णराव गोविंद काळे यांच खानदानीची. सुरुसम सलास सलासीन मयातैन व अलफ. रफीउलकदर मेहेरबान वार्डिनसाहेब बहादूर डिप्टी एजंट जिल्हा दक्षण यांनीं तारीख ८ माहे सप्टेंबर सन १८३२ इसवीस मुताबक हुकूम हुजूर नवाब मुस्त-ताब बंदगानअल्ली रेंट हनराबल गौरनर साहेब बहादूर चाहात आहेत कीं, दक्षिणेंतील जाहागिरदार लोक यांची कैफीयत खानदानी कशी आहे, त्याची वाकीफगारी व्हावें



म्हणून कलमी केलें जाते जे, आपण मेहरबानगी करून सरकारांत रवाना करण्याकरितां थोडके मजकुरांत हकीकत लेहून पाठविले पाहिजे. त्यांतील तपशील आपली खानदानीची बढती, कोणते तेरीखेस खानदानीचा लैकीक महशूर जाला ते, व फौज व जातसरंजाम कोणते तेरीखेस दिल्या ती तेरीख, व आपले जहागिरीचे बहिवाटींत पेशवे सरकारांतून कोणते तऱ्हेनें दखलमिरी केली ते, व आपलेकडे सरंजाम हल्ली काय चालत आहे व पेशवे सरकारांतून आपली मातबरी चालत होती, व हल्लीं कुंपणी सरकारांतून चालत आहे त्यांत कमपेश तफावत काय आहे ते, वगैरे यादींत दाखल करून जबाब रवाना केला पाहिजे. त्याजवरून बिनाय आमचे वडिलाचे खानदानची हकीगत बंदीमजमुन की

१ आमचे आज कृष्णराव बल्लाळ कदीम काशीचं राहणार यांनीं दक्षिणेंत येऊन बाबूजी नाईक बारामतीकर यांचे वशिल्यानं पुण्यात पेशवेसरकारांत श्रीमंत कैलासवासी नानासाहेब यांचे हुजरांत रोजगाराची पेंरवी केली. याची तेरीख इस्तकबिलीची ल्याहावी तर वाकफियेतीचा जबाब बरोबर अर्जात येतो. त्यास हरकत सन १२०८ फसली पौष शुद्ध ८ सोमवारी श्रीमंत बाजीरावसाहेब याचे कारकीर्दींत नानाफडणीस यांची इतराजी आमचे तीर्थरूप गोविंदराव कृष्ण याजवर झाली. त्या प्रसंगांत आमचे घरादाराची व कुल आसबाब, चीजबस्त, दरोबस्त कागदपत्र; रुमालसुद्धां याची जमी सरकारची जाली. त्यांत बिलकूल कागदपत्र सरकारांत नलें त्याजवरून रांष नच असेल ती अवल पैवस्ती याची तेरीख व साल सरकार दप्तरांत दाखला निघेल.

कलम.

१ श्रीमंत दादासाहेब हिंदुस्थानांत स्वारीस गेले. तेव्हां आमचे आज हेमराहा रिकामे हांते. त्यावेळेस दिल्लीत हुजर पातशाईत केशवराव हरकांर याचे वशिल्यानं श्रीमंत दादासाहेब यांचे मनादयानरूप एक दुसरा मतलब पेशवाई दौलतीचे उपयोगी हसल जाहाला. सबब दादासाहेब मवसुफ यानी दाहा हजार रुपयें जातीची तैनात करून व पालखी व लवाजमा वगैरे सरकारनिसबत हेमराहा देऊन सरफराज केले. हाही दाखला स्वारीचे दप्तरांत असेल. त्याजवरून रांषन होईल.

कलम.

१ श्रीमंत थोरले माधवराव यांचे कारकीर्दींत राक्षसभुवनची स्वारी नवाब निजाम अल्लीखान बंदगानअल्ली बहादूर याजवर जाहली. राजे विठल सुंदर सरकारकामास आले. त्या हंगामांत धोंडोराम वकील पेशवाई सरकारांतून हैदराबादच्या वकिलीस होतें. त्याजकडून वकालतीचा वाहोदा दूर हाऊन, आमचे आज कृष्णराव मरहूम यांस सरकारांतून वकीलीचे कामावर नवाबाचे स्वारीबरोबर रवाना केले. त्या वेळेस पंधरा हजारांचा सरंजाम व पंधरा हजार रुपयें नगद आसबाब तयारीस देऊन रूसकत केलें. त्याप्रमाणें तीस हजार रुपये नेमणूक चालू जाली. हरदो सरकारांची खैरखाईप्रमाणें तरफैनची खुषी राखून जहूरात सरकार मतालब आणले, यामुळें नवाब बंदगान हजरत यांचे सरकारांतून पंधरा हजाराचा सरंजाम जातीचा व चाळीस हजाराचा पथक, स्वार शंभर याप्रमाणें सरफराज जाहाले. हे

कृष्णराव बल्लाळ जिवंत असतां चालत होता. तेच बदस्तुर ते वारल्यावर त्यांचे पाठीमागे नवाब मरहूम यांनीं आमचे तीर्थरूपास बाहाल बरकरार ठेवून सरफराज केलें. सदरहू-प्रमाणें हरदो सरकारांतून सरंजाम पंचाऐशीं हजार रुपयांचे महाल चालत होते. खेरीज पेशवे सरकारांतून सन ११९८ चे सालीं दाहा हजार रुपये जातीस व तीस हजार पथकास सरंजाम मिळून, सव्वा लक्षांची बेरीज तागाईत सन १२०८ पर्यंत चालत होती. दरम्यान श्रीरंगपट्टणची स्वारी सन १२०० टिपू सुलतान याजवर नवाब बंदगानअल्ली व कुंपणीसरकारचे सरदार साहेबान अल्लीशान लाट कारनवालिस् साहेब व आडिकंप मिस्तर चेरी साहेब व जनरल मेडूस साहेब बहादूर व पेशवे सरकारांतून हरीपंत तात्या फडके वगैरे हर सरमोहीम ते साली तहनामं तिन्ही दौलतीचे ठरले. त्या खटपटींत तिन्ही दौलतींतील अमिरांपाशी आमचे तीर्थरूप गोविंदराव कृष्ण यांची वागणूक हांती. हे सरकारकुंपणीचे हपीसांत दागबले असतील. तपशीलें लेहून कळविणें नलंग. रांपनच आहे. या कामाचें रोज-नामं सरकार पेशवाईचें दप्तरांत बार आहेत. आमचे कागद दरोबस्त सरकारांत नेले. यामुळें तेरीख शक संवत साल आरबी व फसली हे मोकगर लिहिण्यास लाच्यार. कलम.

१ श्रीरंगपट्टणाहून हरीपंत तात्या फडके पुण्यास आले. आमचे तीर्थरूप यांस नवाब बंदगानअल्ली हजरत शिकंदरज्याहा यांचे स्वारीबरोबर हमराहित रूकसत केलें. त्या मुकदम्याचें दरामत बरामदित नवाब मुस्तताब कट करून वालिस् साहेब बहादूर यांनीं दोन जरबा तोफा, किळे, बंगरूळाहून आमचे वडिलास इनायत केल्या. कलम.

१ सन १२०४ फसलींत नवाब बंदगान हजरत याची व श्रीमंत सवाई माधवराव साहेब पेशवे खासा स्वारी व मदारूल माहाम नाना फडणीस व दौलतराव शिंदे अल्लि-ज्याहा बाहादूर व भोंसले व हांळकर व गाइकवाड वगैरे कुल अमीर खड्यांचे स्वारींत जमा होऊन नवाबाशीं मुकाबिला जाहाला. त्या दारमदारींत आमचे तीर्थरूप जे दिवशीं फत्ते सरकार पेशवाईची त्या वेळेस नवाब निजाम अल्लीग्वान बहादूर मरहूम याचे खवाशींत बसून, नवाब मरहूम यांची खुषी बमोजीब मदारूल माहाम यास इतला मना-शिब वक्त करून मुकाबिला तोफाचा सुरू होता. याजवर जिऊबादादा निसबत शिंदे सर-गरम होते. त्यास सरकार पेशवाईतून इतला करून रफेशर केला व तस्फियाचा नक्षा ठराविला. हे सर्व खुर्द बुजरूख यास माहित आहे. हशील कलम हरदो सरकारांचे खैरखा असा इतबार कामील दोन्ही सरकारास होता. कलम.

१ कारकीर्द सन १२०५ फसलींत फाल्गुन मासीं श्रीमंत बाजीराव साहेब यांची जाली. त्या दिवसापासून साहेब मोमी आले. यांचे नोकरांत वागणें कजम जाले. यामुळें मदारूल माहाम नाना फडणीस यांचे दिलांत वहम येऊन हलाखीचा रोज पाहिला. तो सन १२२७ फसलीपर्यंत पेशवे सरकारांतून दोन गांव व नवाबाचे सरकारांतून एक गांव भौजे जिवलगी परगणे कलबुर्गे हे तिन्ही गांव इनामी चालत होते. याखेरीज श्रीमंत

बाजीराव साहेब दरसाल पांच साहा हजार रुपये नगद (देत) होते. याप्रमाणें लढाई अखेर-पर्यंत चालले कारकीर्द सरकार कुंपणीची जाली, तेव्हां बाजीराव साहेब यांचे स्वारी-बरोबर जे मुक्कामी बापूजी गणेश गोखले कामास आले, त्या मुक्कामपर्यंत हजर होते. हे सरकार कुंपणीचे अमिरास जाहिर आहे. तेथून बारामतीचे मुक्कामी आले. लढाई अखेर मोंगलाईतील गाव महकूब जाहाला. बाकी दोन गांव इनामी व तीर्थरूपास पेनशीन साहेब अल्लिशान एलफिस्टन साहेब बहादुर यांनी सन १२२८ फसलीत करून दिले रुपये ३००० तीन हजार, ते सन १२३३ फसलीचे कार्तिकपर्यंत चालले. ते वारल्यावर महकूबच आहे. आह्लाकंड हल्ली जुजबी दांन ग्वेडी इनामी मौजे चिचोली देवस्थानाकडे मौजे सिरवली जातीकंड याप्रमाणे चालत आहे

१ आपले वडिलांची मातबरी पेशवं सरकारात काय होती, हल्ली कुंपणी सरकारांतून तुह्यांकडे चालते त्यात कमपेश काय ते ल्याहावे हणून सदरी हुकूम; त्यास वडिलांची मातबरी हरदा सरकारात हांती, तिचा बयाज सदरी लिहिला आहे. हल्ली आह्लाकंडे कुंपणी सरकारातून चालते आहे हे सर्व खुदावदास गोषनच आहे. याचा अर्ज काय ल्याहावा ?

सदरह सात कलम लिहिली आहेत रवाना छ १९ माहे जमादिलावल तारीख १४ आक्टंबर सन १८३२

#### ४ खाजगीवाले.

अ.

साहेब मेहेरबान दांस्ता अल्लिशान हेनरी ब्राणसाहेब बहादुर इस्कोयर एजंट जिल्हा दक्षण. समलह.

छ अजीसाहेब अनदराव केशव खाजगीवाले सलाम बाजद सलाम अंकी येथील खैरयत तागायत तारीख २१ माहे नवंबर सन १८५१ इसवीपावेतो आपली षादमानी व खुषीची खबर हमेषा कलमी करीत असोन दिल ताजा केला पाहिजे. दरीविला. आसाहेबानीं मेहेरबानी करून पत्र नंबर १०६२ तारीख २६ आगष्ट सन मजकूरचे पाठाविलें. त्यांत हशील मजकूरकी, आपल्यास मरातब खासगीवाले, हा आहे. हा कधी कोणत्या सबबेने कोणाकडून प्राप्त झाला, व एकंदर खानदानीचा व पदवी थोरपणाचा इतिहास दाखल्यानिशीं लिहून द्यावा व बराबर दाखला असेल तो पाठवावा. ऐकिव मजकूर असेल त्याविषयी पुरावा मसल्यास तसें साफ लिहून यावे. जुने कागदावरून व माहितगार लोकांकडून जितके प्रयत्न पूर्वक माहिती सांपडेल तितकी सर्व लिहून यावी म्हणोन वेगें मजकुराचें पत्र कलमी जालें; त्यास याचा मजकूर असा आहे कीं, आमचे पणजे जिवाजी गणेश हे पेशवे सरकारचे

फारच उपयोगी गडले, व पुणे शहरची वसाहत ही त्यांनीच बहुतकरून केली. त्यावरून पेशवे सरकार यांनी मेहेरबानी करून आमचे पणजे जिवाजी गणेश यास खाजगीचें काम सांगोन खाजगीवाले हा किताब दिल्या आणि सरंजामास गांव व कुरणें वगैरे दिलहीं त्याज-वरून तें खाजगीचें काम जिवाजी गणेश यांनी व त्यांचे चिरंजीव ह्मणजे आमचे आज्ञे अनंदाव जिवाजी यांनी कांहीं दिवस केलें. ते मृत्यु पावल्यावर आमचे भाऊबंद यांनीही कांहीं दिवस पेशवे सरकारांत खाजगीकडील काम केलें. याबाबद आझीं कागदपत्राचा शोध केला. परंतु होळकर सरकारचे वगैरे दंगे फार होऊन गेले यामुळें कागदपत्र अस्ताव्यस्त जाले. या खताबराबर दाग्वला पाठविण्यास मिळत नाही. आमचे किताबाविषयी व पदवीविशी इतिहासाचा दाग्वला पेशवेसरकारचे दफ्तरां आहे. तो आणवून मेहेरबानगीने नजर गुजराईष केला असतां सर्व आसाहेबांचे दिलांत येईल. आमचे खानदानी व अब्रु पाहून कंपनीसरकारचा अंमल जाला. त्यावेळीं कंपनीसरकारांतून आमचे वडील केशवराव अनंत यांस पेनशीन दरसाल रुपये १००० एक हजार करून दिलें, तें त्यांचे ताहायतीपांवतों ह्मणजे ते मृत्यू पावले तेपरिंत मिळाले. व खाजगीवाले हा किताब पेशवे अंमलापासून हाल अंमल आजपर्यंत चालत आला आहे. याप्रमाणें इतिहास आहे तो या खतांत लिहून मेहेरबान साहेबांस जाहीर केला आहे. पूर्वी सरंजाम वगैरे काय चालत होता, याविशीं जबाब पाठविण्याचा मजकूर खतांत कांहीं लिहिला नाही. यास्तव त्याचा मजकूर तपशीलवार लिहिला नाही. ज्यादा काय लिहिणें ? प्यार मोहोबत कीजे हे किताबत.

सही. अनंदाव केशव खाजगीवाले.

ब.

यादी गोविंदराव निलकंठ खाजगीवालें. सुरुसन आर्बा सलासीन मयातैन व अलफ मेहेरबान ज्यान वाडीन साहेब बहादूर डिप्टी एजंट जिल्हा दक्षण यांनी तारीख ८ माहे सपटंबर सन १८३२ इसवीचें पत्र आह्मांस पाठविलें. त्यांतील मजकूर हजरत बंदगानअल्ली रैट हनराबल गौरनर कौंसल च्याहत आहेत कीं, दक्षिणेंतील जाहागीरदार लोकां यांची कैफियत कैशी आहे, त्याची वाकबगारी व्हावी ह्मणोन कलमी केलें जातें जे, आपण मेहेरबानगी करून सरकारांत रवाना करण्याकरितां थोडके मजकुरांत कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे. त्यांतील तपशील आपली खानदानची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर जाला ते व फौज व जातसरंजाम आपले वडिलाकडे चालत होता. व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस दिल्या ती तारीख व आपले जाहागिरीचे वहिवाटीस पेशवे सरकारांतून कोणते तहें दखलगिरी केली तें व आपलेकडे सरंजाम हल्लीं काय चालत आहे तें, व पेशवे सरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कंपनीसर-

कारांतून चालत आहे त्यांत कपेश तफावत काय आहे ते वगैरे यादीत दाखल करून रवाना केलें पाहिजे ह्मणोन कलमी केलें. त्याजवरून इकडील मजकूर लिहिण्यांत येतो वितपशीलः—

१ आपली खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर जाला ह्मणोन कलमी केलें याचें उत्तरः—आमचे पणजे शिवराम गणेश व त्यांचे कनिष्ठ बंधू जिवजी गणेश हे इचल-करंजीकर घोरपडे यांजवळ चाकरीस होते. घोरपडे यांस थोरले बाजीरावसाहेब पेशवे यांची बहीण अनूबाई दिल्ली. ते समयी बाजीरावसाहेब पेशवे यांनीं घोरपडे यांजवळ आमचे वडील शिवराम गणेश व जिवजी गणेश हे बहुत शहाणे, मोठे कामाचे, करएक जाणोन मागोन घेऊन त्याजकडे सरकारांतून मामलती प्रथम सांगोन, नंतर पुण्यांतील शनवारचे थोरले सरकारचे वाड्याचें काम सांगोन दरोबस्त दौलतीची खासगी सांगितली पुढें त्यांचे पुत्र गोविंद शिवराम, आमचे आज्ञे, हे सरकारांत मुत्सदेगिरीचा कारभार व खासगीचें काम करूं लागले. तेव्हांपासोन आमची खानदानीची बढती व लौकिक महशूर जाला.

२ फौज व जात सरंजाम आपले वडिलाकडे चालत होता, व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस दिल्ली ती तारीख व आपले जाहागिरीचे वहिवाटींत पेशवे सरकारांतून कोणते तह्नेनं दखलगिरी केली ते व आपल्याकडे सरंजाम हल्लीं काय चालत आहे ह्मणोन कलमी केलें. याचें उत्तरः—आमचे वडीलाकडे सरंजाम जातीस व फौजेस व तैनात पेशवेसरकारांतून चालत होती.

१८००० जातीस.

१०५६५ सरजामाचे गांव वगैरे.

६४०५। परगणे भोसे.

पैकीं गांव.

१ मौजे घोटी.

१ मौजे चिंचोली.

१ मौजे तरटगांव.

१ मौजे खेड.

४

४५।।। तालुके विजयदुर्ग.

१ सदाशिवबाग.

१ उन्हाले.

२

६५० मौजे पोठठाण.

२०७८९ परगणे अहीरवाडी.

१ मौजे पिडूर.

१ मौजे चंद्रहळ.

२

६०१ मौजे सेलू.

५४ हडपसरची जमीन.

१०५६५

७४३५ इतलाख ऐवजाची नेमणूक.

२००० परगणे नाशीक.

३५० परगणे इंदापूर.

२००० परगणे शिन्नर.

१२०० सोलापूर.

१८८५ खाजगीकडोन  
रुपये.

७४३५

१८०००

६००० स्वाराचे बेगमीस मौजे हिपरगी परगणे जमखिंडी.

२४०००

किता कलमे.

१ कसवे वाघोली प्रांत  
वाली वगैरे गांव येथील  
कुरणे सुमारी ८.१ जकातीकडील जिन्नस  
माफीचीं दस्तके सा-  
लाबादी २.

२

येणेंप्रमाणें चालत होत. त्यास मूळचे सनदेची तारीख लावावी तर कागदपत्र दंग्या-  
मुळें अस्ताव्यस्त याजमुळें लागली नाहीं. सदरहू सरंजाम आमचे तीर्थरूप वारल्यानंतर  
आमचे नांवें सरकारांतून करार करून देऊन सनदा दिल्या त्याच्या तारखा छ ५ जिल-  
काद सन आर्बा तीसैनच्या लागल्या आहेत. याप्रमाणें भोगोटा तीन पुस्त करीत आलों.

अलीकडे श्रीमंत राजश्री बाजीराव साहेब यांनीं सरंजामाची जसी कुंपणीसरकारचे लढाई-पूर्वी पांच सात वर्षे केली, याजमुळे हल्लीं सरंजाम आह्मांकडे चालत नाहीं. सरंजाम चालत होता ते वेळेस वहिवाट आह्मीच मुखत्यारीनें करीत होतो. पेशवे सरकार दखल-गिरी करीत नव्हते. पुढें कुंपणीसरकारचा अंमल जाल्यानंतर मागील आमची खानदानी पाहून, कुंपणी सरकारांतून मेहेरबानगी करून दोन हजार रुपये पेनशन, पैकीं एक हजार आह्मांस व आमचे कनिष्ठ बंधू हरी निळकंठ यांस एक हजार, एकूण दोन हजार करून दिलें. त्याप्रमाणें व दसऱ्याचा पोषाख एक, सालाबाद पावत आहे.

३ पेशवे सरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कुंपणी सरकारांतून चालत आहे. यांत कमपेश तफावत काय आहेत वगैरे यादींत दाखल करून रवाना केलें पाहिजे ह्मणोन कलमीं केलें, याचें उत्तरः— पेशवे सरकारांतून आमची मातबरी जोंपर्यंत चालत होती याचा मजकूर सदरीं कलमांत लिहिला आहे. अलीकडे कुंपणी सरकारचे मेहेरबानगीनें पेनशन व पोषाख पावत आहे.

येणेंप्रमाणें तीन कलमें लिहिलीं आहेत, यांजवरून मजकूर सरकारचे दिलांत येईल. मिति आषाढ शुद्ध ६ शके १७५५ विजयनाम संवत्सरे.

#### ५ खासनिवीस पोतनिवीस.

साहेब मुषफक मेहरबान कर्मकरांय दोस्तां हेनरी औणसाहेब बहादूर एजंट जिल्हा दक्षण सलाम हु.

ॐ अजीसाहेब मनांहर भिवराव खासनिवीस व पोतनिवीस सलामबादज सलाम खैर-यत अंजाम आंके येथील खैरसल्ला जाणून आपली शादमानी हमेषा कलमीं करीत असले पाहिजे. दिगर आपणांस खासनिशी व पोतनिशीचा किताब कोणीं दिल्ला, व कोणीं मिळविला त्याविषयीचे दस्त ऐवजानिशीं लिहिण्यांत यावें ह्मणोन आसाहेबाकडोन ता. २६ माहे आगष्ट व ता. ५ माहे दिसंबर सन १८५१ इसवी अशीं दोन थैलीपत्रें आलीं. त्यास आमचे वडील बाजी मुरार हे कैलासवासी शिवाजी महाराज यांजपाशीं मावळे लोकांचे जमावाची सरदारी करून होते. तेथें सेवाचाकरी बहुत केली. त्यांचे पुत्र महादाजी बाजी हे कैलासवासी संभाजीमहाराज यांजपाशीं, सदरहू जमावाची सरदारी करोन सेवाचाकरी करीत होते. तेव्हां महाराजांनीं पोतनिशीचा दरक करून दिल्ला. महादाजी बाजी यांचे पुत्र यशवंतराव महादेव, हे आमचे पणजे, कैलासवासी शाहू महाराज यांजपाशीं सरदारी व पोतनिशीचें काम करीत असतां, महाराजांनीं दुसरा खासनिशीचा दरक करून दिल्ला. त्याप्रमाणें आमचे आजे विठ्ठल यशवंतराव यांनीं वहिवाट केली, व आमचे तीर्थरूप भिवराव विठ्ठल, हे कैलासवासी प्रतापसिंह महाराज व कैलासवासी शाहाजी माहाराज, यांजपाशीं चाकरी करून किताबत वागवीत आले. त्याप्रमाणेंच कुंपणी सरकारही मेहरबानी करोन वागवीत.

आहेत. दोन्ही किताबांबद्दल दाखला सातारचे महाराजांचे राज्याची कैफियत पेशजी गौरनर एलफिस्तन साहेब बहादूर यांनी नेली त्यांत आहे व सातारीयांतही महाराजांचे संस्थानी कैफियती बखरींत सदरहू दाखले आहेत. मालूम होय. तारीख २६ माहे दसंबर सन १८५१ इसवी. ज्यादा काय लिहिणें ? प्यार किजे हे किताबत.

सही. मनोहर भिवराव खासनिवीस  
व पोतनिवीस दस्तुरखुद्द.

### ६ गोखले.

यादी सौभाग्यवती यमुनाबाईसाहेब गोखले, सुरुसन अर्बा सलासीन मयातैन व अलफ, तारीख ८ सपटंबर सन १८३२ व तारीख १ माहे जून सन १८३३ इसवी, येकूण दोन खतें सांहेबीं पाठविलीं. त्यांत हजरत बंदगानअल्ली रेट हनराबल गौरनर कौंसल चाहत आहेत कीं, दक्षिणेंतील जहागिरदार लोक, यांची कैफियत कशी आहे, त्याची वाकबगारी व्हावी, ह्मणोन कलमी केलें, ऐशास आमचे खानदानीचा मजकूर बितपशीलः—

१ आमचे वडील धोंडो बल्लाळ गोखले जातीनें जुमामर्द, सरकारआज्ञेप्रमाणें चाकरी हरवक्त करीत आले. त्याजवरून सरकारची मर्जी बहुत संतोष होऊन बदामीचे स्वारीस पंधराशें स्वारांचें पथक, सरकारांतून नगारा, निशाण सुद्धां करून दिल्लें.

कलम.

१ कुंपणी सरकारचे व सरकारचे शराकतीमुळें कुंपणी सरकारचे कुमकेंस परशरामपंतभाऊ पटवर्धन यांस फौज व तोफखाना व किरकोळ सरंजामी पथके-सुद्धां जाण्याविशीं सरकारची आज्ञा जाहली. त्याजबराबर धोंडोपंत दादा यांची नेमणूक जाहली. पुढें धारवाडचे लढाईत कामकाज फार जाहलें. हा मजकूर सरकारांत जाहिर जाहल्यावर सरकारची मर्जी बहाल होऊन पालखी व पागा, नगारा, निशाण, नौबत सुद्धां देण्याविषयीं परशरामपंतभाऊ यांस, सरकारची आज्ञा होऊन सदरहूप्रमाणें दिल्लें.

कलम.

१ श्रीगणपट्टणास हरीपंत तात्या फडके जरीपटका व हुजुरात सुद्धां सरकार आज्ञेवरून पण्याहून निघोन पट्टणास कुंपणी सरकारचे कुमकेंस गेले. नंतर परशरामपंतभाऊ पटवर्धन यांनी धारवाड सर करून, फौज तोफखानासुद्धां मजल दरमजल निशेन पट्टणास गेले. त्याजबरोबर धोंडोपंत दादा फौजसुद्धां सरकार आज्ञेप्रमाणें होते. पट्टणास जाऊन कामकाज बहुत केलें. पुढें फौजा देशीं येऊं लागल्या, तेव्हां सरकारआज्ञेवरून जाजती खर्चाची नेमणूक करून देऊन हरीपंत तात्यांनीं धोंडोपंत दादा यांस कर्नाटकांत बंदोबस्ताकरितां ठेविलें. त्यांजवर करवीरकर महाराज फौज घेऊन कर्नाटकांत सरकारचीं ठाणीं घालूं लागले. त्यांशीं लढाई करून त्यांचा मोड केला, आणि तोफा व साहेबनौबत व हत्ती पाडाव आणिले.

कलम.



१ धोंडजी वाघ, फौज धरून टिपू सुलतान बहादूर यांचा मुख्य कुंपणी सर-  
कारांत घेतला, तेथे जाऊन ठाणीं घालू लागला. तेव्हां वाघाचे पारिपत्याबद्दल  
मेहेरबान वसलीसाहेब बहादूर पट्टणाहून पलटणे व तुरुक व तोफखाना घेऊन श्री-  
तुंगभद्रा उतरून सावनूर प्रांतीं आले, आणि धोंडोपंतदादा यांस हावनूरचे मुक्कामीं  
फौजसुद्धां येऊन सामील व्हावें ह्मणोन चकती पाठविली. त्याजवरून फौज घेऊन  
मेहेरबान वसलीसाहेब यांचे भेटीस जातेसमयीं धोंडजी वाघ याचे फौजेचे दरम्यान  
मुकाबला जाहला. तेव्हां लढाई मातबर जाहली. त्यांत धोंडोपंतदादा व  
आप्पासाहेब सरकार कामांत हक जाहले. व त्या लढाईत खाशास जखमा लागल्या.  
तेव्हां जखमा बांधोन पुन्हा फौजेचा जमाव करून मेहेरबान वसलीसाहेब बहादूर  
यांची भेट सावनूर मुक्कामीं जाऊन घेतली. नंतर धोंडजी वाघ याजवर फौज व  
पलटणे सुद्धां चालून घेतलें. तेव्हां धोंडजी वाघ याची लढाई मातबर जाहली.  
धोंडजी वाघ यास ठार मारिलें, व फौज लुटून फस्त केली. तेव्हां कामकाज फार  
जाहलें. त्याजवरून साहेब यांची मर्जी खुशी होऊन नंतर साहेब पलटणे सुद्धां  
तुंगभद्रा उतरून निघोन गेले. पुढें खासे फौजसुद्धां कर्नाटक प्रांतीं बंदोबस्तास होते.

कलम.

१ पुण्यास यशवतराव होळकर फौजसुद्धां येऊन लढाई जाहली आणि श्रीमंताची  
स्वारी वसईस निघोन गेली. नंतर वसलीसाहेब पलटणे व तुरुक, तोफखाना घेऊन कर्ना-  
टकांतून पुण्यास येऊं लागले. त्यांजबरोबर फौजसुद्धां निघोन येणें ह्मणोन सरकारचें आज्ञा-  
पत्र आलें. त्याजवरून साहेब यांजबरोबर पुण्यास आल्यावर श्रीमंतांच्या भेटी जाहल्या.  
तेव्हां खर्चाची नेमणूक करून देऊन मेहेरबान वसलीसाहेब बहादूर यांजबरोबर होळकरावर  
मोहीम जाहली. पुढें अलिजाबहादूर व भोंसले यांच्या फौजेशीं गांठ पडोन लढाई मातबर  
जाहली व गार्हलगड मुक्कामीं लढाई जाहली. तेव्हां अलिजाबहादूर व भोंसले यांचा तह होऊन  
वसलीसाहेब यांजबरोबर पुण्यास येत समयीं, मार्गी मांगलाई इलाख्यांत बंडवाले यांनीं पुणें  
वगैरे येथील रसद बंद करून मुख्य नुटीत होते. त्यांचें पारिपत्य करावें ह्मणोन सरकारचें  
आज्ञापत्र आलें. त्याजवरून बंडवाले यांजबरोबर लढाई करून बंडवाले यांचें पारिपत्य केलें.  
नंतर साहेब पुण्यास येऊन सरकारचा निरोप घेऊन सरंजामसुद्धां श्रीरंगपट्टणास निघोन  
जातेसमयीं दोस्तीचा फर्माणा सन १८०३ सालीं करून दिल्या.

कलम.

१ पंत प्रतिनिधी यांनीं आपसांत कटकटी करून फौज धरून माहालमुख लुटूं  
लागले. तो बोभाट सरकारांत आलेवरून, त्यांजवर जाऊन बंदोबस्त करावा ह्मणोन सरका-  
रची आज्ञा जाहली. तेव्हां खासा फौज तोफखानासुद्धां जाऊन सन सीत मयतिनांत लढाई  
करून, प्रतिनिधी यांस पाडाव आणून, महाल किल्लेकोट यांचा सरकार आज्ञेप्रमाणें बंदोबस्त  
केला. पुढें सन सत्तास अशर सालीं खाशास जातीस व फौजेचे खर्चाबद्दल सरंजामास महाल

तूर्त तेरा लक्षांचे सरकारांतून लावून दिले. ते लढाईअखेर चालत होते. त्यापैकीं वीस हजारांचें गांव कर्नाटकांत कुंपणीसरकारांतून दिले, ते चालत आहेत. इनामी गांव कर्नाटकांत संस्थानिक यांनीं दोस्तीचे पोटीं साहा दिले, त्यापैकीं तीन गांव चालत आहेत. बाकीचे कुंपणी सरकारांत आहेत.

### ७ देवधर (ढमढेरे).

यादी रामचंद्र पांडुरंग देवधर ऊर्फ ढमढेरे. सुरु सन अर्बा सलासिन मयातैन व अलफ. हजरत बंदगानअल्ली रेट हनराबल गौरनर कौंसल चाहात आहेत कीं, जहागीरदार लोक यांची कैफियत कशी आहे, त्याची वाकबगारी व्हावी. ह्मणून कलमीं केले जातें जे, थोडके मजकुरांत कैफियत सरकारांत रवाना करण्याकरितां लिहून पाठविली पाहिजे. त्यांत तपशील आपली खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर जाहला तें, व फौज व जातसरंजाम आपले वडिलाकडे काय चालत होता, व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस दिल्या ती तारीख, व आपले जहागिरीचे वहिवाटींत पेशवे सरकारांतून कोणते तऱ्हेनें दखलगिरी केली तें, व आपलेकडे हल्लीं सरंजाम काय चालत आहे तें, व पेशवे सरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कुंपणी सरकारांतून चालत आहे त्यांत कंपेश तफावत काय आहे तें, वगैरे यादींत दाखल करून रवाना केले पाहिजे; ह्मणून तारीख ८ सपटंबर सन १८३२ इसवीचें पत्र आलें व हल्लीं येवशीं तारीख १ जून सन १८३३ इसवीचें दुसरें पत्र आलें. त्यास आमचे आजें कैलासवासी तीर्थस्वरूप रामचंद्रपंत आबा देवधर ऊर्फ ढमढेरे हे कैलासवासी बाबा फडणीस यांजकडे येऊन राहिले. त्यांनीं कैलासवासी श्रीमंत नानासाहेब पेशवे यांचे कारकीर्दींत दप्तरांत असामी करार करून दिल्ली. त्याप्रमाणें पंधरा वर्षे दप्तरांत चाकरी केली. नंतर पुढें कैलासवासी श्रीमंत माधवराव साहेब पेशवे थोरले यांनीं सन सलास सितैनांत पेशवाईची दप्तरदारी सांगितली, तेव्हां पासून दरोबस्त माहाल मुलूख व किल्ले कोट व पागा वगैरे दौलतीचे हिशेब पाहून चौकशी करण्याचें काम त्यांजकडे होतें. ते सन सीत समानीनचे अखेरीस कैलासवासी झाले. नंतर त्याचे वडील चिरंजीव कैलासवासी मोरोपंत तात्या ढमढेरे यांजकडे कैलासवासी श्रीमंत माधवरावसाहेब पेशवे सवाई यांचे कारकीर्दींत नाना फडणीस यांनीं पूर्ववत्प्रमाणें काम सांगितलें. तें सन तिसैनअखेर मृत्यु पावले. नंतर तें काम कैलासवासी तीर्थरूप पांडुरंगपंत अण्णा ढमढेरे यांजकडे पूर्ववत्प्रमाणें सांगितलें. त्या अन्वये दप्तरदारीचें काम करीत होते. पुढें सन इसत्रे मयातैनांत श्रीमंत राजश्री बाजीरावसाहेब पेशवे यांनीं विजयदुर्ग येथील आरमाराची तयारी करण्याचें काम सांगितलें; व तालुके विजयदुर्ग व आरमार दोन्ही ठिकाणच्या फडणिशी सांगून, आरमाराचे तयारीस सरकारांतून पैका देऊन विजयदुर्गास जाण्याविषयीं आज्ञा केली. तेव्हां आमचे धाकडे चुलते तीर्थस्वरूप रा. हरीपंत भाऊ

ढमढेरे, यांस दमरदारीचें कामावर ठेवून अण्णासाहेब विजयदुर्गास निघून गेले. नंतर होळकर यांचा दंगा सन सलास मयातैनांत जाहला. तेव्हां श्रीमंत राजश्री बाजीरावसाहेब वसईस निघून गेले होते, ते पुन्हा पुण्यास सन अर्बा मयातैनांत आल्यावर अण्णासाहेब पुण्यास येऊन आरमारचा हिशेब समजावून दिल्हा. नंतर सन समान मयातैनांत आमची चुलत बहीण श्रीमंतास देऊन लग्नसमारंभ मोठा केला. दमरदारीचें काम पूर्ववत्प्रमाणें करीतच होते; व आणखी कर्नाळा व राजमाची व बेलापूर वगैरे मामलती सन तिसा मयातैनांत सांगितल्या. पुढें दमरदारीचें उत्पन्न कारखाने वगैरे मोडल्यामुळें कमी येऊं लागलें, सबब आमचे तीर्थरूप कैलासवासी अण्णासाहेब यांचे नांवें लागव रुपयांचा सरंजाम सन इहिदे अशर मयातैनांत दिल्हा. त्यांत जातीस बीस हजार रुपये व फौजेचा व नगरखाना, चौघडा मिळोन ऐशी हजाराचा व कैलासवासी तीर्थरूप राधोबादादा ढमढेरे यांस जातीस तैनात पंधरा हजार व फौजेचा चाळीस हजार येकूण पंचावन्न हजारांचा दिल्हा. व आह्मांस जातीस पंधरा हजार व फौजेबद्दल चाळीस हजार एकूण पंचावन्न हजार रुपयांचा दिल्हा. त्याची दरोबस्त वहिवाट आमचे आह्मीं मुखत्यारींनीं करीत होतों, व सरंजाम दिल्हा ते सालींच पुढें इतलाखी फौजेचे हजरीचें काम कैलासवासी तीर्थरूप राधोबादादाकडे व आह्मांकडे सरकारांतून सांगितलें, तेंही केलें. पुढें सन इसने अशर मयातैनांत कैलासवासी तीर्थरूप अण्णासाहेब यांनी श्रीमहायात्रेस जावयाचा निरोप धेतला. ते काळीं दत्परदारीचें काम आमचे चुलत बंधू कैलासवासी तीर्थरूप राधोबादादा व आह्मीं मिळोन करीत होतों. अण्णासाहेब काशीस गेले तसमयी मेहरबान एलफिस्टनसाहेब बहादूर पुणें मुक्कामी रसिडंटचे कामावर होत. त्यांनीं श्री गयेचें दहा हजार यात्रेचे हशिलाचे माफीविशीं तेथील साहेबांस चकती देऊन पलटणचे लोकांचे पाहरे दोन व चपराशी दोन असामी हमराहा बरोबर दिल्ले होते. नंतर श्री काशीस गेले व यात्राही बराबर बहुत होती. यांचें संरक्षण व्हावयाकरितां सरंजामी स्वार बराबर होत. त्याखेरीज नवे स्वार व शिबंदी पेंढारी यांचा वगैरे वाटेनें दंगा फार, याजकरितां ठेऊन यात्रेचा बंदोबस्त ठेविला. यात्रा करून पुण्यास सन अर्बा अशर मयातैनांत अवल सालीं आले. यात्रेस खर्च साडेपांच लक्ष रुपये केले. पुण्यास आल्यावर दमरदारीचें काम लढाईअखेर करीत होते, व त्रिवर्गाचा सरंजामही लढाईअखेर चालत होता. सन समान अशर मयातैनांत श्रीमंताची व कुंपणी सरकारची लढाई होऊन श्रीमंत पुण्याहून निघोन गेले. ते मुलखांत फिरत असतां, त्यांजबराबर स्वार शिबंदी सुद्धां कैलासवासी तीर्थरूप अण्णासाहेब व आह्मीं होतों. खानदेशांत स्वारी गेल्यावर वडिलांची प्रकृत बिघडली, व कुंपणीसरकारचें आश्वासन परत येण्याविशीं अण्णासाहेबास जालें. सबब ते पुण्यास निघोन आले. आह्मीं स्वारीबराबर ब्रह्मवर्तास गेलों. अण्णासाहेब पुण्यास आल्यावर मेहरबान एलफिस्टनसाहेब बहादूर यांनीं सर्व मजकूर समजोन घेऊन सरदार लोकांचा सर्वांचा बंदोबस्त केला. तेव्हां

जातीचा सरंजाम चालत होता त्याप्रमाणें अण्णासाहेबांचा वीस हजार रुपयांचा व आमचा पंधरा हजार रुपयांचा येणेंप्रमाणें दिल्हा. वडीलांचे भेटीस बहुत दिवस जाले म्हणून त्यांनीं सरकारास अर्ज केला. त्याजवरून साहेबांनीं चकती पाठविली. त्याजवरून आह्मी सन सलासिनांत पुण्यास आलों. अलीकडे अण्णासाहेब निवर्तल्यावर त्यांचे वीस हजार रुपयांचे सरंजामपैकीं दोन हजार पंचवीस रुपयांचा गांव व नक्त दोन हजार मिळोन चार हजार पंचवीस व आमचा पंधरा हजाराचा एकूण एकोणीस हजार पंचवीस रुपयांचा सरंजाम व नक्त नेमणूक मिळोन चालत आहे. मिति जेष्ठ वद्य १२ शके १७५५ विजय-नाम संवत्सरे.

### ८ नागपूरकर पोतनीस.

कैफियत रामचंद्रपंतापासून अमृतराव विठ्ठल व मल्हारराव यशवंत याजपावेतां.

आज्ञाधारक अमृतराव विठ्ठल व मल्हारराव यशवंत यांची विनंति ऐशीजे:—आम्ही प्राचीनपासून प्रतिपाळ केला. सेनासाहेब सुभे व बंदगानअल्लींचं व इंग्रजीसाहेब कुंपणीचे सरकारचे मदतीकडोन प्रथमतः आमचे आज्ञे रामचंद्र दादो नवकर ( नौकर ) महंमद सरमस्तखान, सरदार बंदगानअल्लीचे अलजपुरीं राहत आहेत. खानमजकुराशीं व रघोजी मोठे यांची दोस्ती, सबब रामचंद्रपंत बुद्धिवान जाणून वकिलीवर ठेविले असतां, पंत मजकूर खानमजकूरचा सवाल जाबाकरितां राजे रघोजी पंतमजकूरवर बहुत कृपावंत होते. त्या कामांत अलजपुरची सुभेदारी शुज्यायतखानास होती. सुभे मजकुरीं तिमार्जीपंत नामें मुत्सद्दी तथील राहणारास बेहुरमत करून त्याचें घर लुटलें व गांवांतून काढून दिले. म्हणून आप्पाजीपंत मुधोजी, राघोजीचे पुत्र, याजपाशीं फिर्यादी केली. त्यांनीं मनास आणून ब्राह्मणाची निरापराध अप्रतिष्ठा केली. जाणून अलजपुरावर फौज पाठविली. सुभे मजकुरास जवामर्दीचा गुरुर जाणोन धुगांव परगणे हवेली येथं युद्धप्रसंग झाला. सुभ्याचे शीर लढाईमध्ये कापलें जाऊन नवाबत (नवबद) वगैरे आसबाब घेऊन गेले. तीच नवाबत भोंसल्याचें स्वारींत राहत आहे. सारांश, सुभा मृत झाल्यानंतर कोणी सुभेदारीवर व्हावा, परंतु होऊं शकला नाहीं. तेव्हां भोंसल्यांनीं शहर लुटण्याकरितां जमीयत पाठविली. सरमस्तखानांनीं शहर लुटलें जातें जाणून, पंतमजकुरास भोंसल्यापाशीं पाठवून देऊन मुकरर करून शहर वाचविलें. परंतु भोंसल्याचे चित्तांत शहर लुटून टाकावें असें हेतें. तेव्हां पुन्हां एक हिरा नारायण नाईक साहू याचे येथें होता. याजकरितां जमीयत आली. तेव्हां हिऱ्याची किंमत साठ हजार रुपये ठरून पट्टी करून साहू मजकुरास रुपये देऊन हिरा भोंसल्यास दिल्हा. नंतर एक सुजन ब्राह्मण आला. परंतु भोंसल्याची स्वच्छता झाली नाहीं. सबब तिसरे वेळे(स) रघोजींनीं जमीयत घेऊन येऊन, हिरपुर बरबाज्यानीं शहरांत घुसून लुटिस प्रारंभ केला. सवाईखां वगैरे यवनांनीं हुर्मतीकरितां

मुक्कामी जयास उभे ठाकून जहामदींनीं कांहीं लुटलबाड भोसल्याची करून, हल्ला फिर-  
वला असतां, पुन्हां भोसल्याची जमीयत सावरून लुटायचा मनसुभा करून, परंतु तें शहर  
शाह रहमान याचे करामतीचे भोसल्याचे जमीयतीस हिरवें निशाण व जमीयत सफीली-  
वर दिसू लागलें जाणून, काळे साहेब, मुहे साहेब याचे दरगेवर मुक्काम करून जासूब शह-  
रचे बातमीकरितां पाठविले. जासुदांनीं शहरांत रस्ते बेरुस्ते फिरून खबर आणली जे,  
शहरांत जमीयत नाही. हें कृत्य करामत शाह रहमान पिराचे आहे. याजकरितां भोसल्यांनीं  
थाजवर लक्ष न ठेवून बाण वगैरे सरंजाम पोक्त करून हल्ला करावा, तितक्यांत ईश्वरी इच्छेनें  
पर्जन्य अतिवृष्टी गारांची झाली. यामुळें सकळ फौज विखरली गेली व शिकस्ती  
झाली. भोसले पळून नऊ कोसांवर मुक्काम करून, शहर लुटून मक्कूफ करून तानजापूर  
परगणे आकोल हें लुटून मोहार वगैरे ताराज करून नागपुरास गेले. ते वेळेस  
अल्लीवरदीखान सुभा बंगाल्याचा याजला सुभेदारी दक्षणेस झाली, यदर्भी आसफजहा यांनीं  
आपली तगीरी पाहून सरमस्तखांस सांगितलें की, “तुमचा भोसल्याचा स्नेह आहे त्याजकडून  
कृत्य करावें. येविषयीं सरंजाम कांहीं पाहिजे तर मदत करितों. परंतु बंगाल्यावर  
स्वारी घडावी.” तेव्हां खानमजकुरांनीं पंतमजकुरास भोसल्याकडे पाठवून संवर्ध  
केला. भोसल्यांनीं उत्तम म्हणून बाण वगैरे घेऊन बंगाल्यावर मोहीम केली. ते वेळेस  
जगतशेठाची कोठी लुटली गेली. व ज्यालेसर बादर व बालेसर बादर व किल्ले बाराभाटी  
व कटक बंगाला भोसले यांनीं हातांत आणिले. व तसेच आसफजहा याचे हार-  
कात्यांनीं कडपे करतून येथें येऊन एके दिवसांत साठ कोस धावनी करून आकाट्या  
सुभा चंदासाहेब याजला धरून मामल्याविषयीं लक्षाधिकाशीं आमीत घेऊन चालले.  
सांप्रत, यांनीं नवबत आणिली ती नवबत सांप्रत भोसल्याची आहे. नगरखान्यांत बाजती  
आहे. चंदासाहेब तीन वर्ष नागपुरी कैद होता. लक्ष्मणराव खंडागळ्या याजला जहागीर  
करजघाट व सरकार दवनार ज्यागीर होती. तो नायकी करीत होता. सबब ती जहागीर  
भोसल्यांनीं घेतली. तितक्यांत आसफजहानीं परलोक साधन केलें. नासरजंग राज्याधि-  
कारी होऊन फुलचरीचे सफरेंत युद्धास कामास येऊन, सिपायत मोहदीनखान आसफ-  
जहाचे कन्येचा पुत्र कारभार दौलतीचा वरती साहा महिने करून मृत्य पावला. नंतर  
सलाबतजंग आसफजहाच पुत्र मसनदनिसीन झाले. रघोजी मोठे यांनीं चाळिस हजार  
जमीयेत मुघोजीस जानोजीस घेऊन विजयदुर्गावर मोहिमेस पाठविलें. सलाबतजंग यांनीं  
खंडागळे बाबी जहागीर घेतली, हें मनांत आणून भोसल्याची जमीयत दूर गेली. समजून  
नव्वद हजार जमीयतीनें नागपूरप्रांतीं नमूद झाले. रघोजी तेसमयीं शरीरेंकडोन अशक्त होते.  
मुक्कामला करण्यास उभे न ठाकितां देवगडप्रांत सांभाळून न्होजी जाटक याजला जमीयत  
देऊन पाठविलें. कीं, जगाचे फौजेचे आसपास होऊन लुटपाट करीत जात. हें वर्तमान जानोजीस  
व मुघोजीस कळल्यावर विजयदुर्गाहून परत केली. तेव्हां सलाबतजंग घाटावरून गेला कीं,

जाचकांनीं आनंद जमीयतीशी गांवचें गांव लुटून प्रळय करून आहे. वरते जानोजी व मुधोजी आले. व पर्जन्य काळ समीप आला. भोंसल्याची जमीयत आपले मुलखांत व आपण त्याचे मुलखांत, तेव्हां या मोहिमीचा परिणाम नीट लागणार नाही, कांहीं बहाणा करून परतावें, याजकारितां सरमस्तखानाशीं मसलत केली कीं, भोंसल्याशीं तुमचा स्नेह आहे. कांहीं युक्ति करणें. त्याजवरून खान मजकूर ती भोंसल्याकडून पत्र लिहून पंत मजकुराचे हातीं लिहून एक स्वारास दिलें कीं, तूं लष्करचे बाहेर जाऊन घोडे धाऊन सरमस्तखानाचा डेरा पुसत येवून हें पत्र भोंसल्यानीं पाठविलें आहे, असें बोलणें. त्याजवरून स्वारांनीं लष्करचे हरोळीवरून पुसत येऊन खानमजकुरास पत्र आणून दिलें. खानमजकुरानें बहुत संतोषांत होऊन सलाबतजंगापाशीं येऊन पत्र गुजरविलें, व याच लक्षाचा पुरजा पेशकशीचा दिल्हा कीं, भोंसल्यांनीं शरणागत होऊन पाठविला आहे. आपण स्वारी परत करणें हें जगमजकुरांनीं पाहून फतीचा नवबतीस हुकूम करून अवरंगाबादेस चल दिल्हा. खानमजकुरांनीं समागमें न जातां रघोजीची भेट घेतली. रघोजी खानमजकुरास बोलले कीं, आमची शिकार कां गमावली? खानमजकुरांनीं उत्तर केलें कीं, आह्मी तुमचे मित्र तुमचें कल्याण जाणून पुर्जा दिल्हा व ऐसें केलें. कांहीं तुमचें अकल्याण केलें नाही. तेव्हां रघोजी खुष होऊन पांच लक्ष रुपये खानमजकुरास दिल्ले. या प्रकरणांत पंत मजकूर होते. ते वेळेस जें ठरलें तें पंतमजकुरच्या हातांनीं ठरलें. नंतर रघोजी नागपुरास जाऊन मृत झाले.

पुढें जानोजी भोसले अधिकारी झाले. नवाब निमकलीखान अलजपुरीं व बन्हाण-पुरीं सुभेदारी करीत होते. जानोजीनी राघोजी करोडे याजला जमितीनीं आपले मुलकाचे संरक्षणार्थ बराडांत ठेविलें. व आपण पुण्यास गेले. निजामअल्लीखानानीं बन्हाणपुराहून सरंजामजिनशीं बोलावून जमीयत जमा करूं लागले. हें वर्तमान करोड्यांनीं ऐकून खान मजकुरास सांगून पाठविलें कीं, तुमचे यजमान जमीयत ठेवून काय कृत्य करितात? दोन प्रहर रात्रीपर्यंत खुलासा कळावा. त्याजवरून खानमजकुरांनीं नवाबास विदित केलें. नवाबानीं उत्तर दिल्लें कीं, आतां रात्र आहे. उदईक खुलासा कळेल. तैसेंच खान मजकुरांनीं सांगून पाठविलें याचें कारण जे जिनशी पोंहचतात, करोडे याशीं युद्ध करावें. तो करोडे यांनीं जिनशीवर छापा घालून गरदी केली. निजामअल्लीखानानीं प्रातःकाळीं लढाई करावी. तो जिनशीची ऐकून करोडे याशीं दोस्तीचा सिलसिला नमोद करून अलजपुरीं राहिले. जंतर जानोजीही पुण्याहून आले. मुधोजीशीं अंतःकरण मलीन होतें. निजाम-अल्लीखानानीं विठ्ठल सुंदर प्रतापवंत व सरमस्तखानाचे मजकूर जानोजीशीं मोकासाचा तह करून घेऊन नंतर सरमस्तखान मृत्य पावले. या प्रकरणांत पंत मजकूर होते. इसमाइलखान पुतणे. खानमजकूरचे जाती आले. हैदरजंग मुसाभुसीचा दिवाण यांनीं सलाबतजंग याजला हातीं ठेवून कुलमुख्यारी करूं लागला. सबब निजामअल्लीखान अलजपुराहून अवरंगाबादेस

कूच करून आले. हैदरजंग मुसाभुशीचा दिवाण कारभार करीत होता. त्यास मारून बऱ्हाण-  
 पूरचे रस्त्यानें वासमास येऊन हैदराबादेस पोहोचवले. मुसाभुशी अवरंगाबादेहून निघोन फूलच-  
 रीस गेला. सलाबतजंग त्याचे दोस्ती होता. निजामअल्लीखानानीं हातीं घेऊन कारभार दबल-  
 तीचा करूं लागले. मशीरमुलकास अवरंगाबाद व वराडची सुभेदारी देऊन रुकमदवला  
 दिवाण झाले. रावपंतप्रधान यांजला संमतांत घेऊन ठिपू हैदरावर जमीयत श्रीरंगपट्टणा-  
 वर पाठविली. मशीरमुलक यांनीं आपणाकडून राजारामबापू याजला अलजपूरचे कामा-  
 वर पाठविलें. रावमजकूर यांनीं मामलेपर्यंत येऊन जानोजीस मनस्वी अपशब्द बोलूं  
 लागला. हें त्यांनीं ऐकून परास्त करून वराड घेण्यास उद्युक्त जाले. इसमाइलखानाचे  
 बापाशीं दोस्ती होती. तेव्हां खानमजकूरचें कल्याण घडावें यदर्धी रामचंद्रपंतास रुकमत-  
 दवलापाशीं पाठविलें. कीं, सुभ्यानें जैसें केलें तैसें फळ पावले. अखेर कामाशीं दोस्ती ठेवणें.  
 मंजूर असेल तर इसमाइलखानास सुभेदारी देणें तर इकडील स्वस्थता असे. तेव्हां रुकमत-  
 दवल्यानीं समय पाहून इसमाइलखानास सुभेदारी अलजपूरची दिल्ली, व प्रेमलोभ भोंसल्याशीं  
 ठेविला. भोंसल्याची व पंतप्रधानाशीं किंचित् विक्षेपता ठेऊन रामचंद्रपंतास जाहिरदारीत-  
 खानमजकुराकडून अंतस्त आपणाकडोन रुकमतदवलापाशीं पाठवून दोस्ती दौबलामज-  
 कुराशीं करून पंतप्रधानास भोंसल्यानीं शरीक झाले. नंतर जानोजी भोंसल्याचें जाणें  
 पुण्यास झालें. राज्यास सभाजी भोंसल्याचे बंदोबस्त ठेवण्यास कोणीही मनुष्य इदेबरीज  
 पाहिला. उमरावतीचें मुक्कामीं येऊन इसमाइलखानास आमचें आजें रामचंद्रपंत यांस मागून  
 घेऊन दरयाबाई स्त्री व साबाजी भोंसले व रघोजीस हा वेळ करून परगणे अकोट येथें ठेविलें  
 व आज्ञा केली कीं, फौजा हिकडून पत्ता स्वाधीन असावें. मग खानमजकुरासीं मसलत  
 होऊन अलजपूर इसमाइलखानाचें येथें मेजवानीचा नेम जाहला असतां, जानोजीनीं आज्ञा  
 केली, प्रथमतः रामचंद्रपंताचें येथें मेजवानीचा प्रसंग घडावा. त्याजवरून प्रथम पंतमजकु-  
 राचें येथें येऊन भोजनादि करून, जे आज्ञा कृपायुक्त भाषण केलें त्याचा विस्तार लिहिणें.  
 उपरोध दुसरे दिवशीं खानमजकुराचें येथें मेजवानी घेऊन पुण्यास गेले. पंतमकुरांनीं आकोटीं  
 राहून रघोजी आदिकडून याजला बहुत संतोषांनीं ठेवून कृपा साधन केलें. जानोजी  
 भोंसले यांनीं पुण्यांत जाऊन, मसलत करून परतून येतांना वेरूळ ठोक्यावर देहविसर्जन  
 केलें. मुधोजी भोंसले रयासतीस अधिकारी झाले. साबाजी भोंसले यांशीं मलिनता न दर्श-  
 नास आलें असतां मुधोजीनें पंतप्रधान व बंदागानअल्लीचे सरकाराशीं ऐक्यता ठेवून  
 राज्यकारभार चालविला. पंतमजकूर उभयतांचे कृपेंत होते. साबाजी याचीं जमीयत  
 अधिक होती. तेव्हां खानमजकुराशीं व जानोजीशीं स्नेह, त्याजवरून मुधोजीचा पुत्र राज्याचा  
 मालक जाणून मुधोजीचे मदतीकरितां पंतमजकुरास बऱ्हाणपुरास पाठवून इब्राहीमखान  
 गादी(?) ज्यांनीं नारायणराव यांजला मारलें, त्याजला बोलावून मुधोजीचे मदत केली. खान-  
 मजकूर तो मुधोजीशीं व साबाजीशीं, नागपुराहून पांचगांव सहा कोसांवर आहेत, तेथें लढाई



झाली. इब्राहीमखान गार्दी व पंतमजकुरांनीं जवामर्दी बहुतशी केली. साबाजी मारले गेले. भावजीपंत दिवाण साबाजीचे याजला नाकावर जखम पंतमजकुरांनीं मारली. गोविंदपंत पंतमजकुराचे धाकटे भाऊ युद्धांत होते. मुधोजी पंतमजकुरास दाणा व जवामर्दी जाणून बहुत कृपा करीत होते. गोविंदपंतास गायेरगडची मुख्त्यारी दिली. व पंतमजकुरास कुल रयातींत ठेविले. कितीका दिवसानंतर मुधोजी व इसमाइलखान मृत्यूस पावले. रघोजी भोंसले त्याचे पुत्र अधिकारी झाले. पुण्याकडील राजकारण नमूद झालें. चिमणाबापू ज्याहील जाणून सलाबतखानास अलजपुराहून बोलावून पंतमजकुरास घेऊन दवलतीचें संरक्षणार्थ ठेविलें व आपण पुण्यास गेले. एके दिवशीं भवानी काळो व चिमणा बापूशीं कांहीं एक बोलतां जीत झाली. तेव्हां पंतमजकुरांनीं चातुर्य गोष्टीकडोन उभयतांचें मनोधर्म रक्षून खुष केलें. ते दिवसापासून चिमणाजी बापू, पंतमजकुरावर कृपा करूं लागले. रघोजी भोंसले पुण्यास जाऊन नानाफडणविसाचा करार मदार करून घेतला कीं, पासष्ट लक्ष रुपयांचा मुलूख बंदगानअल्लीपासून घेऊन गंगथडीस इलाखा जाहला असावा. ऐसें ठरावून गोविंद भगवंत व गोविंद कृष्ण यांजला वकिलीस बंदगानअल्लीकडे पाठविलें व आपण नागपुरीं आले व रामचंद्रपंतास आपणाकडून वकिलीस हैदराबादीं पाठविले. याचे आदेश मशीरमुलकानीं मीर अलमास कळला. त्यास पाठवून टिपूची मोहीम नमुद केली. सबब मशीरमुलकानीं जबाब दिल्या कीं, मोहीम झालीयावरी तुमचें काम करूं. यदर्थी हरीपंत फडके पानगलास गेले व बळवंतराव, भवानी काळोचे पुत्र भोंसल्याकडून मोहिमेस आले. लाट कार्नावालीस साहेब या मोहिमेस आंग्रेज होते. मशीरमुलकानीं व गोविंद कृष्णांनीं सल्ला प्रसंगाकरितां, पंतमजकुरास लाट मजकुरापाशीं पाठवीत होते. लाटसाहेबही पंतमजकुरास दाणा जाणून कृपा करीत होते. ते दिवसापासून सरकार कुंपणींत पत्राआदिकांचा सिलसिला व वकिलीचा शिरस्ता सरकार कुंपणीचा जारी जाहला. व पंतमजकुरास जवाहीर व खीलत लाटसाहेबांनीं दिल्लें. टिपूची मोहीम झाल्यावर बंदगानअल्लीस राज्यसंबंधी इच्छा जाहली. सबब भोंसल्यांचे व पेशव्यांचे सवाल जबाब तसेच राहिले. गोविंद भगवंत पुण्यास गेले व रामचंद्रपंतही नागपुरास जाण्यास सिद्ध जाहले. मशीरमुलक यांनीं पंतमजकुराचे दाणाहीची अधिकोत्तरता जाणून एका शाळेंत विद्याभ्यास केला. याची पासदारी दाखवून माधवराव रामचंद्र यांजला पांचशें स्वार मुसारहमुचे लईनपैकीं पांचशे लोक यांची सरदारी दिली. गोविंद भगवंत यांनीं पुण्यास जाऊन वर्तमान विदित केलें. त्याजवरून पेशव्यांची जमीयत निघाली. भोंसले त्यांचे अंकित, तेव्हां त्याचेही जमीयत राहणें पडली. सारांश खरडें येथें युद्धप्रसंग निजामअल्लीखानासीं जाहला. मशीरमुलक पुण्यास जाऊन तहनामा करून दिल्या. शामराव कनिष्ठ पुत्र पंतमजकुराचे तेथें होतें. पंतमजकुराची लायकी पाहून नाना फडणविसांनीं कसबें सोनपेठ जागीर नेमली. नंतर सवाईमाधवरावांनीं देह विसर्जन केलें. नाना फडणीस महाडास गेले. बापू तात्या व परशरामभाऊ कारभारांत शिरले. मशीर-



मुलूक पुण्यांत होता. गोविंद भगवंत व रामचंद्रपंत यांजला ऐक्यांत घेऊन नानांचें आगमन पुण्यांत करविलें. रघोजी भोंसलेही पुण्यांत पंताचे लिहिण्याप्रमाणें आले. त्रिवर्ग मिळोन मसलत ठरवून नाना फडणविसांनीं मुलूख वांटून दिल्या. गढेमंडल भोंसल्यास साडेतीस लक्षांचा मुलूख चौथ्याई खडर्ग्याचे समयीं मोंगलाईतून प्रथमतः बंदगानअल्लीस, शिंद्यास नगर वगैरे दहा लक्षांचा मुलूख देऊन, मजकुरास रवाना केलें. मुलूख मजकुरांनीं रामचंद्रपंताचे बुद्धीवर बहुत खुष होऊन जागीर देणेंचा निश्चय केला. पंतमजकुराचे वडीलपुत्र माधवराव प्रसंगीं होते. त्याचें नांवें चवसष्टी हजारांची जहागीर पळसखेड व शिराळ वगैरेची सनद करून घेतली. रघोजींनीं केशवराव रामचंद्रपंताचे दुसरे पुत्र यास हैदराबादेस वकिलीवर ठेविलें. रावमजकूर प्रथम अल्लीबाहादूर यांशीं भोंसल्याकडून वकिलीस कारण जे शिंद्याचें जमीयत हिंदुस्थानांतून भोंसल्याचें मुलखांतून न यावें येतनमतें होतें. सांप्रत या कामीं मुक्रर होऊन मुलूख मजकूरचे समागमें शहरास गेले. नाना फडणिसांनीं सोनपेट राजेंद्र याजला दिलेहमुळें परगणे जळगांव

१ हिंगण दरोबस्त

१ मुडगांवनिम्में

१ कसबे सोनालटखी

सरदेशमुखी.

एकूण साडेसाताचे जहागीर पंतमजकुरास करून देऊन रवाना नागपुरीं केलें. मशीर मुलूकही हैदराबादेस गेले. बंदगानअल्लीची भेट घेऊन बंदगानअल्लीचा परवाना रघोजीस पाठविले कीं, रामचंद्रपंतास पाठविणें. मसलती गोष्टी किती सांगणें आहे. त्याजवरून पंतमजकूर हैदराबादीं येऊन एक वर्ष होतें. हें वर्तमान नानांनीं ऐकून शेषाद्री सिंहराज यांज हातीं बंदगानअल्लीचे समक्ष पंतास निरोप पाठविला. पंतांनीं उभयतांचे निरोप बंदगानअल्लीस श्रुत केलें व नवाद घेऊन केशवराव याजला वकिलीवर नेमस्त करून माधवराव वडील पुत्र याजला समागमें घेऊन अलजपुरीं येऊन देह ठेविला. सबब नाना फडणीस व रघोजींनीं बंदगानअल्लीस लिहिलें कीं, आमची खातरजमा पंतापासून होती. तसेच त्यांचे पुत्रापासून आहे. वडील पुत्र माधवराव बंदगानअल्लीचे चाकर व केशवराव भोंसल्याकडोन वकिलीवर. यावरते दावे पुत्र आहेत. त्यांजपैकीं जो कोणी त्या प्रकरणाचे योग्य असल्यास नेमस्त करावें. त्याजपैकीं यशवंतराव वडील होते. माधवरावजी आपले समागमें घेऊन येऊन नागपुरीं पंताचे कामीं ठेविले, व एक वर्ष आपण जातींनीं राहून रघोजीची मर्जी संपादन करून शहरास येऊन, मशीरमुलकास वर्तमान श्रुत केलें. मशीरमुलक हें वर्तमान ऐकून, बहुत खुष होऊन यशवंतरावजीस रघोजीपासून बोलावून मसलतीचा तह ठरावून नागपुरास रवाना केलें. नंतर रघोजी भोंसले यांजला राज्यसंबंधीं इच्छा होऊन श्रीधर लक्ष्मण व कृष्णराव चिटणीस व यशवंतरावजीस पुण्यास पाठविलें कीं, दोस्तीची दृढता असावी. पेशवे बहादूर ह्यांसीं व यशवंतराव होळकर ह्यांचा किसानमुद होता. श्रीधर लक्ष्मण याहीकडून यांचे सल्लेनें फैसला होऊन खंडोजी, मल्हारजी होळकराचे पुत्र

दवलतराव शिंदे यांजपाशीं अटकेंत होते (?) त्यांजला यशवंतरावजींनीं फत्तेपूरचे मुक्कामीं होळकराचे स्वाधीन करून किंसा तोडला. नंतर सरकार कुंपणीशीं व भोंसल्याशीं जाईते फाकी येऊन आज्ञ्याचे घाटावर लढाई झाली. सरकार कुंपणींत सवाल जवाब करण्याचा सांप्रदाय आमचे येथील, सबब यशवंतरावजीस रघोजी भोंसल्यांनीं जनरल वसली सोहबापांशीं पाठबून दिलें आणि तहनामा करून दिल्या. ते वेळेस भोंसले यांनीं व पेशवे बहादूर यांनीं ज्यास ज्यागीरा वगैरे करून दिलें तें बहाल असावं, असें ठरलें आहे. आज्ञाधारकाचे तीर्थरूप विठलराव प्राचीन सिलसिल्यांनीं सलाबतखान इसमाईलखान यांचे नौकर होते. फत्तेजंगखान यांनीं कारभारांत शिरून स्पर्धा करूं लागला म्हणून जनरलसाहेब हातें नौकरी सोडली. जनरल-साहेबांनीं बहुत पासदारी करून राज्य महिपतराम बंदगानअल्लीचेकडून सरकारमदतीवर होता त्याजला सांगितलें कीं, विठलरावजीस जिल्हेदारी द्यावी; अथवा तालुके भोंसल्याकडून जें आले, त्याचें काम द्यावं. अथवा कामावर ठेवावं. इजाफा जागीर माधवरावास व्हाव्या, व सरदेशमुखीवर राय केशवरावचा सालिना आहे, तो चालवावा. मोकासे वगैरे भोंसल्याकडील जेसें आहे तसें आह्मांकडून इलाख्याचें चालावें. यदर्थी हशमजंग किरक्यातरी(?) रजीदंट हैद-बादेचे होते, त्यांजला लिहिलें आहे. नंतर जनरलसाहेब विलायतीस चालले. यशवंतराव नगरपर्यंत समागमें होते. तेथें यशवंतरावजीस पंचवीस हजारांची ज्यागीर कारल वगैरे देहत महिपतरामापासून देऊन नागपुरास रवाना केलें. जयकृष्ण सिताराम चुलतचुलता, बंधु यशवंतराव, जनरल साहेब गेले ते वेळेस एल्फिस्टनसाहेबापाशीं सवालजवाबाकारितां ठेविले होते. राव जे वेळें नागपुरीं आले, तेव्हां रावमजकूर सवालजवाब करूं लागले पंतमजकूर पुण्यांतच होता. हाताखालीं राहिला. एल्फिस्टनसाहेब विलायतीकडेस गेले. जिनमीलसाहेब(?) त्या कामीं मुकरर झाले. रावमजकुरासीं बहुत रीतींनीं सलोखा करून होते, हें सर्वत्रांस प्रगट आहे. जयकृष्णपंत यांचा सिलसिला जे दिवशीं रामचंद्रपंत बंदगानअल्लीचे येथें आले, ते वेळेस रघोजीपाशीं गुलाबसिंगाचें कंपूचे दिवाणींत ठेविले. जे वेळेस सरकार कुंपणीशीं व भोंसल्याशीं वैपरीत्य आलें, तें वेळेस शिंद्याचे सवालजवाबांत होते. तेथून आल्यावर रावमजकुराचे हातांखालीं राहिले. भोंसले यांचे सरकारांतून अडीच हजारांची जागीर जयकृष्णपंतास होती. जे वेळेस मिरखानांनीं जमीयेत नर्मदातीर आणली, ते वेळेस करनेल कुलसही हुसंगाबादेस होते. यशवंतरावजींकडून साहेब करनेलमजकुरापाशीं होते. ऐसीयात लिहिलेपर्यंत जयराय माधवराव व केशवराव व विठलराव यांजविषयीं महिपतराम व हासमतजंग याजला जनरल वसलीसाहेबानें लिहिलें होतें. महिपतरामाचे जाणें शिरापुराकडे जाहलें, व हासमतजंग विलायतेस गेला. व मशीरमुलकही मृत झाला. मीरअलम दिवाण जाहले. व सिधनमसाहेब रजीदंतीवर कायम झाले. नावाकिफीमुळे इजाफा वगैरे राहून गेले. विठल-राव हैदराबादेस येऊन सिधनमसाहेब मजकुरीं मीरअलमबहादूरास भेटून हुजूरची मुलाखत घडून तिनशें रुपये दरमाहा मनसबदारींत नेम झाला. विठलरावजी या दरमाहावर

राजी नवते. तेव्हां मीरअलमांनीं सिधनमसाहेबास फर्माविलें कीं, पुढें बंदोबस्त नीट करून धेण्यांत येईल. तितक्यांत कांहीं दिवसांनीं मीरअलमाचा काळ झाला. मुजीरलमुलक दिवाण झाले. कारभार रयासतीचा नवीन प्रकारें वर्तू लागला. माधवरावजी मृत्यास पावला. रघुपतराव विठलरावजीचे धाकटे पुत्र त्याचे वीसंगीं झाले. लाटसाहेब येविषयीं पत्र रसिदंटास लिहिलें. जहागिरी साठहजारांची रहीत होऊन ज्यांत जहागीर रघुपतरावचे नांवें कसबें शिराळ जाहलें, त्याप्रमाणें सरदेशमुखी कारल वगैरे तहनाम्याची जहागीर व मोकासे वगैरे चालत होते. सन १२२८ फसलींत केशवराव कन्येचे लग्नाकरितां नागपुरीं गेले. तेथें चार वर्षे राहून भोंसल्याकडून कलकत्याचे वकेलीवर जाऊन तेथेंच देह ठेविला. अमृतराव विठलरावजीचे वडील पुत्र आहे. हैदराबादेस यशवंतराव याजला पुत्रसंतान नाही. ह्मणून त्यांनीं केशवरावजीस लिहून बोलाविलें. तेव्हां केशवरावजींनीं शिकंदरज्याहापासून रुकसती घेतली. शिकंदरज्याहांनीं पुसलें कीं, कां पाठवितां ? येथें यासी परवशी होईल. तेव्हां केशवराव यांनीं उत्तर केलें कीं, सहा बंधूंत दोघे पुत्र आहेत. धाकटा येथील संस्थानांत विठलराव राहील. वडीलास नागपुरीं ठेवण्याचा मानस, यदर्धी मजला नागपुरीं पाठविलें कीं, नागपुरीं जाऊन यशवंतरावजीपाशीं होतो. रघोजी भोंसले यांनीं लाटसाहेब पत्र आह्मांकडून पाठविलें. लिहिणें व इंग्रजी जवाबास सवालांत यशवंतरावजीचेकडून जिनकीन साहेबापाशीं आमदरफत ठेवीत होता. रघोजी भोंसले आह्मांकडून कृपा करीत होते. विठलरावजी व श्रीधर लक्ष्मण मुनसी रघोजीचे काशीस निमित्य करून गेले. त्या समागमें होते. लाट मायेरा साहेबानें यांची मांहीम करून काशीस आले. त्यांनीं विठलरावजीस निम अस्तनी पोषाख वगैरे दिव्हे होते. रघोजी यांचा काळ झाल्यावर येथें काशींत काशीवास करावें जाणून नागपुरीं येऊन हैदराबादेस यावं, विवंचनेत होते. तितक्यांत सन १२२७ फसलींत आपासाहेब व इंग्रजासी युद्ध झाले, यावर तेथून निघून हैदराबादेस रवाना झाले. मीही विठलरावजीबराबर हैदराबादीस आलों. ते वेळेस जिनकनसाहेबांनीं रसुलसाहेब साबीदजंग बहादूर यांजला लिहिलें. केशवराव यांसी वकीलात व सरदेशमुखीचा सालीना व कामांत जागिरींत वगैरे कुळ आमचे इलाख्यांतली चालल्यांत हरकत न यावी. तदनुसार केलें तें होतें. सन १२४२ फसलींत विठलरावजी मृत झाले. त्याचा दरमहा तीनशें रुपये यांत बोलखेड निमें जहागीर होती, ती माझे नांवें करून दिली. सन १२४४ फसलींत केशवराव कलकत्यांत व यशवंतराव एक महिन्याचे अंतरांनीं मृत्यु जाहले. रघुपतराव आधींच मृत जाहला होता. त्याचे पुत्राचे नांवें शिराळ जहागीर निमें होती, ती सुद्धां मोक्त्रसे भोंसले याचे दिव्हे, व जहागीर मौजें कोकरड व पंतप्रधानचे सरकारचे जहागीर व सरदेशमुखीवरील सालीयाना आह्मांकडून राज्य बंदूलाल यांनीं जप्त ठेविलें. याजविषयीं सनदपत्र दाखल सरकार बंदगानअल्लीचें दफ्तरां हैदराबादेचे रसिदंटाचें येथें दाखले दुखले आहेत. सरकार सेनासाहेब व सरकार पंतप्रधान यांचे मालिक इंग्रज बहादूर मुखत्यार तहनामें याजविषयीं

कीं उभे सरकारचें देण्यास जाहले. ते आचंद्रार्क बंदगानअल्लीकडून निभावणीनें घडतां सांप्रत चंडुलाल यांनीं जम ठेविलें. याजमुळें करजदारी महालास बहुत जाली. जहागिरींत उभे सरकारची रामचंद्रपंत याचे आज्ञे यांनीं संपादन केली. याचे लेक आह्मी असून कर्जदारींत आह्मी निमज, यदर्थी विनंती जे जहागीरा वगैरे यासी व गुदास्त होऊन महालास प्राप्त व्हावी.

### ९ पटवर्धन.

मूळ पुरुष हरभटजी पटवर्धन पेशजीं कोकणांत आपले वतनाचें गांवावर मौजें कोतवडें तर्फ रत्नागिरी येथें असतां, कांहीं दंग्यामुळें आपला गांव सोडून मौजें माहदण तर्फ सांवताची वाडी येथें कुटुंबासुद्धां राहिले होते. पुढें त्यांचे पुत्र पराक्रमी निघोन दौलत मिळविली.

बिपतशील.

१ वडील पुत्र कृष्णभट वास्तव्य मंगळवेढें. यांस पुत्रः—

१ पुरुषोत्तमराव. यांस सरकारांतून तैनात व इनामगांव मौजें आंबे निमेगांव. मशारानिल्हेस पुत्र चौधे, पैकीं दोन पुत्र नारायणराव यांस दत्त दिल्ले. याचा तपशील नारायणराव यांचें नांवाखालीं लिहिला असे. बाकी पुत्र २.

१ हरीहरराव.

१ विठ्ठलराव निवर्तले, त्यांचे पुत्र पुरुषोत्तमराव.

२

१ मेघःशामराव यास सरकारांतून तैनात मशारानिल्हेचे पुत्रः—

० कोंडोपंत निवर्तले.

० जनार्दनराव धारवाडचे स्वारीस सरकारकामावर आले.

१ कृष्णराव निवर्तले, यांचे पुत्र नारायणराव.

१ माधवराव यांस सरकारांतून तैनात व इनामगांव मौजें नादर. मशारानिल्हे सरकार कामावर आले. सबब इनाम.

० अवरस दामोदर निवर्तले.

१ दत्तक गोपाळराव, बळवंतराव यांचा पुत्र.

१ नारायणराव यांस सरकारांतून तैनात व मौजें आंबे निमें इनाम गांव व जमीन.

० अवरस.

१ दत्तक पुरुषोत्तमराव यांचे पुत्रः—

० प्रथम दिल्ले ते निवर्तले.

१ दुसरे सदाशिवराव दिल्ले ते.

१ बळवंतराव यांस पुत्र तीन; पैकीं माधवराव यांस दत्त दिल्हा. बाकी दोन पुत्रः—

१ आपाराव निवर्तले. यांचे पुत्र लक्ष्मणराव.

१ गणपतराव.

२

१ दुसरे पुत्र बाळमठ यांचे पुत्र मोरोबा आबा हेही कर्ते, सबब त्यांसही सरकारची तैनात जाली. त्यांचे पुत्र श्रीपतराव. त्यांचे पुत्र मोरोपंत, त्यांचे पुत्र बळवंतराव हल्लीं आहेत.

१ तिसरे पुत्र त्रिंबकपंतआपा कुरुंदवाडकर. नारायणराव जोशी इचलकरंजीकर, हल्लीं नारायणराव आहेत, त्यांचा मूळपुरुष, हे उमेदवारीनें थोरले संताजी घोरपडे सेनापती करवीरकर महाराजांकडील यांजकडे चाकरीस राहून, शिपायगिरीचे इराद्याचें कामकाज करून सेनापती यांचे पुत्रवत् वागत होते. नंतर सेनापती यांनीं त्यांचे निखालसतेचे वागण्यावरून, एका ताटांत जेवावयास ही सिद्ध झाल्यावरून, पुत्राबरोबर वांटणी दौलतीची दिल्ली. त्यास जोशी, हरभटजीस वडील असें मानीत होते. याजकरितां त्रिंबक हरी, नारायणराव यांजकडे जाऊन, चाकरीस राहून, लढाईत वगैरे कामकाज करून वाढले. घरचे पागेची दोनशें घोड जालीं. खर्चाची पुरवणी या चाकरीवर न होई, सबब हिंदुस्थानांत रोजगारास जात असतां, नानासाहेब पेशवे यांस विदित जाल्यावरून, मर्द माणूस सरकारचाकरीचे उपयोगी जाणोन, सरकारांतून पंधरा स्वारांचा सरंजाम देऊन ठेवून घेतले. त्यांचे पुत्रः—

१ निळकंठराव कर्नाटकचे स्वारीस नवाब हैदरखान याचे लढाईत सरकारकामावर आले. यांचे पुत्रः—

१ रघुनाथराव यांचे पुत्र त्रिंबकराव, त्यांचे केशवराव बाबा. हल्लीं आहेत.

१ शिवराव निवर्तले त्यांचे पुत्रः—१ प्रथमसंबंधी कृष्णराव. २ द्वितीय संबंधी

१ निळकंठराव.

१ कोन्हेरराव निवर्तले. यांनींही सरकार चाकरी बहुत केली. शिपाई होते. यांचे पुत्र गणपतराव आहेत.

१ चौथे पुत्र गोविंदपंत नाना चाकरीचे उमेदवारीनें पुण्यास थोरले बाजीराव साहेब पेशवे यांजकडे जाऊन राहिले. त्यांस हे शाहाणे लिहिणार जाणोन, परगणे सुपें येथील मामलत सांगून इंद्रोजी कदम सरकार पागे होते, त्यांचे पागेची दिवाणगिरीही सांगितली. पुढें इंद्रोजी कदम निवर्तले, तेव्हां गोविंदपंत मर्दुमीस चांगले व सरकार कामकाजाचे उपयोगी, तीच पक्षा यांचे नांवें करून दिल्ली, व पुढें काहीं दिवसीं चार हजार फौजेचा सरंजाम नानासाहेब पेशवे यांनीं दिल्ला. यांचे पुत्रः—

० वडील पुत्र गोपाळराव यांनीं, नानासाहेब त्यांचे पुत्र माधवराव साहेब पेशवे

यांचे कारकिर्दीस बहुत बहुत एक निष्ठपणें सरकार चाकरी जुमामदींनें करून सरकारांतून बहुमान दिल्ले. ते गेले. यांचे पोटीं पुत्र नाहीं.

- ० दुसरे पुत्र वामनराव बाबा हेही कांहीं दिवस सरकारचाकरी करून निवर्तले.
- १ तिसरे पुत्र पांडुरंगराव तात्या, सरकार आज्ञेप्रमाणें नवाब हैदरखान यांजवर मोहिमेस गेले असतां, लढाईत पाडाव होऊन पट्टणास नेले. तेथें त्यांचा काळ जाहला. त्यांचे पुत्रः—

- ० प्रथम हरीहरराव यांचें नावें सरदारीचीं वस्त्रें जाहलीं होतीं, तेही निवर्तले.

- १ दुसरे चिंतामणराव आप्पा.

- ० तिसरे विठ्ठलराव बापु निवर्तले.

- १ चौथे गंगाधरराव बाळासाहेब यांस पुत्रः—

- ० प्रथम केशवराव वडील

- १ दुसरे नारायणराव यांस पुत्रः—

- १ गणपतरावतात्या

- १

- १ तिसरे माधवराव बाबा

- १ चौथे गोविंदराव नाना निवर्तले. यांचे पुत्रः—

- १ वामनराव

- १ कृष्णराव

- ० गंगाधरराव, गणपत परशराम तासगांवकर

यांस दत्त दिल्ले ते.

- १ पांचवे गोपाळराव द्वितीय संबंधी.

चिंतामणराव आप्पा यांचें व गंगाधरराव बाळासाहेब यांचें वैमनस्य येऊन विभक्त जाहले. त्यांत मिरजेस बाळासाहेब यांनीं राहावें, सांगलीस चिंतामणराव आप्पा यांनीं राहावें, असें सरंजामाची वांटणी होऊन ठरलें; त्याप्रमाणें आहत. पुढें बाळासाहेब निवर्तले. त्यांचे चिरंजीवाची वांटणीची व्यवस्था अलीकडे सरकार कुंपणीचे अमलांत जाहली आहे.

१ पांचवे पुत्र रामचंद्रपंत आप्पा हे उमेदवारीनें पेशवे सरकारांत जाऊन चाकरीस राहून मर्दुमीनें सरकारचाकरीस वसईचा किल्ला घेतला. ते समयीं वगैरे लढाईत भिडाईत बहुत कामकाज केलें, त्याजवरून सरकारांतून पागा देऊन पंचवीसशें स्वारांचा सरंजाम दिल्ला. त्यांचे पुत्र परशरामपंत भाऊसाहेब यांचा लौकिक मर्दुमीचा व एकनिष्ठेन सरकारचाकरी करण्याचा, हें जगजाहिर आहे. खड्यांचे स्वारीस आघाडी चाकरी सरकार आज्ञे-

प्रमाणें पतकरून शिपाईगिरीची शर्थ केली. त्याजवरून स्वारी पुण्यास आल्यावर सरकारांतून बहुमान जवाहीर व वखें व चौघडा साहेबनोबतसुद्धां दिल्या. यांचे पुत्र:-

१ वडील पुत्र रामचंद्रपंत आप्पासाहेब. यांचा धारवाड व खर्डे व कर्नाटक वगैरे स्वान्यांत शिपाईगिरी केल्याचा लौकिक जगजाहीर आहेच. यांचे पुत्र गोपाळरावसाहेब.

० दुसरे पुत्र हरीपंत बाबासाहेब. हेही शिपाई मर्दुमीस खंबीर होते. खड्यांचे स्वारींत शिपाईगिरीची शर्थ केली. जखमाही लागल्या होत्या. ते निवर्तले.

१ तिसरे पुत्र माधवराव दाजीसाहेब. हेही शिपाईगिरीस सदरहूप्रमाणेंच होते. यांचे पुत्र गोविंदराव नानासाहेब.

१ चौथे गणपतराव बापुसाहेब. पुत्र संतान नव्हतें याकारितां अंतकाळसमयीं गोविंदराव नाना मिरजकर यांचे धाकटे चिरंजीव दत्तक घेऊन नांव परशरामपंतभाऊ ठेविलें.

चौथे बंधु एकत्र असतां पुढें हरीपंतबाबा यांचा काळ जाहल्यावर गणपतराव बापु विभक्त होऊन सरकारांतून सरंजामपैकीं तिसरे हिश्याची वांटणी घेतली. पुढें रामचंद्रपंत आप्पासाहेब व माधवराव दाजीसाहेब एकत्र असतां, त्यां उभयतांचाही काळ जाहल्यावर आप्पासाहेब यांचे पुत्र रावसाहेबांचे व दाजीसाहेबांचे पुत्र नानासाहेब विभक्त होऊन सरंजामाची वांटणी जाहली आहे.

१ सहावे पुत्र भास्करपंत आप्पा. यांनींही शिपाईगिरीचे इराद्यानें सरकारचाकरी केली. सरकारांतून तेनातही त्यांस आहे. यांचे पुत्र:-

१ वडील पुत्र धोडोपंत दादा. यांचे पुत्र:-

० विठ्ठलराव बाबा गवड्यांचे स्वारीस सरकार कामास आले.

१ दुसरे पुत्र यशवंतराव. यांचे पुत्र:-

१ \_\_\_\_\_

१ \_\_\_\_\_

१ दुसरे पुत्र विनोबा आबा यांनींही सरकारचाकरी मर्दुमीनें केली आहे.

१ तिसरे पुत्र हरबा आपणा यांनींही सरकारचाकरी बहुत केली आहे. यांचे पुत्र:-

० वडील पुत्राचा काळ झाला.

१ \_\_\_\_\_

१

१ चौथे पुत्र सदाशिवपंत भाऊ.

० प्रथम खंडेराव

० माधवराव यास वासुदेवपंत दाजीस दत्तक दिल्या.

१ तिसरे पुत्र चिंतामणराव

१

१ पांचवे रामचंद्रपंत निवर्तले.

१ सहावे वासुदेवपंत दाजी

० अवरस

१ सदाशिवपंत भाऊ यांचे पुत्र माधवराव घेतले ते दत्तक.

१

येणेंप्रमाणें हरभटजीचा वंश. यांत सरकारांतून त्रिंबक हरी यांस पंधराशें स्वारांची व गोविंद हरी यांस चार हजार स्वारांची व रामचंद्र हरी यांस पंचवीसशें स्वारांची, येणेंप्रमाणें नेमणूक करून दिल्ली. त्यांचा रोजमुरा सरकार पेठ्याकडून पोंहचत होता. पुढें हिंदुस्थान व कर्नाटकचे वगैरे लांबचे स्वारींत छावणीमुळें मोठ्या मोठ्या पथकास सरकारांतून स्वारींत ऐवज पोंहचवून रोजमुरा पोंहचण्यास अडचण पडूं लागली. सबब सरकारांतून पथक यास सरंजाम नेमून दिल्हा; त्याबरोबर यांसही मिरज प्रांत वगैरे महाल नेमून देऊन यांस कुंटुंब ठेवण्याकरितां मिरजेचा किल्ला दिल्हा आहे.

### १० पानसे.

कैफियत राजश्री दामोदरराव गणेश पानशी सुरुसन सलास सलासीन मयातेन व अलफ. आमचे पणजे तीर्थरूप कैलासवासी यशवंतराव लक्ष्मण पानसी श्रीराजा शाहू छत्रपती यांचे हुजुरातींत तीनशें स्वारानिशीं सरदारी करून होते. नंतर छत्रपती यांनीं श्रीमंत बाजीराव बल्लाळ प्रधान यांस राज्याचे बंदोबस्ताविषयीं आज्ञा केली. ते समयीं आमचे पणजे फौज-सुद्धां पेशवेबहादूर यांचे तैनातीस छत्रपती यांनीं नेमणूक करून दिल्ली. तेव्हांपासून तारीख १४ माहे मे सन १८१८ इसवीपावेतों पेशवेसरकारचे आज्ञेनें वडिलांनीं पुस्त दर-पुस्त कामेंकाजें करून लौकिक महशूर केला. त्याचा तपशीलः— कलमें.

१ तीर्थरूप कैलासवासी यशवंतराव पानशी श्रीमंत बाजीरावसाहेब यांजसमागमें स्वारानिशीं हरवस्त सरकारचाकरी बहुत मर्दुमीनें केली; म्हणोन श्रीमंतांनीं तोफखान्याचे सरदारीचीं वस्त्रें दिल्लीं. तीं यशवंतराव यांनीं आपले वडील बंधू माधवराव यांचे नावे घेऊन फौज व तोफखाना दोन्ही सरदारीचीं कामें आपणच करीत होते. त्या कारकीर्दींत बाजीरावसाहेब व आप्पासाहेब यांजसमागमें वसई वगैरे स्वाऱ्यांत कामेंकाजें बहुत केलीं. मंतर श्रीमंत नानासाहेब पेशवे यांची स्वारी नवाब सावनूरकर यांजवर जाहली. त्या लढाईंत यशवंतराव यांनीं नवाबावर तोफखाना फौजसुद्धां चालून घेऊन, बहुत जवामर्दीनिं कामकाज केलें व त्या लढाईंत भाल्याची जखम पायास लागली. सबब श्रीमंतांनीं अंबारी व साहेबनौबत दिली. कलम.



२ श्रीमंत भाऊसाहेब पेशवे यांची स्वारी गुजराथ प्रांती गेली. त्यांजबरोबर यशवंतराव यांनीं आपले धाकटे बंधु केशवराव यांस फौज व तोफखाना सुद्धां बरोबर दिल्लें. त्यांनीं सरकारचाकरी बहुत पराक्रमानें केली. सबब परगणे विरमगांव व परगणे दसकुरोई प्रांत गुजराथ येथील मजमू व फडणशीचे दरख केशवराव यांचे नांवें श्रीमंत नानासाहेब यांनीं छ ३ जमादिलावल सलास खमसैनांत सनद दिल्ली. त्याप्रमाणें सन समान कुंपणीसरकारचे अंमलपर्यंत दोन्ही दरख निर्वेध चालले. हल्लीं बंद आहेत. येविशीं अर्ज करीतच आहों. व नवाब निजामअल्लीखां यांसी तांदुळजे येथें लढाई जाहली. त्या लढाईत केशवराव यांनीं फौजे-सुद्धां चालून घेऊन, खुद्द नवाबाचे हौद्यांवर जातीनें चढले, तेव्हां खवासनिषस्त यांनीं जोडगोळी मारली, ती कपाळास लागून सरकारकामांत अखेर जाहले. सबब मोठे सरदाराची खिलत यशवंतराव यांस सरकारांतून दिल्ली. कलम.

३ पानिपतचे स्वारीत यशवंतगव यांनीं आपले चौथे बंधु महिपतराव फौज व तोफखानासुद्धां श्रीमंत भाऊसाहेब यांसमागमें दिल्ली. त्यांनीं सरकारचाकरी बहुत शिपाईगिरीनें करून, थोरले लढाईत भाऊसाहेब यांसमागमें गिलच्यावर चालून घेतलें. ते समर्थी तोंडावर तरवारीची जखम लागून, देशीं आल्यावर कांहीं दिवस तोफखान्याचा कारभारही केला. कलम.

४ कैलासवासी यशवंतराव यांस पुत्र भिवराव व जयवंतराव व कृष्णराव व सखारा-मपंत व विश्वासराव व पुरुषोत्तमराव. बंधू सहा, पैकीं कृष्णराव यांस माधवराव यांचे पुत्र झणोन तोफखान्याचे सरदारीचीं वस्त्रें त्यांचे नांवें घेतलीं, व फौजेची सरदारीचीं वस्त्रें भिवराव यांनीं घेतलीं आणि दोन्ही सरदारीचीं कामें बंधूसह करून उत्कृष्ट पराक्रमानें लौकिक संपादिला. हा सविस्तर मजकूर ल्याहावा तर थोडक्या मजकुरांत लिहिण्याचा हुकूम यास्तव कार्यकारण लिहिला जातो जे. कलम.

१ भिवराव फौज तोफखानासुद्धां श्रीमंताबरोबर नवाब निजामअल्लीखां यांशीं राक्षसभुवन येथील लढाईत स्वामीसंनिध बहुत चाकरी केली. ती श्रीमंतांनीं पाहून कोकणांत तोतयानें बंड करून सरकारचा मुलूख फार खराब केला. सबब त्याचे बंदोबस्तास भिवराव यांस सरकारी जरीपटका व मुतालकी शिके कट्यार देऊन साहेबसुभारवाना केलें. त्यांनीं तोतयांचें पारिपत्य करून प्रांताचा बंदोबस्त केला; व श्रीमंत माधवराव नारायण प्रधान यांचे कारकीर्दीत कसबें तळेगांव येथें इंग्रज बहादूर यांशीं लढाई जाहली. त्या लढाईत भिवराव तोफखाना व फौजसुद्धां इंग्रजबहादूर यांजवर चालून घेऊन, तोफेचें निशाण धरून गोळ्यानें इष्टूर साहेब इंग्रज बहादूर यांजकडील सरदार मारिले, व मोरच्यांत हल्ल्यांत बंधूसह कस्त मेहनत करून बहुत जिमामर्दीनें यश संपादिलें. सबब श्रीमंतांनीं चौघडा, जरीपटका व फौजेच्या बेगमीस सरंजाम नव्वद हजार रुपयांचा छ २१ सवाल सन तिसा सवैन मया व अलफांत दिल्ला; व यशवंतरावनानापासून सरकारचाकरी

हरवक्त बहुत मर्दुमीनं होत गेली. सबब इनामगांव देहे सात व कसबें पानगांव येथील मोकासा व किरकोळ जमिनी दिल्या. त्यांच्या सनदा भिवराव व कृष्णराव यांचे नांवें करून घेतल्या.

कलम.

२ जयवंतराव यशवंत श्रीमंत दादासाहेब यांजबरोबर गोहदचे स्वारींत मोठें कामकाज करून अवल निषाण गोहदचे किल्ल्यावर तोफखान्याकडील सही केलें व महीचे लढाईत इंग्रजबहादूर यांजवर फौजसुद्धां चालून घेतलें. तें समयीं जयवंतराव यांस गोळीची जखम लागली; व आनंदमोगरी व बावापीरचा घाट व रासदेर वगैरे लढाईचीं कामें जयवंतराव यांनीं फार केलीं; सबब श्रीमंतांनीं तोफखान्याचे मजमुचा दरख व मौजें सांगवी तरफ सांडस हा गांव मातोश्रीचें खर्चाबद्दल जयवंतराव यांचे नांवें इनामपत्रें करून दिलीं. तो गांव शके १७४२ पावेतां चालला. हल्लीं कंपनी सरकारांतून जम आहे. येथिशीं अर्ज करीतच आहों.

कलम.

३ कृष्णराव कर्नाटकांत फौज व तोफखाना सुद्धां प्रांताचे बंदोबस्ताकरतां हमेश राहात होते. त्यास ज्यंबक विश्वनाथ पेठ्ये यांची स्वारी हैदर नाईक यांजवर जाहली. त्यास कृष्णराव यांनीं कारखान्यासुद्धां मदत केली. मोतीतलावावर कृष्णराव मयसलतनतसुद्धां चालून घेऊन हैदर शिकस्त केला, व शिरं येथील लढाईत स्वामीकरितां बहुत कामकाज केलें. हिरेहाळ तालुके डंबल वगैरे.....सरकाराशीं बहाली सबब हिरेहाळ ठाण्याशीं लढाई घेऊन हल्ला केला. त्या हल्ल्यांत कृष्णराव यांस गोळीची जखम लागून सरकार कामावर अखेर जाहले. सबब तालुके डंबलपैकीं मौजें गंगापुर हा गांव इनाम करून दिल्या. तो चालतच आहे.

कलम.

४ सखारामपंत, नाना फडणीस यांजबरोबर कर्नाटकांत किल्ले बदामी येथील हल्ल्यांत मोठें कामकाज करून अवल निषाण तोफखान्याकडील सही केलें व स्वारी श्रीरंगपट्टण विद्यमान हरी बल्लाळ यांस तोफखाना फौजसुद्धां मदत करून सरकारचाकरी बहुत केली. व त्या स्वारींत इंग्रजबहादूर यांनीं पेशवे सरकारांत तोफा नग १७ नजर दिल्या. त्या पुणें मुक्कामीं घेऊन आले. सरकारचाकरी दरपय बहुत जाहली. याची खिलत खुद्द श्रीमंत सामोरे येण्याचा दरजा दिल्या. व नवान निजामअल्लीखां यांसीं लढाई खड्यानजीक जाहली. त्या लढाईत सखारामपंत यांनीं बहुत सेवाचाकरी केली. सबब सरकारांतून जातीस तैनात इजाफा रुपये तेवीस हजार छ ६ साबान खमस तिसैनांत करून दिली. त्याप्रमाणें सन समान अशर लढाईअखेर सखारामपंत यांचे पुत्र यशवंतराव यांजकडे चालली. पुढें कुंपणी सरकारांतून अकरा हजार रुपयांचा सरंजाम करून दिल्या. तो सबा अशरीनपावेतां चालला. नंतर त्यांची स्त्री यमुनाबाईंनीं दत्तपुत्र वामनराव घेतले. त्याजकडे हल्लीं इनाम वृत्तीचें उत्पन्न मात्र आहे. तें अदमासें हजार रुपयेपावेतां. त्यास सरकारांनीं वडीलांचा लौकिक ध्यानीं आणून कांहीं बंदोबस्ताची तजवीज जाहली पाहिजे. कलम

५ विश्वासराव यशवंत फतरगडचे स्वारींत फौज व तोफखानासुद्धां विसाजी कुम्भ बिनिवाले यांस मदत करून सरकारचाकरी बहुत केली, व कर्नेल माडरसाहेब इंग्रज बहादूर लढाईच्या इराद्यानें बोरघाटनजीक आले. सबब सरकारांतून विश्वासराव यांस तोफखाना व सरकारी सलतनतसुद्धां पाठविलें. तेथें सरकारचाकरी बहुत करून इंग्रज बहादूर माधारी गेले. व श्रीमंत नारायणराव साहेब पेशवे अखेर जाहल्यावर पुरंदर वगैरे मसलतींत सखाराम भगवंत व नाना फडणीस व विश्वासराव पानसी मिळोन सर्व राज्याचा कारभार सरकारी मखलासीसुद्धां करीत होते. व महादजी शिंदे यांस देशी सरंजाम विश्वासराव यांनीं सरकारांत... करून देविला. सबब शिंदे यांनीं मौजें नाणवली तर्फे चाकण हा गांव इनाम करून दिल्या. तो सन १८१८ लढाईअखेर चालला. कलम.

६ पुरुषोत्तमराव हनेश पुणें मुक्कामी राहून मोहीमाशिर सरदारांस तोफखान्याकडील सरंजाम रवाना करणें व हुजूर श्रीमंतजवळ राहणें व फौज तोफखानासंबंधीं हिशेब-कितेब वगैरे सर्व कारभार करीत होते; व सरकारांतून खेरीज पागा पुरुषोत्तमराव यांचे नांवें करून दिली. कलम.

५ गणपतराव विश्वनाथ आमचें तीर्थरूप श्रीमंत कैलासवासी माधवराव नारायण प्रधान यांचे कारकीर्दींत सखाराम यशवंत तोफखाना फौजसुद्धां कारभार करीत होते. परंतु बदामी पट्टण वगैरे स्वारीस मोहीमाशिर राहत होते. हुजूर पुणें मुक्कामी श्रीमंतजवळ तोफखान्याचा कारभार गणपतराव करीत होते. नंतर नवाब निजामअल्लीखां यांजवर स्वारी होऊन लढाई खडर्चानजीक जाहली. त्या लढाईत आघाडीस फौज रवाना जाली. त्याजबरोबर तोफखानासुद्धां गणपतराव जाऊन सरकारचाकरी बहुत जुमामदीनें केली. सबब जातीस तैनात इजाफा रुपये तेरा हजार सहाशें एकतीस छ ६ सावान खमस तिसैनांत करून तोफखान्याचे मखलाशीचें काम करार करून दिलें. पुढें श्रीमंत बाजीरावसाहेब गादी नवीन जाहले. सखारामपंत परलोकवासी झाले. नंतर फौजेचा सरंजाम भिवराव यशवंत यांचे नांवें होता. तो छ ६ जिल्हेज सन सबा तिसैनांत गणपतराव विश्वनाथ व यशवंतराव सखाराम यांचें नांवें करून दिल्या. व तोफखान्याचे सरदारीचें काम दरोबस्त गणपतराव यांनींच केलें. कर्नाटकांत कोल्हापूरकर राजे यांजवर फौज व तोफखान्यासुद्धां गणपतराव जाऊन रामचंद्र परशराम वगैरे फौजा घेऊन, त्यांशीं मदत करून सरकारचाकरी बहुत केली. करवीरकरांशीं तह जाहल्यानंतर बाळकृष्ण गंगाधर यांनीं फौज जमा करून ..... मुख्ख खराब केला. सबब नानापुरंदरे व बापू गोखले फौजसुद्धां .... कसवें मोहद येथें बाळकृष्ण गंगाधर याशीं लढाई घेऊन... केला. व जिवाजी येशवंत शिंदे यांजकडील यांनीं... मुख्ख खराब केला. त्यांचेही पारिपत्य ... करून बुडविला, त्या समयीं वडीलापाशीं फौज... ... तोफखानासुद्धां सलतनत अजमासें पन्नास हजार यानिशीं... गलगले व गुड्डवहाळ वगैरे बहुत ठाणीं व किल्ले पेशवेसरकारांशीं बदलून होते. त्यांचेही पारिपत्य करून सरकारअंमल

जारी केला. व यशवंतराव होळकर यांचे लढाईत तोफखान्याचे तयारीअन्वये चाकरी केली. त्याअलीकडे श्रीमंत बाजीरावसाहेब यांनी कदीम सरदार यांजवर गैरमर्जी व राज्यांत कामेकाजेही सरकार कंपनीचे दोस्तीमुळे प्रसंग नाहींसा जाहला. ह्मणोन तोफखान्याचे बेगमीस सरंजाम व इतलाख अजमासें अठरा वीस लक्ष रुपये व फौजेस सरंजाम व जातीचा सरंजाम व गड किल्ले वगैरे यांची जमी छ २० रजब समान मयातैनांत केली; आणि तोफखान्याचे कामास कार्याकारण प्रसंगोपात हुजुरून खर्चास देत होते. याप्रमाणें जातीसही पावत होते. सन समान अशरांत कंपनी इंग्रजबहादूर व पेशवेसरकारची लढाई जाहली. तेव्हां पुणें मुक्कामी गारपिरावर महांकाळीसुद्धां तोफा नेऊन इतलमगदूर सामाना-अन्वये कामकाज केलें. पुढें श्रीमंत निघोन देशावर गेले. ते समयी सरकारचे आज्ञेने गोखले वगैरे सरदार यांजकडील पायदळ व चंदन वंदन येथे तोफखाना धऊन आह्मी होतो. त्या तोफखान्यापैकीं पांच तोफा व नवेंही फौजपायदळ ठेवून मेहेरबान जनरल मंदरोलसाहेब बहादूर कर्नाटकांतून सात पलटणें व नवाब पोलादजंग बहादूर यांजकडील फौज दुल्लेखान मदत घेऊन लढाई सोलापूर मुक्कामी जाहली. त्या लढाईचे पूर्वी सीना व भीमा मध्यदेश घेऊन फौज व तोफखान्यासुद्धां खर्चाना बंदोबस्त करून देतां ह्मणोन इंग्रजबहादूर यांजकडील बोलणें आलें होतें. परंतु आपले खानदानीवर नजर देऊन लोभ न धरतां तारीख ६ माहे... सन १८१८ रोजीं लढाईच पेतली. त्या लढाईत प्रथम बसते घोडीस गोळा लागून ठार पडली. तेव्हां सरदारच पडले असें फौजेच्या मनांत येऊन बेहवा गर्दी जाहली. परंतु खैर होऊन फौज. पायदळ एकत्र करून इंग्रजावर चालून घेतलें. तों उजवे हातास गोळीची जखम लागून, बहुत जेरीस येऊन, दान घटका आराम होण्याकरितां × × × इंग्रज बहादूर यांनीं तळावर चालून × × × × × तदनंतर किल्ल्यातून लढाई सुरू × × × लढवाई सरंजाम वरकड बंदोबस्ताप्रमाणें × × × × सबब तहाचें बोलणें उभय पक्षां होऊन तहनामा × × × छ ८ रजब सन समान अशर तारीख १४ माहे मे सन १८१८ इस-वीत जाहला. त्या तहनाम्याचें चौथे कलमांत सरंजामाचा वगैरे पेशजीप्रमाणें बंदोबस्त करून घ्यावा असा करार ठरला असतां, हनराबल एलफिनस्टन साहेब बहादूर यांनीं तेरा हजार दोनशें अठरा रुपयांची जहागीर व पेनशन मिळून करून दिलें. तें आश्विन शुद्ध १० शके १७४७ पावेतो वडील विद्यमान चाललें. पुढें तो सरंजाम पेनशन आमचें नांवें चालवावें, परंतु ते समयी आम्ही दौलतराव शिंदे अलिजाबहादूर यांजपाशीं होतो. पुणें मुक्कामी मातुश्रींनीं आमचा गैरवाका समजून आपलें नांवें दोन हजार रुपये दरसाल पेनशन करून घेतलें. तें हल्लीं चालतच आहे. वडिलांचा काळ जाहला ह्मणोन आम्हीं पुणें मुक्कामी आलों. तों मातुश्रींनीं सरकारांत गैरवाका समजाविला होता. त्याची चौकशी तारीख २८ सपटंबर सन १८२७ या रोजीं होऊन इनामवृत्ति, घर, वाडा, आमचा आह्मांस देविला. त्यास इनामवृत्तीचें उत्पन्न अजमासें हजार रुपयेपर्यंत आहे. सबब जातीचे बंदोबस्ताविषयी

अर्ज केला असता, विलायतेस लिहिलें गेलें आहे. उत्तर आलें ह्मणजे बंदोबस्त करून देऊं. ह्मणोन सन १८२९ पासून हुकूम होत आहे. त्यास वडिलांचा लौकिक कसा हा मजकूर कैफियतीवरून सर्व ध्यानीं आणून, आमचें त्या लौकिकाअन्वये चालवणें सरकाराकडे आहे. आजपर्यंत सरकारचे भरोशीयावर हजारों रुपये कर्जभरी होऊन दिवस गुजरले. इतःपर सर्व बरोबरीचे सरदारांत खावंदाचे कदमापाशीं वडिलांचे लौकिकाप्रमाणें बंदोबस्ताखेरीज राहणें फार मुष्किल आहे. तेविशीं तजवीज सरकारांनीं करून वडिलांकडे सरंजाम चालत होता, त्याप्रमाणें आमचा आह्मांकडे चालविला पाहिजे. कलम.

येकूण पांच कलमांत वडिलांनीं ... व लौकिक महशूर करून सरंजाम व इनाम .....त्याचा तपशील लिहिला आहे, व पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती. व हल्लीं कंपनीसरकारांतून ... त्यांत कंपेश तफावत काय आहे ... .. येविषयीचे उत्तरः— कलम.

१ पेशवेसरकारांतून चौघडा, जरीपटका, आदिकरून साहेब सलतनतची सरदारी करीत होतों. कलम.

२ कंपनीसरकारांतून वडिलांचे जातीस सरंजाम देऊन चालविलें होतें. कलम.

३ हल्लीं आह्मांस सरकारांतून सरंजाम किंवा पेनशीन कांहीं एक चालत नाही. फक्त सरदार लोकांचे दुसरे प्रतीत जाणून दसऱ्याचा पोषाख वडिलांप्रमाणें देतात. येविशीं अर्ज सदरहू कैफियतीचे पांचवे कलमांत लिहून दाखल केलाच आहे. कलम.

३ येकूण तीन कलमांवरून कंपेश तफावत ध्यानीं आणून वफकत फर्माविली पाहिजे.

### ११ पावसकर देशमुख.

साहेब मुषफक मेहेरबान दोस्तां ज्यान वार्डीनसाहेब बहादूर डिपूटी एजंट जिल्हा दक्षिण दाम अलताफ हु.

छ अजी साहेब विनायकराव चिंतामण देशमुख सलाम बादज सलाम खैरयत अंज्याम येथील खैरसला तागायत छ १ सफर जाणोन आपली खैर व आफियत कलमीं करीत असलें पाहिजे. दिगर साहेबीं तारीख ८ माहे सपटंबर व तारीख १ माहे जून येकूण दोन पत्रें पाठाविलीं तीं पावलीं. त्यांतील हशील आपली खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर झाला. ते लिहून पाठवावें ह्मणोन कलमी केलें, तें कळलें. त्यास आह्मी पावस महाल तालुके रत्नागिरी प्रात कोंकण येथील देशमुख, पुरातन वतनदार, आमचे आजे तीर्थस्वरूप कैलासवासी लक्ष्मण नारायण यांनीं पेशवेसरकारांत श्रीमंत कैलासवासी नानासाहेब यांचे वेळेपासून सरकारचाकरी एकनिष्ठें करीत आले. त्यांस बहुमान इनाम गांव पुरंदर मुक्कामीं श्रीमंत कैलासवासी सवाई माधवरावसाहेब यांचे वेळेस सरकारांतून दिल्या. पुढें आमचे तीर्थरूप कैलासवासी चिंतोपंत रावजी देशमुख सरकारचाकरी बहुत

विवस करित आले. त्यांची बरहक चाकरी पाहून श्रीरंगपट्टणचे स्वारींस फडणिशीचे कामावर होते. तेव्हां सरकारआज्ञेवरून कैलासवासी परशरामपंतभाऊ पटवर्धन मिरजकर यांनीं पालखी दिल्ली. त्यावर श्रीमंत राजश्री बाबासाहेब यांजवळ मुखत्यारीनें कारभार केला. त्यांनीं मेहेरबानी करून जातीस तैनातेंत सरंजाम गांव वगैरे लावून दिल्ले. त्यांची बेरीज १०१३७ रुपये दहा हजार एकशें सदतीस रुपये सन सीत मयातैनचे सालीं करार करून दिले. तेव्हांपासून सन सबा अशर मयातैनपावेतो चालत आले. पुढें कुंपणीसरकारास पेशवेसरकारांतून मुलूख लावून दिल्ले. ते वेळेस परगणे नसरापूर तालुके लोहोगड येथें नेमणूक नक्त रुपये ६१७॥. सहाशें साडे सत्रा कुंपणीसरकारचे अंमलांत गेले. सबब दुसरीकडे नेमून देण्याविषयीं पेशवेसरकारची आज्ञा जाहली होती. परंतु नेमून घावयाचे राहिले. बाकी रुपये ९५१९॥. नऊ हजार पांचशें साडे एकोणीस रुपयांचा गांवचा अंमल व नेमणुकांचा ऐवज आह्वांकडे चालत आल्याप्रमाणें चालत आहे. दरम्यान होंळकर दंग्यांत सरकारचाकरीमुळें कसाक बहुत पडला, हे श्रीमंतांचे नेक नजरेस येऊन मेहरबानगी करून कर्ज वारावयाबद्दल रुपये १५०००० दीड लक्ष रुपये सन अर्बा अशार मयातैनांत बक्षीस दिल्लें. याप्रमाणें मजकूर आहे. साहेबास जाहीर होय. ज्यादा काय लिहिणें ? प्यार मोबत असो दिजे. हे किताबत.

## १२ पारसनीस.

( अ )

साहेब मुष्फक मेहेरबान करम फर्माय दोस्तां हेनरी ब्रौण साहेब बहादूर एजंट जिल्हा दक्षण सलमा हू.

छे अजीसाहेब कृष्णराव बापूजी पारसनवीस सलाम एंके येथील खैरयत जाणून आपली षादमानी हमेषा कलमी करीत असलें पाहिजे. दिगर आसाहेबाकडून पत्र नंबर १०६५ तारीख २६ माहे आगष्ट सन १८५१ इसवीचें येऊन, त्यांत तारीख ३० जुलई सन मजकुरीं सरकारचा हुकूम आला कीं, आपणास मरातब पारसनवीस आहे, हें कोणत्या सबबीनें कोणाकडून प्राप्त जालें, त्याचा व एकंदर खानदानी व पदवी थोरपणाचा इतिहास दाखलेनिशीं व त्याजबरोबर दाखला असेल तोही पाठविला पाहिजे व ऐकीव मजकूर असल्यास तसेंही लिहून यावें. ह्मणोन वगैरे मजकूर लिहिण्यांत आला. त्यावरून खालीं कलमवार मजकूर लिहिला आहे:—

१ कैलासवासी छत्रपती महाराज यांचेजवळ आमचे मुळ पुरुष भिमरावजी हे फारशानीविसीचें काम करीत होते. तेव्हां छत्रपती महाराज यांनीं भिमरावजीस फारशीनवीस ह्मणोन मरातब दिल्ला. पुढें छत्रपती महाराज यांनीं बाळाजी विश्वनाथ यांस पेशवे व प्रधान पदवीचा अधिकार दिल्ला. नंतर बाळाजी विश्वनाथ यांचे पुत्र बाजीराव बल्लाळ पंत प्रधान

यांनीं आमचे मुळ पुरुष भिमरावजीचे पुत्र, बापूजी भिमराव यांस, फारशी लिहिण्याचें कामा-  
करितां महाराजापासून मागून घेतलें, आणि छत्रपती महाराज यांनीं मरातब दिल्या. त्याप्र-  
माणें पंत प्रधान यांनीं चालविला. याप्रमाणें मजकूर ऐकण्यांत आहे. तो लिहिला आहे.  
याविषयीं दाखले नाहींत. कारण पेशजी चाकणचा किल्ला आमचे वडिलाकडे होता. तेव्हां  
कागदपत्र किल्ल्यांत राहत होते, ते लुटीस गेले असें आमचे वडील सांगत होते. यास्तब  
ऐकिव मजकूर लिहिला आहे. येविशीं माहितगार लोकांकडून माहितगारी करून घ्यावी.  
तर सदरहू कारकीर्दीतील मनुष्य आमचे पाहण्यांत हल्लीं कोणी नाहीं. कलम.

२ बापूजी भिमराव हक जाल्यावर त्यांचे पुत्र कृष्णराव बापूजी हे आमचे पणजे व  
आजे नारायणराव कृष्ण व तीर्थरूप यांनीं बाजीराव बळाळ पंतप्रधान यांचे कारकीर्दी-  
पासून बाजीराव रघुनाथ यांचे कारकीर्दीअखेर होय तोंपर्यंत, हरएक रयासर्तीतून पारशी  
पत्रे येत गेल्याचे जबाब व पंतप्रधान यांकडून पत्रे दिल्ली सरकार व कुंपणी सरकार व  
निजाम सरकार व फरासीस व टिपू सुलतान व चिनापट्टण वगैरेस व हरएक कामाप्रकर्णीं  
ताकीदपत्रे व दस्तकें, तहनामे वगैरे, फारशीनिवीशींचें काम हिंदुस्थान दक्षणेचें आमचे  
खानदानींतून पुस्त दरपुस्त करीत आले. येविशीं दाखले फारसी आह्वांपाशीं बहुत  
आहेत. त्यापैकीं कांहीं कांहीं कागद समक्ष आणून दाखवूं. कलम.

३ पंतप्रधान यांचे कारकीर्दीत तैनात जाबता सुरुसन खमस खमसैनांत आमचे पणजे  
कृष्णराव बापूजी यांचे नांवें जालेला, व आमचे आजे नारायणराव कृष्ण यांचे नांवें सुरुसन  
समान समानीन मया व अलफ या सालांत तेनात जाबता जाहला आहे त्याचे दाखले  
पेशवे सरकारचे मराठी दमरीं आहेत. ते पाहणें ह्मणजे फारशीनिवीशीची पदवी व मरा-  
तब ध्यानास येईल.

४ हल्लीं मराठी कागदाच्या नकला पाठविल्या आहेत. त्या बितपशीलः—

१ आमचे पणजे कृष्णराव बापूजी यांचे नांवें पत्र आलें तें तपशीलः—

२ माधवराव बळाळ पंतप्रधान यांचें छ २६ रबिलाखर व छ १० रजब.

१ बाळाजी जनार्दन उर्फ नाना फडणीस यांचें छ २३ जमादिलावल.

१ महादजी शिंदे यांचें छ ११ सवाल.

४

१ आमचे आजे नारायणराव कृष्ण यांचें नांवें पत्रे आलींः—

१ माधवराव बळाळ पंतप्रधान यांचें छ ८ सावान सीत सितैन मया व अलफ.

२ रघुनाथ बाजीराव पंतप्रधान यांचें छ ९ सावान सीत सितैन मया व  
अलफ १ व छ १९ रबिलावल १.

१ महादजी शिंदे यांचें छ १७ जमादिलावल.

४

सदरहू आठ पत्रांच्या नकला पाठविल्या आहेत. यांतील मजकुरावरून आमचे एकंदर खानदानीचा व थोरपणाचा मजकूर समजेल. सदरहू कागद अस्सल पाहण्याजी मजी असल्यास समक्ष आणून दाखवू.

येकूण चार कलमें लिहिलीं आहेत. तारीख ५ माहे नवंबर सन १८५१. ज्यादा काय लिहिणें ? प्यार मोहोबत असो दिजे, हे किताबत.

अ.

राजश्री याविराजित राजमान्य राजश्री कृष्णराव बापूजी स्वामी गोसावी यांस—

पेण्य माधवराव बल्लाळ प्रधान नमस्कार विनंती उपरी येथील कुशळ जाणून स्वकिये लिहिणें विशेष. तुझीं पत्र पाठविलें तें पावलें. लिहिलें वर्तमान कळलें. तुम्ही पत्रां संदेह घेऊन लिहिलें कीं, मी तीर्थस्वरूप राजश्री दादासाहेबाकडे जातो, तेथें सरकार कामच करीन ह्मणून लिहिलें. त्यावरून अपूर्व वाटलें. पहिल्यापासून सरकार काम करीत आलां, व पुढेही कराल हा भरंवसाच आहे. असें असून संदिग्ध प्रकार लिहावयाचें कारण काय ? प्रस्तुत तुम्ही कोठें आहां, वडिलांकडे कधीं जाणार, हें लिहिणें. वडिलांकडे गेलां असलां तरी तेथील मजीं कशी आहे, इकडे कधीं येणार; भोंसले, गायकवाड येतात किंवा नाहीं; आणखी सरंजाम्याच्या फौजा जमा जाहल्या किंवा नाहीं; आबा वडिलांकडे कधीं जाणार; वडिलांनीं मशारनिल्लेस बोलाविलें आहे किंवा नाहीं; हें सविस्तर वर्तमान लिहून पाठवणें. इकडील वर्तमान तर धारवाड जेर जाहलें. सुरंगही तयार एका दोन दिवशीं होतील. सत्वरच काम व्हावें असें आहे. मीरफैजुल्ला धारवाडचे कुमक करावयास्तव येतो, अशी गरम अवाई आहे. यास्तव गोपाळराव त्यांचे मार्गावर ठेविले आहेत. आणखीही फौज त्यांचे वाटवर बातमीस आहे. किल्यांतील प्रकार तरी आंतील कानड्याचें अवसान गेलें आहे. परंतु गाडदौ लोक अद्याप दमानेंच आहे(त). आणखी, मीर फैजुल्लाचा भाऊ आंत आहे. तो मजबूत आहे, यास्तव दम धरला आहे. आंत शिसें नाहीं, यास्तव तांच्याच्या गोळ्या मारीत आहे. आतां सत्वरच काम होईल. कळावें. रवाना छ २६ रबिलाखर बहुत काय लिहिणें, हे विनंती.

ब.

राजश्री कृष्णरावजी गोसावी यांस—

छ अखंडीत लक्ष्मी अळंकृत राजमान्य स्नेहांकित महादजी शिंदे दंडवत विनंती उपरी येथील कुशळ जाणोन स्वकीय कुशळलेखन करीत जावें. विशेष. सांप्रत तुझांकडून पत्रें येऊन वर्तमान कळत नाहीं, तरी सविस्तर ल्याहावें. इकडील वर्तमानः—तीर्थस्वरूप मातोश्री सगुबाई देशीहून फौजसुद्धां माळवेप्रांतीं आले. हें वर्तमान ऐकोन कालपीपासून माघारे फिरून मजल दरमजल आवंतिकेस आलों. येतांच मातुश्रीची व आमची भेट जाहली. ती आह्मी एकत्र होऊन येथास्थित बंदोबस्त केला. येथून कूच करून हिंदुस्थानप्रांते जातो. वरकड कित्येक वर्तमान, राजश्री शिवाजी विठल पाठविले आहेत हे



सांगती(ल), त्याजवरून सविस्तर कळेल. तुम्ही दरबारीं आहां; आह्मांकडील कामाकाजा-विशींचा, मशारानिल्हे सांगतील त्याप्रमाणें साहित्य करून, बंदोबस्त करून दिल्या पाहिजे. आह्मांकडील कामकाजाविशीं आपण चुकणार नाहींत, परंतु सूचनार्थ लिहिलें असे. रवाना छ ११ सवाल बहुत काय लिहिणें, हे विनंती.

### १३ पुणेंकर पिंगळे.

यादी नरहरराव शामराज पिंगळे मुक्काम पुणें. सुरुसन अर्बा सलासीन मयातैन व अलफ. आपले खानदानीचे बढतीचा व आपले वाडिलांकडे सरंजाम किती कोणत्या तारखेस चालू जाहला तें, व पेशवे सरकारांत आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कंपनीसरकारांतून चालत आहे त्यांत कंपेरा काय, व हल्ली सरंजाम आपलेकडे काय चालतो, याचे मजकुराची कैफियत लिहून यादी पाठविली पाहिजे अंस पत्र आलें. त्याजवरून कैफियत येणें-प्रमाणें ब्रितपशीलः—

कलमें.

१ आमचे खानदानीची बढती व लौकिक महशूर जाला तो मजकूर. आमचे आज गोविंदराव भगवंत पिंगळे हे कृष्णराव काळे पेशवेसरकारचे मुत्सदी यांजकडून सरकारांत थोरले रावसाहेब पेशवे असतां कामकाजांत वागत असत. तेव्हां गोविंदराव हे अकलवंत व हुशार व विश्वासू पाहून ममलतीचे कामांत नाना फडणीस व सग्वारामबाप् व काळे हे घेऊं लागले. ते समयीं नवाब निजामअल्लीखां बहादूर यांजकडे वकिलीस पाठविले. ते समयीं पेशवेसरकारचें काम करून नवाब यांची कृपा संपादिली. त्यावरून नवाब निजामअल्लीखां बहादूर यांनी मौजें निबगांव व सांगवी, भाळवणी तालुकें टेभुर्णी या तीन गांवांचा जाहागिरीचा अंमल वंशपरंपरेनें इनाम सन ११७९ सालीं दिल्या. तो मजकूर पेशवेसरकारांत त्या सालीं जाहिर केला. त्या दिवसापासून बढती व लौकिकही वाढत चालला; जामगां-वच्या सनदापुढें इनामाच्या सन ११९८ सालीं करून घेतल्या. परंतु वेवाट सन ११७९ सालापासून आम्हांकडे चालली.

कलम.

१ सरंजाम फौजेस किंवा जातीस मिळाला त्याचा मजकूर, आह्मी मुत्सदी सबब आमचे जातीस सरंजाम मिळाला. येणेंप्रमाणें.

कलम.

१ सवाई माधवरावसाहेब पेशवे यांचा जन्म जाहल्यावर दौलतीचा बंदोबस्त नाना फडणीस यांनीं केला. त्या वेळेस सरकारकामांत नाना फडणीस यांचे मर्जीनरूप मसलतीचीं कामकाजें केलीं. सबब पेशवे सरकारांतून जातीचे नेमणुकीबद्दल तैनात जाबता दाहा हजार रुपयांचा करार करून सुरुसन तिसैन मया व अलफ सन ११९० सालीं दिल्या. त्यांत हजार रुपये फालखीबद्दल व नऊ हजार जातीचे खर्चास येकूण दहा हजार पैकीं इतलाख रुपये ५९५० व गांव चालीस पन्नास रुपयांचे दिले आणि गांवास सनदा तारीख २७ माहे सवाल सन ११९० सालीं दिल्या. पैकीं नवाब निजामअल्लीखां बहा-

दूर यांजकडील इनाम तीन गांव मिळविले. ते बेरीज २५५० धरून बाकी नवे पेशवे सरकारांतून गांव मौजे वनगली परगणे इंदापूर व मौजे शेलारगांव परगणे कांठी स्वराज्य व जहागीर व मौजे हिंगणगांव बेनवडी येकूण बेरीज रुपये १५०० येकूण इनामी व सरं-जामी मिळोन चार हजार पन्नास रुपये यांचे गांव लावून देऊन त्याप्रमाणे दहा हजारांचा तैनात जाबत्याप्रमाणे आह्वांस दिल्या दिवसापासून वैवाट आह्वांकडे सन १२१५ अखेर चालली. पुढे इतलाख ऐवज देणे तो ५९५० रुपये बंद जाहले, आणि गांव चार हजार पन्नास रुपयांचे सन १२२७ लढाईअखेर पेशवे सरकारांतून निर्वेध आह्वांकडे चालले.

कलम.

१ खडर्ग्याचे लढाईत नवाबाकडील तह पेशवे सरकारचा जाहला. त्या कामांत आमचे आजे गोविंदराव भगवंत होते. सबब आमचे तीर्थरूप शामराव गोविंद यांशीं पालखी वगैरेबद्दल दोन गांव सन १२०५ सालीं जहागीर दिले. तालुके पेडगांव परगणे कडेवलीतपैकीं मौजे बरडगांव बेरीज रुपये १५८० व मौजे करंजे बेरीज रुपये १५०० एकूण तीसशें ऐशी रुपये यांचे दोन गांव दिले. त्यांची वहिवाट सन १२०५ सालापासून सन १२१७ अखेर आह्वांकडे निर्वेध चालली. पुढे सन १२१८ सालीं नवाबाचे सरकारचे कमाविसदार यांनीं जम केले.

कलम.

१ सन १२०८ सालीं गोविंदराव भगवंत आमचे आजे वैकुंठवासी जाहल्यावर बाजीरावसाहेब यांचे कारकीर्दीत आमचे वडील चुलत व्यंकटराव गोविंद यांशीं वकिलीचीं वस्त्रे पहिल्याप्रमाणे तैनात जाबता कायम ठेवून पेशवेसरकारांत दिलीं. नंतर त्यांनीं दोन तीन वर्षे वकिलीचें कामकाज केलें; आणि सन १२११ सालीं ते मृत्य पावले. पुढे आमचे तीर्थरूप शामराव गोविंद यांसी श्रीमंत बाजीरावसाहेब यांनीं वकिलीचीं वस्त्रे नवाबाकडील दिलीं, आणि पहिल्याप्रमाणे दहा हजार रुपयांचा तैनात जाबता कायम ठेविला. नंतर आमचे तीर्थरूप सरकारहुकुमावरून नवाबाकडे गेले. तेसमयीं आमचे आजे यांजपासून सदाशिव माणकेश्वर जबाबनिशींचें कामावर कारकून आह्वांपाशीं होते. ते माहितगार सबब त्यांस बरोबर घेऊन आमचे वडील हैदराबादेस नवाब यांजकडे वकिलीचे कामावर गेले. नंतर होळकराची लढाई पुण्यावर होऊन श्रीमंत वसईस गेले. ते समयीं भगवंतराव गोविंद आमचे चुलते यांस नवाब यांजपाशीं वकिलीचें कामावर ठेवून, आमचे वडील शामराव गोविंद हे सदाशिवपंत भाऊ यांशीं बरोबर घेऊन नवाब यांजपासून निघून वसईस श्रीमंतांपाशीं गेले. पुढे कंपनीसरकारचा व श्रीमंत बाजीरावसाहेब यांचा तह झाला. त्या बोलण्यांत सदाशिवपंत भाऊ होते. त्याजमुळे श्रीमंत पुणे मुक्कामीं आल्यावर भाऊस दिवाण-गिरी दिली, आणि आमचे तीर्थरूपाकडे वकिलीचें काम होतें. त्याप्रमाणे ठेविलें, त्याची वहिवाट आह्वांकडे सन १२१४ अखेर चालली तोंपावेतो दहा हजार रुपये तैनात जाबत्याप्रमाणे इतलाख व गांव मिळून चालले. पुढे सन १२१५ सालीं नानांनीं माणकेश्वर

यांजकडे वकिलीचें काम नवाबाकडील आह्मांकडून दूर करून सांगितलें. आणि इतलाख ऐवज आह्मांस पावत होता, तो बंद करून सरंजाम इनामगांवसुद्धां आमचे तीर्थरूप शामराव गोविंद यांजकडे चालविला; व भगवंतराव गोविंद याचे नांवें नवीन गांव पालखीचे सरंजामाकरितां मौजे खांबगांव माणकेश्वर यांचे विद्यमानें सन १२१५ सालीं दिल्या. त्याची वहिवाट आमचे नांवें सन १२२७ अखेरसालपावेतां माणकेश्वर यांचे विद्यमानें चालली.

कलम.

१ कंपनी सरकारचा अंमल जाहल्यावर आह्मांकडील इनामी व सरंजामी गांव दरोबस्त नवाबाकडील व पेशवेसरकारचे होते, ते जप्त जाहले. पैकीं कंपनीसरकारांतून नवाबाकडील तीन गांव इनामी होते. ते मोकळे करून घेऊन आह्मांकडे चालविले व सरंजामाचे दोन गांव शेलारगांव व वनगली सुट तोंपावेतां दरसाल हजार रुपये पेनशन करून दिलें. पुढे दुसरे साली शेलारगांव व वनगली हे दोन गांव सरंजामी आमचे आह्मांकडे चालविले. तेव्हां पेनशन बंद केलें. त्या दिवसापासून पांच गांवची वहिवाट आह्मांकडे आमचे तीर्थरूप सन १२३५ अखेर वैकुंठवाशी झाले तोंपावेतां चालली. पुढे सन १२३६ सालापासून शेलारगांव, वनगली हे दोन गांव सरंजामी जप्त केले, आणि इनामी मात्र निंबगांव व सांगवी, व भाळवणी अडीच हजार रुपयांचे तीन गांव आह्मांकडे चालविले आहेत. कलम.

येणेंप्रमाणें जातीचा सरंजामाचा मजकूर.

कलम.

१ हल्ली सरंजाम काय चालतं याचा तपशील:—त्यास इनामी तीन गांव अडीच हजार रुपयांचे मौजे निंबगांव व सांगवी व भाळवणी हे आह्मांकडे चालत आहेत. याखेरीज दुसरे काहीं चालत नाहीं.

कलम.

१ पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कंपनीसरकारांतून चालत आहे. यांत कंपेश व तफावत काय आहे तें, वगैरे मजकुराचा तपशील पेशवेसरकारांत आमचे आज व तीर्थरूप शामराव गोविंद हे मुत्सद्दीगिरीचे व वकिलीचे कामांत मोठ्या अब्रुनें वागत होते व सरकारही मेहरबानगी ठेवीत होते. दसऱ्याबद्दल बहुमानाचे पोषाख साल दरसाल घेत होते; व मुत्सद्दीगिरीचें कामकाज सरकार आमचे हातून घेत असत; सबब आमचा मोठेपणा अस. त्या वेळची जुनी पदरची कारकूनमंडळी दहा बौरा असामी आहेत, त्यांचें संरक्षण होत असे, व आमचेही लौकिकाप्रमाणें चालत असे. हल्लीं कंपनीसरकारच्या अंमलांत आमचे तीर्थरूप शामराव गोविंद होते तोंपावेतां सन १२३५ अखेर बहुमानाचा दसऱ्याचा पोषाख आह्मांस पावत आला. व पेशजीप्रमाणें आमचा सन्मानही राखिला. परंतु कामकाज आमचे हातून घेतलें नाही. सबब कामकाजाचा बोध आह्मांकडे राहिला नाही. पुढे सन १२३६ सालापासून सरंजामी दोन गांव पंधराशें रुपयांचे जप्त केले, आणि तीन गांव इनामी अडीच हजारांचे मात्र आह्मांकडे चालविले. सरंजामाचे दोन गांवांविशीं अर्ज केला; परंतु गांव सोडले नाहीत. याजकरितां उत्पन्न चोडें

सबब आमचे कुटुंबाचा व पदरचे मंडळीचा गुजारा होत नाही; व दसऱ्याचा बहुमानाचा पोषाख आम्हांस अर्ज केला असतां चवघांप्रमाणें पावत नाही. यामुळें सन्मानांत कमी शालें व उत्पन्न कमी याजमुळें खर्चाची फार ओढ आहे. त्यास सरकारानें सर्व हकीकत पाहून चवघांप्रमाणें दसऱ्याचा बहुमानाचा पोषाख साल दरसाल देऊन सन्मान मेहरबानी करून राखिला पाहिजे; व सरंजामी दोन गांव आमचे आम्हांकडे चालविले म्हणजे आणि कांहीं कामकाज आमचे हातून घेतलें म्हणजे चवघांप्रमाणें मोठेपणा आमचा राहून दिनचर्या चालेल.

कलम.

४

थेकूण कलमें चार कैफियतीचे तपशिलाचीं लिहिलीं आहेत. याजवरून सर्व कच्चा मजकूर जाहिरांत येईल. तारीख १८ माहे जून सन १८३३ इसवी. सन १२४३ शके १७५५ विजयनामसंवत्सरे.

सही. नरहरराव शामराज गोविंद पिंगळे.

अक्षर नारायण बापूजी भिडे कारकून.

निसबत पिंगळे.

### १४ पुरंदरे.

यादी कैफियत राजश्री माधवराव निळकंठ पुरंदरे सुरुसन अर्बा सलासीन मयातेन व अलफ सन १२४३. मेहेरबान ज्यान वार्डिन साहेब बहादूर डेप्युटी एजंट यांजकडून तारीख ८ माहे सपटंबर सन १८३२ इसवीचें पत्र आलें. त्यांतील हशील कीं, आपले खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर जाहला तें व फौज व जातसरंजाम आपले वडिलांकडे चालत होता; व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस दिल्या ती तारीख, व आपले जहागिरीचे वहिवाटीत पेशवे सरकारांतून कोणते तऱ्हेनें दखलगिरी केली तें, व आपलेकडे सरंजाम हल्लीं काय चालत आहे; व पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कंपणीसरकारांतून चालत आहे; त्यांत कंपेश व तफावत काय आहे तें, वगैरे यादीत दाखल करून रवाना केलें पाहिजे ह्मणोन. त्याजवरून इकडील सिलसिल्याचा मजकूर तारीख व सन व साल, संवत्सर तपशीलवार ल्याहावें तर सन १२२७ फसली या सालीं सासवडचे वाड्याशीं लढाई होऊन वाडा लुटला. त्यांत कामदपत्र गलत जाहले. याजमुळें कार्याकारण मागील दाखल्यावरून वगैरे जो मजकूर समजुतीस आला, तो लिहीत असों. वितपशीलः—

१ खानदानीचे बढतीस आले ते आंबाजी त्र्यंबक पुरंदरे आह्मांपासून सहावे पुरुष यांबां दौलत संपादन करून लौकिक मिळविला. त्याचा बयाजः—बाळाजी विश्वनाथ हे शामल जंजीरे राजपुरी यांचे राज्यांतील जमीनदार देशमुख, त्यांजवर कांहीं कसाक गुज-

रून देशमुख यांचा कर्ता पुरुष यास हापशी यांनीं गोणत्यांत घालोन समुद्रांत बुडविलें. अशा उपद्रवामुळें बाळाजी विश्वनाथ कोकणांतून निघोन चिपळोणाकडून फिरत फिरत सासवडास आले. त्यांस आंबाजी त्र्यंबक पुरंदरे, यांनीं दिलभरंवसा देऊन, सासवड मुक्कामीं राहावयास जागा वगैरे बंदोबस्त करून दिल्या. उभयतांची ममता अकृत्रिमपणें चालली. नंतर उभयतांनीं एकरूप विचार करून धनाजी जाधवराव सेनापती यांजपाशीं रोजगारास जाऊन राहिले. नंतर थोरले शाहू छत्रपती महाराज सन १११९ या सालीं दिल्लीहून दक्षिणेंत आले. त्या वेळेस छत्रपती महाराज यांची व जाधवराव यांची येकलाशी करण्याचें काम उभयतांनीं केलें. त्याजवरून छत्रपती महाराज यांनीं आपले संनिध ठेविलें. त्या काळीं छत्रपती महाराज यांजवळ अष्टप्रधान पिंगळे पेशवे, आदिकरून होते. त्या समयीं बाळाजी विश्वनाथ यांस सरसुभेदारी दिल्ली. तें काम उभयतांनीं सरकारमजींमाफक केल्यावर बाळाजी विश्वनाथ यांस सेनाकर्ते ह्मणोन किताब देऊन मोकासे गांव दिले व आंबाजीपंत यांस गांवगन्ना वराता देऊन चालवीत होते. नंतर उभयतां विश्वासूक, कर्तेपणास लायख, जाणोन सन ११२३ या सालांत छत्रपती महाराज यांनीं बाळाजी विश्वनाथ यांस पेशवाई मुख्य प्रधानपद देऊन वस्त्रे दिल्ली व आंबाजीपंत पुरंदरे यांस पेशवाईची दिवाणगिरी व आपले हुजूरची मुतालकी ही दोन्ही कामें नेमून वस्त्रे दिल्ली. त्या समयीं आंबाजीपंत पुरंदरे यांस जातीस सरंजाम वगैरे उत्पन्न.

४०००० ऐन सरंजाम

२५००० खेरीज नेमणुकी असाम्या व वर्षासनें

सर लष्करची मजमू वगैरे अजमासें बेरीज रुपये.

६५०००

येणेंप्रमाणें उत्पन्न त्या काळीं मुलुख उजाड पंचवीस तीस कोसांवर वस्ती जुजबी आणि मुलुखांत दमाजी थोरात हिंमणगांवकर व आणखी कितेंक बंडवाले यांचे उपद्रवामुळें वस्ती होऊन सरकार अमदानी हॉईना असा मुलुख खराब, तेव्हां पेशवे पुरंदरे यांनीं विचार करून रयत लोकांस काल देऊन आण्ण मुलुखांत फौज व सरंजामानिशीं फिरूं लागले. तेणेंकरून रयतस भरंवसा येऊन वसाहत जवळ जवळ होऊन मुलुखाची लावणी होऊन सरकार आबादी होत चालली. दरम्यान सन ११२६ चे सालीं दमाजी थोरात हिंमणगांवकर यांनं दगेबाजी करून पेशवे व पुरंदरे यांस धरून कैद करून बहुत तसदी करूं लागला. त्या प्रसंगीं आंबाजीपंत यांनीं पेशवे यांस इजा लागूं दिल्ली नाही. थोरात यांनं लाखंडाचे सांडस तापवून आंबाजीपंत यांचे आंगचें मांस तोडिलें, असा निकर्ष केला, तो सोसून कांली कारस्थान करून पेशवे व आण्ण सुटोन आले. नंतर आणखी फौज सरंजाम तयार करून दमाजीवर हिंमणगांवीं चालून जाऊन हल्ला करून दमाजीस कैद केला. व त्याची गद्दी पाडून गांवसुद्धां गाढवाचा नांगर फिरवून जागा गेह-

उपयोगी केली. दमाजीचें बंड मोडलें. येणेंकरून रयतेस बहुत सुख जाहलें. मुलूख आबाद सरकार जंभची आमदानी होत चालली. व मोंगलाई व कर्नाटक वगैरे संस्थानवाले यांशीं लढाया करून मुलूख काबीज करीत चालले. येणेंकरून छत्रपती महाराज यांची पूर्ण कृपा होऊन सर्व राज्यभाराचा अखत्यार पेशवे व पुरंदरे यांजकडे ठेविला. सन ११२९ सालीं बाळाजी विश्वनाथ पेशवे यांचा काळ जाहला. त्यांचे वडील पुत्र बाजीराव बळाळ उर्फ थोरले बाजीरावसाहेब व आंबाजीपंत सातारीयास गेले. छत्रपती महाराज यांनीं बाजीराव-साहेब यांस पेशवाईचीं वस्त्रें दिलीं व आंबाजीपंत यांस दिवाणगिरीचीं वस्त्रें दिलीं. राज्य-कारभार पूर्वप्रमाणें वहिवाट चालवून दिवसेंदिवस अधिक मुलूख संपादन करीत चालले. बुंदेलखंडांत राजा छत्रसाल यांजवर वस्त गुजरला त्या समयीं फौजसुद्धां श्रीमंतासमागमें जाऊन छत्रसाल यांजवर फौज चालून आली त्याचा पराभव केला. त्याजवरून बुंधेले यांनीं तिजाई वांटणीचा लाखो रुपयांचा मुलूख सरकारांत दिल्या. या रीतीनें सरकारसेवा करून सन ११४४ या सालीं आंबाजीपंत काशीयात्रेस जातेसमयीं घरीं नातू त्र्यंबक सदाशिव व पुत्र महादाजी आंबाजी उभयतांचीं वयें लहान सबब तुको त्र्यंबक पुरंदरे, आंबाजीपंत यांचे बंधू त्यांचे पुत्र मल्हार तुकदेव यांस हुजूर मुतालकीचें कामावर आपले मुबदला छत्रपती महाराज यांजवळ ठेविले होते. नंतर सन ११४५ चें सालीं थोरले बाजी-रावसाहेब पेशवे फौज सरंजामानिशीं हिंदुस्थान प्रांतीं अजमीरपावेतों स्वारीस गेले. तेथें आंबाजीपंत यात्रा करून येऊन पेशवे यांस भेटले. देशी स्वारीसुद्धां माघारे आले. नंतर सन ११४५ या सालीं आंबाजीपंत यांचा काळ जाहला. त्यांचा वंश नातू त्र्यंबक सदाशिव व पुत्र महादाजी आंबाजी याप्रमाणें आंबाजी त्र्यंबक यांची वहिवाट.

१ आमचे पांचवे पुरुष महादाजी आंबाजी. आंबाजीपंत वारल्यावर त्र्यंबक सदा-शिव व महादाजी आंबाजी यांजकडे आंबाजीपंताचे वेळचा सरंजाम व नेमणुकी असाभ्या वगैरे कायम ठेवून, आंबाजीपंत यांचे उपकार जाणून चिरंजीव ह्मणून पदवी कागदीं पत्रीं पुरंदरे यांस लिहूं लागले. सन ११५० या सालीं बाजीरावसाहेब यांचा काळ जाहला. छत्रपती महाराज यांजवळ पेशवे यांचे पुत्र नानासाहेब व पुरंदरे महादाजी आंबाजी हुजूर असतां, पेशवाई दुसऱ्यांस द्यावी असें छत्रपती महाराज यांजवळचे सरदार व मुत्सदी बोलणें बोलूं लागले. त्या प्रसंगीं महाराजांनीं, आंबाजी पुरंदरे यांनीं कस्त मेहनत करून व छत्र-पती महाराज यांची मर्जी संपादन करून, पेशवाई नानासाहेब यांस द्यावी याप्रमाणें नेमांत आणिलें. नंतर छत्रपती महाराज यांनीं नानासाहेब यांस पेशवाईचीं वस्त्रें दिलीं व दिवाण-गिरी व हुजूरची मुतालकी महादाजी आंबाजी यांस वस्त्रें दिलीं. त्या समयीं त्र्यंबक सदाशिव उर्फ नाना पुरंदरे यांस मुतालकीचें कामावर सातारीयास महादाजी आंबाजी यांनीं ठेवून, आपण पेशवे यांजबरोबर पुण्यास आले. सन ११५३ या सालीं पेशवे यांनीं महा-दाजी आंबाजी यांस ज्यास्ती सरंजाम व नेमणुकी करून दिल्या व बक्षिस दिले. राज्य-

कारभार पेशजीप्रमाणें चालला असतां, दरम्यान सन ११६० या सालीं सदाशिव चिमणाजी उर्फ भाऊसाहेब, नानासाहेब पेशवे यांचे चुलतबंधू, यांचें मनांत आलें कीं, पेशवाईचा कारभार आपण करावा. त्याजवरून त्यांनीं दोन तीन वर्षे वहिवाट केली. परंतु महादाजी आंबाजी यांजकडे सरंजाम नेमणुकी वगैरे दरोबस्त चालत होते. त्याच्या यादी नानासाहेब पेशवे यांनीं आपले हातचे कराराच्या सन ११६२ या सालीं करून दिल्या. सुरुसन सल्लास खमसैन मया व अलफ छ १५ रमजान.

१२०००० जातसरंजाम बितपशील यादः—

१००००० नक्त बेरीज ह्मणोन गांव व महाल लावून दिले आहेत.

२०००० कापड व हरणक दागिना जवाहीर १०००० सोनेंरुपें वगैरे १००००.

१२००००

५०००० शिवाय असाम्या व लष्करची मजमूव वर्षासनें वगैरे याचें उत्पन्न त्याची बेरीज अजमासें रुपये.

१७००००

७००००० फौजेचे बेगमीस सरंजाम, कारण हैदराबादचे नवाब निजामउल्मुल्ख मयत जाहले, नासरजंगावर गर्दी जाहली, हें राजकारण जाहलें. त्याकाळीं नानासाहेब पेशवे यांनीं महादाजी आंबाजी यांस सरदारी दिली. त्याबद्दल फौजेचा सरंजाम बरहुकूम यादी व पुत्र निळकंठ महादेव पुरंदरे यांचें नांवें पुणें देशाचा सुभा करार करून देऊन महादाजी आंबाजी यांस पेशवे यांनीं स्वारीबरोबर घेऊन गेले.

येणेंप्रमाणें महादाजी आंबाजी यांचे पेशवे सरकार चालवीत होते. नंतर सन ११७० या सालीं महादाजी आंबाजी यांचा काळ जाहला. त्यांस पुत्र निळकंठ महादेव पुरंदरे याप्रमाणें महादाजी आंबाजी यांची वहिवाट.

१ आमचे चौथे पुरुष निळकंठ महादेव पुरंदरे यांजकडे महादाजी आंबाजी यांचे वेळचा सरंजाम व नेमणुकी चालत होत्या. सन ११७० या सालीं नानासाहेब पेशवे यांचा काळ जाहल्यावर, पेशवे यांचे वडील पुत्र माधवराव बल्लाळ उर्फ थोरले माधवरावसाहेब व निळकंठ महादेव पुरंदरे सातात्यास गेले. छत्रपती-महाराज यांनीं माधवरावसाहेब यांस पेशवाईचीं वस्त्रें दिलीं, व निळकंठ महादेव पुरंदरे यांस दिवाणगिरी व हुजूरचे मुतालकीचीं वस्त्रें दिलीं. नंतर सन ११७२ या सालीं माधवराव बल्लाळ पेशवे व रघुनाथ बाजीराव उभयतां आपसांत वांकडें येऊन दुतर्फा लढाया होऊन पेशवेसरकारची दौलत खराबींत येती, असा प्रसंग गुजरला. त्याकाळीं कारभारी निळकंठ महादेव व सखाराम भगवंत बोकिल दरम्यान पडून, उभय-

तांची समजूत काढून कलह मना केला. व राक्षसभुवनचे मुक्कामी पेशवेसरकार यांसी व मोंगलसरकार यांसी लढाई मानवर जाहली. त्याप्रसंगीं निळकंठ महादेव पुरंदरे यांनीं आपलें पथक सरंजामसुद्धां कस्त मेहनत करून पेशवेसरकारचें काम मोठें नक्षाचें केलें, त्याजवरून दोन हजार फौजेचा सरंजाम ज्याजती द्यावा असे कराराची यादी करून दिल्ली. नंतर सन ११७५ या सालीं निळकंठ महादेव यांची प्रकृत बिघडली. आवरस पुत्र नाहीं, संस्थान चाललें पाहिजे, याकरितां पेशवेसरकार यांनीं सखाराम भगवंत बोकिल वगैरे पेशवेसरकारचे कारभारी यांस स्वारीतून पत्रें पाठवून, दत्तपुत्र देऊन संस्थान चालवावें असें जाहल्यावरून, अथंयक सदाशिव उर्फ नाना पुरंदरे यांचे धाकटे पुत्र यास दत्तक घेऊन सन ११७५ या सालीं निळकंठ महादेव यांचा काळ जाहला. त्यासमयीं सरंजाम व नेमणुकी वगैरे चालत होते. वितपशीलः—

१२०००० जातसरंजाम, कापड व जवाहिर मिळोन रुपये.

१००००० १०००० १००००

५०००० खेरीज नेमणुकी असाम्या वगैरे यांचें उत्पन्न अजमासें बेरीज रुपये.

० शिवाय कलमें.

१ गल्ला हरजिन्नस खंडी ५३।

१ वजनी हरजिन्नस वजन पक्के ०।४।६।६.

१ कुरणें गांवगन्ना सुमारीं १०.

१ सुमारीं जिन्नस चरसे सुमारीं ५०.

१ पुणेंजीक कुरणापैकीं काबाडे व डोईभारे दररोज २०.

१ लष्करचे बाजारची शेव.

१ पुण्यांतील गंजीपैकीं गवत ६०००००.

१ दस्तकें जकातीचे माफीची. कैली जिन्नस व वजनी व कापड वगैरे सर सालांत हरणक जागांहून आणतील त्याबद्दल.

१ दस्तकें भेंढरें बुध ७००० याचे वनचराईचे माफीचें.

६२४३५७। फौजेचा सरंजाम पैकी महाल व गांव वगैरे बेरीज रुपये.

१ आमचे तिसरे पुरुष महादाजी निळकंठ. निळकंठ महादेव यांचा काळ जाहल्यावर पेशजीचा जातसरंजाम व फौजेचा सरंजाम व नेमणुकी असाम्या कायम ठेवून संस्थान चालविलें. सन ११८२ या सालीं नारायणराव बल्लाळ यांस पेशवाईचीं वस्त्रें छत्रपती महा-राज यांनीं दिलीं. त्या समयीं दिवाणगिरीचीं व हुजूरचे मुतालकीचीं वस्त्रें महादाजी निळकंठ पुरंदरे यांस दिलीं. नंतर सन ११८३ या सालीं पेशवे यांजवर गर्दी जाहली. त्या समयीं कस्त मेहनत केली. व हिंदुस्थानांत अलीबहादर यांजबरोबर पथक सरंजाम होता. तेथें गुलाम कादर याचे लढाईत बहुत कस्त मेहनत करून सरकारचाकरी दुरस्त



केली. सन ११९३ या सालीं गुजराथचे महाल इंग्रजी सरकारांत घेतले. त्यांत आमचे फौजेचे सरंजामपैकीं चार लक्षांचे महाल गेले. ते पेशवेसरकार यांनीं रघुनाथ बाजीराव ऊर्फ दादासाहेब यांचे घालमिलीमुळें सरकारांत ठेविले. बाकी महादाजी निळकंठ यांजकडे चालत होते. बितपशीलः—

४०३२९॥॥. जातसरंजामपैकीं पोतनिशींचे दरकाबद्दल येकूण रुपये.

३०३२९॥॥.

१००००

२३९१३४।. फौजेचे सरंजामपैकीं.

२४३५७।. सरदारी खर्चाबद्दल कारकुन व कारभारी.

२१४७७७ स्वार असामी ७१६ येकूण.

२३९१३४।.

० खेरीज कलमें.

१ कुरणें गांवगन्ना ४.

१ दस्तकें जकातीचे माफीचीं सरसालचीं व वनचराईची माफी.

१ बैलसर १०० शंभर देशांतून व कोंकणां-

तून हरणक जिन्नस आणतील त्याबद्दल.

१ मठरें बुध ७००० चे वनचराईबद्दल.

२

२७९४६३॥॥.

येणेंप्रमाणें चालत होत. सन १२०१ या सालीं महादाजी निळकंठ यांची प्रकृत बेआराम जाहली. आवरस पुत्र नाही, सबब पेशवेसरकार सवाई माधवराव साहेब कारकीर्द नाना फडणीस यांनीं दत्तपुत्र देऊन संस्थान चालवावं असें करून, दत्तपुत्र घेऊन महादाजी निळकंठ यांचा काळ जाहला. सन १२०१.

१. आमचे तीर्थरूप निळकंठराव महादेव ऊर्फ आबा पुगंदरे यांस पेशवे यांनीं दत्तक देऊन महादाजी निळकंठ यांचे वेळचा सरंजाम जातीचा व फौजेचा व पोतनिशी वगैरे बेरीज रुपये २८०००० दोन लक्ष पेशीं हजार रुपयांचा सरंजाम वगैरे कायम ठेवून चालवीत होते. श्रीमंत राजश्री बाजीराव साहेब, होळकर गर्दीत वसईस गेले. त्यांजबरोबर निळकंठ महादेव होते. सरकारचाकरी दुरस्त करून सरकारची मर्जी संपादन केली होती. खेरीज सरकार इतलाखी फौज स्वार शिबंदी ठेवण्याचें काम सांगून त्यांचे खर्चास एवज पोतापैकीं हुजूरून दरमाहाचे दरमाहा देत होते. याप्रमाणें सन १२२७ लढाईअखेर चाललें. नंतर कुंपणी सरकारचा अंमल जाहल्यावर कुंपणी सरकारांतून जातीचे खर्चास सरंजाम गांव लावून दिले. ती बेरीज रुपये ५०३२९॥॥. खेरीज सन १२२९ या सालीं आबासाहेब यांचे कन्येचें लग्न जाहलें. त्याजबद्दल कुंपणी सरकारांनीं खजिन्यांतून रुपये १५००० देविले.

नंतर सन १२३५ या सालीं निळकंठ महादेव यांची प्रकृत नादुरस्त जाहली. आवरस पुत्र नाही. सबब दत्तपुत्र घेण्याविषयीं सरकारांत यादी दिल्ली. त्याजवर मेहेरबान च्यापलीन साहेब बहादूर यांनीं हुकूम दिला. त्याजवरून सन १२३६ या सालीं आह्मांस आबासाहेब पुरंदरे यांनीं दत्तक घेऊन त्यांचा काळ जाहला.

१ हल्लीं आह्मीं खुद्द माधवराव निळकंठ पुरंदरे. आबासाहेब यांचा काळ जाहल्यावर, कुंपणी सरकारांनीं दरोबस्त सरंजाम जमी करून, आबासाहेब यांच्या मातुश्रीया २ यांस पेनशीन रुपये ३०००, व आबासाहेब यांच्या स्त्रिया २ यांस पेनशीन रुपये ३०००, व आबासाहेब यांची कन्या, त्यास पेनशीन ३००, व आममंडळी व बायाकडील कारकून यांस पेनशनें करून चालवितात; आणि आह्मांस सरकारांतून हुकूम देऊन संस्थानावर मालक करून ठेविलें. खानदानीचा खर्च, घोडी, माणसें वगैरे सर्व खर्च आह्मांकडे असतां आमचे खर्चाची तजवीज सरकारांनीं कांहींच केली नाही. यामुळे या खानदानीची हुरमत सर्वोपरीं खराब होत आहे. या बाबें सरकारांत अर्ज करीत आहों व हल्लीं सरकारांनीं या कैफियतीतील कलमा कलमांचा बयाज दिलांत आणल्यावर जाहीर होईल.

१. आपले जहागिरीचे वहिवाटीत पेशवे सरकारांतून कोणते तऱ्हेनें दखलगिरी केली ह्मणोन लिहिलें. त्यास ज्या पुरुषाची कारकीर्द त्यांनीं आपले जहागिरीची वहिवाट आपले मुखत्यारीनें च केली. पेशवे सरकारांतून दखलगिरी कांहीं होत नव्हती.

१. आपलेकडे सरंजाम हल्लीं काय चालत आहे ह्मणून लिहिलें. त्यास आमचे पांच पिढ्यांचे पुरुषांनीं लौकिक करून लाखों रुपयांचा सरंजाम पेशवे सरकारांनीं देऊन चालविलें. व त्याच सिलसिल्यावर कंपनी सरकारचा अंमल जाहल्यावर तीर्थरूप आबासाहेब यांचें कुंपणी सरकारांनीं कांहीं सरंजाम देऊन चालविलें. हल्लीं आह्मांकडे सरंजाम कांहीं चालत नाही, याजमुळे मोठी लाचारी आहे. त्यास तजवीज करणें सरकाराकडे आहे.

१. पेशवे सरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कुंपणी सरकारांतून चालत आहे; त्यांत कंपेश तफावत काय आहे ह्मणोन लिहिलें. त्यास पेशवे सरकार यांनीं या खानदानीचा इरादा चिरंजीव ह्मणोन आपले बरोबरीनें मातबरी चालवीत होते. आणि हल्लीं कुंपणी सरकारांतून मातबरी कशी ठेविली आहे, त्यांत कंपेश तफावत किती आहे, हें वरनें कलमावरून दिलांत येईल.

१. खेरीज लभें व मुंजी वगैरे हरएक कार्यप्रयोजन प्रसंग आला असतां, पेशवे सरकार यांनीं आपलें घराप्रमाणें मोजून, नक्त ऐवज व सामान सरंजाम आदिकरून सर्वोपरीं तजवीज सरकार करीत होते.

येणेंप्रमाणें लिहिलें आहे. त्यास सरकारांनीं मेहेरबानी करून सारे कलमा कलमांचा बयाज दिलांत आणिला पाहिजे. मिति श्रावण वद्य १२ शके १७५५ विजयनाम संवत्सरे छ २५ रविलावल.

## १५ पेठ्ये.

यादी त्रिंबकराव अमृतेश्वर पेठ्ये सुरुसन आर्वा सलासिन मयातैन व अलफ. मेहेरबान ज्यान वार्डिन साहेब बहादूर डेप्टी एजंट जिल्हा दक्षण यांनीं तारीख ८ माहे सपटंबर सन १८३२ इसवीचें पत्र इज्यानिवास पाठविलें. त्यांत मजकूर कीं, हजरत बंदगानअल्ली रैटहनरावल गौरनर कांसल चाहत आहंत जे. दक्षिणतील जहागिरदार लोक यांची कैफियत कशी आहे, त्याची वाकबगारी व्हावी, यास्तव सरकारांत रवाना करण्याकरितां थोडके मजकुरांत कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे. त्यातील तपशील आपलें खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर जाहला तें, व फौज व जातसरंजाम आपले वडिलांकडे चालत होता व सदरहु सरंजाम कोणते तारखेस दिल्या ती तारीख, व आपले जहागिरीचे वहिवाटींत पेशवेसरकारांतून कोणतें तन्हेंन दखलगिरी केली व आपलेकडे सरंजाम हल्ली काय चालत आहं ते, व पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कुंपणीसरकारांतून चालत आहे, त्यांत कंपश तफावत काय आहे तें, वगैरे यादींत दाखल करून रवाना केले पाहिजे त्पणान. त्याजरून इकडील मजकूर लिहिण्यांत येतो. बितपशील:—

कलमें.

१ आमचे निपणजे । वासराव कृष्ण हें नागपुरवाले भांसले यांजपाशीं प्रथम मोठे योग्यतेने होते. त्यांचे पुत्र आमचे पणजे त्रिंबकराव विश्वनाथ. यांस नागपुराहून संस्थानचें कामाकाजास्तव महाराजांकडे सातान्यास पाठविले. तेथे राहून नागपुरचें संस्थानचें बोलणें बोलून महाराजापाशी मोठे इराद्यानें कामकाजांत वागत होते. पुढे पेशवेसरकारांनीं हें मुत्सद्देगिरीचें वगैरे सर्व कामाचे बंदोबस्तालायग्य याजकरितां आपलेपाशी ठेवून घेतले. पुढें श्रीमंत पेशवे यांचा शरीरसंबंधही जाहला. त्यानंतर महाराज राजे छत्रपती सातार संस्थानीं त्यांजकडील तेथील बंदोबस्ताचें, सर्व डोलाचें काम, त्रिंबकराव विश्वनाथ आमचे पणजे यांजकडे पेशवेसरकारतर्फेन सांगितलें. त्याजरून सातार संस्थानचें काम अखत्यारीनें करित होते.

कलम.

१ सन इसने (सवैन) मया व अलफचे साली श्रीमंत कैलासवासी माधवराव साहेब यांनीं हैदरखान यांजवर कर्नाटक प्रांती श्रीरंगपट्टणाम मोहिमेस स्वारी केली. त्या प्रांती कांहीं दिवस राहून श्रीमंतांस शरीरी समाधान नाही, याजमुळे माघार देशीं येण्याचें ठरलें. ते समयीं आमचे पणजे त्रिंबकराव विश्वनाथ यांस कुलफौजेची मुखत्यारी, शिक्रे, कठ्यार, जरीपटका वगैरे इतमाम फौज हुजूरांत मानकरी सरदार आनंदराव रास्ते, व गोपाळराव मिरजकर वगैरे तैनातीस देऊन श्रीमंत देशीं माघार आले. त्यानंतर हैदरखान यांजकडील किल्ले व संस्थाने यांशीं लढाया घेऊन, किल्ले, संस्थाने, सर करून, पुढें खासा हैदरखान यांशीं मोतीतलावनजीक श्रीरंगपट्टण मुकामी मातबर लढाई होऊन, हैदरखां यांस शिकस्त करून पट्टणची वगैरे खंडणी घेऊन, याशिवाय संस्थानच्या खंडण्या ठरावून, आणखी मुलूख सर

करण्याचे मसलतींत होते. तों देशीं श्रीमंतांचे प्रकृतीस समाधान नाही, याजमुळें फौजसुद्धां देशीं यावें, अशीं पत्रें आमचे पणजे त्रिंबकराव विश्वनाथ यांस गेलीं. त्याजवरून तिकडील बंदोबस्त करून फौजसुद्धां निघोन माघारे आले. त्यानंतर कांहीं दिवसांनीं श्रीमंत माधवराव साहेब कैलासवासी जाहले. पुढें राज्यांत बखेडा होऊन श्रीमंत नारायणरावसाहेब मारले गेले. पुढें श्रीमंत कैलासवासी दादासाहेब यांनीं नवाब यांजवर मोहिम केली. बेदरचे मुक्कामी नवाबांचे व यांचे तह रद्द होऊन, कर्नाटक प्रांती मोहिम करावी, तों मातुश्री गंगाबाईसाहेब पेशवी पुरंदरास निघून गेली. त्याजमुळें दादासाहेबांचे फौजेंत फितूर होऊन आमचे पणजे त्रिंबकराव विश्वनाथ फौज घेऊन दादासाहेबांचे लष्करांतून बाहेर पडले. आणखी फौज जमावून मातुश्री गंगाबाईसाहेब यांचे तर्फेनं वागूं लागले. सबब दादासाहेबांची व यांची कासेगांवजकीक पंढरपूर येथें लढाई जाहली. त्या प्रसंगीं जखमा लागून आमचे पणजे त्रिंबकराव विश्वनाथ सरकारकामास आले. त्यामागें आमचे आज विश्वासराव त्रिंबक हे सरकारचे कामकाजांत वागत होते. त्यांचे चिरंजीव अमृतराव विश्वनाथ आमचे तीर्थरूप सरकारांत मुतालकीचें काम करीत होते. याप्रमाणें लौकिक सर्वास महशूर आहे. वडिलांचे इराद्याप्रमाणें आह्मी श्रीमंतांचे स्वारीबरोबर खडर्चास नवाब यांजवर गेलों होतो.

कलम.

१ आह्मांकडे सरंजाम जातीस व फौजेस वर्गेंरे बितपशीलः—

५०००० खासगत संसारबेगमीस सरंजाम महाल व देहेहाय व इतलाख नेमणूकसुद्धां.

५००० इनामी गांव व जमिनी मिळोन.

६०००० फौजेस सरंजाम स्वार असामी २०० दोनशें एकूण आकार रुपये.

११५०००

येकूण एक लक्ष पंधरा हजारांचा सरंजाम व खेरीज कापडखर्च २००० दोन हजार व कुरणें व बाग.

कलम.

१ सरंजामाची वगैरे नेमणुका करून दिल्या. त्या तारखा बितपशीलः—

१ खासगत संसारबेगमीस सरंजाम महाल व देहेहाय व इतलाख नेमणूकसुद्धां ठरावून याद सरकारचे कराराची करून दिली. सन समान खमसैन मया व अलफचें सालीं.

कलम.

१ इनामी गांव व जमिनी.

कलम.

१ कैलासवासी महाराज आईसाहेब यांनीं दिले ते गांव व जमीन.

१ मौजें किवळें दरोबस्त, तर्फ हवेली प्रांत पुणें, सन समान आर्वैन मया व अलफ तारीख २४ जिल्हेजचें सालीं. भोगवट्यास सनद श्रीमंत बाळाजी बाजीराव प्रधान यांनीं करून दिली.

- १ मौजें चिंधोली संमत निंब प्रांत वाई याची सनद श्रीमंत माधवराव पंडित प्रधान यांनीं भोगवट्यास करून दिल्ली. सन इसचे तिसैन मया व अलफ. शके १६८३ छ २० मोहरम.
- १ मौजें सोनगांव तर्फ सातारा प्रांत मजकूर येथील जमीन मोटसस्थळ व पाटसस्थळ व जिराईत व बागाईत कुरणसुद्धां जमीन चाहूर १॥३॥४ याची सनद सन सितैन मया व अलफ छ १९ जमादिलावल भोगवट्यास पत्रें पेशवे यांचीं सन सीत सितैन मया व अलफ. शके १६८७ छ २७ रमजान श्रीमंत माधवराव पंडित यांची.

३

- १ पेशवेसरकारांतून गांव व जमिनी इनाम करून दिल्ल्या. बितपशीलः—

- १ मौजें कोयाली तर्फ चाकण प्रांत जुन्नर येथील जमीन चाहूर १ एक, सनद सन सीत आर्वैन मया व अलफ छ २४ जमादिलाखर.
- १ मौजें जलालपूर प्रांत नाशिक सरकार संगमनेर सुभे खोजस्ते बुनयाद सनद सन आर्वा खमसैन मया व अलफ छ २० रबिलाखर.
- १ मौजें मुंगसरें परगणे दिंडोरी सरकार संगमनेर सनद सन समान सबैन मया व अलफ शके १६९९ छ २० जिल्हेज.

२ ३

येकूण देहे ४ व जमिनी.

- १ फौजेस नेमणूकी सरंजाम महालानिहाय व देहाय व मोकासे व आसाम्या वगैरे सुद्धां नेमणूकीच्या सनदा सन सबैन मया व अलफचें सालीं.
- १ कुरणें व बाग वहिवाटीस होती.
- १ बेट बाग कसबें पुणें येथील मुंजेरीच्या जमिनीपैकीं संगम येथें.
- १ कुरणें
- १ मौजें गहूजें तर्फ हवेली प्रांत पुणें, तालुके सिंहगड नदीचे कांठचे नंबर.
- १ कसबें कडूस येथील.
- १ मौजें पिपळगांव तर्फ चाकण येथील नंबर.

० १

- १ कापडाचे आखाची नेमणूक सन समान खमसैन मया व अलफचें सालीं.

५

कलम.

१. सरंजामाचे वहिवाटीन पेशवे सरकारांतून दखलगिरी होत नव्हती. आमचे आम्ही मुखत्यारीनें दखलगिरी राखून वहिवाट करित होतो. सन अर्बा मयातैन व अलफचें सालीं श्रीमंत बाजीराव साहेब यांनीं आह्मांकडून सरंजाम वगैरे कादून सरकारांत घेतला.

१. आह्मांकडील सरंजाम घेतल्यातागाईत आजपावतां कांहीं चालत नाहीं. सन

आर्बाचे सालापासून नक्त रुपये पोंचत होते. पुढें कुंपणी सरकारांतून दोन हजार रुपये सालिना पेनशन करून दिव्हें. त्याप्रमाणें पोंचत आहे. खेरीज जमीन मौजें कोयाली तर्फे चाकण येथील चालत आली, त्याप्रमाणें वहिवाटीस आहे. कलम.

१. पेशवे सरकारांतून आमचे मातबरीचे योग्यतेचे इरादे वितपशीलः—

१ पेशवाईचीं वस्त्रें महाराजांकडून आणावयाचीं तीं आह्मीं आणावीं, ऐसा इरादा आह्मांकडे होता. व महाराजांची स्वारी पुण्यास आल्यास महाराजांस सामोरे जाऊन आणावयाचें व पोंचवावयाचें, हा इरादा आमचा आहे. कलम.

१ स्वारींत श्रीमंतांचे पाठीमागें चालावयाचा इरादा व कचेरींत आह्मांस खडी ताजीम श्रीमंत देत होते. कलम.

१ दसऱ्याचा पोषाख सनगे ३॥ किंमत रुपये ३०० तीनशें.

१ आमचे तैनातीस सरकारांतूनः—

१ पिलखान्यापैकीं हत्ती, अंबारीसुद्धां होता.

१ हुजूरपागेपैकीं खाशीं घोडीं रास ४ चार होनीं.

१ चोपदार सरकारचे जथ्यापैकीं आम्हांकडे पांच राहत होते. कलम.

३

१ श्रीमंतांची स्वारी संस्थानीं व सरदार यांजकडे मेजवानीस गेलें असतां तेथें श्रीमंतांबरोबर आह्मांस पोषाख येत होता.

५

१ हल्लीं कुंपणीसरकारांतून दसऱ्याचा पोषाख सनगे २ दोन येत आहेत.

येणेंप्रमाणें कैफियतीचीं कलमें लिहून पाठविलीं आहेत. त्यांजवरून साहेबांचे दिलांत येईल. पूर्वींच्या वहिवाटींत व हल्लींचे वहिवाटींत कंपेश तफावत काय आहे तें वगैरे सदरीं लिहिल्यावरून दिलांत आणून, आमचा सर्व प्रकारें बंदोबस्त करून देणार, साहेब खुदावंत आहेत. तारीख ६ माहे जुलई सन १८३३ इसवी. छ १७ सफर.

### १६ पंडितराव.

यादी राजश्री रघुनाथराव रामचंद्र पंडितराव राजउपाध्ये यांजकडील माहितगारीचीं कलमेंः—

१ श्रीमन्महाराज कैलासवासी शिवाजी राजे छत्रपती यांस राज्याभिषेक शके १५९६ आनंदनाम संवत्सरीं जाहला. ते समयीं आमचे पूर्वज रघुनाथभट व भास्करभट ऊर्फ मल्हारभट राजउपाध्ये यांसी पंडितराई रघुनाथभट यांस दिल्ली. हे अष्टाधिकार करीत होते. याचा दाखला परभारा असेल. संभाजीमहाराज व त्यांचे पुत्र शाहूमहाराज यां उभयतांस दिल्लीस नेलें तोंपोवेतों अष्टाधिकार करीत आलें. कलम.

१ राजारामसाहेब शिवाजीमहाराजाचे कनिष्ठ पुत्र चंदीचंदावरास गेले. त्यांजबरोबर रघुनाथभट उपाध्ये पंडितराव गेले. पुढें राजारामसाहेब देशीं चंदावराहून आले. त्यांसीं राज्याभिषेक जाहला. ते समयीं श्रीकराचार्य यांस पंडितराई जाहली—शाहूमहाराज दिल्लीहून येईपर्यंत.

कलम १.

१ संभाजीमहाराज छत्रपती यांचे पुत्र शाहूमहाराज व पत्नी येसूबाई यां उभयतांस दिल्लीस नेले. त्यांजबरोबर मुद्रलबावा राजउपाध्ये जाऊन श्रमसायास बहुत केले. शाहूमहाराज दिल्लीहून देशीं आले, त्यांजबराबर मुद्रलबावा राजउपाध्ये आले. महाराजांस राज्याभिषेक शके १६२९ सर्वाजितनाम संवत्सरीं जाहला. मुद्रलबावा राजउपाध्ये यांचे श्रमसायास बहुत जाणून कृपाळु होऊन पंडितराईचे अष्टाधिकार व कटक ज्योतिषपणाची वृत्तीही दिली. पूजा पूर्वापार करीतच होते. पुढें कांहीं कारणास्तव यादवभट उपाध्ये चंदावराहून आणविले. ते वेळेस पंडितराईचे अष्टाधिकार ठेऊन उपाध्येपणाचा अंश व कटक ज्योतिषपणाचा विभाग मुद्रलबावा यांनीं दिल्या. नंतर मुद्रलबावा व त्यांचे पुत्र रघुनाथराव पंडितराव राजउपाध्ये आमचे आज हे दरोबस्त पंडितराईचे अष्टाधिकार व पूजा शाहूमहाराज अखेरपर्यंत करीत होते. शके १६७१.

कलम.

१ रामराजेमहाराज यांसी राज्याभिषेक जाहला, ते समयीं मातोश्री ताराऊसाहेब यांनीं पेशजीचा आमचे वडिलांचा कांहीं कारणास्तव वांकडेपणा पडला होता. हें आईसाहेबांनीं मनांत आणून, आमचे आज रघुनाथराव मुद्रल पंडित राजउपाध्ये यांजकडील पंडितराईचा अधिकार काढून धोंडोबा उपाध्य यांस दिल्या. शके १६७२ प्रमोदनाम संवत्सरे. आईसाहेब होती तोपर्यंत आमचे वडिलांस वृत्तीसुद्धां देखील दिल्लें नाहीं. पूर्वी आमचे वडील वहिवाट करीत होते, त्याप्रमाणें रामराजे यांचे अखेरपावेतो दरोबस्त एकंदरीनें तेच करीत गेले. शके १६९९.

कलम.

१ धाकटे शाहूमहाराज छत्रपती आबासाहेब यांसी राज्याभिषेक शके १७०० विलंबनाम संवत्सरीं जाहला. ते समयीं पंडितराई आमचे वडील रामचंद्र रघुनाथ यांजकडे जाहली. आबासाहेब महाराज यांची मुंज व लग्न आमचे वडिलांचे मांडीवर जाहलें. त्याप्रमाणें वहिवाट आजपावेतो आह्मीही करीत आहों.

येकूण पांच कलमें लिहिलीं आहेत. तेरीख छ २१ जिल्काद, शके १७४७ आषाढ वद्य ७.

### १७ पंत प्रतिनिधी.

यादी श्रीमंत राजश्री पंतप्रतिनिधी यांचे मूळपुरुषास प्रतिनिधीपणाची पदवी मिळाली व त्या अलीकडे चालत आली त्याचा तपसील. सुरुसन सलास खमसैन मयातैन व अलफ.

१ परशराम त्रिंबक कुळकर्णी मौजें किनई यांणी कैलासवासी राजारामसाहेब महाराज

जपार्शी नोकरी संपादून लढाया वगैरे करून राज्याचा उपयोग केला. सबब राजाराम महाराज यु पावल्यावर त्यांची स्त्री ताराबाई यांनी, आपला पुत्र शिवाजी यांस तत्काधिपती केला; रि सन १६९९ इसवी ह्मणजे शके १६२१ सालीं माहे मार्च म्हणजे फाल्गुनमासीं परशराम बक यांस प्रतिनिधीपणाचें पद दिलें.

१ सन १७१८ इसवी ह्मणजे शके १६४० सालीं माहे जून ह्मणजे ज्येष्ठ सुमारे, शराम त्रिंबक मरण पावले. नंतर राजा शाहू छत्रपती यांजपार्शीं सेवाचाकरी बहुत एक-ष्ठेनें परशरामपंत यांचे पुत्र यांनीं केली. सबब त्यांजकडे प्रतिनिधीपणाचें पद चालवून रोबस्त राज्यकारभाराची अखत्यारी दिल्ली. त्यांचें नांव श्रीनिवास परशराम.

१ सन १७४४ इसवी ह्मणजे शके १६६६ सुमारे, श्रीपतराव मरण पावले. त्यांस त्र नाही. यास्तव त्यांचे धाकटे बंधु जगजिवनराव यांस प्रतिनिधीपणाचें पद शाहूमहा-ज यांनीं दिलें.

१ सन १७५० इसवी ह्मणजे शके १६७२ सुमारे, जगजिवनराव प्रतिनिधीरण पावले. त्यांस पुत्र नाही. सबब त्यांचे पुतणे श्रीनिवास गंगाधर ऊर्फ भवानराव यांस विशाळगडाहून आणवून प्रतिनिधीपणाचें पद रामराजे यांचे कारकिर्दीस जाहलें. सन १७६३ इसवी ह्मणजे शके १६८५ सुमारे, रघुनाथराव पेशवे यांनीं भवानराव यांज-कडील प्रतिनिधीपणाचें पद काढून, आपला पुत्र भास्करराव यांस पद देऊन नारो शंकर यांस मुतालिक केलें. नंतर भवानराव यांनीं फौज ठेऊन व निजाम सामील करून घेऊन गुण्यावर चढाई करून आले, व भास्कररावही मृत्यु पावले. तेव्हां पूर्वीप्रमाणें भवानराव यांजकडे प्रतिनिधीपणाचें पद पेशवे यांनीं चालवून भवानराव यांचा समेट करून घेतला.

१ सन १७७७ इसवी म्हणजे शके १६९९ माहे आगष्ट ह्मणजे श्रावणमासीं श्रीनिवास गंगाधर ऊर्फ भवानराव प्रतिनिधी मरण पावले. तो अधिकार त्यांचे पुत्र परशरामपंत यांस जाहला.

१ सन १८०६ इसवी ह्मणजे शके १७२८ सालीं परशराम श्रीनिवास प्रतिनिधी यांची व बाजीराव पेशवे यांजकडील सरदार बापू गोखले यांची लढाई होऊन, पेशवे यांनीं परशरामपंत यांस कैदेत ठेऊन, मोठा मुलूख होता तो घेऊन, पुढे दोन लक्ष कमालाचा मुलूख जातीचे खर्चाबद्दल देऊन कैदेतून सोडिलें. त्यांस पुत्र नाही, सबब ते असतांना त्यांनीं तारीख १८ माहे मार्च सन १८४७ इसवी चैत्र शुद्ध २ शके १७६९ रोजी, महाराज सरकार व इंग्रजीसरकार यांचे हुकुमानें मौजें हिवरें येथील आपले गोत्रज वतनभाऊ यांजपैकीं दत्तक पुत्र घेऊन त्यांचें नांव श्रीनिवास परशराम ठेविलें. नंतर परशराम श्रीनिवास सन १८४८ इसवी, शके १७७० वैशाख शुद्ध ८ रोजी मरण पावले.

१ श्रीनिवास परशराम प्रतिनिधी यांजकडे हल्लीं ती दौलत चालत आहे.



येणेंप्रमाणें प्रतिनिधीपणाचें पदाची वहिवाट होत आली. तारीख ३० जून सन १८५२ इसवी.

### १८ फडके.

आदी पांडुरंग माधवराव फडके सुरुसन सलास सलासीन मयातैन व अलफ. तारीख ८ माहे सपटंबर १८३२ इसवीचें पत्र डिपुटी एजंट यांचे कचेरीहून आह्मांस आलें. त्यांत मजकूर कीं, हजरत बंदगानअल्ली रेंट हनराबल गौरनर कौंसल चाहत आहेत जे, दक्षिणें-तील जहागिरदार लोक यांची कैफियत कशी आहे याची वाकबगारी व्हावी, यास्तव आपण मेहरबानी करून सरकारांत रवाना करण्याकरितां थोंड मजकुरांत कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे ह्मणोन. त्याजवरून आह्मांकडील मजकूर लिहिण्यांत येतो. बितपशीलः—

१ आपली खानदानीची बढती कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर जाहला. या कलमाचें उत्तरः—आमचे पणजे बाळभट फडके गुहागरचे वतनदार पुण्यास येऊन सदाशिव दीक्षित पटवर्धन यांचे पदरीं राहिले. आदितवार पेठेची वसाहत यांचे हातें जाहली. त्यांचे पुत्र बापूजी बल्लाळ व आमचे आजें हरी बल्लाळ दिक्षीताचे योगंकरून सरकारांत जाऊं, येऊं लागले. लिहिणार चांगले. त्याजवरून दमरच्या असाम्या फडणीशीकडेस दोघांसही जाहल्या. श्रीमंत भाऊसाहेब पेशवे पाणिपतचे स्वारीस गेले. त्या वेळेस नाना फडणीस यांचें वय लहान, सबब त्यांचा कुलकारभार फडणीशीचा बापूजी बल्लाळ यांनीं केला. त्या लढाईत ते सरकारकामास आले. पुढें श्रीमंत थोरले माधवरावसाहेब यांनीं हरिपंत तात्या लिहिणार व हजार जवाबी, सरकार उपयोगास एकनिष्ठ, असें ध्यानास आणून, दिवसेंदिवस मोठीं मोठी कामें धेऊं लागले. शके १६९१ त कर्नाटकचे स्वारींत फौजेचें काम सरदार, मानकरी व सरजामी व इतलाखी फौजेची बरदास्त बाजू ज्याची त्याप्रमाणें यांचे हातें राहत गेली, यामुळें लौकिक महशूर जाहला. कर्नाटकांतील संस्थानिक यांच्या तोडजोडी, खंडणीचे जाबसाल व नागपूरवाले भोंसले यांचे राजकारण तात्यांचे हातें सिद्धीस गेले, वगैरे उपयोग श्रीमंतांनी मनांत आणोन, बाणकोट इलाख्यांत केळसी महालची देशमुखी वतनी करून दिली. पुढें थोरले माधवराव शके १६९४ त वारले. नंतर श्रीमंत नारायणरावसाहेब यांची गर्दी जाहली. त्या वेळेस सखारामबापू सरकारचे कारभारी व नानाफडणीस व हरिपंत तात्या यांनीं बाईसाहेब नारायणराव यांची स्त्री यांस पुरंदरावर नेऊन राजकारण केलें. त्यांस यश येऊन श्रीमंत सर्वाईमाधवराव जन्मले. त्यांच्या प्रतापें शिंदे, होळकर व गार्डेकवाड सुद्धां यांचे संधानानें वागां लागले. श्रीमंत दादासाहेब इंग्रजांचे संधानानें वागोन राज्य करावें, या इराद्यानें फौज धरून स्वाऱ्या करीत होते. त्यांचे मसलतीस भोंसले व मोंगल सामील करून तात्या पाठीस लागले. ते लढाया होतां होतां, आनंदमोगरीवर तह तात्यांचे हातें होऊन, त्यांचे सर्व लष्कर तात्यांचे गोटास मिळालें. नंतर तळेगांवची लढाई जाहली, व येदगीरची स्वारी व बदामीची

स्वारी जाहली. त्याजवर कर्नाटकांतील मसलत, टिपूसुलतान यांजवर, इंग्रज व मोगल व पेशवे तीन सरकारें एक होऊन जाहली. त्यावेळेस पेशवेसरकारचे कुल कुला हरिपंत तात्या यांचे सलाहास मसलतीस जें आलें, तें हरदू सरकार पसंत करित होते. मोठ्या तवाया सोसून लढाया देऊन आपली फौज बचावून टिपूसुलतान यांस कबजेंत आणून त्यांची दौलत रक्षिली; आणि लक्षावधी रुपयांचा मुलूख व करोडो रुपयां(ची) खंडणी घेऊन तिन्ही सरकारची आबादी केली. तो मुलूख हाल फिकल(?) सरकारें अनुभवीत आहेत. तात्यांचे पाठीमागें रामचंद्र हरी, त्यांस बाबा फडके ह्मणत, तेही सरकारकामांतच वागत होते. जरीपटका व पांचशें स्वारांचें पथकसुद्धां सरकारचाकरीत होते. आमचे तीर्थरूप माधवराव तात्या यांनीं कुलाबेयाची स्वारी आंगरे यांजवर केली. खड्यांचे स्वारींत चुलते बाबा फडके होते. खासां स्वारी नवाबावर होऊन श्रीमंतांची फत्ते जाहली. पुढें श्रीमंत राजश्री बाजीरावसाहेब राज्यावर आले. त्यांस आमचे चुलते दाजीबा यांची कन्या देऊन शरीरसंबंधही केला. परंतु त्यांनींच जहागीर वगैरे सर्व जमी केली. कर्नाटकाचा सरसुभा मुतालकेची शिकेकठारसमेत व आणखी मामलती सुवर्णदुर्ग वगैरे चुलत चुलते मोरो बापूजी यांजकडे होते. तेही सरकारांनीं घेतले. कलमें.

२ फौज व जातसरंजाम दोन लक्षांचा चालत होता. त्यापैकीं हल्लीं कांहींच नाहीं. सबब, जहागिरीचे बहिवाटींत पेशवेसरकारांतोन दखलगिरी कोणते तऱ्हेनें केली व सरंजाम कोणते तारखेस दिल्या, याचें उत्तर लिहिण्याचें प्रयोजन नाहीं. कलम.

३ पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कंपनीसरकारांतून चालत आहे, त्यांत कंपेश तफावत काय आहे ? याचें उत्तर:—कंपेश तफावत त्याहावयाजोगें नाहीं. कोंकणचीं वतनें व गांव व खोल्या वगैरे आमचे इमेले, याचे उत्पन्नाऐवजी श्रीमंत हुजूर खर्चास देत होते. तोच बोध कंपनीसरकारांनीं पाहून आमची वतनबाब आह्मांकडे चालविली व पेनशन करून दिलें आहे. त्याजवर गुजारा करून आहों. कलम.

सदरहूममाणें आह्मांकडील खानदानीचा वगैरे मजकूर आहे. तारीख ११ माहे मे सन १८३३ इसवी. मिती वैशाख वद्य ९ शके १७५५.

सही पांडुरंग माधवराव फडके खुद्द.

## १९ मेणवलीकर फडणीस.

अ

साहेब मुषफक मेहेरबान कर्मफर्माय दोस्तां हेनरी ब्रौण साहेब

बहादुर एजंट जिल्हा दक्षण दाम मोहोबत हू:-

ॐ अजी दिल एखलास महादाजी बल्लाळ फडणीस सलाम बाजद सलाम अंकी येथील खैरयत जाणून आसाहेबीं आपली खैर अफियत हमेशा कलमीं करीत असलें

पाहिजे. दिगर आसाहेब बहादुर यांजकडून तारीख २६ आगष्ट सन १८५१ इसवीचें खत आलें, तें पाहून फार खुषी जाहली. त्याचें उत्तर लिहिण्यांत येत आहे जें:—

१ आपणास किताब फडणीस हें पद आहे, हें कधीं कोणत्या सबबेनें प्राप्त जाहलें त्याचें उत्तर:—बाळाजी विश्वनाथ राहणार श्रीवर्धन व आमचे पणजे बाळाजी महादेव राहणार वेळास तालुके सुवर्णदुर्ग, यां उभयतांचें राहण्याचें गांव चार कोसांचें अंतरानें आहेत. दोघांचा अती स्नेह. हे उभयतां रोजगाराचें उद्देशं सातान्यास थोरले शाहूमहाराज यांजकडे येऊन महाराजांची भेट घेऊन कृपा संपादन केली. पुढें शके १६३४ सन १७१२ इसवी सालीं बाळाजी विश्वनाथ यांस पेशवाईचीं वस्त्रें जाहली. त्या वेळेस आमचे पणजे बाळाजी महादेव यांस फडणीशीची वस्त्रें हाऊन उभयतांस प्रथम दिल्लीचे मोहिमेस पाठविलें. तेथें युद्ध करून बाळाजी विश्वनाथ पंगव यांजवर गर्दी करावी आणि धराबें असा प्रसंग आला. त्या समर्थी बाळाजी विश्वनाथ यांचें संरक्षण व्हांवें या हेतूनें त्यांस काढून देऊन त्याचे जाग्यावर बाळाजी महादेव राहिले. बादशाहांनीं शोध करितां बाळाजी विश्वनाथ पळोन गेले. ते बाळाजी महादेव यांनीं काढून लाविले. हें मनांत आणून यांजवर युद्धप्रसंग केला. त्या युद्धप्रसंगांत स्वामीकार्यावर दिल्लीच मुक्कामीं मृत्यु पावले. बाळाजी महादेव यांचे बंधु रामाजी व दिव व आमचें आजें जनार्दन बल्लाळ यांस फडणीशीचें कामावर मुकरार केले. उभयतां वारल्यावर रामाजी महादेव यांचे पुत्र बाबूराव राम फडणीशीचे दरकाचें काम करूं लागले. त्या काळीं आमचे वडील नाना फडणीस लहान होते. पुढे भाऊसाहेब पेशवे पाणिपतचे स्वारीस निघाले, तेव्हां पुणें मुक्कामीं फडणीशीचें कामावर बाबूराव राम राहून स्वारीबरोबर भाऊसाहेब यांनीं नाना फडणीस यास घेतलें. ते वेळेस नाना फडणीस यांचें वय चौदा वर्षांचें होतें.

१. एकंदर खानदानीची पदवी व थोरपणाचा इतिहास दाखल्यानिशीं लिहून यावा ह्मणून. याचें उत्तर:—बाळाजी महादेव यांस फडणीशीचे दरकाचे काम थोरले शाहू-महाराज यांनी दिलें. त्यांचे बंधु रामाजी महादेव व पुत्र जनार्दन बल्लाळ व बाबूराव राम व नाना फडणीस यांचे हातून फडणीशीचे दरकाचे काम, थोरले बाजीरावसाहेब व चिमाजी आप्पासाहेब व नानासाहेब व भाऊसाहेब पेशवे यांचे कारकीर्दीत हिंदुस्थान वगैरे स्वान्या केल्या त्यांत मोठेमोठे पानिपतासारखे प्रसंग जिवानिशीं जाण्याचे गुजरले, तितक्यांतून निभावून थोरले माधरावसाहेब यांचे कारकीर्दीअखेर फडणीशीचें काम केले. पुढें माधवरावसाहेब वारल्यावर नारायणरावसाहेब गादीवर बसले. त्यांजवर दादासाहेबांनीं गर्दी केली. ते वारल्यानंतर नारायणराव यांची स्त्री गंगाबाई यांस पुरंदरास नेली. तेथें सवाई माधरावसाहेब यांचा जन्म शके १६९६ सन १७७४ इसवी सालीं जाहल्यापासून नाना फडणीस यांनीं फडणीशीचे दरकाचें काम सांभाळून दरोबस्त राज्यकारभार करून टिपूवर व खड्गावर स्वान्या केल्या. पुढें माधवरावसाहेब उडी ठाकून वारल्यावर दोन वर्षांनीं बाजीरावसाहेब गादीवर

बसल्यानंतर, नाना फडणीस यांनीं विनंती केली कीं, आह्मी अव्वल पेशवे यांचे कारकीर्दीपासून आजपावेतो श्रमसाहस करून फार मेहनत केली, हल्लीं आमचा वृद्धपकाळ जाहला, पुढें दत्तपुत्र देऊन चालविलें पाहिजे. त्याजवरून बाजीरावसाहेब यांनीं कराराची याद करून दिली. त्यांत तुह्यांस दत्तपुत्र देऊन फडणीशीचे दरकाचे काम घेऊं व पंचवीस हजारांचें इनामगांव दत्तपुत्राकडे देऊन चालवूं, याप्रमाणें करार केलें. पुढें नाना फडणीस वारले.

सदरहू मजकुरावरून, व थोरले शाहूमहाराज यांनीं राजपत्रें करून दिलीं, व बाळाजी विश्वनाथ व त्यांचे पुत्र बाजीराव बळाळ पेशवे यांनीं इनामपत्रें मौजें वाकसई तर्फ नाणेमावळ या गांवची प्रथम करून दिलीं, तीं आह्मांजवळ आहेत. त्याच्या नकला करून पाठविल्या आहेत. त्यांजवरून व वर लिहिले हकिमतीवरून फडणीशीचे दरकाचा व खानदानीचा सर्व मजकूर दिलांत येईल. रवाना छ १९ सफर सन इसचे खमसैन. ज्यादा काय लिहिणें, प्यार मोहोबत असों दिजे हे किताबत.

ब

श्री

शिक्षा.

स्वस्ती श्री राज्याभिषेक शके ४६ विकारी नाम संवत्सरे श्रावण बहुल त्रयोदशी भानुवासरे क्षत्रिय कुलावतंस श्री राजा शाहू छत्रपती यांनीं

शिक्षा

शिक्षा

राजश्री रामाजी महादेव व जनार्दन बळाळ उपनाम भानु यांशीं:-

दिल्लें इनामपत्र ऐसीजे, राजश्री बाळाजी महादेव, जनार्दन बळाळ यांचे बाप व तुमचे भाऊ यांसी, राजश्री बाळाजी पंडित प्रधान यांजकडे मजमूनिसबतीनें फडणीसी लिहिणेंयाचें प्रयोजन होतें. पंडित मशारनिल्ले दिल्लीस गेले. तेव्हां स्वारीबरोबर होते. दिल्लीचे मुक्कामीं युद्धप्रसंग जाहला. ते समयीं बाळाजी महादेव यांस शस्त्रघात होऊन स्वामीकार्यावरीं मृत्यु पावले. याकरितां तुमचें चालवणें स्वामीस अवश्यक जाणोन, स्वामी तुह्यांवरी कृपाळु होऊन तुह्यां उभयतांस इनाम मौजें वाकसई तर्फ नाणेमावळ हा गांव कुलकानुदेखील हल्लींपट्टी व पेस्तरपेड्डीखेरीज इनामदार व हक्कदार तुह्यां उभयतांस पुत्रपौत्रादी वंशपरंपरेनें इनाम दिल्ला असे. तरी तुह्मी मौजें मजकूर चतुःसीमापूर्वक मर्यादेप्रमाणें आपले स्वाधीन करून घेऊन वंशपरंपरेनें इनाम अनुभवून सुखरूप राहणें. जाणिजे. लेखनालंकार (मोर्तब.)

## २० सातारा फडणीस.

सन १८५१ इसवी.

कुंपणीसरकारास.

मादी सखाराम बापूजी फडणीस अमात्य हुजूर सातारा सन १८५१ इसवी. तुमची हकीकत कशी आहे ती लिहून देणें ह्मणोन मुंबईसरकारचे हुकुमावरून थामस बोगलवी-

साहेब एस्कायर कमिशनर इलाखा सातारा यांनीं हुकूम केला. त्याजवरून लिहून देतो ऐसीजे:—आमचे पणजे धोंडो गोपाळ खांडेकर यांस कैलासवासी शाहूमहाराज यांनीं फडणिसीचे दरखाची नौकरी सांगितली. तेव्हांपासून सातारीयांत महाराज सरकारचे पदरीं अजमासें दीडशें वर्षे नौकर आहों. त्याविशींचे हकीकतीचीं कलमें:—

१ आमचे तीर्थरूप कैलासवासी बापु कानो यांनीं कैलासवासी प्रतापसिंहमहाराज यांचे तीर्थरूप आबासाहेब महाराज यांचे हुकुमावरून त्यांचे बंधु चतरसिंग राजे भोंसले यांसमागमें सरकारकामाबद्दल या प्रांतीं व हिंदुस्थानांत चाकरी करीत होते. तेव्हां बाजीराव पेशवे यांनीं, चतरसिंग राजे भोंसले यांस तुमचे कामाचा बंदोबस्त मनोदयानरूप करून देतो असें विश्वासानें बोलावून कैद करून कांगोरी किल्ल्यावर ठेविलें. ते तेथेंच मृत्यु पावले. आमचे तीर्थरूप यांस किल्ले जिवधन येथें ठेविलें, व एक इनामी गांव प्राचीन होता तो जप्त केला. कैदेत सहा वर्षे हांते. ते इंग्रजी सरकारचा अंमल सन १८१७ आठरा सालीं जाहला, तेव्हां सुटले. नंतर मेहेरबान ग्रांटसाहेब बहादूर यांची मुलाकत घेऊन त्यांजला आपला मजकूर जाहिर केला. त्यांनीं महाराजसरकारांकडे जाऊन त्यांचें दर्शन घ्यावें असें सांगितल्यावरून, प्रतापसिंह महाराज यांजकडे जाऊन दर्शन घेतलें. त्यांनीं आमचे तीर्थरूपास हुकूम केला कीं, तुम्ही सरकारचाकरी नेकजादीनें व श्रमसाहास करून केली, त्यांत तुह्यांस इजा फार जाहली. आतां तुमचें चांगलें आह्वांकडून होईल तितकें करूं. अशी आज्ञा करून, फडणिसीचे दरखाचें काम खाजगी व दौलतीकडील सांगितलें, व पालखी दिल्ली, व मोठी अब् होण्यास्तव अष्टप्रधानांतील आमात्यपद दिल्लें, व एक गांव एक हजार रुपयांचा इनामी वंशपरंपरेनें दिल्ला व पांचशें रुपये पगार दरमहा पावत होता. ते सन १८३६।३७ इसवी सालीं मृत्यु पावले. त्यांचें वय पाउणशें वर्षांचें होतें.

२ आह्मी पंधरावे वर्षापासून प्रतापसिंह महाराज यांचे हुकुमावरून नौकरी करावयास लागलों. महालमुलकी कामांत तयार होण्याकरितां महाराज यांनीं प्रथम पेठा कोरेगांव येथील चौकशीस पाठविलें; व जहागीरदार यांचे मुलखाची जमीन सरकारांत होती, तेव्हां तेथील चौकशीचें कामावर पाठविलें व हुजूर स्वार शिबंदी तोफखान्याचे हिशेबाचें कामावर कैलासवासी बळवंतराव राजे भोंसले सेनापती यांजकडे नेमिलें; व तीर्थरूपांचे हात गिं काम करीत होतो व महाराज सरकार ज्या वेळेस जी नौकरी सांगत होते ती जात आलों. तीर्थरूप वारले तेव्हां त्यांनीं बहुत दिवस चाकरी इमानें केली व मीही त्यांचें काम चालवीन अशी महाराज यांची खात्री होऊन, त्यांनीं तीर्थरूपांकडे दौलतीकडील व खासगीकडील फडणिसीचें काम होतें, त्याप्रमाणें सांगोन पगार तीर्थरूपांस होता तितका कायम केला, व पालखी दिल्ली. प्रतापसिंह महाराज होतेतोंपर्यंत चाकरी उमेदवारीनें सहा वर्षे व खासगीकडे व दौलतीकडे तेरा वर्षे अशीं एकूणीस वर्षे चाकरी केली.

३ कैलासवासी शाहाजी महाराज यांजपाशीं नऊ वर्षे दौलतीकडील व खासगीकडील फडणिशीचे दरकाची नोंदरी करीत आलों व महाराज यांचे खासगी कारभारी व दौलतीकडील दिवाण कामांतून निघाल्यावर त्यांचेंही काम महाराज आमचे हातून घेत होते; व तीर्थरूपांस अष्टप्रधानांतील आमात्यपद होतें, त्याप्रमाणें आह्मांस दिलें. मोठे अब्रूनें व लोभांत वागवीत होते. व अंतकाळसमयीं महाराज यांणीं मेहेरबान डाक्टर मरीसाहेब बहादूर यांस बोलावून, आपले मागें बंदोबस्त राहावयाचा मजकूर सांगितला, तो मरीसाहेब यांणीं लिहिला. त्यांत आमचे भरंवशाचा कामगार सखाराम फडणीस आहे असें सांगितलें. तें मरीसाहेब यांणीं त्या वेळचे हकीकतींत लिहिलें आहे.

४ महाराज कैलासवासी जाहल्यावर मेहेरबान फियरसाहेब बहादूर कमिशनर राज्याचें काम पाहूं लागले. तेव्हां त्यांणीं कामाप्रकणीं वगैरे जसजसी माहिती विचारली तशी सांगितली व आपले दरखाचें लिहिण्याचें काम संभाळून त्यासमागमें पेट्यानिहाय जमाबंदीस वगैरे फिरतांना व सातार मुक्कामीं वेळेस वेळेस हजर राहून सरकारनौकरी इमानें व मेहनतीनें करावयाची तशी केली व आह्मांवर साहेब बहादूर यांणीं मेहेरबानीची नजर ठेऊन नोकरी घेतली.

५ फियरसाहेब कमिशनर यांची बदली जाहली तेव्हां त्यांणीं हुकूम केला कीं, तुम्ही आह्मांपाशीं काम करीत आलां त्याप्रमाणें करावें व आपले दरखाची चाकरी करावी. हल्लीं मेहेरबान वोगलवी साहेब आले आहेत ते तुम्हांस आब्रूनें वागवून चाकरी घेतील. असें सांगितल्यावरून पहिलेप्रमाणें फडणिशीचें काम करीत आहां. आजपर्यंत जातीनें चाकरी पंचवीस वर्षे केली.

६ आमची सर्व हकीकत व सरकारचाकरी इमानें अकृत्रिमपणें करण्याची चाल व गरिबीची वागणूक आहे हें फियरसाहेब यांनीं ध्यानास आणून, आमचे चिरंजीव पांच आहेत, मोठें कुटुंब याजकरितां आमचे मागें अब्रूसारखी कांहीं तरी निर्वाहाची सोय असावी असें जाणून, साहेबबहादूर यांनीं सरकारांत पत्र लिहिलें आहे. त्याप्रमाणें आम्हांवर सरकारांतून मेहेरबान होऊन मोठे कृपेचे नजरेनें आमचें कुटुंबाचें संरक्षण होई असें केलें पाहिजे.

७ आह्मांकडे हल्लीं इनामी उत्पन्न वंशपरंपरेचें चालत आहे. तें अजमासें रुपये.

१८६। कैलासवासी शाहूमहाराज यांनीं जमिनी दिल्या त्याजबदल.

१५० कसबें तारगांव येथें जमीन जिराईत चाहूर एक बिघे १२० कमाल आकार रुपये २५६ पैकीं हल्लीं वसुली.

३० मौजें सोनगांव तर्फे सातारा येथील कदीम बिघे ८१५ व वाढ्यां-  
तील जाजती जमीन काढिली त्यासुद्धां हल्लीं मोजणीनें बिघे  
८३०८३॥ याचा वसुली आकार.

६। कसबें निंब पेठा कोरेगांव येथील मजरे नागेवाडी येथें जमीन बिघे ८२॥ येकूण वसुली आकार.

१८६।

१०४० कैलासवासी प्रतापसिंह महाराज यांनीं मौजें करंजवडें पेठा वाळवें हा गांव व मौजे खेड पेठा सातारा येथील चाळीस रुपयांची जमीन दिल्ली, ती कैलासवासी शाहाजी महाराज यांनीं सरकारांत घेऊन त्याचे मोबदला दुसरें ठिकाणी दिल्ले ते.

१००० आमचें नावें मौजे कारी तर्फ परळी पेठा सातारा हा गांव दग्वस्त त्याचा कमाल आकार ११३६।१ पैकीं वसुली.

४० चुलतबधु राधा भोडदेव खांडेकर यांचे नावें जमीन मौजे सोनगाव तर्फ सातारा येथें.

१०४०

१२२६।

याप्रमाणें स्वास्थ्य आहे, त्याच्या सनदा आहेत.

याप्रमाणें आमची हक्कित आहे. ती सरकारास जाहिर होण्याकरितां सविस्तर लिहिली आहे. त्याजवरून आमची योग्यता ध्यानास आणून, सदरी साहावें कलम लिहिलें आहे त्याप्रमाणें, आमचे पश्चात व हल्ली आमचा गुजारा चालला आहे. त्याप्रमाणें सरकार मेहरबान होऊन चालविले पाहिजे तारीख २० माह फेब्रुवारी सन १८५१ इसवी.

### २१ बित्तिवाले.

साहेब मुषफक मेहरबान कर्म फर्माय दोस्ता हेनरी त्रौणसाहेब एजंट जिल्हा दक्षिण सलाम हू. ५

⑥ अजी साहेब सिद्धेश्वर महिपतराव बिनिवाले. सलाम बादज सलाम अंकी येथील खेरीयत तारीख १५ माह सप्टेंबर सन १८५१ इसवी जाणून आपली शादमानी हमेषा कलमी करीत असले पाहिजे. आसाहेबांकडून पत्र तारीख २६ माह आगष्ट सन १८५१ इसवीचें आलें. त्यांतील हशील मजकूर की, सरकारचा हुकूम तारीख ३० माहे जुलई सन १८५१ इसवीचा आल्यावरून कलमी केले जातं जे:- आपल्यास किताब बिनीवाले पद आहे. कधी, कोणत्या सबबीनें, कोणाकडून, प्राप्त जाहलें त्याचा व एकंदर पदवी थोरपणाचा व खानदानीचा इतिहास दाखलनिशीं लिहून यावा व त्याजबरोबर दाखला असेल तोही पाठवावा. व ऐकीन मजकुराची हकीमत असेल त्याविषयीं कांहीं पुरावा नसेल तरी तसेंही साफ लिहून यावें; परंतु जुने कागदावरून व माहितपार लोकांकडून जितकी माहिती

सांपडेल तितकी सर्व लिहून यावी. याजबद्दल सरकारास जाब जाणें आहे. ह्मणोन पत्र नंबर १०६६ चें आलें. त्याजवरून आमचे खाज्जदानीचा व बिनीचें पदाचा इतिहास कांहीं दाखलेनिशीं व माहितीवरून कलमवार मजकुर लिहून पाठविला आहे.

१ आपल्यास किताब बिनीवाले पदवी आहे, हें कधीं व कोणते सबबेनें कोणाकडून प्राप्त जाहलें याचा इतिहास: बिनीवाले हा किताब व पदवी दरसाल श्रीमंत पेशवे मुलुखागिरीचे स्वाऱ्या शिकान्यास जातात, त्यांजबरोबर आमचे आज्ञे विसाजी कृष्ण, पागा व पथकाचे सरदार या सबबेनें जात होते. त्यांत फौजेचे आघाडीस यांची तलवार, असें सरकारचे नजरेस आलें. तेव्हां हे मर्द माणूस, मोठे हिमतीचे, असें मनांत आणोन, श्रीमंत बाळाजी बाजीराव ऊर्फ नानासाहेब पेशवे यांनीं बिनीस स्वारी बरोबर चालावें असें सांगितलें. त्याचा सुमार शालिवाहन शके १६७१।७२ या सालापासोन नेमणूक होऊन इतमाचाचे खर्चास पोत्यापैकीं ऐवज देत होते. येविषयींचे दाखले पेशवे सरकारचे दफ्तरां असतील.

२ कर्नाटकांत कडप्याचे स्वारीस बळवंतराव गणपतराव मेहेंदळे व विसाजी कृष्ण यांस पाठविलें. त्या स्वारींत शूरत्वाचा लौकिक, बढतीचा जाहला. स्वारी होऊन आल्यावर बिनीचें काम मुकुरर सांगितलें. तेव्हांपासोन बिनीवाले असा ह्मणणेचा इरादा चालला आहे.

३ एकंदर पदवी व थोरपणाचा इतिहास.

१ हिशेब गांव पागा निसबत विसाजी कृष्ण यांजकडे गांवच्या खंडण्याचा हिशेब शिक्का मोर्तबानिशीं सुरुसन सितैन मया व अलफचा साहा गांवची बेरीज रुपये १०९३९ गांव दिले; सालमजकुरीं नवे गांव दिले; असें लागलें आहे. तेव्हांपासोन सरंजाम व थोरपणाची बढती.

२ पथक पागा निसबत विसाजी कृष्ण सुरुसन सितैन मया व अलफ ह्मणोन आहे. त्यांत सरंजामास महाल लागले आहेत, व निंबाळकरांकडील गांव वगैरे देशचे मोबदला सुटतील ते दरोबस्त सरकारचा अंमल मशारनिल्लेकडे द्यावे असें कलम ठरलें आहे, व त्याप्रमाणें रांजणगांव वगैरे मुलूख आला तो राक्षसभुवन व सांगोलें दिले. बिनीरखवालीचा ऐवज सालमजकुरीं आकारेल तो सालमजकुरीं पथकाकडे पंधरा हजार रुपये द्यावे. बाकी सरकारांत जमा करावे. याजवरून बिनीचें काम विसाजी कृष्ण करीत होते. त्याजवरून इतर सरदार, पागे, पथकें यांणीं आपलाले मिसळ राखण्याचें धोरण सर्व बिनीचें निशाण पाहून, कूच मुक्काम बिनीचे नौबतीवर पागे, पथकें यांनीं हुशार होऊन, बिनीचें निशाणामागें चालावें असा इरादा बिनीचा होता. याजमुळें बिनीवाले असा शब्द प्रसिद्ध केला ह्मणोन बिनीवाले ह्मणतात. त्याजवरून जुने कागदावरील नकल आझांपाशीं आहे ती पाहण्याकरितां पाठविली आहे. अस्सल दफ्तरां आहे. ती पाहण्यांत यावी. व



पहिला हुदा कागदोपत्री लिहिण्याची चाल नव्हती. लढाया वगैरे करून मूलूख सर करावे. त्याजबद्दल सरकारांतून इनाम जहागिर मिळावी. सर्वांही मोठे ह्मणावे. येणेकरून तो पुरुष मोठे योग्यतेस आला. असा प्रकार कर्तृत्वावर, योग्यता मोठी. आमचे आज विसाजी कृष्ण यांनीं शूरत्वावर सरंजाम मिळविला. येविशीं खानदानीचे व सरंजाम चालल्याचे दाखले पेशवे सरकारचे दमरीं आहेत.

३ पेशवे सरकारावर पानपतचे गर्दीचा प्रसंग गुजरून भाऊसाहेब पेशवे गारव झाले. त्या तुरकांनीं आबदाली गिलिच्यांचे व रोहिले लोकांचे मोठे मोठे सरदार वगैरे नामधारक लोक यांचा सूड घ्यावयाजोगा पराक्रमी सरदार कोण, याचा विचार श्रीमंत थोरले माधवराव साहेब यांनीं केला. त्यांत विसाजी कृष्ण यांजविशीं खात्री होऊन समागमें रामचंद्र गणेश व शिंदे, होळकर व हुजूरत बरोबर देऊन ते हुकुमांत वागत होते. याप्रमाणें हिंदुस्थानप्रांतीं जाऊन गिलिच्यांशीं लढाई करून फतरगड घेतला. पांच चार वर्षे छावणी घालून हिंदुस्थान प्रांताचा बंदोबस्त करून कोट्यावधीची दौलत सरकारांत आणिली; आणि दिल्लीचा बादशाहा शाहाआलम भडकत फिरत होते, त्यांस ऐश्वर्यानिशीं दिल्लीचे तत्कावर आणोन बसविलें. बादशाहा यांनीं आह्मांस मूलूख वगैरे देण्याचा करार केला. या मराठबीचीं पत्रें श्रीमंत माधवराव बल्लाळ व नारायणराव बल्लाळ पेशवे यांनीं आमचे आज विसाजी कृष्ण यांस ते समयी पाठविलीं आहे(त). ते वेळेस सरकार काम कसकसें केलें याचा मजकूर सर्व पत्रांत लिहिलाच आहे. तीं अस्सल पत्रें सुमारीं चार पाहण्याकरितां पाठविलीं आहेत. तीं अक्षरशः पाहण्यांत येऊन, ते वेळेस सरकार कामें विसाजी कृष्ण यांनीं कसकशीं केलीं व थोरपणा कसा प्राप्त जाहला, तो त्या पत्रांवरून उघड ध्यानांत येईल. व मेहेरबान घांट साहेब यांनीं पेशव्यांचा इतिहास लिहिला आहे, त्यांत विसाजी कृष्ण यांचें वर्णन लिहिलें आहे.

३

४ खानदानीचा इतिहास बहुतकरून तिसरें कलमांतील पोट ३ चें कलमांत समाजावयाजोगा लिहिला आहे. पेशवेसरकारचें चालवणें कोणते रीतीनें होतें कीं, विसाजी कृष्ण यांस प्रथम शालिवाहन शके १६७१।७२ या सालापासून पागेचें काम श्रीमंत राजश्री बाळाजी बाजीराव उर्फ नानासाहेब पेशवे यांनीं सांगितलें व इतमामाचे स्वर्चास पोत्यापैकीं देवज देत होते. नंतर कर्नाटक प्रांताची कडपेचे स्वारीहून आल्यावर श्रीमंत नानासाहेब यांनीं विसाजी कृष्ण यांस हुसतन सिंहा या सालीं अकरा हजारचे सरंजामास

गांव करून दिले. नंतर हिंदुस्थानचे स्वारीहून आल्यावर आमचे आज्ञे यांस जात तैनात रुपये ३५१६० व पालखी व हत्ती व फौजेचे खर्चास मिळोन एकंदर सरंजाम गांव महाल ३०१९३१८४ याप्रमाणें सुरुसन सबा सबैन या सालीं करून दिल्या. नंतर आमचे तीर्थरूप माहिपतराव विश्वनाथ यांस सुरुसन इहिदे समानीन मया व अलफ या सालीं करून दिल्या. त्यांच पाठीमागें आह्मांस सुरुसन रामान समानीन मया व अलफ या सालीं जात तैनात व पालखी व हत्ती व नेमणुकी खर्च ५६५०० सुद्धां व खेरीज इनामी गांव वगैरे सरंजाम गांव श्रीमंत बाजीरावसाहेब यांचे कारकीर्दीपर्यंत कांही वर्षे चालला, व आह्मी बदामीचे व खड्यांचे स्वारीबरोबर गेलों होतो. असा पुस्त दरपुस्त सरंजाम चालला. याचीं पत्रें या यादींत भिडविलीं आहेत. तीं पाहण्यांत यावीं. पुढें बाजीरावसाहेब यांनीं जुने सरदार मोडांव या इराद्यानें विनाकारण आमचा सरंजाम व इनामी गांव वगैरे व राहता वाडाही घेतला. त्यांत आमचे दाखल्याचे कागद गेले. नंतर कांहीं थोडी नेमणूक करून दिली.

५ आह्मी आपले मोठेपणाचें वर्णन आपलें मुखें काय करावें ? सरकारांनीं शोध करून किताब लिहून ठेविलाच आहे. मोठेपणा राखणें सरकाराकडे आहे. बाजीरावसाहेब यांनीं सरंजाम घेतल्यावर पागेचे खर्चास दरमहा रुपये ६०० व जात खर्चास सालीना रुपये २००० देत होते. याप्रमाणें पेशवाई अखेर चालले. पुढें कंपनीसरकारचा अंमल झाल्यावर मेहरबान एन्फिस्टनसाहेब बहादुर यांनीं, श्रीमंत देत होते ते मुसुम धरून दोन हजार रुपये सालीना पेनशन आह्मांस करून दिलें. त्याजवर गुजारा करून आहोत. हल्लीं प्रपंच मोठा वाढला आहे व सदरील लिहिलेले खानदानीचें अवलोकन होऊन पुढें मुला-बाळाचें चालविलील, हा लौकिक सरकारचा आहे.

६ हल्लीं कागदपत्र दाखला पाहण्याकरितां अस्सल व नकला करून पाठविल्या आहेत. सरकारास लिहून कागदपत्र परत पाठविले पाहिजेत. येणेंप्रमाणें पाठविले आहेत व खेरीज कागद आमचे खानदानीचे दाखल्याबद्दल दमरी नानाचे वाड्यांत आहेत. त्याजवरून आमचे मराठबीचा इतिहास सर्व ध्यानांत येईल.

१. गांव व पागा निसबत विसाजी कृष्ण सुरुसन सीत सितैन मया व अलफ अस्सल शिक्के मोर्तबीचा दाखला.

१. यादी पथक पागा निसबत विसाजी कृष्ण सुरुसन सीत सितैन मया व अलफ या सालचा अस्सल बरहुकूम नकल अस्सल दमरी अस.

१. अस्सल पत्र माधवराव नारायण यांनीं हरी बल्लाळ यांस लिहिलें आहे कीं विसाजी कृष्ण यांचे महालास व गांवांस उपसर्ग न करणें ह्मणोन छे १२ रबिलाबल सुरुसन सबा सबैन मया व अलफ.

१. विसाजी कृष्ण हिंदुस्थानचे स्वारीस गेले, ते वेळेस पेशवेसरकार यांनीं पत्रे पाठविली तीं अस्सल पाहण्याकरिता पाठविली ती सुमारी ४.  
२ सरजाम पुस्त दरपुस्त चालत होता.

१ विसाजी कृष्ण यास मोठा सरजाम जाहला. ती याद सुरुसन सवा सवैन मया व अलफ

१ महिपतराव विश्वनाथ यांचे नावे सरजाम सुरुसन इसने समानीन मया व अलफ.

२ खुद आमचे नावे सिद्धेश्वर महिपतराव सुरुसन समान समानीन मया व अलफ.

आमचे तीर्थरूप मयत जाहल्यावर आमचे नावे सरजाम चालावा ह्मणोन माधव-  
राव नारायण यांनी देशमुख देशपांडे यास अस्सल शिक्या मूर्तबानिशी पत्र छ २७  
रविलावल सुरुसन तिसा समानीन मया व अलफ.

इनामगाव मौजे कावरी तर्फ तदन प्रात वाई हा गाव पत्रपौत्रादि वंशपरंपरेनें  
करून दिल्या. त्या सनदची नकल.

मेहेरबानाई सर्व आमन इतिहासाचा व ग्वानदानीचा व मरातबीचा पेशवेसर-  
कारचे कागदपत्र पाहन सरकागस अभिप्राय लिहून पुस्तदरपुस्त मरातबराहून इनाम-  
गांव व लढाईअंगेर चालली नेमणूक व पेनशन पेशाजीचे बहिवाडीप्रमाणे सरका-  
रांतून बंदोबस्त करून देवविण्यास सरकार ग्वावद मुखन्यार आहेत.

येणेप्रमाणे मजकूर लिहिला आहे. ज्यानी येऊन बंदोबस्त करून देविला पाहिजे.  
आदा काय लिहिणे ? प्यार मांहेवत असो यावी हे किताबत  
सती सिद्धेश्वर महिपतराव बिनीवाले, हस्ताक्षर खुद.

ब.

बाबा सिद्धेश्वर महिपतराव बिनीवाले. सुरुसन सलास सलासीन मयातैन व अलफ.  
सरकारांतन मेहेरबान ज्यान वार्डन मांहेव बहादर डिपुटी पण्ड जिल्हा दक्षण यांचे  
कचेरीहून तारीख ८ माहे सपटंबर सन १८३२ इसवीचे पत्र आले. त्यांतील मजकूर जे.  
हजरत बंदगानअल्ली राईट हनराबल गौरनर कांसल चाहत आहेत की, दक्षिणेंत जहागिरदार  
लांक यांची कैफियत कशी आहे, त्याची वाकबगारी व्हावी. यास्तव आपण मेहेरबानी  
करून सरकारांत रवाना करण्याकरिता थोडे मजकुरांत कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे,  
अशा अन्वयाचे पत्र आले त्याजवरून इकडील मजकूर लिहून देतो. वितपशील.

१ आमले खानदानीची बढती कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक  
महशूर जाहला, याचे उत्तर:—आमचे आज विसाजी कृष्ण यांनीं भीमत कैलासवासी

नानासाहेब पेशवे यांजपारशी चाकरी बहुत केली. त्यांनीं बाळाजी खंडेराव सरकारचे पागे होते. त्यांची पागेची मजमूची असामी प्रथम दिल्ली. नंतर श्रीमंतांचे स्वारी बरोबर चाकरी लढाईत कामकाज चांगलें बजाविलें. तेव्हां श्रीमंतांनीं कृपा करून यांस पागा दिल्ली, आणि तैनातही चांगली केली, व बिनीचें काम सांगितलें. तेव्हांपासून बिनीवाले असें ह्मणतात. पुढें बळवंतराव कृष्ण मेहेंदळे सरकारचे सरदार यांस कडपेचे स्वारीस रवाना केले. त्यांजबराबर यांची नेमणूक केली. तेथें कामकाज चांगले केलें. तेथून आल्यावर श्रीमंत भाऊसाहेब पानपतास स्वारीस जाऊं लागले, तेव्हां कर्नाटकांत कोण पाठवावें ह्मणोन विचार केला. तेव्हां विसाजी कृष्ण हे काम करावयास योग्य आहेत, असें श्रीमंतांचे दिलास घेऊन यांजबराबर दहा पंधरा हजार स्वार व पायदळ व तोफा वगैरे सरंजाम देऊन कर्नाटकांत अर्काट प्रांती यांची रवानगी केली. तिकडून लढाया मारून अर्काट वगैरे संस्थानच्या खंडण्या घेऊन आले. तो पानपतास भाऊसाहेब यांची गर्दी जाहली. हें बहुत दुःख झालें. आणि विसाजी कृष्ण कर्नाटकांतून सरकार कामें बजावून खंडण्या घेऊन आल्यावर नानासाहेबांस बहुत संतोष जाहला. विसाजी कृष्ण यांस बक्षिस व तैनात ही जास्ती करून दिल्ली. नंतर नानासाहेब कैलासवासी जाहले. पुढें दादासाहेब व थोरले माधवरावसाहेब यांजबराबर स्वारी शिकारी करून चाकरी केली. राक्षसभुवनावर नबाबाची लढाई जाहली तेथेंही सरकारचे फत्ते होऊन तो मुख्य सरकारांत घेऊन आमचे सरंजामास दिल्या. पुढें श्रीमंतांनीं जातीची तैनात चाळीस हजार करून दिल्ली, व सात आठ लक्षांचा सरंजाम फौजेस महाल वगैरे लावून दिले. हिंदुस्थानांत विसाजी कृष्ण यांची रवानगी केली. त्या काळीं यांजबराबर सलतान लाख फौज शिंदे व होळकर आदिकरून थोरथोर सरदार आमचे निसबतीस ताबेदारीस दिले. ते यांचे हुकमतींत वागत होते. अशा इतमामानें यांची रवानगी केली. पूर्वी गिलच्यांनीं भाऊसाहेबांवर गर्दी केली, त्याचा सूड घेईल असा सरदार जवामर्द कोण आहे ह्मणोन याची विचारणा होऊन यांची योजना केली, यांनीं फत्तरगडची स्वारी गिलच्याचें पारपत्य करून लाखों फौजाचा खर्च चालवून कोट्यावधीची दौलत सरकारांत आणिली. ही स्वारी शके १६९० पासोन चार वर्षे झाली. चौदा चौघडे जिल्बीस चालत होते. इतकी जमियत खासा स्वारीबरोबरही नसेल. असें ऐश्वर्य श्रीमंतांनीं कृपा करून वाढविलें आणि सरकारचीही फत्ते जाहली. तेव्हांपासून खानदानीची बढती लौकिक महशूर जाहला.

१. फौज व जातसरंजाम आपले वडिलांकडे चालत होता व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस दिल्या व आपले जहागिरीचे वहिवाटींत पेशवेसरकारांतून कोणते तऱ्हेनें दखलगिरी केली व आपणाकडे सरंजाम हल्लीं काय आहे ? याचें उत्तर:— जातीचा सरंजाम आजचे वेळेस चाळीस हजार व फौजेचा आठ लक्ष रुपयांचा वसुली होता. पुढें तीर्थरूप महिपतराव विश्वनाथ पांचे वेळेस फौजहुद्दा पेशी हजार रुपयांचा

चालत होता. पुढें आमचे कारकिर्दीस पंचावन्न हजार रुपयांचा सरंजाम चालत होता. मुखत्यारीनें बहिवाट आह्मीं करीत होतो. पेशवे सरकारची दखलगिरी कांहीं एक नव्हती. परंतु आमचे पथकास दरकदार होते ते महालचे हिशेब फौजसुद्धां सरकारांत समजावीत होते. त्याखेरीज सरकारांनीं दखलगिरी केली नाही. तो सरंजाम श्रीमंत राजश्री बाजीराव साहेब यांनीं जप्त केला, सबब हल्लीं आह्मांकडे सरंजाम चालत नाही.

१ पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कंपनीसरकारांतून चालत आहे त्यांत कंपेश तफावत काय आहे याचें उत्तरः— जी मातबरी तीन पिढ्या चालत आली, ती वरल्या कलमांत लिहिली आहे. हल्लीं कंपनीसरकारांतून मेहरबानी करून दोन हजार रुपये सालीना पेनशन देतात. त्याजवर गुजारा करून आहोंत. येणेंप्रमाणें इकडील मजकूर लिहिला आहे. तारीख छ ५ मोहरम सन १२४२ फसली.

### क

पुत्रवत् राजश्री विसाजी कृष्ण स्वामी गोसावी यांस

विनंती उपरी इंग्रेज(चें) पातशाहाजवळ प्राबल्य. त्याचे पातशाहास दिल्लीस स्थापावें हा (हेत) पांच सात वर्षे इंग्रजांनीं केला आहे. ते पातशाहास दिल्लीस आणते तर त्यांचें सामर्थ्य नव्हतें ऐसें नाही. आणितेच. परंतु ते पाण्यांतील पाव प्यादे, इतकी हिंमत त्यांची नाही. ह्मणोन पातशाहास दिल्लीस न जावें ह्मणत होते. परंतु पातशाहांनीं ऐकिलें नाही. आलेच. या अर्थे पाहतां पातशाहांनीं इंग्रेजांचा प्रकार तादृश मानिला तोच वृद्धिगत करावा. इंग्रेजांचा प्रवेश दिल्लीस होऊं देऊं नये. दिल्लींत प्रवेश जालीया उखळणार नाही. टोपीकरांत इंग्रेजांनीं डोई उचलली आहे. बंगाला व कलकत्ता व मछलीबंदर वगैरे बंदरे सुरतपावेतों आपले जमींत आणिलीं. कर्नाटक पायनघाट कुल इंग्रेज महमंदअल्लीखानानीं आटोपिला. सुरत तो मुंबईप्रमाणें इंग्रेजांनीं आपली केली. दिल्लींत प्रवेश त्याचा जाल्यास पातशाहा जेरदस्त त्याचा होईल. फार अवघड पडेल. इंग्रज चढी लागला आहे. त्याचे सुख सुजाअतदौला आदीकरून कोण्हास नाही. तरी अमीर सर्व आपले करून, सरदारांची फूट मोडून, एक होऊन, इंग्रेज माघारे जात तें करावें. इंग्रेजांनीं बंगाला पातशाहापासोन लिहून घेतला आहे, तोही तजविजीनें सुटे तें, पुढें केल्यास होईल. तूर्त त्याचा दिल्लींत प्रवेश न होतां, पातशाहास पाहून माघारे जात इतकेंच करावें. पातशाहा आपला एहसानमंद होऊन पातशाहाचा बंदोबस्त आपले हातून करून धेई, ऐशी कारस्ती जी होईल ती करावीच करावी. मनसुबेबाजपणाचा प्रकार हरहुजरे, एकास बैसवावें, एकास उठा ह्मणावें, आपलें वजन पुढें त्याजवर पाडावें, ऐसा समय आहे. यांत जो फैल मजबुदीनें कर्तव्य तो करणें. जाणीजे, .छ २० रबिलावल बहुत काय लिहिणें हे विनंती.

ड.

राजश्रीयाविराजीत राजमान्य राजश्री विसाजी कृष्ण स्वामी गोसावी यांस.

पोष्य माधवराव बल्लाळ प्रधान नमस्कार विनंति उपरी येथील कुशळ जाणोन स्वकीय लिहित जाणे. विशेष. तुम्हीं विनंतीपत्रं तीन पाठविलीं, एक छ १६ साबानचें, दुसरें छ ९ रमजानचें, तिसरें छ २६ रमजानचें पाठविलीं, ती एकामागें एक येऊन पावलीं राजश्री महादजी शिंदे पातशाहाकडे गेले होते. बोलणेंचालणें प्रमाणपुरःसर होऊन पातशाहाचे कूष करून चाललीयाचें व सैफुद्दी महमंदखान याचें मारफतीनें करार मदार जाहाला, त्याप्रमाणें त्याजकडून निकाल न जाहल्यास आपण करून देऊं; ह्मणोन नवाब सुजाअतदौला-कडील एलिचखान व अनुपगीर गोसावी येऊन भेटून सुजाअतदौलास आणावयास गेले. त्याजबरोबर दोन हजार फौज रवाना बाहिरजी ताकपीर व बाळाराव रवाना केली. याचा मजकूर विस्तारे लिहिला तो कळला. ऐशीयास येविशीचें उत्तर अलाहिदा लिहिलें असे, त्याजवरून कळेल. जाणीजे, छ १६ जिल्काद सुरुसन इसचे सवैन मया व अलफ. बहुत काय लिहिणें, हे विनंती.

इ.

राजश्रीयाविराजीत राजमान्य राजश्री विसाजी कृष्ण स्वामी गोसावी यांस.

पोष्य नारायणराव बल्लाळ नमस्कार विनंती उपरी येथील कुशळ जाणोन स्वकीय लिहित जाणें. विशेष. तुम्हीं विनंतीपत्र पाठविलें ते प्रविष्ट जाहले. जाबंतखानास मांडून ताराज केलें. तो पळून पहाडांत गेला. युद्ध मोठे जाले. सुकताल धेतले. पथरगड धेतला. त्याची दौलत, हत्ती, घोडे, तोफा वगैरे सरंजाम पाडाव केला. स्वामीच्या फौजेस मोठे यश आली-याचा निस्तार लिहिला, तो श्रवण होऊन सतोष जाहला. या प्रसंगी तुम्ही सर्वांनी युद्धाची तरतूद फार चांगली केली. अमित यश संपादिले. शाबास ! रोहिला अति गर्वित होता व त्यांनी अन्याय फारच केले होते. त्यांचे अन्यायानुरूप पारपत्य यथायुक्त जाहलें. याउपरी तिकडील वर्तमान लिहात जाणें. जाणीजे, छ २४ माहरम. बहुत काय लिहिणें, हे विनंती.

फ.

राजश्रीयाविराजीत राजमान्य राजश्री विसाजी कृष्ण स्वामी गोसावी यांस.

पोष्य माधवराव बल्लाळ प्रधान नमस्कार विनंती उपरी, येथील कुशळ जाणोन स्वकीय लिहित जाणें. विशेष. तुम्ही विनंतीपत्रे दोन छ ३० रमजानचें पाठविले ते छ २९ सवालीं पावले, व दुसरें छ २ सवालचें पाठविलें, तेंही छ २९ सवालीं पावले. पातशाहास आणून तस्तावर बसविलें हे कीर्ति स्वामीची दिगांतरास गेली. इराण, दुराण, बंदकबदक्षांपर्यंत खबरा गेल्या. तमाम अमीर व राजेरजवाडे व जमींदार वगैरेकडून पातशाहास नजरा येतात. पातशाहा स्वमुखें हा प्रताप स्वामीचा ह्मणोन वारंवार स्वामीचा स्तव करितों ह्मणोन तपशिलें लिहिलें, तें कळलें. ऐशास पातशाहा शाहाआलम बहुत दिवस भटकत फिरत होते.

इंग्रज व सुजाअतदौलाचा आसरा करून होते. तत्रापी दिल्लीस आणून तस्तावर बसवणें हें त्यास दुरापास्त होतें. त्यास हे गोष्ट न जाहली. तुमची व सरदार होळकरांची विमन-स्कता असतां, तुझीं व राजश्री महादजी शिंदे यांनीं पातशाहाशीं राजकारण करून त्यांस प्रयागाहून आणून दिल्लीस स्थापना केलीयाचा लौकिक मोठा असाधारण जाहला. कीर्तीस्पद प्रकारांत न्यून नाहीं हें खरें; परंतु पातशाहांनीं तुझांशीं पैका व मुलूख द्यावयाचा व कितेक मतालीब करून द्यावयाचा करार केला. त्यास, त्यापैकीं पैका व मुलूख पातशाहांनीं तुझांस काय दिल्या ? तीन छावण्या गुजरल्या; चवथी छावणी समीप आली; फौजेची उस्तवारी कशी केली व करणार ? यांत पातशाहाचा मतलब, जे गोष्ट कोणास न जाहली, ते गोष्ट हिंमत बांधून तुम्हांजवळून करून घेतली, हे गोष्ट मात्र त्याची सिद्ध जाहली. आपले स्वहिताचा प्रकार कसा ? पातशाहा तुम्हांजवळून सलतनतचा बंदोबस्त करून घेणार व सलतनतचा बंदोबस्त करून द्यावा हे हिंमत तुमची. त्यास वजीर सुजाअतदौल्यानीं तुम्हांशीं राजकारण एलचखान व अनुपगीर यांकडून करविलें कीं आपण येतो. पातशाहांनीं पैका करारप्रमाणें दिल्या तर उत्तम, न देत तर आपण देऊं. त्यांस आणावयास तुम्हीं फौजही पाठविली. परंतु ते अद्याप कां न आले ? येथें लिहिलीं येतात कीं, करनेल फिरंगी यांनीं पातशाहास दिल्लीस जाऊं दिलें. त्याजवरून मकसुदाबाद कलकच्यास मुगल्यार फिरंगी साबीतजंग आहे. त्यांनीं करनेलवर इतराजी केली. बोलावून घेतला. सुजाअतदौलास भेटून पट्टण्यास गेला. तेथें त्यांस कैद केला. तेव्हां करनेल मजकूर पोटकटारी करून मृत्यु पावले. सुजाअतदौलावर फिरंगी गालब आहेत. फिरंग्याची आज्ञा सुजाअतदौला घेणार. त्यांनीं आज्ञा दिल्लीस जावयास दिल्ली तर येतील; न देत तर त्याचे वस्तु येववत नाहीं. ते येत नाहीं. तेव्हां किरकोळ-रोहिले पठाण येतील न येत, पाहांव. पातशाहास घेऊन तुम्हीं जाबतेखानावर जातां. फितुर तो आहे. तत्रापि जाबतेखानांनीं रुजू आणिली तर मनसुबीयास वजन पडेल. पैका मिळेल. जाबतेखानास बक्षीगिरी सांगितलीया तो पैका देईल. जाबतेखानाचें राजकारण होळकरांचेंच. घेऊं त्यास खरें करूं, हें होणें नाहीं, हें तुमच्या लिहिण्यांत आहे. तदनरुप तुम्हीं कराल. करावें. फार चांगलें असे. होळकर भेटवून घेणें. राहतां वजीरी राहिली; त्यास सुजाअतदौला आले तर उत्तम. न येत त्यापक्षीं ज्वाजुदीखानाचें राजकारण आहे. परंतु हें दो गोष्टींनीं, खाली फौज नाहीं, पैका नाहीं, पातशाहाशीं नाखुषी आहे. ह्या गोष्टी सुधारल्या पाहिजेत. असो. सर्वा गोष्टीची गोष्ट सरकारची फौज खराब झाली, त्याप्रमाणें पैका व मुलूख तो साधलाच पाहिजे. प्रयाग व काशीचे मतलब होऊन यावे, तें तुम्हीं करून घेतलेच असतील. ज्यापक्षी सलतनतच्या बंदोबस्ताचा होदा तुम्हांकडे लागला, तेव्हां फौजेची उस्तवारी व कर्ज परिहार करणें तुम्हांस आगाध नाहीं. सरकारांत खजाना पाठवून घाल ऐसें दिसतें व तुम्हीं या तरतूद साधनेत असालच. कसकसें योजिलें आहे तें लिहून पाठविणें. सारांश, फरोका-

बादेहून पातशाहास आणून स्थापना दिलीस केली, हे पायाशुद्ध कर्म जाहलें. तुझीं उभय-  
तांनीं दम धरून चांगलें केलें. पुढें कर्तव्याचा प्रकार चित्तांत आणिला असेल, तो लिहून  
पाठविणें. जाणीजे. छ १६ जिल्काद. बहुत काय लिहिणें. हे निनांत.

### २२ बोकील.

यादी यशवंतराव आको बोकील सुरुसन आर्बा सलासीन मयातैन व अलफ सन  
१२४३ फसली. मेहेरबान जान वार्डीन साहेब बहादूर डिपुटी एजंट जिल्हा दक्षण यांनीं  
तारीख ८ माहे सप्टेंबर सन १८३२ इसवीचें पत्र पाठविलें; त्यांत मजकूर कीं, हजरत बंदगान-  
अल्ली राईट हनराबल गौरनर कौंसल चाहत आहेत जे, दक्षिणेंतील जहागिरदार लोक  
यांची कैफियत कशी आहे त्याची वाकबगारी व्हावी, यास्तव सरकारांत रवाना करावयाक-  
रितां थोडक्या मजकूरांत आपण कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे. त्यांतील तपशीलः  
आपली खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर झाला तें, व  
फौज जात सरंजाम आपले नडिलांवडे चालत होता व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस  
दिल्हा ती तारीख, व आपले जहागिरीचे वहिवाटींत पेशवेसरकारांतून कोणते तऱ्हेनें  
दखलगिरी केली तें, व आपल्याकडे सरंजाम हल्लीं काय चालत आहे तें, व पेशवेसरकारांतून  
आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कुंपणीसरकारांतून चालत आहे, त्यांत कंपेश  
तफावत काय आहे तें, बगैरे यादींत दाखल करून रवाना केलें पाहिजे ह्मणोन पत्र आलें.  
त्याजवरून इकडील मजकूर लिहिण्यांत येतो. कलमें बितपशीलः—

१ आपली खानदानीची बढती कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर झाला  
ह्मणोन लिहिलें, त्याचें उत्तरः आमचे आज्ञे सखाराम भगवंत उर्फ सखारामबापू हे, पुरंदरे  
पेशवे सरकारचे मुख्य दिवाण, यांचे पदरचे. त्यांनीं सरकारांत पेश करून वाढविले. त्यांचा  
लौकिक श्रीमंत दादासाहेब व थोरले माधवरावसाहेब यांचे वेळेस महशूर झाला कीं, चौ राज्यांत  
साडेतीन शहाणे. त्यांची नांवनिशी पेशवे यांचे राज्यांत सखारामबापू व निजामअल्लीचे  
राज्यांत विठ्ठल सुंदर व भोंसले यांचे राज्यांत देवाजीपंत व आंगरे यांचे राज्यांत अर्धे शहाणे  
जिवाजीपंत याप्रमाणें वदंता बुद्रुक माणसें बोलतात. त्यांतून आमचे आज्ञे यांची पैवस्ती

१ शके १६५४ यासाली श्रीमंत थोरले बाजीरावसाहेब यांस पेशवाईचीं वस्त्रें  
जाहलीं. त्यांनीं पुण्यांतील शनवारचे वाड्यास काम लाविलें, व स्वारी हिंदुस्थानांत गेली.  
महादोबा बाबा पुरंदरे दिवाणगिरी करीत होते. त्यांनीं सखारामबापू यांस सरकारांत  
कामास घातलें.

१ शके १६६८ यासाली श्रीमंत भाऊसाहेब यांची स्वारी कर्नाटकांत जाहली.  
बरोबर कारभारी सखारामबापू यांनीं फौज जमा करून, फौजेचा बंदोबस्त राखून, बहादूर-  
बिंडा किल्ला घेऊन, मसलत फत्ते करून पुण्यास आले.



१ शके १६७४ आंगिरानाम संवत्सरे यासालीं श्रीमंत दादासाहेब यांची स्वारी गुजराथेंत अमदाबादेस गेली. बरोबर दिवाण सखारामबापू होते.

१ शके १६७५ यासालीं श्रीमंत दादासाहेब यांची स्वारी हिंदुस्थानांत गेली. तिकडे छावणी जाहली. बरोबर कारभारी सखारामबापू होते.

१ शके १६७६ यासालीं कुंभेरीची स्वारी. श्रीमंत दादासाहेब यांचे बरोबर कारभारी सखारामबापू.

१ शके १६७८ यासालीं श्रीमंत दादासाहेब यांची स्वारी हिंदुस्थानांत. बरोबर कारभारी सखारामबापू. ती स्वारी लाहूर, अठकेपर्यंत दोन वर्षे झाली. मोठें यश संपादून खंडेराव हत्ती बहुत गुणी तो हत्ती सरकारांत आणिला. हाही लहानसा लाभ झाला.

१ शके १६८२ यासालीं श्रीमंत दादासाहेब यांची कर्नाटकांत गदकची स्वारी होऊन पुण्यास आले. ते वर्षी नानासाहेब यांचा काळ समीप आला. त्या समयीं थोरले माधवरावसाहेब यांचा हात सखारामपंतबापू व निळकंठराव महादेव पुरंदरे यांचे हातांत हात घालून राज्याचा बंदोबस्त राखणें ह्मणोन स्वमुखें सांगितलें.

१ शके १६८३ यासालीं थोरले माधवरावसाहेब यांस साताऱ्याहून वस्त्रे आणून निळकंठराव महादेव पुरंदरे व सखारामबापूंनीं राज्यकारभार चालविला. स्वारी कर्नाटकांत जाऊन खंडणी घेऊन आली.

१ शके १६८४, सन ११७२ यासालीं कर्नाटकांत \*श्रीमंत थोरले माधवरावसाहेब यांची स्वारी गेली. बरोबर कारभारी सखारामबापू.

१ शके १६९५ यासालीं थोरले मुक्कामीं थोरले माधवरावसाहेब आजारी होऊन श्रीगणपतीपाशी धरणें घेऊन राहिले. अंतकाळ समयीं श्रीमंत नारायणरावसाहेब यांचे हात सखारामबापूंचे हातांत घातले. समीप श्रीमंत दादासाहेब व हरी बल्लाळ फडके व नारो आपाजी तुळसीबागकर बसले हांते. यांजदेखत आज्ञा केली कीं, नारायणराव अज्ञान आहे; यांस शहाणे करून राज्याचा बंदोबस्त राखणें. ऐसं बापूस सांगितलें.

१ शके मजकुरीं कार्तिक वद्य ८ बुधवारीं थोरले माधवरावसाहेब यांस देवाज्ञा जाहली. रमाबाईनीं बरोबर सहगमन केलें. श्रीमंत नारायणरावसाहेब यांस आपघात झाला. श्रीमंत मंगाबाईसाहेब नारायणरावसाहेब यांची स्त्री गरोदर होती. तिजला पुरंदरचे किल्ल्यावर (नेलें). नारो आपाजी तुळसीबागकर यांजकडे सरकारच्या स्वान्या गेल्यावर पुण्यांतील कारभार होता. दादासाहेब स्वारीस गेलें होते. त्यांचे मागे बाई किल्ल्यावर माघमासीं नेली. ही मसलत सखारामबापूंनीं त्रिंबकरावमामा व नाना फडणीस यांचे समतीनें केली. पुढें शके १६९६ यासालीं सर्वांमाधवरावसाहेब यांचा जन्म झाला.

१ शके १७०० यासालीं श्रीमंत दादासाहेब यांनीं इंग्रजबहादूर मदतीस आणून तळेगांवावर लढाई जाहली. ते समयीं सखारामबापू व नानाफडणीस, व शिंदे, होळकर-

सुद्धां फौजा मिळोन लढाई केली. इष्टुर फाकडे इंग्रजबहादूर उपयोगी पडले. मसलत शेव-  
टास नेली. दादासाहेब यांस शिंदे यांचे हवालीं केलें. त्याच सालीं सखारामबापू नजरबंद झाले.

१ बापूचें शहाणपणाची तारीफ: जे पुढील होणार ते कैद करून हात्तीचे आंबारींत बसवून चालविले. ते समयी बरोबर राघो विश्वनाथ गडबोले, नानाफडणीस यांनीं दिल्ले होते. त्यांजपाशीं बापूंनीं, नानास निरोप सांगितला कीं, तुम्हीं आम्हांस शिंदे यांचे हातून धरविलें याचें कारण नव्हतें. हेच शिंदे, होळकर तुम्हांस व सरकारास जड होऊन, तुम्हींही त्यांचे हातून धरले जाल, आणि पेशवेसरकारांस मसलतीत आणून दौलत खराब कराल. कलम १.

२ फौजेचा सरंजाम आपले वडिलांकडे चालत होता व सरंजाम कोणते तारखेस दिव्हा त्याचें उत्तर:—

१ जातीस सरंजाम रुपये ६०००० साठ हजार रुपयांचा त्याचा तपशील:—

२३००० तर्फ नामपुर मोराणें बागलाणांतलें.

२६०० मौजें निंबगांव, धानोरें तर्फ पाबळ.

५५० मौजें दुधोडी तर्फ पेडगांव परगणे कडेवलीत.

७६६॥= मौजें धिवरी व मौजें नांदुर, परगणे शेवगांव येथील खेरीज मोकासा करून इनाम.

७०० बाबती सरदेशमुखी.

१६०० जहागीर.

२३००

पैकीं वजा दोन हिस्से शंकराजी निंबाजी व शिवाजी बाजी बोकील यांजकडे १५३३॥= बाकी तिजाई इनाम.

३०० मौजें भोळी, परगणे शिरवळ.

२४०० मौजें बेलापूर सांगवी, परगणे कुंभारी.

१००० पंतसचीव यांचे जिल्ह्यांतील गांव घेऊन भिक्षुक ब्राम्हणांस श्रीमंताकडून इनामपत्रें करून दिल्लीं, ती बेरीज आपले जातसरंजामांत लिहून घेतली.

५०० मौजें तोंडल, तर्फ निरथडी.

२८००० तर्फ बेलापूर, परगणे संगमनेरपैकीं गांव देहे.

१ मौजें वांकडी.

१ मौजें कडगांव.

२ मौजें मालूंजी खुर्द व बुळ्ळ.

१ मौजें पिंपळगांव.

१ मौजें राजूरी.

१ मौजें दायेमाबंद.

१ मौजें भरडापूर.

१ मौजें राजणखोर.

९ बेरीज.

८८३।= खेरीज गांव होते. त्यांचीं नांवें लागत नाहीत.

६००००

रुपये.

२५००० श्रीमंत नानासाहेब यांचें देणें सन सवा खम-

सैनांत सन ११६६.

३५००० श्रीमंत थोरले माधवरावसाहेब यांचें

६०००० देणें सन ११७५.

१ परभारे संस्थानी(क) यांजकडून व सरदारलोकांकडून मिळविले ते.

२०००० मुरारराव घोरपडे यांजकडून परगणे रुळी, पेठगिरसागर.

३५०० सरलष्कर यांजकडून परगणे सुपें, येथील मोकासा व निमचौथाई अकलकाटकर भोंसले राजे यांजकडून.

३००० मुधोजी नाईक निंबाळकर फलटणकर यांजकडून मौजें खुट, परगणे फलटण.

४०० महाराव जसवंत निंबाळकर यांजकडून गांव मौजें कोंडिंगव्हाण.

१५० पंतप्रतिनिधी यांजकडून मौजें इटकिरे परगणे आटपाडी.

४०० पंतसचीव यांजकडून मौजें कावरें तर्फ खेडेबारें इनाम.

११०० नारो शंकर राजे बहादुर यांजकडून बेलापुर तर्फ पेकीं देहें ४ येणें.

३०००० शिंदे अलिज्याबहादुर यांजकडून देहें १७ परगणे सेवगांव पेकीं.

४००० आणग्वी सरदार लोकांकडून होते. त्यांचीं नांवें तूत लागत नाहीत.

६१५ मौजें चाधई, तर्फ वरेडी आंगरे यांजकडून

७३०६५

१ श्रीमंताकडून इनामगांव व जमिनी थोरले रावसाहेब यांजकडून श्रीमंत नानासाहेब यांनीं नेमिले होते; ते तर्फ करेपठार प्रांत पुणें.

१९५० मौजें चांबली.

१००० मौजें खानवडी खेरीज मोकासा श्री तुळसीबाग

३३३४= मौजें हिवरें तनखा १०००१= पैकीं हिस्से दोन  
शंकराजी निंबाजी व शिवाजी बाजी रुपये ६६७.  
बाकी तिजाई.

३१७ मौजें बोपगांव तनखा रुपये ९५० पैकीं वजा हिशे  
दोन शंकराजी निंबाजी व शिवाजी बाजी रुपये ६३३  
बाकी तिजाई.

जमिनी.

१ मौजें चांवळी

१ मौजे सोनवरी.

१ मौजे पिपळे.

१ मौजे कोढीत खुर्द.

१ मौजें मुंजवडी, परगणे सुप.

० परगारे निळकंठराव महादेव पुरंदरे यांजकडून  
आंदण इनाम दिलें कसबे सासवडी.

३६००४=

३

याप्रमाणें गांव व परगणे मिळविले. आपला इरादा दिवाणगिरीच्या अगळे मुत्सदी-  
पणाचा जें मिळविलें तें आकृत्रिम खावंदास कळवीत गेले, म्हणोन सरकारही लोभ करीत होते.  
मोठेपणाचे हुद्यास कांहीं लवाजमा पाहिजे म्हणोन सरकार आज्ञेनें सदरहू रुपयांत  
कांहीं फौज खासगत बाळगीत होते. जरूरीचें कामास जाणे पडल्यास आपलेजवळ फौज  
आहे ती नेईत.

३ आपले जहागिरीचे वहिवाटीत पेशवेसरकारांतून कोणते तऱ्हेनें दखलगिरी  
केली ह्मणून लिहिलें. त्याचे उत्तरः—बापू आपले जहागिरीची वहिवाट जातीनें मुखत्यारीनें  
करीत होते. पेशवेसरकारचा इतला किमपी नवता.

४ आपल्याकडे हल्ली सरंजाम काय चालत आहे याचें उत्तरः—बापू धरिले तेव्हां  
त्यांची स्त्री काशीबाई व जिऊबाई व सून गोदूबाई यांस परभारे संस्थानिक यांजकडून  
मिळविले ते व इनामगांव, इनामजमिनी मिळून आठ हजारांची बेरीज नेमणूक करून  
दिन्ही. हल्लीं त्रिवर्ग बाया गत जाहल्या. कुंपणी सरकारांनीं सन १२३६ फसलीपासून  
नेमणूक बंद केली. तूर्त आम्हांस इनामगांव पैकीं मौजें हिवरें तर्फ करेपठार येथील  
हिस्सा रुपये ६३३॥ इनाम व इतलाख रुपये ३६६॥ एकूण एक हजार चालतात.

५ पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कुंपणीसरकारांतून चालत  
आहे; यांत कंपेश तफावत काय आहे ह्मणून लिहिलें. याचें उत्तरः—आमची मातुश्री बाया

स्त्रिया हयात असतां कोणते तऱ्हेनें किती नेमणूक होती, व हल्लीं आह्मांस कुंपणी सरकारांतून नेमणूक देऊन साहेब चालवितात, हें नजरेस आणिल्यानें कंपेश तफावत काय आहे ती ध्यानांत येईल. बंदोबस्त करून देण्याविषयीं अर्ज हरवस्त करितच आहोंत. '

६ श्रीमंतांचे स्वारीसमागमें कर्नाटकांत सखारामबापू होते. तेव्हां मुक्कामी लष्करांत फौजेचा भरणा काय आहे, कोण सरदार कोणते बाजूस, वगैरे बातमीस, खासा हैदरखान फकिराचा वेष घेऊन रात्रीस गोटांत फिरत असतो, वारंवार येत असतो, अशी बातमी बापूस लागली, तेव्हां बापूंनीं बातमी राखून फकीर आपले राहुटींत बोलावून घेतला आणि त्याची तसबीर होती ती पाहून फकिराचा चेहरा आणि तसबिरीचा मिळाला. त्याजवरून त्याचा हात धरून बोलले कीं, तुम्ही फकीर नव्हे, हैदरखान आहां. तुम्हांस सरकारांत नेऊन गुजराबें लागें. चौकशीअंतीं फकीरच असें जाहल्यास सुटका होईल. तोंपर्यंत जाऊ देणार नाहीं. इतकें ऐकून बापूजवळ वचन मागून, मी हैदरखान, मजला जीवदान द्यावें. मग बापूंनीं विचार केला कीं, चोहू देशांत चार खुला (?) आहेत. म्हणून सरकारांत फौज बाळगून हुशार राहून दरसाल त्यांजपासून खंडण्याही घेतात. तेणेकरून लाखो फौज पोसली जाती. यास्तव हैदरखानासारखा मोहोरा हातीं लागला, यांजवर उपकार करून, त्यांजपासून लाखो लाख रुपयांच्या हुंडीचिठ्या सावकारावर घेऊन, हुंड्या त्यानें दिल्या. त्या घेऊन सरकारांत एवज श्रीमंतांनीं खाजगीकडे ठेविला. परंतु आपण कांहीं त्याचा लोभ केला नाहीं. याप्रमाणें सरकारचीं कामें करून खावंदास कच्चा मजकूर समजावीत होते. यामुळे चौमुलखांत लौकिक महशूर जाहला. मसलतीनें राज्याचा बंदोबस्त राखून सरकारकामास प्रतारणा केली नाहीं. सरकारकामें हर प्रकारचीं करून लौकिक मिळविला. तो कोठवर लिहावा ?

सदरहूपमाणें मजकूर माहितगारीनें ध्यानास आला तो लिहिला आहे. तारीख २४ माहे जुलई सन १८३३ इसवी, श्रावण शुद्ध ८. सन १२४३.

### २३ मुजुमदार.

अ.

यादी कृष्णराव निळकंठ व जीवनराव नारायण व लक्ष्मणराव गणेश मुजुमदार सुरुसन आर्बा सलासीन मयातैन व अलफ. हजरत बंदगानअल्ली रेंट हनराबल गौरनर कौसल चाहत आहेत कीं, दक्षिणेंतील जहागिरदार लोक यांची कैफियत कशी आहे, त्याची वाक-बगारी व्हावी झणून, तारीख ८ माहे सपटंबर सन १८३२ या रोजीं डिपूटी एजंटसाहेबांनीं आमचे वडील तीर्थरूप नारायणराव तात्या मुजुमदार यांचे नांवें खत कलमीं केलें जे:- आपली खानदानीची बद्दी कोणते तारखेस व खानदानीचा लौकिक महशूर जाहला, व फौज व जात सरंजाम आपले वडिलांकडे चालत होता व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस

दिल्हा ती तारीख, व आपले जहागिरीचे वहिवाटीत पेशवेसरकारांतून कोणते तऱ्हेनें दाखल-गिरी केली, व आपलेकडे सरंजाम हल्लीं काय चालत आहे ते, व पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी (काय) चालत होती, व हल्लीं कंपनीसरकारांतून चालत आहे त्यांत कंपेश व तफावत काय आहे तें वगैरे यादींत दाखल करून सरकारांत आपण मेहरबानी करून थोडक्या मजकुराची कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे. त्यास, आमचे वडील तीर्थरूप यांची प्रकृती बिघडून आश्रम संपादन करून समाधिस्त जाहले; याजमुळें कैफियत पाठविण्यास दिरंग लागला. याजमुळें हल्लीं साहेबांनीं मेहरबानी करून कैफियत पाठवावी ह्मणून पत्र आलें. त्यावरून उत्तरें:—

कलमें.

१ पूर्वी श्रीमंत महाराज राजा शाहू छत्रपती यांस दिल्लीचे पातशाहानीं मेहेरबानी करून वस्त्रें व सरदेशमुखी देऊन देशीं बिदा केले. ते देशीं आले तो येथें ताराबाईसाहेब राजकारभार करीत होती. त्यांचे सरदार धनाजी जाधवराव मोठे फौजबंद होते. याजमुळें राजश्रीचा प्रवेश होईना. सबब हरतऱ्हेनें प्रयत्न करावा हें महाराजांनीं मनांत आणून आमचे वडील नारो गंगाधर यांस भेगीम बोलाविले. तेव्हां भेट जाहल्यानंतर आज्ञा राजश्रीनीं केली कीं. धनाजी जाधवराव यांचे फौजेंत जाऊन आपलें कार्य संपादन करावें. मग नारो गंगाधर, जाधवराव यांचे लष्करांत जाऊन, बाळाजी विश्वनाथ यांस भेटून, महाराजांकडील मजकूर बोलले कीं, महाराजांची चाकरी करून दाखवावी ह्मणजे तुह्यांस मोठें पद देतील. असें बोलोन निश्चय केला. नंतर बाळाजी विश्वनाथ यांनीं कारस्थान करून, धनाजी जाधवराव यांस भय घालून, ते मोगलाईत निघून गेले. तेव्हां बाळाजी विश्वनाथ यांची व राजश्रीची भेट आमचे वडील नारो गंगाधर यांनीं केली. मग महाराजांचे समागमें सातान्यास जाऊन राज्याचा बंदोबस्त करून राज्यकारभार करूं लागले. शके १६२९ सर्वजितनाम संवत्सरे. मग पुढें काहीं दिवस बाळाजी विश्वनाथ सेवा राजश्रीची करून होते. नंतर बहिरोपंत पिंगळे यांजवर कांही आरोप आला, तेव्हां महाराजांनीं बाळाजी विश्वनाथ यांजवर कृपाळू होऊन पेशवाई पिंगळे यांची काढून वस्त्रे शके १६३५ विजयनाम संवत्सरे माघमासीं, पद बाळाजी विश्वनाथ यांस दिले. ते समयीं आमचे वडील नारो गंगाधर यांस मजमुचें पद दरकाचें देऊन वस्त्रें महाराजांनीं दिलीं; व सरंजाम देण्याविषयीं राजश्रीनीं बाळाजी विश्वनाथ यांस आज्ञा केली. तेव्हांपासून आमची खानदानी सुरू होऊन दरखाचें कामकाज करीत आलों व खानदानीचा लौकिक महशूर जाहला.

कलम.

१ सरंजाम पेशवेसरकारांतून वडिलांनीं संपादन केला. त्याप्रमाणें कंपनीसरकारांतून चालत आहे देहाथ.

वितपशील:—

१ मौजें बाळकी, परगणे पाडेपडगांव येथील दरोबस्त अंमल जकातसुद्धां कुलबाब कुलकानूसुद्धां.

१ मौजें वाडिवळें, तर्फ नाणेमावळ येथील मोकासा निमे अंमल दरोबस्त.

- १ मौजें वडनेर खुर्द, तर्फ गांजीभोईरें येथील मोकासा वगैरे अंमल.
- १ मौजें पिंपरी जलसेन, तर्फ गांजीभोईरें येथील मोकासा वगैरे अंमल कुरणसुद्धां.
- १ मौजें ताबेळें बुद्रुक, व मौजें बाणगांव व मौजें राकडें, परगणे चाळीसगांव प्रांत खानदेश येथील जहागिरीचा अंमल कुलबाब कुलकानू मोंगलाईतून नवाबसाहेबबहादूर यांनीं दिल्हा, तो सरकारांतून करार करून दिल्हा.
- १ मौजें मांजरी बुद्रुक, तर्फ हवेली प्रांत पुणें येथील मोकासा व बाबतीचा अंमल शंभुसिंग जाधवराव यांनीं दिल्हा, तो सरकारांतून करार करून दिल्हा.
- १ मौजें दाळिंब, तर्फ सांडस प्रांत पुणें येथील मोकासाचा अंमल फत्तेसिंग भोंसले राजे यांनीं दिल्हा, तो सरकारांतून करार करून दिल्हा.
- १ मौजें भवरापूर, तर्फ सांडस प्रांत पुणें येथील मोकासाचा अंमल रामचंद्र दामोदर यांनीं दिल्हा. तो सरकारांतून करार करून दिन्हा.

१०

सदरहू अन्वये सरंजाम बहुत वर्षे इनामाप्रमाणें चालत आहे, त्यास आह्वांकडे वंश-परंपरेनें चालवावा. फौजेचा सरंजाम आह्वांकडे नाहीं. कलम.

- १ इनामगांव व जमिनी व कुरणें, वगैरे चालत आहंत. कलम.
- १ जहागिरी गांव व मोकासे वगैरे अंमलाचे याची वहिवाट आह्मीं करीत आलों. पेशवेसरकारची दखलगिरी नाहीं. कलम.

१ कुंपणीसरकारचा अंमल झाल्यापासून मोकासे वगैरे अंमलाचे देहे याचा ऐवज सर-कार खजिन्यांतून पावतो. याजमुळें नुकसान झालें. सबब सरकारांतून मोबदला गांव दरोबस्त अंमलाचे लावून देण्याविषयीं हुकूम गौरनरसाहेब यांचा जाहला असतां गांव मिळत नाहीं. खजिन्यांतून ऐवज पावतो, त्यांत आमची नुकसानी आहे. यास्तव गांवचा हुकूम जाहला, त्याप्रमाणें दिलांत आणून मेहेरबानी करणें लायख आहे. कलम.

- १ पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती, व हल्लीं कुंपणीसरकारांतून चालत आहे, त्यास कंपेश तफावत काय ती वगैरे लिहून पाठवावी त्यांचीं उत्तरें:—

१ मजमुचा दरख आह्वांस छत्रपतीमहाराज राजे यांनीं दिल्हा. तो पेशवे सरकारांतून लढाईअखेर चालला. तोंपावेतों सर्व लोकांत लौकिक व सनदा पत्रें वगैरे सरकारचा जाबता होण्याचा आमचे हातून कायम राहून, परराज्यांतून जहागिरी गांव मिळाले व दरखसंबंधें हजारां रुपयांची प्राप्ती होती. ते अलीकडे कुंपणी-सरकारचा अंमल जाहल्यापासून दरख चालत नाहीं, येणेंकरून सर्वोपरी कमती आहे. दरखसंबंधें महालीं, मुलुखी व संस्थानीं व सरंजामी यांजकडे वार्षिकाचा सालाबादी ऐवज येणें, तो तसाच राहिला; व सरंजाम आह्वांस थोडका दरखाचें उत्पन्न मोठें. त्याजवर खर्चवेंच व कार्य प्रयोजनें व संभावितपणाप्रमाणें

खर्च होत होता. त्यास तें उत्पन्न राहिल्यामुळे देण्याचें खराबीत आहों. एवेशीं मेहरबानी करणें लायख आहे. कलम.

- १ पेशवेसरकारांतून कारकून निसबतीचे यांस तैनात मोईन पावत होती. व महाली आसाम्या दरखी चालत होत्या. त्या कुंपणीसरकारचा अंमल जाहल्यापासून चालत नाही(त). सर्व लोकांस पेनशीली करून दिल्या. आमचे कारकुनांचा बंदोबस्त जाहला नाही. पेशवेसरकारचे कारकिर्दीत मेहनत बहुत केली, असें असतां सर्व बराबर चालविलें नाही. त्यास सरकारांतून कारकुनांचें चालविणें लायख आहे. कलम.

- १ कुंपणीसरकारांतून इदीचा पोषाख सालवार पावत होता तो पावत नाही.
- १ संसार बेगमीस ऐन जिन्नस व गल्ला गांवचा व देशावरील आणावयाविषयीं व एक हजार मेंढरें याजविशीं माफीचीं दस्तकें पेशवेसरकारचीं आहेत. त्याप्रमाणें चालत नाही. तीं चालविलीं पाहिजेत.
- १ मौजे निधोली, तर्फे चिमणखल प्रांत साकसें हा गांव आंगरे महा सवाई सरखेल यांनीं आह्मांस इनाम देऊन इनामपत्रें करून दिलीं. त्याप्रमाणें पेशवेसरकारचा उपराळा राहून लढाईअखेर इनामगांव बहुत वर्षे चालला. कुंपणीसरकारचा अंमल जाहल्यापासून गांवचा वसूल आंगरे घेतात. एविशीं कुंपणीसरकारास समजाविलें असतां उपराळा होऊन चालत नाही. कलम.

५

सदरहूप्रमाणें उत्तरे लिहिलीं आहेत. त्यांजवरून समजोन घेऊन मेहरबानी केली पाहिजे. तारीख छ २५ मोहरम सन १२४३ फसली.

ब.

साहेब मुषफक मेहेरबान करम फरमाय दोस्ता हेनरी ब्रौण साहेब बहादूर एजंट जिल्हा दक्षण सलमा हू.

छ अजीसाहेब जीवनराव नारायण मुजुमदार सलाम बादज सलाम अंकीं येथील खैरीयत तागायत तारीख १९ माहे दिजंबर सन १८५१ इसवीपावेतों जाणोन आपली शादमानी हरहमेषा कलमीं करून दिल आराम करीत असलें पाहिजे. दिगर मजमून आसाहेबाकडून तारीख २६ माहे आगष्ट सन १८५१ इसवीचें पत्र आलें; त्यांतील आभिप्राय कीं, सरकारचा हुकूम तारीख ३० जुलई सन १८५१ इसवीचा आल्यावरून कलमीं केलें जातें कीं, आपल्यास मरातब मुजुमदार पद आहे हें कधीं कोणत्या सबबीनें कोणाकडून प्राप्त जाहलें, याचा एकंदर खानदानीचा व पदवी थोरपणाचा इतिहास दाखलेनिशीं लिहून यावा, याबाबें लिहून आलें. व त्याजविषयीं इकडून लिहून जाण्यास आवकाश लागल्यामुळे दुसरें पत्र आ मेहेरबानाकडून तारीख ५ माहे दिसंबर सन १८५१ इसवीचे पहिलें



पत्राचें उत्तर पाठविण्याविषयीं आलें. ऐशीयास, श्रीमन्महाराज शाहू मह, यांनीं सातार मुक्कामीं श्रीमंत राजश्री बाळाजी विश्वनाथ यांस पेशवाई पदाच. आर्बा आशर मया व अलफ सन ११२३ फसली, सन १७१३ इसवी व १४ शक माघ मास माहे जिल्काद यांत दिल्ली. त्यासमयीं आमचे पणजे नारो गंगाधर यांस मुजु. दारीचें पद छत्रपती महाराज यांनीं देऊन वखें दिल्ली, आणि पेशवे यांचे निसबतीस लावून दिलें. त्या दिवसापासून मुजुमदारीचें दरकाचें काम पेशवाईचे कारकिर्दीत आमचे पणजे नारो गंगाधर यांचे हातून चाललें; व त्यांचे पाठीमागें त्यांचे पुत्र निळकंठराव नारायण ह्मणजे आमचे आज्ञे यांचे हातून चालले व त्यांचे पाठीमागें त्यांचे पुत्र नारो निळकंठ ह्मणजे आमचे तीर्थरूप यांचे हातून पेशवाईअखेर सन १८१७ इसवी, शके १७३९, या सालापर्यंत मुजुमूचें काम चाललें. असें मुजुमदारी दरकाचें काम सुमारे १०५ एकशेंपांच वर्षे आमचे वडिलोवडिलीं चालत आलें व त्याबाबं दरकाचें उपन्न येत होतें, व शिवाय जातीस सरंजाम व इनामगांव वगैरे सरकारांतून चालत आले आहेत. कुंपणी सरकारचा अंमल जाहल्यावर ते सरंजामी गांव व इनामी गांव वगैरे आमचे तीर्थरूप नारो निळकंठ यांजकडे कुंपणी सरकारांनीं चालविले. आमचे तीर्थरूप शके १७५५ चैत्र वद्य ५ माहे एप्रील सन १८३३ इसवी रोजीं कैलासवासी जाहले. सबब त्यांचे वडील पुत्र निळकंठ नारायण मयत. सबब त्यांचे पुत्र कृष्णराव निळकंठ ह्मणजे आमचे पुतणे यांचे नांवें सरकारांनीं जे आमचे तीर्थरूपाकडे कुंपणीसरकारांनीं चालविलें तें, वडील पुत्राचे पुत्र कृष्णराव सबब त्यांचे नांवें चालविलें. त्यांत निमेचे वारस आम्हीं आहों व त्याप्रमाणें विभागाची वहिवाट त्याप्रमाणें निमेची आमची चालत आहे. हें सरकारास दखल आहे. मुजुमूचे मरातब व मुजुमदारीचें पद आमचे वडिलांस सरकारांतून प्राप्त झालें, त्या दिवसापासून सरकारांत कागदीं आमचे वडिलांचीं निशाणें लागत गेलीं आहेत. तो बहुमान सर्व राखणें, आमचें सरकार समर्थ आहेत, ज्यादा काय लिहिणें प्यार मोहोबत असों दिजे, हे किताबत. सही. जीवनराव नारायण मुजुमदार दस्तूर खुद.

### २४ मेहेंदळे.

अ.

यादी कृष्णराव बळवंत ऊर्फ आप्पा बळवंत यांची वंशावळ सुरुसन सलास अश-  
रीन मयातैन व अलफ.

मूळ पुरुष बहिरवभट मेहेंदळे हे हरिहरेश्वरास रहात होते. त्यांस पुत्र दोनः—  
वडील विश्वनाथभट दुसरे गणपतराव मेहेंदळे. यांस पुत्र तीनः—  
विश्वनाथभट यांचा वंश. १ वडील रामचंद्रराव ऊर्फ बळवंतराव.  
बहिरोपंत मेहेंदळे वगैरे. १ दुसरा बाबूराव.  
१ तिसरे आनंदराव ऊर्फ बजाबा बाबा.

## अर्जेतील सरदारांच्या कैफियती, यादी वगैरे.

[ प्रकरण

१. यांचा विस्तार:- विश्वनाथभट व गणपतराव हे बाळाजी विश्वनाथ यांचे सख्खे  
२. क. बाळाजी विश्वनाथ यांस सातान्याहून पुण्याकडे सुभ्याचे वगैरे मसलत  
ली, तेव्हां बाळाजी विश्वनाथ यांनीं, गणपतराव हे भाचे, यांस हरिहरेश्वराहून  
बहिणीसुद्धां आणिलें. तेव्हां विभक्त होते. पुढें बाळाजी विश्वनाथ यांनीं आपले बहिणीस  
चोळीस एक गांव मौजें खोर, तर्फ पाटस प्रांत पुणें हा इनाम दिल्या, आणि गणपतराव  
यांस पागेचे घोडें देऊन बाळगिलें. कसबें सासवड येथें जमिनी वगैरे इनाम दिल्या व  
घर बांधावयास तेथें जागा दिली. गणपतराव यांस रामचंद्रराव ऊर्फ बळवंतराव यांनीं  
थोरले बाजीराव साहेब यांजवळ राहून चाकरी कडप्याची व शिरे मंदगिरी (?) टिपूचे  
मुलखांत दोन स्वान्या मोठ्या केल्या, व आणखीही स्वान्यांची चाकरी चांगली केली. तेव्हां  
जातीचे सरंजामास पंचेचाळीस हजारांचे गांव व शागीर्दपेशा चार हजार, एकूण एकूण-  
पन्नास हजारांचा सरंजाम दिल्या. पुढें नानासाहेब यांनीं बळवंतराव यांजकडे इतलाखी  
स्वार दोन चारशें दिले. त्यांची फडणिशी आमचे चुलत आज्ञे बाळाजीपंत यांस दिली.  
बळवंतराव लढाईत पानपतास पडले. त्यांचे चिरंजीव कृष्णराव त्यांस आप्पा बळवंत  
ह्मणत होते. त्यांनीं उत्तरोत्तर दौलत मिळविली. स्वाराचा सरंजाम दोन लक्षांचा दिला व  
जातीस तैनात आणखी पंचवीस हजारांची नेमून गांव नेमून दिले. पेशव्यांनीं स्वान्या  
केव्हा तितक्याबरोबर आप्पा बळवंत यांनीं व फौजेनीं कामें चांगलीं केलीं. चौघडा दिला.  
कृष्णराव यांस औरसपुत्र दोघे होते. ते बीस बीस वर्षांचे होऊन मृत्य पावले. त्यांस संतान  
नाहीं. तेव्हां आप्पासाहेब मेल्यावर हल्लीं बळवंतराव आहेत, हे दत्तक घेतले. त्यांजकडे  
दौलत सरंजामसुद्धां चार वर्षे चालली. पुढें दहा पंधरा हजारांचे गांव ठेवून सारी  
जमी बाजीराव पेशव्यांनीं केली. याप्रमाणें मजकूर. दुसरे बाबूराव त्यांचें नकल. तिसरे  
आनंदराव त्यांस बजाबा ह्मणत होते. त्यांस गणपतराव ऊर्फ बापू मेहेदळे हल्लीं आहेत.  
आप्पा बळवंत यांस वाडा व पागा वगैरे बांधावयास जागा पुण्यांत दिली. तेथें मोठ्या  
इमारती त्यांनीं बांधिल्या. याप्रमाणें विस्तार तपशिलवार छ २४ सवाल.

ब.

यादी राजश्री गणपत आनंदराव मेहेदळे सुरुसन आर्बा सलासीन मयातेन व अलफ.  
आसाहेबी तारीख ८ माहे सपटंबर सन १८३२ इसवीचें खत पाठविलें. त्यांत मजकूर,  
हजरत बंदगानअल्ली रैट हनराबल गौरनर कौंसल चाहत आहेत कीं, दक्षिणेंतील जहागिर-  
दार लोक यांची कैफियत करी आहे, त्याची वाकबगारी व्हावी म्हणून कलमीं केलें जातें  
जें:-आपण मेहेरबानी करून सरकारांत रवाना करण्याकरितां कैफियत लिहून पाठविली  
पाहिजे. त्यांतील तपशील, आपली खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक  
महशूर जाहला तें, व जातीस सरजाम आपले बडिलोपार्जित चालत आहे तो, कोणते तारखेस

सरंजाम कोणी दिल्ला व कोणी संपादन केला, हें लिहिण्यांत यावें. त्याजवरून लिहिण्यांत मजकूर येतो बितपशीलः—

कलम.

१ आमचे आजे गणपतराव बहिरव यांनीं बाळाजी विश्वनाथ यांची चाकरी केली. त्यांनीं त्यांस तैनात जातीस करून दिल्ली. नक्त रुपये ८९०७॥ व गांवही दिल्ला व जमिनी दिल्ला. त्यांचा आमपणाही होता. शके १६३५. गणपतराव आमचे आजे यांस पुत्र तीन. कनिष्ठ पुत्र आनंदराव गणपत ते आमचे तीर्थरूप. व त्यास कन्या एक होती. ती नाना फडणीस यांची मातुश्री.

कलम.

१ आमचे आजे कैलासवासी जाहल्यावर त्यांचे नांवें चालत होते त्याप्रमाणें आमचे तीर्थरूप आनंदराव गणपत यांचे नांवें पेशवेसरकारांतून करार करून देऊन बहाल केलें, व ज्यास्ती खानदेशचे गांव नवीन दिल्ले.

कलम.

१ आह्मीं आमचे वडील असतां माधवराव नारायण यांचे कारकिर्दीत सरकारचीं कामें-कार्जे रामचंद्र गणेश यांजबरोबर केलीं. याजमुळें आह्मांस निराळी तैनात सरकारांतून करून दिल्ली. नक्त रुपये २६०० व गांवही दिल्ला.

कलम.

१ आमचे तीर्थरूप आनंदराव गणपत शके १७११ चें सालीं कैलासवासी जाहल्यावर सरकारांतून माधवराव नारायण पेशवे यांनीं, वडिलोपार्जीत तैनात वगैरे जमिनी व गांव चालत होते ते, व आमचे नांवें करून दिल्ले होते ते, दोन्ही एकत्र करून आमचे नांवें सनदा करून दिल्ला व कर्नाटकांत आमचेबरोबर फौज व पायदळ देऊन परशुरामभाऊ पटवर्धन तासगांवकर यांस कुंपणीसरकारचे मदतीस देऊन टिपूर पाठविलें. त्या समागमें आह्मीं जाऊन सरकार कामगिरीही बजाविली.

कलम.

१ शके १७१८ सालीं बाजीरावसाहेब यांचे कारकिर्दीत श्रीमंत यांनीं लढाईअखेर पेशजीं चालत होतें त्याप्रमाणें चालविलें. नक्त नेमणूक पावत होती, ती पावली नाहीं. परंतु आह्मांस गांव दोन नवीन दिल्ले.

कलम.

१ शके १७३९ चें सालीं कुंपणीसरकारचा अंमल कार्तिकमासीं जाहल्यावर शके १७४० चें सालीं कुंपणीसरकारांतून बाजीरावसाहेब यांचे कारकिर्दीत आह्मांकडे गांव व जमिनी वगैरे चालत होते, त्याप्रमाणें बहाल करून चालते केले. बितपशीलः—

१ खेरीज तैनात इनामाप्रमाणेंः—

१ मौजें सुरपान व मौजें हहरूण, परगणे भाकरे प्रांत खानदेश गांव २ खेरीज मोकासा करून तनखा कमाल रुपये १८१६॥.

१ मौजें खोर, तर्फ करेपठार हा गांव निमे तनखा रुपये ६२९.

१ कसबें सासवड, येथील जमिनी विधे.

१ मौजें मुंजेरी, तर्फ हवेली येथील जमीन रुळे २। आकार रुपये १३॥.

- १ मौजें बाभुळसर खुर्द, परगणे कडें हा गांव दरोबस्त आमचे आज्ञे यांनीं मिळ-  
विला. तनखा रुपये १८१४।
- १ मौजें पाधवडी, परगणे इंदापूर तनखा रुपये १६००.
- १ मौजें शिवें, तर्फ वाडे हा गांव मोकासा खेरीजकरून तनखा रुपये ८००.
- १ मौजें कानपोली, तर्फ तळोजे प्रांत कल्याण तनखा रुपये ३२०.
- १ मौजें खेराणें, येथील नेमणूक नक्त रुपये ६३॥.
- १ मौजें पूर, तर्फ करेपठार येथील जमीन आकार रुपये १२॥.
- १ तांदुळ तालुके नेरळ पैकी नेमणूक खंडी २.
- १ पेणचे बंदरीं नेमणूक मिठाची कैली खंडी ६.
- २ कुरणें.
- १ मौजें देवळी.
- १ मौजें भिवडी.
- २

१ दसन्याचा पोषाख आंख ३५०.

१ दस्तकें तांदुळ व मीठ वगैरे माफीचीं.

येणेंप्रमाणें आह्मांकडे आज्ञावेतो कुंपणीसरकारांतून चालविलें आहे. दरम्यान समशेनसाहब यांनीं शके १७४८ चे सालीं मौजें कानपोली, हा गांव व खेराणें येथील नेमणूक व तांदुळ व मीठ महकूब चार कलमें केलीं, व बाकी आह्मांकडे चालत आल्याप्रमाणें चालत आहे. चार कलमें आह्मी असतां सरकारांतून महकूब करूं नये असा कायदा असतां जाहलें. तरी साहेबी मेहेरबानी करून चारी कलमें खुली करावी किंवा त्याचे मोबदला द्यावें. कलम.

येणेंप्रमाणें खानदानीची कैफियत लिहिली आहे. ही खावदांनीं दिलांत आणून आज्ञावेतो आह्मांकडे पुस्त दरपुस्त चालत आलें, त्याप्रमाणें पुढेंही चालविलें पाहिजे. तारीख २ सफर.

क.

साहेब मुषफक मेहेरबान साहेब जान वार्डीन साहेब बहादूर डिप्टी एजंट जिल्हा दक्षण सलमा हू.

• छि अजिदिल येखलास दोस्त गणपत आनंदराव मेहेंदळे बाजत सलाम अंकीं येथील खैर सला जाणून आपली शादमानी हमेषा कलमी करीत जावी. आपण पत्र तारीख ८ माहे सप्टेंबर सन १८३२ इसवीचें पाठविलें. त्यांत लिहिलें जे, हजरत बंदगानअल्ली रैट हनराबल गौरनर कौंसल चाहत आहेत कीं, दक्षिणेतील जहागिरदार लोक यांची कैफियत करी आहे त्याची वाकबगारी व्हावी. झणोन कलमीं केलें जातें जें, आपण मेहेरबानगी

करून सरकारांत रवाना करण्याकरितां कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे. दिगर आमचे आज्ञे गणपतराव बहिरव मेहेंदळे कारकीर्द श्रीमंत बाळाजी विश्वनाथ पेशवेसरकार यांज-पाशीं व यांचे चिरंजीव बाजीराव बल्लाळ व चिमणाजी आप्पा थोरले, यांजबरोबर चाकरी केली व कामेकाजे बहुत केलीं. तेव्हां सरकारांतून हत्ती दिला. गणपतराव यांस पुत्र तीन व कन्या एक. वडील पुत्र बाबुराव यांस पुत्र नाही. दुसरे पुत्र बळवंतराव यांस पुत्र कृष्णराव. त्यांचे पुत्र बळवंतराव. हल्लीं तिसरे आनंदराव यांस पुत्र गणपतराव हल्लीं कन्येचें नांव रख-माबाई त्यांचे पुत्र नानाफडणीस. आमचे आज्ञे गणपतराव हे श्रीमंत नानासाहेब पेशवे यांचे कारकिर्दीत कांहीं दिवस होते. पुढें कैलासवासी जाहले. नंतर त्यांची तेनात व स्वार वगैरे चालत होते ते आमचे तीर्थरूप आनंदराव गणपत यांचे नांवें सरकारांतून करून दिले. पुढें श्रीमंत भाऊसाहेब पेशवे पाणिपतचे स्वारीस गारद जाहले. पुढें कांहीं दिवसांनीं श्रीमंत नानासाहेब कैलासवासी जाहले. पुढें श्रीमंत माधवराव बल्लाळ यांची कारकीर्द अकरा वर्षे जाहली. पुढें कैलासवासी जाहले. नंतर त्यांचे बंधु श्रीमंत नारायणराव बल्लाळ यांची कारकीर्द एक वर्ष जाहली. नंतर कैलासवासी जाहले. पुढें श्रीमंत रघुनाथ बाजीराव दादासाहेब यांची कारकीर्द श्रीमंत सवाई माधवराव यांचा जन्म पुरंदरी होई तों पावेतों जाहली. आमचे तीर्थ-रूप सुद्धां आह्मी हुजूर वागत होतो. पुढें कारकीर्द श्रीमंत माधवराव नारायण किल्ले पुरंदर येथील मुक्कामीहून रामचंद्र गणेश यांचे समागमें करवीरचे स्वारीस आम्हांस सरकारांतून रवाना केलें. कांहीं बरोबर स्वार दिले. आमचे तीर्थरूप हुजूर होते. आम्हांस जातीस व पालखीसुद्धां तूर्त रामचंद्र गणेश यांनी नेमणूक करून दिली. ते रुपये ४२०० बेताळीशें. त्या स्वारींत आमचें कामकाज पाहून हत्ती अंबारीसुद्धां आम्हांस दिल्या. पुढें सरकारांत हुजूर चाकरी करीत होतो. त्यानंतर आमचे तीर्थरूप शके १७२१ त कैलासवासी जाहले. तेव्हां तीर्थरूपांची तेनात व स्वार वगैरे जे चालत होते ते, व आमचे नांवें नेमणूक जाहली होती ती, मिळून आमचे नांवें सरकारांतून करून दिली. नंतर सरकारांतून इंग्रज बहादुर यांचे कुमकेस श्रीरंगपट्टणचे स्वारीस परशुरामभाऊ पटवर्धन यांस फौज देऊन रवाना केलें. त्यांचे समागमें आम्हांस दोन हजार स्वार नेहमीं असावे, असा ठराव होऊन आम्हांस रवाना केलें. धारवाडचे मुक्कामी किल्ल्यास मोर्चे लावावे, असें सिद्ध झालें. त्यावेळेस अजम लिटलीन ( क्याप्टन लिटल ?) साहेब यांनीं भाऊंस सांगितलें कीं, दोन सरदार यांनीं पुढें अंमल बसवीत जावा. मग आपण मोर्चे लावावे. याप्रमाणें ठरोन भाऊंचे चिरंजीव रामचंद्रपंत आप्पा यांस हानालीचे वगैरे रोखे रवाना केले व आम्हांस सोदेबिद-नूर प्रांतीं बरोबर तोफा व तीन हजार गाडद हुजूरची व नामजाद मावळे लोक दोन हजार व कानडे लोक पांच हजार देऊन रवाना केलें. तिकडे आम्हांकडून कामेकाजे काय जाहलीं तीं भाऊंस माहीत होती. ते कैलासवासी जाहले. परंतु श्रीमंत सवाई माधवराव पेशवे यांचें पत्र आम्हांपाशीं आहे तें पहावें. झणजे साहेबांचे दिलांत येईल. भाऊ श्रीरंगपट्टणास गेले.



- १ आमचे पणजे गणपतराव बहिरव हे श्रीमंत बाळाजी विश्वनाथ यांनी पेशवाई मिळविली, यांचे भाचे, त्यांजपार्शी राहिले. त्यांची चाकरी केली. नंतर श्रीमंत बाजीराव व चिमाजी आप्पा यांची चाकरी केली. त्यांनी तीन गांव व जमीनी सासवड येथे दिल्या. त्यांस पुत्र ३ तीन, त्यांत बडिल आमचे आजे बळवंतराव गणपत.
- १ आमचे आजे बळवंतराव यांनी श्रीमंत बाळाजी बाजीराव व सदाशिवरावभाऊ साहेब यांची चाकरी केली. प्रथम तैनात जातीस एक हजार रुपये केले, व स्वारास पंचवीसशें रुपये व आबदागीर वगैरे नेमणूक याप्रमाणें शके १६७५ तागाईत शके १६७६ पर्यंत चालली. पुढें श्रीमंत नानासाहेब यांजबरोबर कडप्याचे स्वारीस गेले. तेव्हां तैनात जातीस १४००० चवदा हजार रुपयांची जाहली. स्वारीहून आलीयावर पुढें तांदुळज्याची स्वारी नवाबावर जाहली. तेथें आमचे आजे यांस जखमा लागून मोठा उपयोग केला. तेव्हां ज्यास्ती सरंजाम रुपये ३५००० पस्तीस हजारांचा सन इहिदे सितैनांत दिला. एकूण ४९००० रुपये एकूणपन्नास हजारांचा सरंजाम जाहला. पुढें श्रीमंत भाऊसाहेब पानपताचे स्वारीस गेले, त्यांजबरोबर गेले. तेथें लढाई गिलच्या, इराणीशीं केली. त्या लढाईत ठार सरकारकामावर आले. ते समयी आमचे तीर्थरूप कृष्णराव आप्पासाहेब बरोबर होते. ते माघारे देशीं आले.
- १ आमचे तीर्थरूप आप्पासाहेब पानपताहून आलीयावर श्रीमंत नानासाहेब यांनी तीर्थरूपांस आज्ञाची तैनात जातीची ४९००० रुपये एकूणपन्नास हजारांची होती, ती करार करून देऊन शेवा घेतली. श्रीमंत माधवरावसाहेब यांचीही चाकरी केली. पुढें श्रीमंत सवाई माधवराव साहेब यांचे कारकीर्दीत शके १६९६ चें सालीं मौजें बोरखळ हा गांव इनाम दिल्या, व चौघडा व शंभर स्वारांचा सरंजाम शके १६९८ ह्या सालीं दिल्या. सरकार चाकरी स्वारी बदामी व पट्टणची हरी बल्लाळ फडके यांजबरोबर केली. सरकारचे पदरीं सरदार आणखीं बहुत होते. परंतु विश्वासाचे मनुष्य इतबारी योग्यतेचे नामांकित कोण हें मनांत आणोन, आंबारींत खासा स्वारी जाहली असतां, आप्पासाहेब खवासखान्यांत बसत होते. पुढें शके १७१६ चें सालीं ज्यास्ती सरंजाम अडीचशें स्वारांचा दिल्या. एकूण सरंजाम जातीचा ४९००० एकूणपन्नास हजारांचा व चौघडाचा ३००० तीन हजारांचा व फौजेस १०५००० एक लक्ष पांच हजारांचा येणेंप्रमाणें व आसाम्या व पोषाख व दस्तकें व बक्षीस येणेंप्रमाणें पावत होतें. तें शके १७२० चें सालीं आप्पासाहेब मृत्यु पावले. नंतर आमचे नांवें सदरहू सरंजाम वगैरे करार करून दिल्या.
- १ आमचे नांवें सरंजाम वगैरे शके १७२० चें सालीं वडिलांचे नांवें चालत होता

त्याप्रमाणे, श्रीमंत राजश्री त्वाजीरावसाहेब यांनी करार करून देऊन, सेवाचाकरी तीन चार वर्षे घेतली. पुढे सरंजाम जम करून बाकी ठेविला. तो कुंपणी सरकारचे अंमलापर्यंत चालला. तोच हल्लीं सरंजाम चालत आहे. जहागिरीचे बहिवाटीत पेशवेसरकारांतून दखलगिरी कोणते तऱ्हेनें केली? त्यास सरंजाम एक वेळ दिल्या हणजे त्यांत दखलगिरी पेशवेसरकार करत नवते. आमचे आह्मी जहागिरीची उस्तवारी राखून लावणी उगवणी मुखत्यारीनें करीत होतो. सरंजामीगांव व इनामीगांव व जमीनी, कुरणें वगैरे चालत आहे त्याचा तपशील:-

- १ इनाम गांव मौजे बोरखळ समंत निंब प्रांत वाई तनखा २८६४८= रुपये.  
॥ मौजे खोरे, तर्फ करेपठार देहे १ पैकीं निमे तनखा १२४५॥ रुपये  
पैकीं तनखा निमे रुपये ६२२॥= खेरीज तैनात.

११ सरंजामीगांव.

५ मौजे तांबोळे व मौजे गोटेवाडी व मौजे भाबेवाडी व मौजे हिंणणी व मौजे पीरटाकळी परगणे मोहोळ तनखा ७१२२॥= रुपये.

- १ मौजे जवळे, परगणे ढोकी प्रांत बालेघाट देहे १ तनखा ४१३॥ रुपये.  
१ मौजे भांडगांव, तर्फ पाटस प्रांत पुणे तनखा १८०० रुपये.  
१ मौजे पूर, तर्फ करेपठार पैकीं शेत जमीन १२॥ रुपये.  
१ मौजे सुपें, तर्फ वाडे तनखा २२५ रुपये.  
१ मौजे कोथरूड, तर्फ कर्नातमावळ पैकीं रुपये.

७५

२००

२७५ रुपये

- १ मौजे बोरखळ, समंत निंब येथील देशमुखीचे कत्तरेपैकीं तनखा  
११४८= रुपये.

११

१ जमिनी.

१ कसबें पुणे, पैकीं माळी मुंजेरीपैकीं बागेस जमीन रुके ८४॥ पैकीं निमे.

१ मौजे हाडपसर, तर्फ हवेली पैकीं जमीन बिघे ८१०.

१ कसबें सासवड, कर्नात मजकूर पैकीं.

८५ इनाम जमीन बिघे.

० प्रत जमीन दुमाला बिघे.

३

- १ कुरणें दोन पैकीं निमे.



- ०॥० मौजे देवडी, तर्फ खेडेंबारे पैकीं.
- ०॥० मौजे भिवडी, तर्फ करेपठार पैकीं.

१

- १ पोषाख दस-न्याबदल सनगें ३॥.
- १ घर बेगमीस किराणा व भुसार हरएक जागाहून येई त्याची माफी होती व मेंढरे वगैरे वनचराईची माफी.
- १ हल्लीं पेशवेसरकारांतून मातवरी चालत अलीकडे आली. त्यांत कंपेश तफा-  
वत कुंपणीसरकारांतून चालत आहे, त्यांत हल्लीं कमती चालत आहे ते:—  
१ दस-न्याबदल पोषाख सनगें ३॥ पैकीं हल्लीं सरकारांतून सनगें दोन पावतात.  
१ घर बेगमीस किराणा व भुसार वगैरे हर जागाहून येतें, त्यास हशील  
पडतें, व मेंढरें वगैरे वनचराई पडते.

सदरहू कलमें आबूचेबदल खातर मेहरबानी करणें खावंदाकडे आहे. येणेंप्रमाणें  
खानदानीची कैफियत तारीख ७ माहे मे सन १८३३ इसवी.

सही. बळवंतराव कृष्ण मेहेंदळे.

### २५ विंचूरकर.

यादी राजश्री रघुनाथराव विठ्ठल विंचूरकर सुरुसन आर्बा आर्बैन मयातैन व अलफ.  
मेहरबान इनविरेरीटीसाहेब बाहादूर इंच्यार्ज कलेक्टर यांचा हुकूम महालानिहायचे  
मामलेदार यांजला गेल्यावरून, परगणे पुरंदर व परगणे खेड येथील मामलेदार यांनीं व  
हुजूर दसरदार राव बाहादूर यांनीं विचारिलें कीं, मेहरबान एजंटसाहेब बाहादूर यांजकडून  
तारीख १२ माहे जून सन १८४३ इसवीचें पत्राबरोबर तीन सदरांचा तका तयार करून  
पाठविण्याविषयीं नमुना आला. त्यांत सरदार लोक यांजला सरंजाम दिल्याची तारीख व  
त्याबद्दल सनद किंवा कांहीं दुसरा दाखला व सरंजाम खेरीज दुसरें कांहीं उत्पन्न त्याची  
बेरीज व हल्लीं सरंजाम चालतो तो त्यास औरस पुत्र त्यांचे नांव उमर लावून याचा जाब  
द्यावा झणोन. त्यास श्रीमन्महाराज छत्रपती यांनीं शके १६४२, सन १७२० इरावी सालीं  
आमचे वडील तीर्थस्वरूप कैलासवासी विठ्ठलराव शिवदेव यांजला ठेविलें. सरकार चाकरी  
लढायांचे प्रसंगांत हरहमेषा शिपाईमिरी होत आल्यामुळें महाराजांची दिवसेंदिवस कृपा वाढून  
सिद्धीसाद यांचे लढायांचे प्रसंगांत यांचा फार उपयोग वाटून पागा दिली. पुढें  
दाउबखां वगैरे मोंगलास कब्ज्यांत आणिलें. नंतर आणखी इतलाख फौजे यांजकडून ठेवून, दय ।  
बहादरांचें पारिपत्य करून आर्लीयावर साथी वगैरे मसलत त्यासमयीं दाहा हजार फौजे-  
सुद्धां पेशवे यांचे हातांत विठ्ठलराव शिवदेव यांजला दिल्लें. तेव्हांपासून हरएक लढायांत  
यश संपादन होत आलें. नंतर उजेपूर, कोठें, दिल्ली, मकसुदाबाद, बंगाला वगैरे हिंदुस्थानांत

जाऊन डंगई पेकीं कालपी वगैरे तेहतीस लक्षांचा मुलूख सरकारांत आला. नवाबाचा व पेशवेसरकारचा भाईचारा जाहला. विठलराव शिवदेव यांनीं जाटांचें पारिपत्य करून ग्वाल्हेर किल्ला व मुलूख घेतला. दिल्लीपद पातशाहा यांजवर दुसमानाचा प्रसंग पडला. कांहीं काबू नाहीं. तेव्हां विठलराव शिवदेव यांनीं बचाव केल्यामुळे, पातशाहा यांनीं ' उमदेतुलमुलूख बहादर ' हा किताब देऊन बिचूर वगैरे इनाम दिल्लें. लढायाचे प्रसंगांत जो मुलूख सुटला, "उमदेतुलमुलूख" बहादर तो यांजकडे फौजेचे खर्चास बहुत दिवस होता. नंतर सोळा लक्ष पंचाऐशीं हजार रुपयांचा मुलूख यांजला देण्याचा ठरून त्याजबद्दल सनद श्रीमंत कैलासवासी माधवराव बल्लाळ पेशवे यांनीं विठलराव शिवदेव यांचे नांवें सनद छ १ साबान सब सलास सितैन मया व अलफ, शके १६८४ सालीं दिल्ली. तिची नकल दिल्ली आहे. याखेरीज हिंदुस्थान प्रांतीचे राजेरजवाडे यांजवर येहेसानें बहुत जाहल्यामुळे त्यांजकडून अजमास पंचे-ताळीस हजार पांचशें रुपयांचें इनाम वंशपरंपरा मिळालेलें, तेंही विनाकारण सरकारांत सन १८१८ इसवीचे लढाईपासून घेतल्यामुळे मुंबईसरकारांत व कलकत्तेसरकारांत अर्ज करीत आलों. आतां विलायतसरकारास अर्ज पाठविला आहे. हल्लीं कुंपणीसरकारांतून चालत आहे तें:—

१ जिल्हा पुणें.

१ बाग मौजें कोथरुड, परगणे हवेली येथें पेशवेसरकारांतून इनाम श्रीमंत कैलासवासी बाळाजी बाजीराव पेशवे यांनीं दिल्हा. त्याची बेरीज १५ रुपये, त्याबद्दल सनदेच्या दाखला कुंपणीसरकारांतून इसवी सालीं घेतला त्याची नकल दिल्ली आहे.

१ परगणे पुरंदर या महालीं वतन व इनाम.

१ कसबें सासवड येथें वतन व इनाम.

१ जमीन इनाम बिघे ८२२ बरहुकूम बेरीज ४० रुपये.

१ जकातीवर दाणीपणाचें वगैरे वतन त्याचा दरसाल आकार अजमासें रुपये ३०० पैकीं निमे हिस्सा.

२

१ मौजें वणपुरी, परगणे पुरंदर येथें इनाम जमीन चाहूर .II. बद्दल बेरीज ————— ६० रुपये.

२

१ मौजें शिंगवें, तर्फ औसरी या गांवीं पाटलकीचें वतन आहे, त्या संबंधें इनाम जमीन चाहूर १.

१ मौजें डोणजें, परगणे हवेली येथील श्री आंबरीनाथाचें कुरण त्याबद्दल बेरीज ————— २०० रुपये.

१ मौजे मांडकी, परगणे शिरवळ व मौजे रासें, तर्फ चाकण एकूण दोन गांव पेशवेसरकारांतून राजे विठ्ठलराव शिवदेव यांस खेरीज तैनात दिले.

१६४० मौजे रासें, तर्फ चाकण मोकासासुद्धां.

१५५८० = मौजे मांडकी, परगणे शिरवळ.

३१९८० =

५

१ जिल्हा नगर.

१ इनाम गांव दोन.

१ कसबें विंचूर, हा गांव दिलीपद पातशाहा यांजकडून त्याची बेरीज ८००१ रुपये.

१ मौजे सायखेडें, परगणे नाशिक दरोबस्त सदरहूममाणें खेरीज मोकासाकरून बेरीज ११७५८ = रुपये.

२

१ वतन देशमुखी व पाटीलक्या व कुलकर्णी वगैरेबद्दल आकार २००० रुपये.

१ कुरण मौजे चाटोरी, बद्दल बेरीज १०० रुपये.

१ कलालीबद्दल आकार कृपणी ५६५८१ = रुपये.

१ जातीचा सरंजाम चालतो त्याची कमाल तनख्याची बेरीज ५५५१५ रुपये.

पैकी मौजे रासें व मांडकी, दहीवड येथील बेरीज ५७९६ बाकी बेरीज ४९७१९ रुपये.

५

१ जिल्हा खानदेशपैकीं खेरीज तैनात मौजे दहीवड, परगणे वाखारी हा गांव, किरकोळ जमिनी व मौजे अरफळ, संमत निंब इलाखा सातारा वगैरे पेशवे-सरकारांतून होते, त्याचे मुबादल्यास लावून दिले बेरीज २५९८ रु.

१ मौजे कोटमगांव, परगणे चांदवड येथील मोकाशाबद्दल २४९॥ रुपये.

१ जकातीबद्दल उत्पन्न दरसाल सरासरी २२०० रुपये येत होतें, परंतु सन १२४७ फसली साली सरकारांतून जकात माफ करून मोठेमोठे जागा सर-कार घेत आहे. आमचे अंमलांतील आह्मी घेऊं नये, सरकारांतून त्याचेबद्दल ऐवज मिळेल ह्मणोन पत्र आल्यावरून घेण्याची महकुबी करून जकातीचे हिशेब नगरचे मेहेरबान कलेक्टरसाहेब बहादूर यांजकडे दिले. परंतु अद्यापि बंदोबस्त होऊन आला नाही ते दरसाल २२०० रुपये.

१ एकंदर सरंजाम व इनाम मिळोन अठरा लक्षांचे, तेन्हां जातीचे सरंजामाबद्दल

- भिस्त नव्हती. ते सारे कुंपणीसरकारांनीं घेऊन फक्त जातीचा सरंजाम व स्वदेशाचें इनाम वगैरे सोडलें. त्या सरंजामाचें गांव बहुत खराब, उत्पन्न फार कमी, सबब त्याचा मुबादला करून यावा ह्मणून मेहेरबान एलफिस्तनसाहेब बहादूर यांस जाहीर केल्यावरून, त्यांनीं तो सारा आमचे नुकसानीचा प्रकार दिलांत आणून, दोन हजारांचें गांव नवें दिलें. पुढें तीर्थरूप कैलासवासी विठ्ठलराव तात्यासाहेब सन १८३६ इसवी सालीं वारल्यानंतर आमचे नांवें सरंजाम कायम केला. तेव्हां तुमचे वडिलांकडे चालत होतें तें तुझांकडे बहाल केलें ह्मणोन सरकारचे पत्र येऊन त्याप्रमाणे वहिवाट चालली. नंतर दोन वर्षांनीं सदरहू दोन हजारांचे दोन गांव कुंपणीसरकारांत माघारे घेतले.
- १ श्री संस्थान निरानरसिंहपूर, हें आमचें कुलदैवत. तेथील देवस्थानचे खर्चाकडे आह्मांकडून परगणे उरपाड प्रांत गुजराथ येथें दरसाल नेमणूक ६००० रुपये साहा हजार पूर्वापार चालत आली. त्याप्रमाणें ऐवज आह्मांकडे येऊन संस्थानचा खर्च चालत आहे.
- १ परगणे उरपाड, प्रांत गुजराथ या महालीं सवाबादीद दामवार देणें बादशाहा यांचे विठ्ठलराव शिवदेव यांस, त्यांची नेमणूक पेशवेसरकारांतून रुपये तीन हजार लढाईअखेर चालत आली. पुढें तो महाल कुंपणीसरकारांत घेतला. तेथील धर्मादाय रोजीदार वर्षासनें नेमणूक पूर्वीप्रमाणें चालत आहेत. त्या सदरांत आमची नेमणूक असतां बंद जाहली आहे. त्याविशीं सरकारांत बोलणें चाललें आहे.
- १ हल्लीं सरंजाम व इनामखेरीज तैनात वतन वगैरे दरोबस्त आमचे नांवें चालत आहे. उमर वर्षे वीस व आमचे कनिष्ठ बंधू चिरंजीव राजश्री कृष्णराव-बापू व माधवरावदादा उमर वर्षे सत्रा व बारा.

सदरहूप्रमाणें मजकूर जाहीर व्हावा. छ २७ माहे रजब सन १२५३ फसली मुताबला, तारीख २४ आगष्ट सन १८४३ इसवी.

रघुनाथराव विठ्ठल विंचूरकर दस्तुर खुद.

## २६ मालेगांवकर राजेबहादर.

अ.

साहेब मुषफक मेहेरबान दोस्तां हेनरी ब्रौणसाहेब बहादूर एजंट जिल्हा दक्षिण सलमा हू.

अजीसाहेब माधवराव त्रिंबक राजे बहादूर वयानें लहान, पालन करणार मातोश्री अन्नपूर्णाबाई राजे बहादूर संस्थान नाशिक सलाम बाजद सलाम अंकीं खैरयेत.

तारीख १५ माहे सपटंबर सन १८५१ इसवीपोवेतों आपली पादमानी हमेषा कलमी करीत असलें पाहिजे. दरविला, आसाहेबांकडून खत तारीख २६ माहे आगष्ट सन १८५१ इसवीचें आलें, तें तारीख ९ माहे सपटंबर सन मजकुरीं पावलें. त्यांत मजकुर कीं, सरकारचा हुकूम तारीख ३० जुलई सन १८५१ इसवीचा आल्यावरून कलमीं केलें जातें कीं, आपल्यास मराठब राजे बहादर पद आहे, हें कधीं कोणत्या सबबेनें कोणाकडून प्राप्त जाहलें, त्याचा व एकंदर पदवी व थोरपणाचा इतिहास दाखलेनिशीं लिहून घावें. त्याजबरोबर दाखला असेल तोही पाठविला पाहिजे. ऐकीव मजकुरची हकीकत असेल व त्याजविषयीं कांहीं पुरावा नसेल तर तसेंही साफ लिहून पाठवावें. परंतु जुने कागदावरून व माहितगार लोकांकडून जितकी प्रयत्नपूर्वक माहिती सांपडेल तितकी सर्व लिहून घाबी. या बाबतींत सरकारास जाब जाणें आहे ह्मणोन आसाहेबांनीं मेहेरबानगीं करून लिहिलें. ऐशीयास आमचे वडील नारो शंकर नानासाहेब याजला पेशवेसरकारचीं पत्रें नामजाद अशीं आहेत. त्यानंतर दिल्लीचे बादशाहा अलमगीर गाजी यांजवर दुसमानाचा प्रसंग पडल्यामुळें नारो शंकर यांजकडून दुसमानाचें पारपत्य जाहल्यामुळें बादशाहा संतोष होऊन त्यांनीं तलवार व जवाहीर व गांव इनामी व राजे बहादर हा किताब दिल्हा. याजविषयींचे सन, शकाचा तपास करून लिहूं. कारण आमची व होळकर यांची आदावत होती. त्यामुळें त्यांनीं नाशिकास बड करून, वाडा नाशिकचा दरोबस्त चिजवस्त वगैरे कागदपत्रासुद्धां लुटून नेले, व कांहीं त्रिंबकजीचे किल्ल्यावर होते. तेथें त्यांची आमची लढाई होऊन तेथूनही सर्व नेले. हल्ली दाखल्याचे वगैरे कागदपत्र जुनी मंडळी यांजकडून ऐकीव मजकुराचा तपास करून व दाखल्याचे कागद मालेगांव संस्थानासुद्धां कारकून पाठवून शोध करून जितके हस्तगत होतील तितके कैफियत लिहूं. त्याजबरोबर आसाहेबांकडे दाखल करूं. ज्यादा काय लिहिणें? प्यार मोहोबत असो दीजे. हे किताबत.

ब.

यादी राजश्री शिवराव गोपाळ राजे बहादर—मालेगांवकर सुरुसन सलास सलासीम मयातैन व अलफ. मेहेरबान वाडींनसाहेब बहादूर डिपूटी एजंट, जिल्हा दक्षण, यांनीं छ ८ सपटंबर सन १८३२ इसवीचें पत्र पाठविलें. त्यांतील हशील मजकूर कीं, आपले खानदानीची बढती व लौकिक महशूर जाहल्याविशीं व पेशवेसरकारांतून फौजेस व जातीस सरंजाम आपले वडिलांस दिल्हा त्याची तारीख व आपले जहागिरींत पेशवेसरकार कोणते तऱ्हेनें दखलगीरी ठेवित गेले व पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं चालत आहे त्यांत कमपेश तफावत काय आहे व आपलेकडे हल्लीं सरंजाम काय चालत आहे, त्याची कैफियत, शके संवत्सरवार व तारीखवार दाखल

हाकी झणोन हजारत बंदगानअल्ली राईट हनराबल गौरनर कौंसल चाहत आहे. ऐशी-  
 रास आमचे मूळ पुरुष शंकराजी पंत यांनीं पूर्वी विजापुरी सुभ्याजवळ दिवाणगिरीचें  
 काम केलें. त्यांस पुत्र तीन, आबाजी शंकर व लक्ष्मण शंकर व नारो शंकर. यांत कैला-  
 णवासी तीर्थस्वरूप नारो शंकर हे आमचे पणजे. यांनीं थोरले मल्हारजी बाबा होळकर  
 सुभेदार यांजपाशीं प्रथम शिलेदारीचा रोजगार करून लढाईचे प्रसंगीं तलवारीचे मर्दुमीनें  
 कामकाज केलें. त्यावरून होळकर यांनीं नगारा, निशाण, पागा देऊन, जमेत हजार पंध-  
 णशानिशीं वाढविलें, आणि इंदूर सुभ्याचे बंदोबस्ताचें काम सांगितलें. पुढें पेशवेसर-  
 काराच्या फौजा व नायगांवकर हे हिंदुस्थान प्रांतीं मवास, पाळेगार यांचे बंदोबस्ताक-  
 रेंतां होते. त्याशीं दतीया, वोडसेवाले वगैरे संस्थानिक यांनीं पेशव्यांचे फौजेचा मोड  
 करून नायगांवकर मारले गेले. फौज बुडवून त्या प्रांतांतील अंमल उठवून दिल्या. हा  
 राजकूर पेशवेसरकारांत समजल्यावरून तिकडे कोणी मर्द मनुष्याची योजना करावी  
 ना उद्देशांत होते. तो होळकर सुभेदार यांनीं नारो शंकर यांचे मर्दुमीची तारीफ स्वमुखें  
 सरकारचे कानावर घालून सरकारआज्ञेनें नारो शंकर यांजला पुण्यास आणविलें. नंतर  
 सरकारची भेट होतांच मजीं सुप्रसन्न होऊन, हिंदुस्थानचे मोहिमेचें काम सांगून वस्त्रें दिलीं;  
 आणि मुखत्यारीनें मसलतसीर लागेल ती फौज ठेवून सरकारचा नक्षा तिकडील मुलखांत  
 हाबा, अशी आज्ञा करून रवानगी केली. तिकडे नारो शंकर जाऊन फौज ठेवून लाखों  
 रुपये पयदाश जोर तलबीनें उत्पन्न करून खर्च केला; आणि दतीया, वोडसें वगैरे संस्थानिक  
 यांच्या जागा हस्तगत करून, मवास पाळेगार यांचीं पारपत्यें केलीं. आणि वोडसेवाले वगैरे यांच्या  
 स्थानपैकीं व आसमंतात मवास वगैरे यांचे मुलूख सर करून, आशी लहान खेडें होते तेथें  
 लाखों रुपये खर्च करून मकाण मजबूत बांधून पेठेची वसाहत केली, आणि तेथें सुभ्याचें  
 काम घातलें. कमकसर आशी सुभ्याखालीं तीस पसतीस लक्षांचा मुलूख सर करून त्या  
 प्रांतीं तमाम दिल्लीपर्यंत पेशवेसरकारची जरब बसविली. कोट्यावधी रुपयांची कफायत  
 सरकारची जाहली. नंतर पेशवेसरकारची मेहरबानी होऊन दिल्लीपद बादशाहांनीं राजे-  
 ण्हाबरीचा किताब दिल्हा होता. तोच किताब कायम करून जरीपटका व साहेबनौबद्द  
 सरदारीचीं वस्त्रें देऊन फौजेस व जातीस मिळून पंधरा लक्षांचा सरंजाम महाल मुलूख  
 केल्ले, कोट हिंदुस्थान प्रांतीं गंजबसोदें व सुज्यालपूर वगैरे महाल व किल्ले व स्वदेशीं निबा-  
 हत, बेलापूर, अंमळनेर वगैरे महाल व किल्ले, ठाणीं व गुजराथ प्रांतीं जंबूसर ऐशा जागा  
 दिल्या; आणि आशी सुभ्यासुद्धां कायमी ठेवून दिवसेंदिवस ज्याफा मातबरी वाढविली. नंतर  
 लक्ष्मण शंकर बंधु, आशी सुभ्याचें कामावर ठेवून नारो शंकर स्वदेशीं फौजेनिशीं आले. नंतर  
 पेशवेसरकारचे आज्ञेवरून छत्रपती सातारकर यांजकडील प्रतिनिधीपदाचेंही काम कांहीं  
 दिवस केलें. पुण्याहून शिंदे अलिजाबाहादर यांचे फौजेनिशीं रवानगी हिंदुस्थान प्रांतीं  
 करण्यबद्दल सरकारआज्ञेनें कोट्यावधी रुपये खर्चाची बेहेबुदी ठेवून, त्यांचे दौलतीचे

बंदोबस्ताची पैरवी ठेविली. मोंगलाई व कर्नाटक प्रांतीं पेशवेसरकारचे मोहिमेचे प्रसंगांत हरवस्त लढाया, भिडाया, ठाणीं, मुलूख सर करण्यांत फौजेनिशीं मर्दुमीच होत अली. सोनपत पाणिपतचे स्वारींत फौजेनिशीं दिल्लीतत्काचे बंदोबस्ताचें काम होतें. लढाईचे प्रसंगीं रसद वगैरे पोंहचावण्याचा बेत ठेवून जुवामर्दींनीं सरकारसेवा केली. पुढें आमचे आज्ञे त्र्यंबकरावसाहेब व चुलत आज्ञे रघुपतरावसाहेब यांनींही सरकारचाकरी तलवारीचें काम-काजाची करीत आले, व त्यामामें आमचे तीर्थरूप गोपाळराव बापासाहेब यांनीं अलिजा-बहादर पाटीलबावा शिंदे यांसमागमें फौजेनिशीं जैपूर, जोतपूर वगैरे तिकडील संस्थानिकांचे लढायांचे प्रसंगीं मर्दुमीचीं कामें करून, पाटीलबावा यांची मर्जी संपादन करून सरकारचाकरी केली. नंतर पेशवेसरकारांतून आमचे चुलत आज्ञे रघुपतराव नारायण राजे बहादर यांजला तिसरा हिस्सा दौलती व सरंजामांत वांटणी करून देऊन, संस्थान मालेगांव ही जागा तिसरे हिस्शाचे इलाख्यास करून दिली. पुढें ते मृत्यु पावल्यावर त्यांचे संस्थानची वहिवाट वेगळी सरकारांतून केसो कृष्ण दातार त्यांचे दिवाण त्यांचे हातें चालवीत होते. तो हिस्सा पाटीलबावा शिंदे पुणें मुक्कामीं आल्यावर सरकारांतून मेहरबानगीं करून तिसरे हिस्शाचें संस्थान मालेगांवसुद्धां आमचे तीर्थरूप गोपाळराव बापासाहेब राजेबहादर यांजला स्वतंत्र करून दिलें. आणि मामुलपासून आमचे सरदारींतील फौज व जातसरंजामाचे मुलखांत पेशवेसरकारांनीं कधींही कांहीं दखलगिरी ठेविली नाहीं. पेशवेसरकारांत व सरकारांचे तमाम मुलखांत हरएक बाबेचें कामांत आह्मांकडील बाहादरी जाहली असतां, आमची मातबरी चालवीत होते. याप्रमाणें दौलतदारीचे इराद्यानें इसवी तागाईतअखेर पेशवाईपर्यंत मातबरी सरकारनीं चालविली. कोट्यावधी रुपयांची आमद व लाखों रुपयांचा मुलूख सरकारांत सर करून सरकार किफायत केली व करोडो रुपये स्वपराक्रमानें मेळवून इमारती व ठिकाणें नाशिक व मालेगांव वगैरे जागोजागीं बांधून खर्च केला. कुंपणीसरकारचे अंमलाचे अव्वलीस आमचे तीर्थरूप कैलासवासी गोपाळराव बापासाहेब राजेबहादर यांशीं मालेगांवीं लढाईचा प्रसंग जाहल्यामुळें मागील सिलसिल्याचे शकसंवत्सरवार दाखल्याचें कागदपत्र गर्दीत गेले. पेशवेसरकारचे दफ्तरांत दाखल्याचे कागदपत्रावरून सरकारचे नजरेस येईल. सर्वत्र सरदारांबरोबर हल्लीं आम्हांस जातीस जहागीर, सरंजाम देऊन मातबरी चालवीत आहेत. त्यांत गुदर करून आहों. याहून ज्यास्ती मातबरी वाढविणें व आमचे खानदानीचे मागील सिलसिल्याचे लौकिकानुरूप चालविणें सरकाराकडे आहे. मिती फाल्गुन शुद्ध ३ शके १७५४, सन १२४२.

### २७ रामदुर्गकर.

यादी नारायणराव राम रामदुर्गकर फौत जाहले. ऐसियास त्यांची जाहमीर 'पादशाही' तर्फेनें अगर सातारे महाराज यांचे तर्फेनें किंवा नवीन पेशवेसरकार तर्फेनें व मूळ पुरुष

पाहिलीया फौती मजकुरास सगे वारस कोण आहेत येविशीं चौकशी करून त्याहावे, म्हणून हुकूम, त्याजवरून दमरांत दाखला पाहतां व माहितगार यांचे सांगण्यावरून चौकशीकरितां:-  
वंशावळी:-मूळ दादाजीराव.

रामराव दादाजी [ रामदुर्गकर. ]

पुत्र योगीराव राम

पुत्र गोविंदराव

रामराव गोविंद दत्तक पुत्र

पुत्र नारायणराव राम हल्लीं

फौत झाले. त्यांची स्त्री राधाबाई

व कन्या दोन आहेत.

यांची कैफियत.

बळवंतराव दादाजी [ नरगुंदकर. ]

पुत्र दादाजीराव बल्लाळ

पुत्र भास्कराव दादाजी

पुत्र व्यंकटराव भास्कर दत्तक

पुत्र दादाजीराव व्यंकटेश हल्लीं

आहेत. त्यांस पुत्र दोन आहेत.

१ माहितगार यांचे सांगण्यावरून मूळ रामराव दादाजी हे आप्पाजी सूर्यराव किरवंत अर्चीकर करवीरवासी राजे यांचे चाकर यांजपाशीं शागिर्दी करून होते. तेव्हां कांहीं एके दिवशीं चाकरीस चुकले, झणोन आप्पाजीराव रागें भरले, तेव्हां रुसून बाहेर जाऊन निजले. तेव्हां त्यांचे तोंडावर नागानें येऊन फणी धरली, तें आप्पाजीराव यांनीं पाहिलें. तेव्हां विचार केला कीं, हा दैववान् आहे. असें समजोन शागिर्दी करावयाची मोकूफ करून, आपला पुत्र मानून, दौलतीचा कारभार सांगितला. नंतर मशारनिल्ले रामदुर्गकर यांनीं बहुत पराक्रम करून नरगुंद संस्थान वगैरे मुलूख मिळविला. तेव्हां करवीरकर महाराज यांची बहुत कृपा होऊन सचीवपद दिलें. त्याप्रमाणें वहिवाट करून होते. पुढें आप्पाजीराव यांचा काळ समीप आला. पोटीं पुत्रसंतान नाहीं, तेव्हां क्रियाकर्म करावयाकरितां बळवंतराव यांस दत्तक देविला, आणि त्यांस कांहीं खर्चीपुरता सरंजाम दिल्ला. त्यांचा वंश हल्लीं हेबळीकर आहेत; व रामराव दादाजी दरोबस्त नरगुंद संस्थान अनभवून होते. पुढें काशीस जाण्याकरितां गेले, ते वेळेस मृत्यु पावले. नंतर संस्थानचा कारभार पुत्र योगीराव, पुतणे दादाजीराव बल्लाळ करीत होते.

कलम.

१ दमरांत दाखला पाहतां.

१ सन इसचे आर्बैन मुताबक-११५१ फसली, १७४१ इसवींत दादाजीराव व योगीराव यांचें नांवें वस्त्रें वगैरे परदरबार म्हणून खर्च पडला आहे. कारकीर्द बाळाजी बाजीराव नानासाहेब पेशवे.

१ सन आर्बा आर्बैन मुताबक ११५३ फसली, १७४३ इसवींत योगीराव राम नरगुंदकर यांचे नांवें तर्जमा हिशेबास वस्त्रें वगैरे परदरबार म्हणोन खर्च पडलीं आहेत. कारकीर्द सद्द.



- १ सन इहिदे खमसैन मुताबक ११६० फसली, सन १७५० इसवींत आप्पाजीसाब यांचे पुत्र बळवंतराव आप्पाजी नरगुंदकर यांजकडील कारकून यासीं बख्शे पावलीं, तीं परदरबार हणोन खर्च पडलीं आहेत. कारकीर्द सदर.
- १ इसने खमसैन मुताबक ११६१ फसली, १७५१ इसवींत बळवंतराव आप्पाजी नरगुंदकर यांजकडील जासूद पत्रें घेऊन आले. त्यास इनाम परदरबार हणून खर्च पडलें आहे. कारकीर्द सदर.
- १ सन तिस्सा खमसैन मुताबक सन ११६८ फसली, सन १७५८ इसवी. कारकीर्द सदर.
- १ बळवंतराव आप्पाजी नरगुंदकर यांचें नांवें नेमणूक बेहेडा जाहला आहे. त्याची बेरीज २०६८३२।- सदरहू मुख्य अनुभवून तिनशें राऊतांनिशीं नारायणराव व्यंकटेश यांचे समागमें फौजसुद्धां चाकरी करावी हणोन करार ठरला आहे.
- १ योगीराव राम नरगुंदकर यांचें नांवें नेमणूक बेहेडा जाहला आहे. त्यांत मजकूर कीं, मशारनिल्हेचा सरंजाम बळवंतराव आप्पाजी यांनीं करार करून दिल्हा. त्याची बेरीज २८४१९।॥।।. या बेरजेंत ५० पन्नास स्वारांनिशीं नारायणराव व्यंकटेश यांचे दिमतीस चाकरी करावी हणोन ठरलें आहे.
- १ भास्करराव दादाजी यांचें नांवें नेमणूक बेहेडा जाहला आहे. त्यांत मजकूर कीं, मशारनिल्हेस सरंजाम बळवंतराव आप्पाजी यांनीं खाजगत खर्चाबद्दल करार करून दिल्हा ते रुपये १२०००.

३

१ सन इसने सितैन सन ११७१ फसली १७६१ इसवी, कारकीर्द माधवराव बळाळ पेशवे, या सालांत नेमणूक बेहेडा योगीराव राम व भास्करराव दादाजी यांचें बख्शे जाहला आहे. त्यांत मजकूर लिहिला आहे कीं, संस्थान मजकूर पेशजीपासून रामराव दादाजी यांजकडे होतें. त्यास ते निवर्तल्यावर त्यांचे पुत्र योगीराव राम व दादाजीराव बळाळ पुतणे यांजवर सर्व भार होता. तेच कारभार करीत होते. त्यांजवर कांहींएक दिवसांनीं दादाजीराव आदावतीमुळें नरगुंदीच मारले गेले. त्यावर एक वर्षपर्यंत योगीरावच संस्थानीं खावंदगिरी करून होते. तेव्हां सांगितल्याप्रमाणें बळवंतराव वर्तणूक करीत होते. त्यांजवर कांहींकां दिवशीं कैलासवासी संभाजीमहाराज करवीरवासी तोरगळास आले होते. तेथें योगीराव दर्शनास गेले असतां, तेच संधीत बळवंतराव यांनीं नरगुंदचे किल्लेदारशीं फितवा करून आपणच कारभार करूं लागले. तेव्हां योगीराव निघोन रामदुर्गास गेले. ते समर्थी जातीस खर्चास नेवून दिल्लें, तें ते घेऊन होते. व भास्करराव दादाजी अगोदरच निघोन बहुत दिवस सरकारीत होते. पुढें कांहींकां दिवसीं योगीराव यांस रामदुर्गचा पेंच पडून निघणें प्राप्त

जाहलें. त्यास सालगुदस्त सन इहिदेंत ११७० फसली, १७६० इसवींत, तुम्हीं उभयतांनीं तीर्थरूप नानासाहेब यांचे आज्ञेवरून किल्ले नरगुंद व रामदुर्ग वगैरे ठिकाणीं लगामी लावून घेऊन, सांप्रत हुजूर येऊन विनंती केली जे, किल्ले आपले लगामी लागले आहेत. तालुका बळवंतराव यांजकडे चालत आहे, तो त्यांजकडून दूर करून आमचा आम्हांकडे करार करून द्यावा आणि सेवा घ्यावी, म्हणोन. त्यांजवरून मनास आणून परंपरा संबंध पाहतां, संस्थानचे अधिकारी तुम्हींच असें जाणून यांजवर कृपा करून, बळवंतराव यांजकडील तालुका दूर करून, सालमजकुरापासून तुम्हांकडे संस्थान मजकूर देखील किल्ले व उभयतांकडे पहिला सरंजाम चालत आहे. त्यासुद्धां साराच करार करून दिल्या, बरहुकूम बेहेडा, सन तिस्सा खमसैन.

२०६८३२।- बरहुकूम बेहेडा बळवंतराव आप्पाजी यांजकडील.

२८४१९।॥।।. बरहुकूम बेहेडा योगीराव राम यांजकडील सरंजाम.

१२००० बरहुकूम बेहेडा भास्करराव दादाजी यांजकडील सरंजाम.

२४७२५१।॥०।।।.

सदरहू तालुका अनुभवून चाकरी करावयाचा करार पेशजीचे.

३०० स्वार बळवंतराव आप्पाजी यांजकडे नेमणूक होती ते.

५० „ योगीरावराम यांजकडे नेमणूक होती ते.

३५०

पैकीं कसाल्यामुळें रयात स्वार दोन तीन वर्षे कमी ५० करून तीनशें स्वारांनिशीं चाकरी करावी. पुढें नेमणुकीप्रमाणें ३५० स्वारांनिशीं चाकरी करावी व बळवंतराव यांस जातीस सरंजाम रुपये १२००० याचा सदरहू बेहेड्यापैकीं नेमून दिल्या जाईल. त्याप्रमाणें पाववीत जावा. येणेंममाणें बेहेडा करून देऊन सरकारांत नजर रुपये १००००० एक लक्ष घ्यावयाची ठराविली असे.

१ सन आर्बा सबैन मुताबक ११८३ फसली, १७७३ इसवी कारकीर्द नारायणराव बल्लाळ. भास्करराव दादाजी मृत्यु पावले, सबब योगीराव राम व व्यंकटराव भास्कर यांचें नांवें संस्थान पूर्ववत्प्रमाणें बाहाल करून देऊन सनद दिली. त्यासंबंधें नजर सरकारांत घ्यावयाची ठराविली ते ४५०००० रुपये.

१ पुढें कांहीं दिवसांनीं योगीराव राम मृत्यु पावले. तेव्हां व्यंकटराव भास्कर संस्थानची बहिवाट करीत होते. नंतर संस्थान टिपूसुलतान यांनीं घेतलें. तें सन सव्वा समानीन मुताबक ११९६ फसली, १७८६ इसवींत पेशवे यांनीं वापस तहांत घेतलें. तेव्हांपासून सन १२०० फसली १७९० इसवीपावेतो सरकारांत बहिवाट होती, कारकीर्द माधवराव नारायणराव पेशवे.

१ सन इसजे तिसैन मुताबक १२०१ फसली १७९१ इसवी, कारकीर्द सवर. संस्थान मजकूर रामराव गोविंद, व्यंकटराव भास्कर यांचें नावें करार करून सनदा जाहल्या आहेत. त्यांत मजकूर कीं, पेशजी हरी बल्लाळ यांचे विद्यमानें सरकारचा व टिपूचा तह जाहला, ते समयीं किल्ले नरगुंद व किल्ले रामदुर्ग दोन किल्ले व किल्ल्याखालील मुख्य सरकारांत आला आहे; तो पेशजीप्रमाणें तुझांकडे करार करून दिल्या असे. तरी सरकार लक्षांत राहून एकनिष्ठें वर्तत जावें. अलीकडे परशाराम रामचंद्र यांनीं सदरहू तालुक्याशिवाय मुख्य सोडविला असेल तो तुझांकडे चालणार नाहीं, हणून सनद देऊन, सरकार नजर घ्यावयाची ठराविली, ते २५०००० रुपये पुढें सवरप्रमाणें वहिवाट सन तिस्रा मयातैन सन १२१८ मुताबक १८०८ पावेतों चालली.

१ सन अशर मयातैन मुताबक १२१९ फसली, सन १८०९ इसवी. बाजीराव रघुनाथ पेशवे यांस नारायणराव राम यांनीं विनंती केली कीं, संस्थान मजकूरची वहिवाट आम्हांकडे व व्यंकटराव भास्कर यांकडे निमेनिम चालावी. तें न होतां, किल्ले रामदुर्ग व कांहीं गांव आम्हांकडे चालतात. बाकी दरोबस्त संस्थानची वहिवाट व्यंकटराव भास्कर करीतात. त्यास रामराव गोविंद मृत्यु पावले. यास्तव निमे संस्थान आम्हांकडे करार करून चालविलें पाहिजे म्हणोन. त्याजवरून पेशजी सन इसजे सितैन ११७१ फसली १७६१ इसवीपासून उभयतांचें नावें करार आहे. यास्तव, रामराव गोविंद मृत्यु पावले, त्यांचे पुत्र नारायणराव राम यांकडे निमे संस्थान चालवावयाचा करार करून किल्ले रामदुर्ग वगैरे गांव तालुकें मजकूर येथील अंमल मशारनिल्ले यांकडे चालत आहे. तो त्यांचे निमे वांटणीत लावून, बाकी निमे वांटणीचे भरतीस देहे १७ सत्रा लावून देऊन, येथिशीं सनदा देऊन नजर वगैरे घ्यावयाची ठराविली, ते १००००० रुपये एक लक्ष यासी संस्थान मजकूरची जमेची बेरीज बरहुकूम बेहेडा सन ११७१ फसली रुपये २४७२५१॥०॥।।।। सदरहू बेरजेचा मुख्य चालत होता. तेव्हां साडेतीनिशें स्वारांनिशीं चाकरी करावी, असा करार आहे. त्यास टिपू सुलतान यांचे तहांत नरगुंद तालुका सरकारांत घेतला. त्याखेरीज अलिकडे परशाराम रामचंद्र यांनीं मुख्य सोडविला तो चालणार नाहीं, म्हणोन सन १२०१ फसली सन १७९१ इसवींत, करार जाहला आहे. यास्तव बेहेड्याचे बेरजेपैकीं मोकासबाबेचा अंमल सरकारांत राहिला तो रुपये ८८२५१॥०॥।।।। यांचे स्वार हिसेरसीदप्रमाणें वजा १२५. बाकी मुख्य चालत आहे. त्याची बेरीज १५९०००. यासी स्वार असामी, २२५; पैकीं वजा निमे व्यंकटराव

मास्कर यांनी चाकरी करावी. ते स्वार ११२, एकूण बेरीज रुपये ७९५००,  
बाकी नारायणराव राम यांनी चाकरी करावी ते स्वार ११३ एकूण रुपये  
७९५००.

## २८ रास्ते.

अ.

साहेब मुषफक मेहेरबान करमफरमाय दोस्ता हेनरी ब्रौणसाहेब बहादूर एजंट जिल्हा  
दक्षिण सलाम हू.

छ अजीसाहेब शामराव लक्ष्मण रास्ते, सलाम बाजद सलाम खैरयत अज्याम अंकी.  
येथील खैरसला जाणोन आपली शादमानी हमेशा कलमीं करीत असलें पाहिजे. दरविला  
आसाहेबाचें पत्र नंबर १०४८ तारीख २६ आगष्ट सन १८५१ इसवीचें सरकारचें पत्रावरून  
आलें, त्यांत रास्ते पद आहे. हें कधीं, कोणते सबबेनें, कोणाकडून, प्राप्त जाहलें, त्याचा व  
खानदानीचा व पदवी थोरपणाचा इतिहास लिहून यावा ह्मणोन वगैरे कलमीं जाहलें. ऐशी-  
यास, पूर्वीं विजापूरचे आमलांत आमचे पूर्वज गंगाधरपंत गोखले हे मौजे वेलणेश्वर तर्फे  
गुहागर तालुके अंजनवेल जिल्हा रत्नागिरी, या गांवीं महाजनी या इराद्यानें राहत असोन,  
दामोळ सुभ्याखालीं जें गांव होते, त्यापैकीं महाल हवेली व ज्याफराबाद या दोन महालचा  
रसदभरणा सुभे मजकुरीं करीत असत. नंतर कांहीं दिवसांनीं त्यांचे नातू हरीपंत गोखले, सुभे  
मजकूरचा रसदभरणा विजापुरास येऊन करूं लागले. नंतर तेथील बादशाहा यांनीं त्यांची  
रीति पाहून 'रसदे' = रस्दे असा किताब देऊन विजापुरासच ठेविलें. तेथें कितीएक सुभ्यांचे  
रसदभरण्याचें काम बादशाहाचे आज्ञेनें त्यांजकडे असोन त्याजला 'रस्दे' पद हमेषा लिहूं  
लागले. पुढें त्यांस श्रीमंत महाराज छत्रपती कैलासवासी शाहू राजे यांनीं अंमल बसविल्या-  
नंतर सातारा येथें विजापूर सरकारचे रस्देपणाचे इरादेदार असें जाणून, हरीपंत यांचे नातू  
शामजीपंत गोखले आपले पदवीं असावे असें जाणून, शनवार पेठेंत राहणेंविषयीं आज्ञा  
आहली. तेव्हां त्यांचे चिरंजीव भिकाजी नाईक आप्पा यांनीं वाडा बांधून तेथेंच राहिले;  
आणि महालचा पोतें भरणा वगैरे व्यापाराचें काम करीत असत. ती वागणूक आणि  
व्यापार वगैरे धंदा वास्तविक अशी महाराज छत्रपती यांची खात्री होऊन, त्यांनीं 'रस्दे' हें  
नांव मोडून 'रास्ते' हें पद दिलें. तेव्हांपासून रास्ते हें नांव चालूं लागलें. उपरांत बाजीराव  
बळाळ पेशवे यांनीं भिकाजी नाईक आप्पा यांची योग्यता मोठी व व्यापाराची रीति  
चांगली असोन सरकार खातरजमेचे आहेत असें जाणून, पुण्यांत शनवार पेठेंत, शनवारचे  
बाळाचे संनिध वाडा बांधावयास जागा दिली. तेथें वाडा बांधून राहिले. नंतर त्यांची  
कन्या कैलासवासी गोपिकाबाई ही आपले चिरंजीव बाळाजी बाजिराव ऊर्फ नानासाहेब  
पेशवे यांस केली. त्यांजला पुत्र नीन जाहले ते:-पहिले विश्वासराव, दुसरे माधवराव, तिसरे

नारायणराव पेशवे. हे त्रिबर्ग आमचे पणजे कैलासवासी लक्ष्मणराव भिकाजी बगैरे बंधू यांचे भाचे असून त्यांनीही आमचे पणजे यांची रीति व योग्यता पाहून, योग्यतेनुसार पूर्वीपासून नक्त नेमणूक पोहोचत होती, त्यावर कांहीं ज्याजती करून, सरंजाम करून देऊन रास्तेपद चालत आल्याप्रमाणे चालविले. आतां रास्तेपद मिळाल्याचे कागद दप्तरां पाहतां आढळत नाहीत. कारण, श्रीमंत बाजीराव रघुनाथ पेशवे यांनीं जमी केली होती, ते वेळेस मागील दप्तरचे कागद आस्ताव्यस्त जाहले आहेत. परंतु जुने माहितगार यांचे मुखजबानीवरून आमचे ऐकण्यांत कांहीं मजकूर होता, त्यावरून सदरहू इतिहास सरकारास रास्ते पदाविषयीं सम-जण्यासाठीं आसाहेबांचे पत्नीं कलमीं करून, एकंदर खानदानीचा तक्ता भिकाजी नाईक यांस रास्ते पद प्राप्त जाहलें, सबब त्यांजपासोन तयार करून पाठविला आहे—भिकाजी नाईक आमचे निपणजे यांजपासून आजपर्यंत स्थावर जंगम इष्टेटीचा विभाग न होता, एक-त्रपणांत वहिवाट चालली आहे. सदरहूवरून योग्यता व खानदानी व रास्ते पद यांविषयीं हकीकत आसाहेबांचे दिलांत येईल. तारीख ११ माहे आक्टोबर सन १८५१ इसवी, ज्याचा काय लिहिणें. प्यार मोहबत असों दीजे, हें किताबत.

ब.

यादी राजश्री बळवंतराव माधव रास्ते, सुरुसन सव्वा आशरीन मयातेन व अलफ, सन १२३६ फसली, शके १७४८ व्ययनाम संवत्सरे. आमचे वडील मूळ पुरुष शामजी हरी रास्ते यांस पुत्र वडील भिकाजी शामराज व धाकटे सदाशिव शामराज यांचे पोटीं संतान नाही. भिकाजी शामराज यांस पुत्र:—

१ मल्हारराव यांनीं दौलत मिळविली. शिक्षा त्यांचें नांवें जाहला. तो चालत आहे. त्यांचे पोटीं संतान नाही.

२ गणपतराव यांस पुत्र:—

|                        |                            |                              |
|------------------------|----------------------------|------------------------------|
| १ काशीराव यांस पुत्र.  | १ यशवंतराव यांस            | १ माधवराव यांस               |
| मल्हारराव हल्लीं आहेत. | पुत्र गणपतराव हल्लीं आहेत. | आनंदराव यांनीं दत्तक घेतलें. |

३ आनंदराव यांस महिपतराव पुत्र जाहले होते. ते मृत्यु पावले. पुढें माधवराव यांस दत्तक घेतलें. त्यांस पुत्र हल्लीं आहेत ( ते ):—

१ बळवंतराव. २ गंगाधरराव. ३ यशवंतराव.

आनंदराव यांचे कन्येचा पुत्र रामचंद्रराव साठे हल्लीं आहेत.

४ लक्ष्मणराव यांस संतान नव्हतें. याजकरितां भाऊबंदाखेरीज गोत्रज सदाशिव-भट गोखले यांचा पुत्र दत्त घेऊन शामराव नांव ठेविलें. त्यांस पुत्र लक्ष्मणराव हल्लीं आहेत.

५ मंगाधरराव यांस पुत्र वडील व्यंकटराव व धाकटे विश्वासराव. उभयतां मृत्यु पावले. पोटीं पुत्र नाही. स्त्रिया त्यांच्या आहेत.

१ व्यंकटराव यांची स्त्री  
सावित्रीबाई.

२ विश्वासराव यांची स्त्री  
अन्नपूर्णाबाई.

६ रामचंद्रराव यांचे पोटीं संतान नाही. त्यांच्या स्त्रिया आहेत.

१ राधाबाई.

२ वाराणशीबाई (धाकटी).

७ जीवनराव यांचे पोटीं अमृतराव होते. ते मृत्यु पावले. पोटीं संतान नाही व स्त्रीही नाही.

आमचे चवथे पुरुष भिकाजी शामराज व सदाशिव शामराज. उभयतां बंधू सातारा येथें शाहूमहाराजांची कृपा संपादून एक विचारें होते. महाराजांनीं जातीस सरंजाम करून दिल्या. सदाशिव शामराज सातारा येथें होते. भिकाजी शामराजांस महाराजांनीं वाईत वाढा बांधावयास जागा दिल्ली. तेथें वाढा बांधून राहिले. त्यांस प्रथम कन्या गोपिकाबाई जाहली. ती महाराजांनीं नानासाहेब पेशवे यांस देवविली. वाईत लग्न जाहलें. नंतर मल्हारराव भिकाजी, पेशवेसरकारांत राहून कामकाज करीत आले. सरकारची स्वारी कर्नाटक प्रांतीं सावनूरकर नवाब यांजकडील महाल ध्यावयाकरितां गेली. बागलकोट किल्ला घेऊन मल्हारराव यांचे हवालीं केला. बदामीचा किल्ला रुस्तुमअल्लीखान जहागिरदार यांजकडे होता; व देशक, पाळेगार यांची काटकाई होती. त्याचा बंदोबस्त करावयास सांगितला. त्याजवरून फौज व पायदळ ठेवून पाळेगाराचीं पारपत्यें करून कारस्थानानें बदामी किल्ला घेऊन सरकारचा अंमल बसविला. कामकाज केलें, सबब सरकारांतून सरफराजी होऊन, तीन हजार फौजेची सरदारी व जातीस तैनाता करून दिल्या. फौजेचे खर्चास व जातीस नक्त पोतापैकीं ऐवज पावत आला. प्रथम त्रिवर्गाच्या तैनाता जाहल्या, त्यांस स्वदेशाचीं खेडीं लावून दिल्ली. पुढें तैनाता करून दिल्या. त्यास परगणे बागलकोटपैकीं गांव लावून द्यावे, ह्मणून सनदा जाहल्या. परंतु परगणे बागलकोटपैकीं रोख ऐवज घेत आले. वडील मल्हारराव मृत्यु पावले. पोटीं संतान नाही. त्यांचे पाठचे गणपतराव. यांचें नांवें सरदारी व्हावी, परंतु आनंदराव यांचे कर्तृत्वावर सरकारची मेहेर होऊन त्यांचें नांवें सरदारी करून दिल्ली. नंतर गणपतराव यांचें बोलणें पडल्यावर त्यांस सरकारांतून तैनात व सरदारी निराळी करून दिल्ली. गत पुरुष जाहले त्यांच्या तैनाता वजा न करितां; परंपरा पुढील पुरुषांचें नांवें करार करून देऊन चालवीत आले. आजपर्यंत चार पिढ्या पुरुष कर्ते होते. परंतु बहिवाट एकत्रपणें चालत आली. घर वांटण्या जाहल्या नाहींत. फौजेचे सरंजामास महाल थोरले माधवराव साहेब यांचे कारकिर्दीत लावून दिले. आनंदराव भिकाजी यांचें नांवें जाबते जाहले त्याचा दाखला दमरी आहे.

## २९ सदाशिव माणकेश्वर.

अ.

साहेब मुषफक मेहेरबान करम फर्माय दोस्तां वाडींनसाहेब बहादूर सलाम हू.

छ अजदील येकलास मल्हारराव बाजी, सलाम बाजद सलाम खैरयत. अंजयान अंकीं येथील खैरसला जाणून आपली खैरखुषी हमेशा कलमीं करून दिल आराम करीत असलें पाहिजे. दरविला आसाहेबांनीं मेहेरबानी करून तारीख ८ माहे सपटंबर सन १८३२ इसवीचें व तारीख १ माहे जून सन १८३३ इसवीचीं खतें पाठविलीं तीं पावलीं. त्यांत हुकूम कीं, हजरत बंदेगान अल्ली रेट हनराबल गौरनर कौंसल चाहत आहेत कीं, दक्षिणेंतील जहागिरदार लोक यांची कैफियत कशी आहे, त्याची वाकबगारी व्हावी ह्मणोन कलमीं केलें जातें जें:-आपण मेहेरबानगी करून सरकारांत रवाना करण्याकरितां थोडके मजकुरांत कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे. त्यांतील तपशील:-आपली खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर जाहला तें व फौज व जातसरंजाम आपले बाडि-लांकडेस चालत होता, व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस दिल्या ती तारीख, व आपले जहागिरीचे बहिवाटींत पेशवेसरकारांतून कोणते तऱ्हेनें दखलगिरी केली तें व आपलेकडे सरंजाम हल्लीं काय चालत आहेत, व पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती, व हल्लीं कंपनीसरकारांतून चालत आहे त्यांत कंपेश तफावत काय आहे तें, वगैरे यादींत दाखल करून रवाना केलें पाहिजे. ह्मणोन कलमीं केलें. त्यास जबाब. बितपशील:-

- १ आमचे खानदानीची बढती आमचे चुलते सदाशिवपंत भाऊसाहेब यांसीं श्रीमंत राजश्री बाजीरावसाहेब पेशवे यांनीं हैदराबादेस वकिलीचें कामावर शके १७२३, सन १८०१ इसवींत रवाना केलें. नंतर पुणें मुक्कामीं होळकराची लढाई होऊन श्रीमंत वसईस गेले, तेथून आमचे वडिलांस पत्रें पाठविलीं. वसई मुक्कामीं आणून कुंपणीसरकारचा व पेशवेसरकारचा तहनामा भाऊसाहेब यांचे विद्यमानें होऊन पुण्यास श्रीमंत आले. नंतर दिवाणगिरीचें काम सांगितलें. त्या दिवसापासून लौकिक लोकांत महशूर जाहला. कलम.
- १ भाऊसाहेब यांसीं हैदराबादेस रवाना केलें, ते काळीं जातीस तैनात तीस हजार रुपये करून सरंजाम लावून दिल्या. शके १७२३ सांत.
- १ फौजेचा सरंजाम शके १७२३ पासून आजमासें एक लक्ष साठ हजार रुप-यांचे बेरजेचा लावून दिल्या. \* कलम.
- १ कृष्णराव नाना आमचे चुलते व आमचे नावें पालख्यांचा सरंजाम शके १७२५ चे सालांत आजमासें पंचवीसशें रुपयांचा लावून दिल्या, व माम-ल्याचीं कामें सरकारांतून आमचें नावें सांगितलीं होती. \* कलम.
- १ भाऊसाहेब यांसीं जाजती जातीस तैनात शके १७३९ चें सालीं रुपये सत्तर

हजार सरकारांतून करार होऊन सरंजाम लावून दिल्या. एकूण जातीस तेनात लाख रुपये करून दिली. कलम.

१ भाऊसाहेब दिवाणगिरीचें काम पुणें मुक्कामी करूं लागले, ते समयीं कृष्णराव नाना हैदराबादेस रेसिदेंटचें कामावर गेले.

१ पथकाचे स्वार व पायदळ सरंजामी घेऊन आहीं पुणें मुक्कामी श्रीमंतांचे स्वारी-बरोबर चाकरी करीत होतों. कलम.

१ भाऊसाहेब शके १७३९ भाद्रपद वद्य १३ (स) कैलासवासी जाहले. तें काळीं लक्ष्मणराव आपलें घरींहून येथें आले, परंतु भाऊ जिवंत असतां दत्तविधान जाहलें नाहीं. कलम.

१ शके १७३९ आश्विनमासीं पेशवेसरकारचा व कुंपणीसरकारचा बिघाड होऊन वद्य ११ स लढाई जाहली. नंतर आह्मांस श्रीमंतांचा हुकूम जाहला कीं, तुह्मांकडेस सोलापूरचा किल्ला आहे; त्यास तेथें तुह्मीं जाऊन किल्लाचा बंदो-बस्त ठेवावा ह्मणोन आज्ञा जाहली. त्याजवरून दुसरे दिवशीं वद्य १२ स निघून सोलापुरास आहीं गेलों, व मसलतीमुळे पुढील श्रीमंतांकडून बंदोबस्त करून घेण्याचा अवकाश पडला नाहीं.

सदरहूपमाणें पेशवेसरकारचे अमलांतील मजकूर आहे. हल्लीं कुंपणीसरकारातून चालत आहे. बितपशील:-

१ भाऊसाहेब यांचे जातीचे लाख रुपयांचे सरंजामपैकीं सरंजाम चालत आहे. आजमासें ३०००० रुपये.

१ रोख पोत्यांतून पावत आहेत. दरमाहा रुपये ५०० प्रमाणें ६००० रुपये.

१ पालखीचे सरंजामाबद्दल आजमासें. १२३९ रुपये.

१००० मौजे चिंचोसी तर्फ खेड हा गांव.

२३९ नक्त सरकार जामदारखान्यांतून पावतात ते.

१२३९

३७२३९

सदरहूपमाणें मजकूर आहे. पेशवेसरकारांत भाऊसाहेब यांनीं दिवाणगिरीचें काम केलें. तेव्हां सर्वांहून प्रतिष्ठा त्यांची व आमची विशेष होती. त्याचा बयाज किती लिहावा. येविशींची वाकबगिरी त्या वेळची हजरत अल्लीशान एलफिस्टनसाहेब बहादूर यांसी आहे. हल्लीं कुंपणीसरकारांतून मातबरी व प्रतिष्ठा चालवीत आहेत, ही आसाहेबास जाहीरच आहे. आहीं त्याहावें, असें नाहीं. जादा काय लिहिणें? प्यार मोहबत असों दिजे, हें किताबत.

ब.

यादी राजश्री लक्ष्मणराव सदाशिव टेभुणीकर, सुरुसन आर्बा सलासीन मयातैन

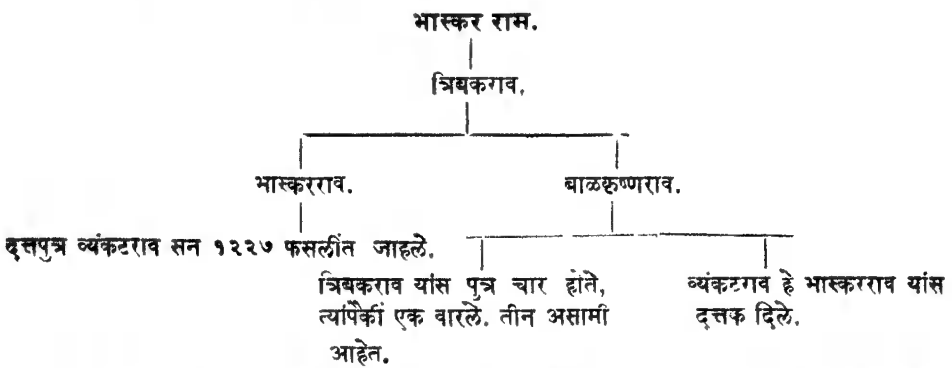


अलफ. मेहेरवान ज्यान वार्डीन साहेब बहादुर डेपूटी एजंट यांचें पत्र आलें जें:-हजरत बंदे-  
गान अल्ली, रैट हनराबल गवरनर कौंसल चाहात आहे कीं, दक्षिणेंतील जहागिरदार लोक  
यांची कैफियत कशी आहे, त्याची वाकबगारी व्हावी; याजकरितां सरकारांत रवाना करण्यास  
थोडके मजकूरांत कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे. त्यांतील तपशील:- आपले खानदा-  
नीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर जाहला तें, व फौज व जात-  
सरंजाम आपले वडिलांकडे चालत होता, व कोणते तारखेस सरंजाम दिल्या व आपले  
जहागिरीचे बहिवाटींत पेशवेसरकारांतून कोणते तऱ्हेनें दखलगिरी केली, व आपलेकडे  
सरंजाम हल्लीं काय चालत आहेत व पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती  
व हल्लीं कुंपणीसरकारांतून चालत आहे, त्यांत कंपेश व तफावत काय आहे तें, वगैरे यादींत  
दाखल करून रवाना केलें पाहिजे म्हणोन, त्यास आमचे तीर्थरूप सदाशिव माणकेश्वर  
भाऊसाहेब हे श्रीमंत सवाई माधवरावसाहेब पेशवेसरकार यांचे कारकिर्दींत वकिलीचें  
वगैरे राजकारणाचें लिहिण्यांत गोविंदराव पिंगळे यांचे अनुसंगें करून सरकारकामांत  
वागत होते. पुढें श्रीमंत राजश्री बाजीरावसाहेब पेशवेसरकार यांजपाशीं दिवसानदिवस  
पेस होऊन सन १२१० चें सालीं जातीस दहा हजार रुपयांचा सरंजाम दिल्या. नंतर  
त्याच सालांत दहा हजार सुद्धां तीस हजार रुपयांचा सरंजाम जातीस देऊन शिवाय हत्ती  
व स्वार यांजबद्दल एकतीस हजार चारशें रुपयांचा सरंजाम दिल्या. सन १२११ चें सालीं  
पेशवेसरकारांनीं लवाजिम्यासुद्धां वकिलीचें कामावर नवाबाचे सरकारांत हैदराबादेस  
पाठविलें. सन १२१२ चें सालीं पेशवेसरकाराचा व कुंपणीसरकाराचा वसई मुक्कामीं तह  
होऊन पेशवेसरकार पुण्यास आले. तेव्हां तीर्थरूपांस पेशवेसरकारांनीं दिवाणगिरीचा  
कारभार दिल्या. दिवसानदिवस बढती होऊन चौघडा व चौरी सोन्याचे दांडीची व चोपदारी,  
सोन्याच्या काठ्या व पुरी ताजीम व सामोरे येणें, इत्यादि वगैरे मरातब देऊन जातीस  
तैनात पहिले तीस हजारसुद्धां लाख रुपयांचा सरंजाम सन अशर मयतैन व अलफ  
सन १२१९ छ १७ सवाल कार्तिकमास या रोजीं करार करून दिल्या. व खेरीज तैनात  
अठराशें एकवीस व चौघड्याकडील तीन हजार व फौजेचे सरंजामास पहिले एकतीस  
हजार चारशेंसुद्धां एक लक्ष अठावन हजार देनशें साठ; एकूण देन लक्ष त्रेसष्ट हजार  
एक्यांशी रुपयांचा सरंजाम. शिवाय कुरणें व बाग व कमाविशींनें सोलापूर व सुवर्णदुर्ग  
व लोहगड, विसापूर, वगैरे महाल व किळे, व गड असें सरकारांतून देऊन खानदानी  
वाढविली. पटवर्धन व निपाणीकर व गोखले व अकलकोटकर व किन्नूरकर वगैरे सरदार  
फौजसुद्धां पेशवेसरकारांनीं तैनातीस चालविलें. तीर्थरूपांनीं पेशवेसरकारांचे दिवाणगि-  
रीचा कारभार करून कुंपणीसरकारची व पेशवेसरकारची दोस्ती राखून व नवाबसरका-  
राची दोस्ती ठेवून लौकिक मिळविला. नवाब सरकारांनीं आमचा राहता गांव कसबें ठेंभुर्णी  
नाम दिल्या. तीर्थरूपांचा काळ सन १२२७, भाद्रपद वद्य १३ या रोजीं जाहला.

त्यचिमाणें आह्मांकडे पेशवेसरकारांतून तीर्थरूपांकडे सरंजामास जहागीर सदरहू जातीची व चौघड्याकडील व फौजेची मिळोन दोन लक्ष त्रैसष्ट हजार एक्यांशी रुपयांची होती. त्याप्रमाणें पेशवेसरकारचे व कुंपणीसरकारचे लढाईअखेर चालली. पुढें कुंपणी-सरकारचा अंमल जाहल्यावर सदरहू सरंजामांपैकीं कुंपणीसरकारांतून आमचे जातीस सरंजाम एकतीस हजार दोनशें साडेपन्नास रुपयांचा मुकरर करून, त्याचे पुरे मोबदल्यास कर्यांत बारामती हा महाल अठावीस हजार सातशें सवाऱ्याहान्तर रुपये पाऊण आणा बेरजेचा लावून दिल्या. तो व कुरणें व बाग याप्रमाणें आह्मांकडे चालत आहेत. पेशवेसरकारांतून आह्मांकडील जहागिरीचे वहिवाटींत कांहीं दखलगिरी नव्हती. आमचे आह्मीं मुखत्यारीनें वहिवाट करित होतो. मातवरी सरकारांतून पहिली व हल्लीं चालत आहे यांत कंपेश व तफावत काय आहे, हें सदरहू मजकुरावरून सरकारचें ध्यानांत येईल. तारीख छ १७ माहे सफर.

### ३० सरदेशमुख मंत्री.

अजहत सरदेशमुख यांची वंशावळ व कैफियत:— मूळ पुरुष भास्कर राम जात रोणवी, हे मौजें कोचरें प्रांत वाडी येथें राहणार.



भास्कर राम यांचे वडील बंधू नारो राम हे मौजें कोचरें येथून सातान्यास येऊन शाहूमहाराज यांची सेवा चांगली केली. तेव्हां मेहरबान होऊन मंत्री पद दिलें. त्यांचे धाकटे बंधू भास्कर राम यांस पाण्याचें भय फार होतें. तेव्हां सातारेकर महाराज यांनीं शिमग्याचे खेळांत रंगाचा हौद केला होता, त्यांत टाकिलें. तेव्हां मृत्यु पावले. नारो राम यांस दुःख फार जाहलें. त्यांचे समजुतीबद्दल अजहत सरदेशमुख ह्मणोन किताब देऊन सरदेशमुखीची मामलत सांगितली. सन ११२७ फसलींत मामल्यासंबंधानें वेतन सालीना ३०००० रुपये करून दिलें. त्याप्रमाणें त्यांनीं वहिवाट चौवीस वर्षे केली. नंतर वारले. त्यांचे दत्तपुत्र घन:शामराव होते. त्यांस दहनाचा अग्नी घेऊन चलावें ह्मणोन महाराज यांनीं सांगितलें. त्यांनीं ऐकिलें नाहीं. तेव्हां भास्कर राम यांचे पुत्र त्रिबकराव भास्कर

यांस अग्नी घेऊन चलावें ह्मणोन आज्ञा केली. त्यांनीं अग्नी नेऊन दहन करून क्रियावि कर्म त्रिंबकराव यांनींच केलीं. सबब महाराज यांनीं मेहरबानगी करून हेही नारो राम यांचे पुत्र असें ह्मणोन त्रिंबकराव नारायण अजहत सरदेशमुख असें सनदेत नांव लावून सरदेशमुखीचा मामला सांगितला. त्यांनीं मामल्याची वहिवाट तीस वर्षे केली. नंतर मृत्यु पावले. याप्रमाणें माहितगार यांचे सांगण्यांत आहे. दफतरांत दाखला पाहतां, अब्बल-पासून सरदेशमुखीच्या मामल्यास नांव त्रिंबकराव नारायण अजहत सरदेशमुख म्हणोन लागत आहे. या मामलतींत सुभे बेदर व सुभे विजापूर दोन सुभ्यांपैकीं महाल एकशें चोवीस होते. त्यांची बेरीज २०२०००. यापैकीं मशारानिल्ले यांस वेतन ३०००० सालींना चालत होती. याप्रमाणें मामलतीची वहिवाट मशारानिल्ले यांजकडे सन ११८० इहिदे सवैनपर्यंत चालली. पुढें मशारानिल्ले यांचे पुत्र भास्करराव त्रिंबक अजहत सरदेशमुख यांजकडे सांगितली. ती खमस मयातैन सन १२१४ फसलीपर्यंत चालत होती. वर्षे ३३. पुढें सरकारांतून जमी करून दुसऱ्याकडे मामलत सांगत गेले. नेमणुकीबद्दल तीस हजार रुपयेही मामलेदार यांनीं दिल्ले नाहींत. भास्करराव त्रिंबक यांजकडे लढाईअखेर चालत होते ते:—

२५०० मौजें बागणी हा गांव मंत्री यांचे इनामपैकीं.

१४०० कर्नात कासेगांव येथील सरदेशमुखी श्री विठोबा क्षेत्र पंढरपूर यांचे खर्चाबद्दल.

४९००

२००० कुंपणीसरकारचा अंमल जाहल्यावर पेनशन सालींना रुपये मुकरर करून चालत आहे.

६९००

### ३१ हिंगणे.

यादी अमृतराव पुरुषोत्तम हिंगणे, इनामी जहागिरदार मौजें चांदोरी परगणे नाशिक बाँरे सुभे अहमदनगर, सुरुसन सलास सलासीन मयातैन व अलक. मेहेरबान ज्यान वार्डीनसा-हेब बहादूर डेपुटी एजंट जिल्हा दक्षण यांचें पत्र तारीख ८ माहे सपटेंबर सन १८३२ इसवीचें आलें कीं, हजरत बंदगान अल्ली रैट हनराबल गौरनर कौंसल चाहत आहेत कीं, दक्षिणेंतील जहागिरदार लोकांची कैफियत कशी आहे, त्याची वाकफगासि व्हावी ह्मणोन कलमीं केलें जातें जें:—आपण मेहेरबानी करून सरकारांत-रवाना करण्याकरितां थोडके मजकुरांत कैफियत लिहून पाठवावी. त्यांतील तपशील:—आपली खानदानीची बडती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर जाहला तें व फौज व जातसरंजाम आपले वडिलांकडे काय चालत होता व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस लिहला, ती तारीख

व आपले जहागिरीचे वहिवाटीत पेशवेसरकारांतून कोणते तऱ्हेनें दखलागिरी केली तें आपलेकडे सरंजाम हल्लीं काय चालत आहे, व पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कुंपणीसरकारांतून चालत आहे, त्यांत कंपेश तफावत काय आहे तें, वगैरे यादींत दाखल करून रवाना केलें पाहिजे ह्मणोन. त्यास आमचे पणजे महादेव भट हिंमणे. वास्तव्य श्रीजनस्थान क्षेत्रांतील ब्रह्मे व पेशवे यांचे तीर्थांचे उपाध्ये वेदशास्त्र-निपुण आणि पिशाच्च लिपी व फारशी जाणत होते. त्यांचें वक्तृत्व बहुत मधुर, पोस्त, मोठे लोकांची मर्जी संपादन करण्यायोग्य होतें, ह्मणोन ते श्रीमंत कैलासवासी बाळाजी बाजीराव पेशवे यांचे स्वारीसमागमें राहून त्यांचे मर्जीनरूप कामेंकाजें करीत गेले. त्यावरून श्रीमंतांची मर्जी प्रसन्न होऊन मोठें काम करावया योग्य जाणोन, हिंदुपद पातशाहा तख्त दिल्ली येथील वकिलातीचें काम सांगितलें. त्याचा दाखला सन ११५० फसलीचे साला-पुढें लागत आहे. त्यास पुत्र चार:-वडील बापूजी महादेव, दुसरे दामोदर महादेव, तिसरे पुरुषोत्तम महादेव, चवथे देवराव महादेव. पैकीं देवरावतात्या यांस पुणें मुक्कामी श्रीमंतांचे हुजूर ठेऊन, त्रिवर्ग चिरंजीवास बरोबर घेऊन दिल्लीस जाऊन वकिलातीचें काम करून श्रीमंतांचे मातबरीचा मरातब राखून पातशाहाचे मर्जीनरूप कामेंकाजें करीत गेले; आणि पातशाहाची मर्जी बहुत प्रसन्न करून घेतली. न्याजवरून पातशाहांनीं मेहेरबानगी करून दिल्लीनजीक साहानकी गांव मौजें त्रिजोली वगैरे परगणे सरावा प्रांत अंतरवेद येथें सात हजाराने, पुत्रपौत्रादि वंशपरंपरा करून दिले. त्याची वहिवाट आजपावेतो चालत आहे. दुसरे दक्षिण स्वदेशांत स्वास्थ्य असवें ह्मणोन अर्ज केल्यावरून, श्रीगंगातीरीं मौजें चांदोरी परगणे नाशिक, हा गांव साहानकी इनाम पुस्तदरपुस्त वंशपरंपरा चालविण्याविषयीं फरमान तारीख २१ जमादिलावल सन २५ पंचवीस महमदशाई, हिजरी सन ११५५ चें सालीं करून दिल्या. त्याप्रमाणें मोंगलाईकडून मौजें चांदोरीची दखलागिरी सुरुसन सलास खमसैन मया व अलफ माहे रबिलाखर छ २२ सन ११६२ फसलीचें सालीं जाहली. उपरांत सरकार श्रीमंत कैलासवासी बाळाजी बाजीराव पेशवे यांनीं छ २७ जिल्हेज सन सलास खमसैनचे सालीं इनामपत्रें करून दिलीं. नंतर महादेवभटजी यांचा काळ दिल्लीसच जाहला. त्यांचे निधे पुत्र समागमें होते. त्यांनीं वकिलातीचें काम पूर्ववत्प्रमाणें करूं लागले. तेव्हां पातशाहा यांनीं त्रिवर्गाची अकलहुशारी पाहून दौलतींत काम करण्यायोग्य दिलांत आणून त्रिवर्गास किताबी बापूजी महादेव यांस राजे, दामोदर महादेव यांस राव व पुरुषोत्तम महादेव यांस महाराव, याप्रमाणें इनायत करून, वकिलातीचें काम राजे बापूजी महादेव शुजयतदौले वजीर लखनौ व राजे जैनगर व होळकर, शिंदे वगैरेसुद्धां करूं लागले; व राव दामोदर महादेव दौलतींत कारभार करूं लागले, व महाराव पुरुषोत्तम महादेव यांजकडे मेरठ सुभा वगैरे महाल मुलकी; याप्रमाणें त्रिवर्गही करीत होते. याजमुळें खानदानीची बढती व खान-

दानीचा लौकिक महशूर जाहला. त्यावर श्रीमंत कैलासवासी रघुनाथ बाजीराव पेशवे यांची स्वारी लाहोर प्रांतीं सन सव्वा खमसेनांत गेली. ते वस्तीं दिल्ली मुक्कामीं त्रिवर्ग बंधूनीं मोठ्या समारंभानें श्रीमंत दादासाहेब यांस मेजवानी केली. तें समयीं राजे बापूजी महादेव यांचे दौलतीचा व कारभाराचा उत्कर्ष पाहून, पहिली नजर राहिली नाही. हें श्रीमंत दादासाहेब यांचे दिलांत येऊन इतराजी केली कीं, बापूजी महादेव यांनीं आमचे राज्यांत राहून नये असें जाहलें. तेव्हां पुरुषोत्तम महादेव यांनीं दिल्लीहून देवराव महादेव पुणें मुक्कामीं हुजूर होते, त्यांस इतराजीचा मजकूर लिहिला. त्यावरून देवराव महादेव यांनीं श्रीमंतांची मर्जी प्रसन्न करून विनंती केली कीं, वकिलातीचें काम आमचें आह्मांकडे सरकारांनीं मेहेरबानी करून सांगितलें पाहिजे. तदनंतर श्रीमंतांनीं विचारिलें कीं, बापूजी महादेव व तुम्हीं एकत्र किंवा विभक्त ह्मणोन आज्ञा जाहली. त्यावरून बापूजी महादेव व आह्मीं विभक्त, याप्रमाणें भाऊपणांत वांटण्या जाहल्या. त्याचे दस्तऐवजानशीं श्रीमंतांस समजाविलें. तेव्हां दस्तऐवज पाहून विभक्तपणाची खातरी श्रीमंतांची होऊन, पुरुषोत्तम महादेव व देवराव महादेव यांचें लक्ष सरकार पायांपाशीं जाणोन, वकिलातीचें काम वगैरे कामाची सोपणूक छ १६ जमादिलावल सन सवैनांत करून, उभयतांचे नांवें सनदा श्रीमंत कैलासवासी माधवराव बल्लाळ यांनीं करून दिल्या. त्याप्रमाणें वकिलातीचें काम होळकर, शिंदे, लखनौ, आदिकरून उभयतां मिळोन करूं लागले. बापूजी महादेव यांस राज्यांत राहून नये ह्मणोन श्रीमंत दादासाहेब ऊर्फ रघुनाथ बाजीराव पेशवे यांची आज्ञा जाहली होती. त्याजवरून बापूजी महादेव, हिंदुस्थान प्रांतीं बुंदीवाले राजे यांनीं आह्मांस श्रीगंगातिरीं नाशिक क्षेत्रांतील उपाध्ये ह्मणोन ताम्रपत्रीं इनामीगांव वंशपरंपरा करून दिले होते ते त्यांचे वांटणींत लागले, सबब त्या गांवीं कुटुंबासुद्धां राहून गांवचा उपभोग घेत गेले. पुढें देवराव महादेव यांनीं श्रीमंतांस अर्ज केला कीं, पेशजी चांदोरी साहानक करून दिली. त्याजवर आमचे मातबरीप्रमाणें प्रपंचाचा निर्वाह होत नाही. याजकरितां स्वामींनीं सरकारांतून स्वास्थ्य आणखी करून दिलें पाहिजे. ते समयीं श्रीमंत कृपाळू होऊन कसबें नाशिक येथें नाशरडीचें पाटस्थळांत गज ईलाई विघे २५ व गंगाबाग विघे ५ इनाम कैलासवासी श्रीमंत माधवराव बल्लाळ यांनीं छ १ सवाल सुरुसन सलास सितैन मया व अलफचें सालीं सनद करून दिली. त्याप्रमाणें वहिवाट चालत आहे. त्यावर हिंदुस्थान प्रांतीं बुंदेलखंडांत तालुके माखेरी परगणे उरई व मौजें उलदन प्रांत झांशी सुरुसन समान सवैन व स्वदेशांत मौजें चांदोरी परगणे नाशिक येथील मोकाशाची सनद छ २१ सावान सुरुसन समान सनानीन व मौजें धागुर परगणे दिंडोरी हा गांव खेरीज मोकासा करून दरोबस्त व सुभा गंगथडी परगणे पाटोर्दे येथें वार्षिक रुपये १०० शंभर; येणेंप्रमाणें इनामी वंशपरंपरा करून दिले. त्यांचे कागदपत्र सनदा वगैरे येथें होत्या, त्यांजवरून दाखले सदरीं लिहिले आहेत. व कांहीं कागदपत्र हिंदुस्थान प्रांतीं आहेत व कांहीं बंडांत अफरातफर जाहले. याजमुळे

तारखा व साल लागले नाही. परंतु ज्या दिवसापासून सरकारांतून जहागीर, इनाम, वर्षासन वगैरे करून दिली आहे, त्याप्रमाणे वहिवाट करून भाऊपणांत उपभोग घेत आहो. पेशवे-सरकारच्या वेळेस व हल्लीं कुंपणीसरकारच्या आमलांत कंपेश तफावत लिहावयाजोगा नाही. पेशवेसरकार चाहत होते, तसें कुंपणीसरकारही चाहत आहेत. रवाना छ ९ माहे रमजान सन १२४२ फसली.

### ३२ होळकर दिवाण.

साहेब मुषफक मेहेरबान करम फरमाय दोस्तां वार्डिनसाहेब बहादूर दामाहेबत हूं.

छ अजदिल येकलास गणपतराव नारायण दिवाणजी निसबत होळकर बहादूर, सलाम बाजद सलाम. अंकीं येथील खैरखुषी जाणोन आपली शादमानी हमेशा कलमीं करून दिल ताजा करीत असले पाहिजे. दिगर आपले पत्र तारीख ८ सप्टेंबर १८३२ इसवीचे पाठविलें तें माहे मजकूर २२ तारीखेस पावले. मतलब कीं, आपली खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर जाहला ते व फौज व जातसरंजाम आपले वडिलांकडे चालत होता, व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस दिल्या ती तारीख, व आपले जहागिरीचे वहिवाटींत पेशवेसरकारांतून कोणते तऱ्हेनें दखलगिरी केली तें व आपलेकडे सरंजाम हल्लीं काय चालत आहे तें, व पेशवेसरकारांतून मातबरी चालत होती, व हल्लीं कंपनीसरकारांतून चालत आहे त्यांत कमपेश तफावत काय आहे तें, वगैरे यादींत दाखल करून रवाना केलें पाहिजे हणोन, त्यावरून आमचे तीर्थरूप कैलासवासी नारो गणेश मौजे रांझें, तर्फे खेडबारे येथून पंचवीस वर्षांचे उमरींत निघोन हिंदुस्थानांत होळकरांचे लष्करांत गेले. तेथें श्रीमंत थोरले महारजी होळकर सुभेदार व त्यांची स्त्री श्रीमंत सौभाग्यवती गौतमाबाईसाहेब यांचा लोभ संपादून पोतनिशीचे काम वहिवाटीत होते. त्यावर कांहीं एक दिवसांनीं थोरले सुभेदार व बाईसाहेब यांचा काळ जाहला. मागे त्यांचे पुत्र मालजी होळकर दहा महिने दौलतीवर होते. कारभारी गंगाधर यशवंत. पुढें मालजी होळकरही समाप्त जाहले. मागे श्रीमंत मातुश्री अहिल्याबाईसाहेबांनीं गंगाधर यशवंत यांचा डोळा दौलतीविषयीं मध्यम पाहिल्यामुळे, नारो गणेश यांस हाताखालीं घेऊन, तुकोजी होळकर यांस स्थापिल्यानंतर, पुण्यास थोरले माधवरावसाहेब पेशवे यांनीं तुकोजी होळकर यांस सरदारीचीं वस्त्रे व नारो गणेश यांस दिवाणगिरीचीं वस्त्रे दिल्यावर पेशवेसरकारांतून जातीचे सरंजामास जहागीरही दिली. होळकरसरकारांतून स्वदेशांत दोन गांव इनामी व माळवेमांतीं परगणे पंच्याहाड, कोटेकर संस्थानीं यांनीं एक गांव जातीकडे सरंजामास खर्चाचे बेगमीस लावून दिल्या. तीर्थरूप कैलासवासी जाहलीया मागे होळकरसरकारचे दिवाणगिरी जाहागिरिसुद्धां अनुभव ~~आपली~~ कुंपणीसरकार इंग्रजबहादूर याचे अंमलपर्यंत आम्हीच घेत आलों. वडिलांची कारकिर्द बढतीची व जहागिरी

संपादल्याची व दखलगिरी कोणते तऱ्हेने जाहल्याचा बयाज तारीखवार पत्रांत बमोजीब जाब द्यावा, तर पूर्वी तीर्थरूपांवर पुरंदर मुक्कामी श्रीमंत सवाई माधवरावसाहेब असतां, श्रीमंत महादजी शिंदे पाटीलबावा यांनीं पेशवेसरकारांत गैरवांका समजावून, घर, वाडे जप्त करून, लाखों रुपयांस नागविलें. त्यास सन सितांत श्रीमंत बाजीरावसाहेब वसईचे स्वारीहून आलीयावर आह्मी श्रीमंत यशवंतराव होळकर यांचे स्वारीसमागमें होतो, सबब आमच्या घराच्या जप्त्या करून लाखों रुपयांची नुकसानी केली. यामुळें कागदपत्र बिलकूल राहूं शकले नाहींत. तेव्हां इस्तकबिल तागायत तारखेचे वगैरे जाब देण्यास आधार कोणता ? मातबरीचा व जहागीर देण्याचा वगैरे दाखला सरकारदमरीं आहे. पेशवेसरकारांतून पेशजी जायदादीस सरंजाम दिल्याप्रमाणें व होळकरसरकारपैकीं स्वदेशांतील दोन गांव इनामी चालत आल्याअन्वये हल्लीं सरकार मेहेरबानगीं करून चालवीतच आहां. रवाना छ १० साबान. ज्यादा काय लिहिणें ? प्यार मोहोबत असो दिजे. हे किताबत.

### ३३ सचीव.

अ.

साहेब मुंषफक मेहेरबान दोस्तां हेनरी ब्रौनसाहेब बहादूर एजंट, जिल्हा दक्षण बफियत बाषद.

छु अजिज्यानिब चिमणाजी रघुनाथ सचीव, बाजद सलाम शौकत येथील खैरयत जाणून आपली शादमानी हमेशा कलमीं करीत असलें पाहिजे. दरीविला आसाहेबांकडून पत्र नंबर १०४७ तारीख २६ आगष्ट सन १८५१ इसवीचें आलें, त्यांत आसाहेबास किताब सचीव पंत पद आहे, हें कधीं, कोणते सबबेनें, कोणाकडून प्राप्त जाहलें, याचा व एकंदर खानदानीचा व पदवीथोरपणाचा इतिहास, दाखलेनिशीं लिहून यावा व त्याजबरोबर दाखला असेल, तोही पाठवावा म्हणून हाशील मजकूर आहे. त्याचा जाब न गेल्यामुळें दुसरें पत्र नंबर १३३२ चें आलें, त्यास सदरहूची माहिती येणेंप्रमाणें:— कलमें.

१ सचीव पंत हें पद कैलासवासी राजाराम महाराज छत्रपती सरकारांतून आमचे पूर्वज शंकराजी नारायण सचीव यांस अष्टप्रधानातील सचीव पद दिलें. त्यापासून खानदानीचा तपशील:—

१ शंकराजी नारायण (मूळपुरुष)

२ नारो शंकर.

३ चिमणाजी नारायण.

४ रघुनाथराव चिमणाजी.

५ शंकरराव रघुनाथ.

६ चिमणाजी शंकर.

७ रघुनाथराव चिमणाजी.

८ चिमणाजी रघुनाथ.

याअन्वये आजही खानदानीचा तपशील आहे.

१ हें पद मिळाल्यास अजमासें एकशें साठ पासष्ट वर्षे जाहलीं.

१ महाराज छत्रपती यांजपाशीं शंकराजी नारायण यांनीं, प्रसंगीं सेनासंभार मिळवून यवनाक्रांत राज्य जाहलें होतें, तें मोठें मर्दुमीनं, देश, दुर्ग वगैरे घेऊन, राज्य-वृद्धी केली. याविषयीं छत्रपती यांच्या सनदा वतनी, इनामी, सर्व राज्यांत साहोत्रा व गांव दिले त्यांच्या, वगैरे करून दिल्या आहेत. त्यांपैकीं आसाहेबाचे दिलांत पूर्वींची हकीकत लिहिल्याअन्वये दाखलेसुद्धां ध्यानांत येण्याकरितां दोन सनदाः—

१ राज्याभिषेक शके २६ प्रमाथिनाम संवत्सरें या सालची.

१ राज्याभिषेक शके २७ विक्रमनाम संवत्सरें या सालची.

२

एकूण दोन अस्सल पाठविल्या आहेत. ह्या पाहून नकला ठेऊन अस्सल वकील यांजजवळ परत दिल्या पाहिजेत.

३

एकूण तीन कलमें मजकूर लिहिला आहे, त्याजवरून मालूम होईल. सुरुसन इसने खमसेन मयातैन व अलफ. रवाना छ '१ रबिलाखर ज्यादा काय लिहिणें, हें किताबत.

### सनद १.

शिक्षा.

“स्वस्ति श्री राज्याभिषेक शके २६ प्रमाथीनाम संवत्सरें, अश्विन बहुल दशमी, भानु-वासरे क्षत्रिय कुलावतंस श्री राजाराम छत्रपती यांणीं राजश्री शंकराजी नारायण सचीव, मदारुलमाहा यांसीं आज्ञा केली ऐसीजेः—तुह्मीं स्वामींच्या पायाशीं एक-शिक्षा. निष्ठता धरून, स्वामी कर्नाटक प्रांतीं गेले ते प्रसंगीं, तुह्मीं या प्रांते राहोन, संपूर्ण राज्य ताम्रांनें आक्रमिलें होतें, तें पुनरुक्त हस्तगत केलें. शत्रू पराभवार्ते पाविला व स्वामींसच जे प्रांतीं शत्रूनें संकट केलें, ते समयीं सैन्यसंभार पाठवून, स्वामींचें संकट निरसन केलें. स्वामींच्या राज्यानिमित्त श्रमसाहस अतिशयेसी करून, स्वामींस संतोषी केल्यानिमित्त, तुमचे वंशपरंपरेनं चालविणें स्वामींस बहुत अगत्य, याकरितां परगणे कऱ्हाड येथील देशमुखीचें वतन खासा स्वामींचें पुरातन होतें, तें चिरंजीव राजश्री राजा कर्ण यांसी दिल्लें होतें. तें दूर करून, हल्लीं तुह्मांवरी कृपाळू होऊन, तुह्मांस नूतन वतन वंशपरंपरेनें अजरामऱ्हामत करून दिल्लें असे. व या वतनास हक्क लाजिमा व इनामती व इसाफती व शिक्षा, नांगर, मानपान पूर्वीं चालल्याप्रमाणें तुह्मांस चालवण्याची आज्ञा केली असे. तरी तुह्मीं देशमुखीचें वतन आपले दुमाले करून घेऊन, हक्क लाजिमा व इनामती व इसाफती, पानमान, शिक्षा, नांगर अनुभवून वतनाची सेवा करून सुखरूप राहाणें. या वतन-संबंधें तुह्मांपासोन दिवाणांत शेरणी रुपये ६००० साहा हजार घेतले असेत. हें वतन तुह्मांस व तुमचे वंशपरंपरेस सुरक्षित चालेल. या वतनास हिंदु होऊन कोणी इस्कील करील त्यास बाराणशीमध्ये गोहत्या व ब्रह्महत्या केल्याचें पातक असें. व मुसलमान



होऊन इस्कील करील, त्यांस मकेमध्ये सुवर मारल्याचें पातक असें. ऐसीं पातकें जाणोन तुम्हांस वतन सुरक्षित चालवितील. जाणिजे. निर्दश समक्ष. मोर्तब असें ”

### सनद २.

#### शिक्षा

“स्वास्ति श्री राज्याभिषेक शके २७ विक्रमनाम संवत्सरें, अधिक अश्विन बहुल चतुर्दशी, इंदुवासरे क्षत्रिय कुलावतंस श्री राजा शिव छत्रपती यांणीं राजश्री शंकराजी नारायण यांसी वतनपत्र दिल्लें ऐसीजे:—तुम्हीं स्वामीचे एकनिष्ठ सेवक शिक्षा. कृतकर्म केलीं आहां. मागें तीर्थरूप राजश्री आबासाहेबांचे वेळेस ताम्राचें प्राबल्य जाहलें. रायगड आदीकरून सर्वही राज्य यवनाक्रांत जाहलें, या-  
करितां कैलासवासी स्वामी निधान कर्नाटक प्रांतास गेले. ते प्रसंगीं तुम्हीं श्रमसाहस करून सेनासंभार मिळवून संपूर्ण देशदुर्ग, ताम्रास हस्तगत जाहलीं होतीं, ते कवज केलीं. स्वामीचें राज्य वृद्धीस पावविलें. याकरितां कैलासवासी स्वामी तुम्हांवरी कृपाळू होऊन तुम्हांस वतन अजराम-हामत करून दिल्लें आहे. बितपशील:—

|                                    |                                           |
|------------------------------------|-------------------------------------------|
| राज देशमुखी दरसेद चौरोत्रा व सरदेश | राज देशमुखी दरसेद चौरोत्रा व सरदेश        |
| कुळकर्ण दरसेद दुवोत्रा, एकूण दिवाण | कुळकर्ण दरसेद दुवोत्रा व राजपट्टी दरसेद   |
| दस्ताचे बेरजेस, रयत निसबत दरसेद    | चौरोत्रा, एकूण दिवाण दस्ताचे बेरजेस, रयत  |
| सावोत्रा, यांस सुभे बितपशील.       | निसबत दाहोत्रा संपूर्ण राज्यांत कोकणपट्टी |
|                                    | खेरीज करून हक्क देवविला असे.              |

येणेंप्रमाणें देखील कमावीसबाब व खंडगन्हेगारी व जकात दिवाण दस्ताचे बेरजेस, सदरहूप्रमाणें हक्क करून दिल्ला आहे. तेणें प्रमाणें स्वामीनें करार करून, देशाधिकारी यांचे नांवें सनदा सादर केल्या आहेत. तरी तुम्हीं वतनाचे कमावीसीस आपले दिमतीचे कमाविसदार पाठवून, हक्काचा वसूल घेऊन, पुत्र पौत्रादिवंशपरंपरेनें अनुभवून, सुखी असणें. बहुत लिहिणें तरी सूझ असा. लेखनालंकार मोर्तब असें.”

#### ब.

यादी राजश्री पंत सचीव सुरुसन आर्बा सलासीन मयातैन व अलफ. कंपनीसरकारचें पत्र आलें तें छ २४ रबिलाखरीं दाखल जाहलें. त्याचें उत्तराचीं कलमें:—

१ खानदानीची बढती कोणते तारखेस व लौकिक महशूर जाहला याचें उत्तर:—  
आमचे वडील नारो मुकुंद, हे कैलासवासी शिवाजी महाराज यांचे कारकीर्दींत कामकाजांत होते. किल्ले, कोट वगैरे मुख्य घेतला, ते वेळेस किल्ले सुधागड येथील सबनिशी त्यांस दिल्ली. पुढें शंकराजी नारायण महाराजांजवळ होते. महाराज कैलासवासी जाहल्यावर संभाजी महाराज, राज्य करूं लागले. ते पात-

शाहाचे हस्तगत जाहल्यावर राजाराममहाराज चंदीचंदावरास गेले. मागे शंकराजी नारायण यांनी सेनासंभार जमा करून, राज्य सोडवून वृद्धिंगत पावविले. ऐसें जाणोन कैलासवासी राजाराम महाराज यांनी, सचीव पद व सुरनिशीचें पदाचीं वस्त्रें, शालिवाहन शके १६१६ सोळा सत्रा या सालांत दिल्ली. तेव्हां-पासून खानदानीची बढती व लौकिक महशूर जाहला. त्याजवर किल्ले, कोट व महाल व संपूर्ण राज्यांत सावोत्रीयाचें वतन व इनामगांव व इनामजमिनी करून दिल्या. कलम.

- २ फौज व जातसरंजाम आपले वडिलांकडे चालत होता व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस दिल्ली याचें उत्तरः—फौज शंकराजी नारायण यांजबरोबर राज्य काबीज करण्यास होती, त्यास खर्च सरकार खजिन्यांतून जाहला; व त्याजकडे किल्ले, कोट व महाल पदाचीं वस्त्रें जाहल्याचे तारखेपासून चालत होते, ते शाहू महाराज दिल्ली-हून येईतोंपर्यंत चालले. महाराज आले ते समर्थी शंकराजी नारायण समाप्त जाहले. त्यांचे पुत्र नारो शंकर यांस महाराजांनीं पदाचीं वस्त्रें देऊन वतन, इनाम, सावोत्रा, व किल्ले, कोट व महाल चालत आल्याप्रमाणें चालविले. कलम.
- ३ आपले जहागिरीचे वहिवाटींत पेशवेसरकारांतून कोणते तऱ्हेनें दखलगिरी केली याचें उत्तरः—शाहू महाराज राज्य करीत होते, ते वेळेस, किल्ले पुरंदर सरंजाम-सुद्धां पेशवे यांस आमचे वडिलांनीं दिल्ली. महाराज कैलासवासी जाहल्यावर, पेशवे यांनीं महाराजांनीं चालविल्याप्रमाणें इनाम व वतनी, सावोत्रा व किल्ले, कोट, महाल चालविले. पुढें चिमणाजी नारायण यांचे कारकीर्दींत पेशवे यांनीं किल्ले सिंहगड सरंजाम सुद्धां मागून घेऊन, मुलखाचा मोबदला पुरवून दिल्ली. नंतर महाराज सरकारांत पीलखान्याचे खर्चाबद्दल ऐवज थावा लागत होता, त्याजबाबद बाबर्ताचा वगैरे ऐवज पुरवून देऊन, दहा हजार रुपये रोख दरसाल सातारीयाचे डाकेचे खर्चास पावत गेले. कलम.
- ४ आपलेकडे हल्लीं सरंजाम काय चालत आहे, त्याचें उत्तरः—इकडे महाल व किल्ले, कोट व वतनी सावोत्रा महालानिहाय व इनामगांव वगैरे चालत आहे. त्याची दखलगिरी कंपनीसरकारांत आहेच. कंपनीसरकारचा अंमल जाहला ते समर्थी हजरत बंदगान अल्ली राइट हनराबल एल्फिस्तन साहेब गौरनर बहादूर यांची भेट आमचे तीर्थरूप चिमणाजी शंकर यांणीं सिंहगडाखालीं घेतली. ते समर्थी साहेब यांणीं सांगितले कीं, मोंगलाईतील तुमचा अंमल असेल तो खेरीज करून, लढाई अखेर महाल व किल्ले, कोट व वतन व सावोत्रा व इनामगांव व इनामजमिनी चालत आल्याप्रमाणें चालतील ऐसें वचन दिलें, त्या अन्वये मोंगलाईतील अंमल जाऊन बाकी चालत आहे. कलम.

५ पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कंपनीसरकारांतून चालत आहे, त्यांत कंपेश तफावत काय आहे, तें वगैरे लिहावे. याचें उत्तर:- पेशवेसरकारांत आमची मातबरी चालत होती, त्याप्रमाणें कंपनीसरकारांतून ही मातबरी चालवीत आहेत. कंपेश तफावत नाही. परंतु मातबरींत हल्लीं कमती यावयाचें कारण, पेशजी मोंगलाईतील इनामी सावोत्रीयाचा वगैरे अंमल, वसूली पन्नास हजारांचा गेला व अलीकडे सन तिस्रा आशरीनाषासून, महाराजसरकारांत नवीन दरसाल रुपये पंधरा हजार व्यावयाचा ठराव जाहला, ते व्यावे लागतात. व तीर्थस्वरूप मातुश्री राधाबाई यांस सत्रा हजार रुपये दरसाल व्यावे लागतात. व अलीकडे महालांत दरसाल आपची होती, याची दखलगिरी कंपनीसरकारचे महालावरून आहे जमा कमी आणि खर्च जाजती वाढल्यामुळे दौलतींत बोट होऊन मातबरींत कमती आहे, हें कंपनीसरकारचें लक्षांत आहे.

कलम.

एकूण पांच कलमें लिहिलीं आहेत, त्याजवरून दिलांत येईल. छ १९ रविलाबल मोर्तब.

क.

यादी सरकारी तपशील दाखल्यावरून सुरुसन समान अशरीन मयातैन व अलफ सचीव पदाचा पदाधिकार जाहला, त्या कारकीर्दीचा तपशील:-

२ शिवाजी महाराज कारकीर्द तागाईत संभाजी महाराज.

१ शंकराजी मल्हार.

२ आण्णाजी दत्तो.

१ राजाराम साहेब कारकीर्द शंकराजी नारायण, हल्लीं सचीव आहेत यांचे वडील.

२ शाहू महाराज कारकीर्द.

१ नारो शंकर.

२ चिमणाजी नारायण.

( हे दत्तक जाहले. )

२ रामराजे कारकीर्द.

१ सदाशिव चिमणाजी.

२ रघुनाथराव चिमणाजी.

२ धाकटे शाहू महाराज कारकीर्द.

१ शंकरराव रघुनाथ.

२ चिमणाजी शंकर.

( दत्तक ) हल्लीं पदाधिकारावर आहेत.

१ प्रतापसिंह महाराज कारकीर्दीत हल्लीं चिमणाजी शंकर सदरीं लिहिले ते.

ड.

यादी पंतसचीव यांचे मातुश्रीकडून यादी आली, ती सुरुसन समान आशरीन मयातैन व अलफ.

१ मूळ पुरुष कोनर विठ्ठल चंदावरास होते. त्यांस तेथील सुरनिशी प्राप्त जाहली. त्याजला पुत्र वडील मुकुंदपंत व धाकटे प्रल्हादपंत हे दोघे जाहले. मुकुंदपंत सुरनिशीची वहिवाट करीत होते. त्यांजला पुत्र नारोपंत जाहले. ते या प्रांतीं आले. पाठीमागे मुकुंदपंत यांचा काळ जाहल्यावर, प्रल्हादपंत व त्यांचे पुत्र तेथील सुरनिशी करूं लागले. नारोपंत यांनीं स्वामीजवळ सेवा चाकरी केली. त्यांजला सुधागड येथील सबनिशी दिल्ली, ती करीत होते. त्यास पुत्र शंकराजी नारायण जाहले. त्यांजला सचीवपणाचा पदाधिकार स्वामींनीं दिल्ला. त्यांस पुत्र नाहीं. सबब दत्तक परगोत्री महादाजी शंकर घेतले. नंतर औरस पुत्र नारो शंकर जाहले. त्याजवर शंकराजी नारायण समाधिस्थ जाहले. तेव्हां स्वामींनीं नारो शंकर यांस दौलतीचीं वस्त्रें देऊन, शंकराजी नारायण यांची शिक्षेकट्यार होती ती दिल्ली, आणि तोच शिक्षा चालविण्याविषयीं आज्ञा जाहली. त्याप्रमाणें नारो शंकर यांनीं दौलत चालविली. महादाजी शंकर दत्तक हे त्यांजवळच होते. पुढें नारो शंकर यांचा काळ जाहला. तेव्हां महादाजी शंकर यांचे पुत्राचें नांव चिटकोबा होतें, तो दत्तक घेऊन चिमणाजी नारायण म्हणोन पदाचीं वस्त्रें दिल्लीं. त्यांनीं दौलत चालविली. त्यांस पुत्र सदाशिवपंत व आनंदराव व रघुनाथराव हे त्रिवर्ग जाहले. चिमणाजी नारायण यांचा काळ जाहल्यावर, सदाशिवपंत यांस पदाधिकार जाहला. त्यांचा काळ जाहल्यावर रघुनाथराव यांस पदाचीं वस्त्रें जाहलीं. ते दौलत चालवीत होते. त्यांस पुत्र शंकरराव होते. रघुनाथराव यांचा काळ जाहल्यावर, शंकरराव यांस पदाचीं वस्त्रें होऊन, ते दौलत चालवीत होते. पुढें दत्तक घ्यावयाचा, त्यास आमचे दशांतील घर कोणी इकडे नाहीं. महादाजी शंकर यांचें घरांत पुत्र नाहीं. चंदावरकरांनीं दत्तक घेऊन चालविलें आहे. भोरपकर तीन दिवसांचे अधिकारी, त्यांचा मुल आणावयास प्रकृतीमुळें अवकाश पडला नाहीं. सबब काशी मोरेश्वर यांजला गांव देऊन त्याचा मुल आणोन दत्तविधान करून घेतलें. त्यांस पदाचीं वस्त्रें जाहलीं.

१ ज्या पुरुषास पदाधिकार जाहला, त्याजपासून कारकीर्द वळंगळी ( ओळीनें ) येणेंप्रमाणें:—

१ शंकराजी नारायण. यांस पुत्र १.

१ नारो शंकर. यांस पुत्र १.

१ चिमणाजी नारायण ( दत्तक ). यांस पुत्र ३.

१ सदाशिव चिमणाजी. यांस पुत्र नाहीं.

१ रघुनाथराव चिमणाजी. यांस पुत्र १.

१ शंकरराव रघुनाथ. यांस पुत्र १.

१ चिमणाजी शंकर ( दत्तक ).

७

१ मूळ पुरुषापासून पुरुष जाहले येणेंप्रमाणें:—

१ विठ्ठलपंत.

१ नारोशंकर

१ कोन्हेरपंत.

१ चिमणाजी नारायण.

१ मुकुंदपंत.

१ रघुनाथराव चिमणाजी.

१ नारोपंत.

१ शंकरराव रघुनाथ.

१ शंकराजी नारायण.

१ चिमणाजी शंकर.

५

५

= १०

एकूण दाहा पुरुष जाहले. यांत कान्हेरपंतास दोन पुत्र जाहले. पैकीं एक थंडी चंदावरास सुरनिशीवर राहिला. त्याचे घरांत भाऊपणा नाही. दत्तक घेऊन तेथील अधिकार चालविला आहे. बाकी एक एकच पुत्र होत गेला.

१ आमचे सोईरसुतकाचे तीन दिवसांचे अधिकारी यांचीं घरे इकडे आहेत.

१ किल्ले भोरप येथें बाजीराव रघुनाथ.

१ मौजें अळंदे येथें त्रिंबकपंत होते. त्यांचें नकल जाहलें.

२

इ.

यादी सन १८२९ इसवी सालीं श्रीमन्महाराज प्रतापसिंह राजे छत्रपती, इलाखा सातारा, यांचे सरहद्दींत व यांचे ताबेदारींत व यांचें मुलुखांत व यांचे सन्निध व यांचे चाकरींत व कामगारींत सरदार व अष्टप्रधान व मुत्सद्दी व मोठे मोठे कारकून आहेत व शिपाई मोठे-मोठे आहेत व दौलतदार आहेत व नामांकित आहेत; व यांची वंशावळ व त्यांस हल्लीं सालीना उत्पन्न काय होतें, पूर्वजांनीं पराक्रम कोठें कधीं, कोणाजवळ, कसा केला, आणि नांवास कसे चढलें, ती कैफियत व हल्लीं जे आहेत यांची नांवनिशी व सालीना उत्पन्नाचा अजमास आकार रुपये बितपशील:—

१२०००० रघुनाथराव चिमणाजी सचीव, हे अष्टप्रधानांत आहेत. वय वर्षें १६ ऋग्वेदी, देशस्थ ब्राह्मण. उपनाम गांडेकर. त्यांचें राहणें सातारीयाहून तीस मैल उत्तरेस, कसबें भोर, निरा नदीचे कांठीं आहे. त्यांजकडे:—

४०००० सरंजाम.

८०००० इनामीगांव सावोत्रा वर्गरे.

३०००० खानदेश व नगर व पुणे सुभ्यांत सावोत्रा.

५०००० भोरप्रांतीं गांव वगैरे.

८००००

१२००००

यांसी गांव अजमासैं सुमारी पांचशें. यांचा मुलूख वाईच्या डोंगरापासून सह्याद्रीचे घाटमाथ्यावरून, उत्तरेकडे तुंग तिकोना, आंबेगांवपर्यंत लागत गेला आहे. निरेचे उत्तरेस थोडा आहे, परंतु दक्षिणेस फार आहे; व कांही रोहे अष्टमीकडे कोकणांतही आहे. त्याचे वेहेसुमारी:—

|                |               |
|----------------|---------------|
| ४२ रोहीडखोरे.  | ५३ हीरडसमावळ. |
| ३२ वेलवंडखोरे. | ८१ गुंजणमावळ. |
| ४० शिरवळ.      | ३३ कानंदखोरे. |
| ७१ मुसंखोरे.   | १९ मुठेंखोरे. |
| ५२ पौनमावळ.    | ३९ खेडेंबार.  |

४६२

यांत कित्येक गांवपैकीं अंमल, लांकांस द्यावा लागतो व कितीक दुसरे याजकडे अजी खोतीही आहेत. याखेरीज कोकण प्रांतीं दुतर्फा अंमलाचे महाल आहेत.

- १ तर्फ नागोठणे.
- १ तर्फ अष्टमी.
- ३ तर्फ समिहाल.
- १ तर्फ हंवली.
- १ तर्फ आसरे आधारणे.
- १ तर्फ अंतोणे.

३

५ महाल.

याकरितां महाराज सरकारांत चाकरी कांहीं करावी लागत नाही. दसऱ्यास मात्र हुजूर यावे लागतें. परंतु नक्त रुपये द्यावे लागतात. येणेंप्रमाणें रुपये:—

५५०० पीलखान्याचें खर्चास पूर्वी द्यावें लागत होते, त्याप्रमाणें ग्राँटसाहेबांनीं ठराविले ते.

१५००० गुवस्ता रघुनाथ चिमणाजी यांसी दत्त(क) घेतल्यापासून, महाराज सरकारांनीं ते पीलखान्याचे खर्चाऐवजी घ्यावयाचें म्हणोन ठराविलें.

२०५००

याप्रमाणें महाराज सरकारांत द्यावे लागतात. याखेरीज, यांचे तीर्थरुपाची मातुश्री

राधाबाई यांस, ग्रॅटसाहेबांनीं यावर्जीव नेमणूक यावयाची ठराविली, ते १७००० रुपये यावे लागतात. बाईंनीं वाई, माहुलीस राहून कालक्षेप करावा. सदरहू प्रमाणें रुपये देऊन बाकी राहिल ते महालनजसूर व शिवंदी व किल्ले व भोजनखर्च व रामनवमीचा उत्सव व हत्ती, घोडे, उंट वगैरे याप्रमाणें खर्च होतो. सद्दीं मुख्य लिहिला याखेरीज, पंचवीस हजारांचे सावोत्रा वगैरे उत्पन्न, मोगलाईत कंपनी अंमल आल्यापासून गेलें. महाराज सरकारचीं इनामपत्रें व दुमालपत्रें व सनदा ऐतिल, त्याजवर रुज सुरनिवीस ल्याहांव व यांजकडील कारकुनांनीं सुरू सुट पार लक्षण ल्याहांव. सचीव, सुरनीस हा अर्थ एकच आहे. यांचे मुलखांतील सुमारी मनुष्य गणतीची बेरीज लागली नाही. यांचे मुलखांत किल्ले पहाडी सुमारे.

१ राजगड.

१ तिकोना उर्फ वितंडगड.

१ भोरप उर्फ सुधागड.

१ तोरणा उर्फ प्रचंडगड.

१ रोहीडा उर्फ विचित्रगड.

१ तंग उर्फ कठीणगड.

३

३

= ६

याप्रमाणे आहेत. यांचे मुलखांतील किल्ले कांही पाडिले नाहीत. यांचे मूळ पुरुष राहाणार मौजे गांगडरी, तर्फे भोर, पंगील कोनेर विठल हे चंदावरास राजाराम साहेबाबरोबर गेले, इस्वी सन १६८८ चें सालीं, तेव्हां चंदावर मुक्कामी, त्यांजला सुरनिशी सांगितली. त्यांजला पुत्र दोनः—

१ वडील मुकुंदपंत हे सुरनिशी करीत असता तिकंडेच वारले. त्यांचे पुत्र नारोपंत राजाराम साहेबांसमागमें. महाराष्ट्र देशीं पुन्हा आले. त्यांजला सुधागड येथील सवनिशी सांगितली.

१ धाकटे प्रल्हादपंत व त्यांचे पुत्र, चंदावरास सुरनिशी करीत हांते. त्यांचा वंश तिकंडे असले.

२

नारो मुकुंद यांस पुत्र शंकराजी नारायण जाहला. त्यांजला राजेसाहेबांनीं सचीव पद दिल्लें. कारण की यांनीं किल्ले. मुख्य धेतले व रक्कम रुपये दिल्लें. त्या शंकराजी नारायणास पुत्र ३ः—

१ जनार्दन शंकर, लहान असता वारले.

१ दत्तक पुत्र, महादार्जी शंकर, हे दूरचे स्वगात्रातील दत्तक धेतले. त्यांस ३ पुत्र जाहलेः—

१ चिटकोपंत, हे नारो शंकर यांस दत्तक दिल्ले.

१ आंबाजी महादेव नकल.

१ रामचंद्र महादेव नकल.

३

१ अवरस पुत्र नारो शंकर जाहले, यांजला शंकराजी नारायण वारलेवर, शाहू महाराजांनीं सचीव पद दिल्लें. पुढें नारो शंकर वारल्यावर, दत्तक पुत्र चिटको महादेव

दिल्लें. नांव चिमणाजी नारायण ठेविलें, आणि सचीव पद, शाहू महाराजांनीं दिल्लें. चिमणाजी नारायण यांस पुत्र ३:—

१ वडील पुत्र, सदाशिव चिमणाजी, यांस चिमणाजी नारायण वारल्यावर पद दिल्लें.

१ दुसरे, आनंदराव चिमणाजी, हे सदाशिव चिमणाजी असतां वारले.

१ तिसरे पुत्र, रघुनाथ चिमणाजी, यांस सदाशिव चिमणाजी वारल्यावर पद दिल्लें. इसवी सन १७८७ सालीं, धाकटे शाहू राजे यांणीं दिल्लें. पुढें रघुनाथ चिमणाजी वारल्यावर, त्यांचे पुत्र शंकराजी रघुनाथ यांस पद, धाकटे शाहू राजे यांणीं इसवी सन १७९१ सालीं दिल्लें.

३

पुढें शंकराजी रघुनाथ वारल्यावर, त्यांची स्त्री राधाबाई यांणीं काशी मोरेश्वर गांडेकर, राहणार मौजें मांगदरी, नजीक भोर, हे स्वगोत्रांतील त्यांचेच पुत्र दत्तक घेतले. नांव चिमणाजी शंकर ठेविलें. हे दवलत करीत होते. यांचे कारकीर्दीत बाजीराव पेशवे यांचें समयीं, सचीवांचे कारभार आप्पाजीराव निंबाळकर वाठारकर करीत होते. त्यांनीं राधाबाई मातोश्री यांचे विचारें, चिमणाजी शंकर यांस कैद दाखल ठेविलें. त्यांजला बाजीराव यांनीं सोडवून आणिलें आणि आप्पाजीराव निंबाळकर यांस कैद केलें होतें. पुढें मातोश्रीचें व चिरंजीवाचें वाकडें पडलें. इतक्यांत कंपनीसरकारचा अंमल जाहला. तेव्हां ग्रॉट साहेब यांनीं बार्स नेमणूक रुपये १७०००, दत्तक यांणीं द्यावें असें ठराविलें. तें चालत आहे. पुढें सन १८२७ इसवी सालीं, चिमणाजी शंकर मरते समयी, आपलें आदलें घरचे प्रत्यक्ष बंधु दत्तक घेतलें. नांव रघुनाथ चिमणाजी ठेविलें. नंतर चिमणाजी शंकर वारले. महाराजांनीं कृपा करून, रघुनाथ चिमणाजी यांजकडून नजर, दत्तकसंबंधीं, एक साला रुपये ४०००० चाळीस हजार घेतलें आणि सचीव पद दिल्लें. सालीना पंधरा हजार रुपये पीलखान्याचे खर्चास ह्मणोन दरसाल घ्यावयाचें ठराविलें. चिमणाजी शंकर यांच्या स्त्रिया दोघी, २ हल्लीं आहेत.

१ थोरली भवानीबाई, वय वर्षे ३० तीस, हल्लीं कारभार करीत आहे. ती वामनराव उपाध्ये यांची बहीण.

१ धाकटी, वय वर्षे १६.

२

### ३४ सुमंत.

साहेब मेहेरबान दोस्तां हेनरी ब्रौनसाहेब बहादूर एजंट जिल्हा दक्षण सलाम हू.

छ अजय्यानिब आनंदराव मल्हार सुमंत, हल्लीं मुक्काम कसबें नेवासें बुद्रुक, परगणे मजकूर सलाम अंकी येथील खैरयन जाणोन, आपली खैरखुशी हमेशा कलमी करीत असलें पाहिजे. दिगर मजमून सुमंत पद मरातब आहे. हें कधीं, कोणत्या सबबेनें, कोणाकडोन



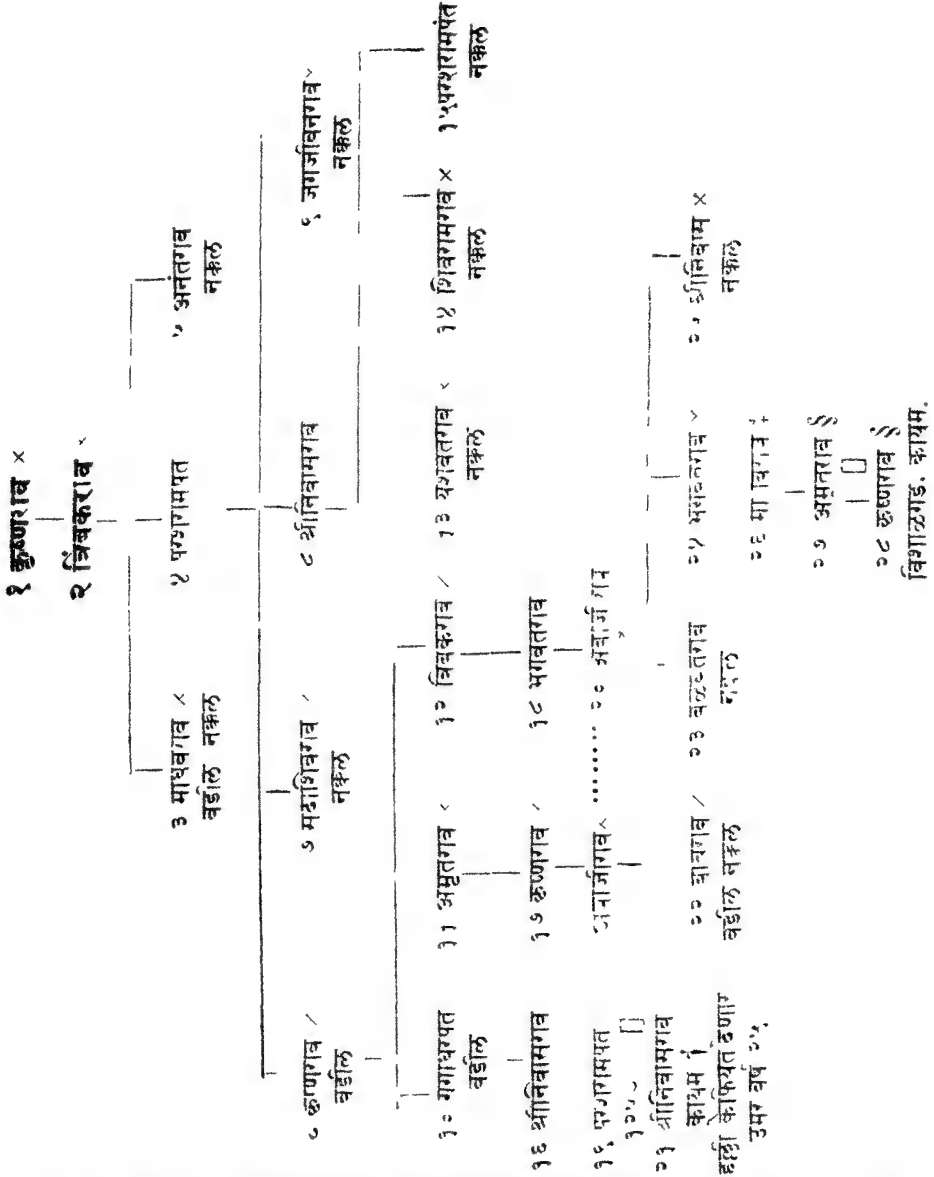
प्राप्त जाहलें, त्याचा व एकंदर खानदानीचा व पदवी थोरपणाचा इतिहास, दाखल्यानिशीं लिहून यावा व दाखलाही त्याजबरोबर पाठवावा. ऐकीव मजकूर हकीकत असेल, तर तसें लिहून यावें झणोन, वगैरे मजकुराचें पत्र तारीख २६ आगष्ट, नंबर १०५६ सन १८५१ इसवीचें, साहेबाकडेन आलें तें पावलें. ऐसीयासः—आमचे पणजे आनंदराव रघुनाथ हे प्रथम चंद्रसेन जाधवराव पातशाहाचे सरदार फौजबंद होते. त्यांजपाशीं हे अजमासं दाहा पंधरा वर्षे सरदारीस असोन, त्यांजबरोबर स्वाऱ्या, शिकाऱ्या करून, बहुत दिवस लढाया मारल्या. मोठे शूर होते. पुढें महाराज श्रीमंत राजा शाहू छत्रपती हे दिल्लीहून च्याहारम व सरदेशमुखीच्या सनदा घेऊन स्वदेशीं आले. ते वेळेस चंद्रसेन जाधवराव हा मोठा फौजबंद व बाळाजी विश्वनाथ वगैरे सर्व त्यांजपाशीं सरदार होते. यास्तव महाराज शाहू राजे यांजला मोठी मसलत पडली कीं, हा सरदार खाली होईल, तर आपण निर्वंध राज्य करूं. त्याजवरून बाळाजी विश्वनाथ पेशवे जाहले. ते व आमचे वडील आनंदराव रघुनाथ, नारो रामराव मंत्री जाहले, ते वगैरे सरदार यांस महाराजांनीं गुमरूपें पत्रें लिहिलीं कीं, तुहीं साह्य होऊन चंद्रसेन सरदार यांस खालीं केलें पाहिजे. त्याजवरून सर्व सरदार महाराज छत्रपती यांजकडे मिळोन, चंद्रसेन जाधवराव याचा मोड केला आणि निर्वंध राज्य शाहू छत्रपती करूं लागले. नंतर पूर्वीचे पेशवे, सुमंत वगैरे होते, ते दूर करून, बाळाजी विश्वनाथ पेशवे यांस पद देऊन वाढविलें. तेव्हां आमचे पणजे आनंदराव रघुनाथ यांस सुमंत पद देऊन व मोंगलाईतील वकिलीही दिल्ली आणि मरातबानें वाढविलें. त्या दिवसापासोन आमचे खानदानीची बढती जाहली. पुढें महाराज छत्रपती यांनीं वतनवृत्ती व सरंजाम व इनाम, आमचे मोठेपणाप्रमाणें बहुत मुबलक करून दिल्लें होतें. याप्रमाणें माहिती मिळती, ती लिहिली आहे. कागदोपत्रीं शक मिर्चीचे दाखले आहेत; परंतु आह्मांजवळ नाहीत. महाराज छत्रपती साहेब यांचे येथें सातान्यास आहेत व मूळचें एक पत्र आह्मांजवळ आढळत होतें. हल्लीं त्याचाही शोध करून नकल करून पाठविण्यांत येईल. वरकड ऐकीव ही खरे प्रकारची माहिती प्रसिद्ध आहे. ती सर्व सरकारास जाहीर होण्याकरितां लिहिण्यांत आली आहे. दाखला मिळण्याचाही यत्न करूं. परंतु राजधानींत गेल्याशीवाय, कागदपत्र वगैरे दाखला मिळण्यास हरकत आहे. या गोष्टीस वर्ष साहा महिने अवधी पाहिजे. यास्तव आपले हुकुमाप्रमाणें जी माहिती होती, ती खानदानीची कैफियत लिहून कळविली आहे. रवाना तारीख २७ माहे सप्टेंबर सन १८५१ इसवी. ज्यादा काय लिहिणें प्यार मोहोबत किजे, हें किताबत. आनंदराव मल्हार सुमंत.

( १४५ पानांतील कैफियतीची वंशावळ. )

### ३५ पंतप्रतिनिधी व.

#### वंशावळ.

कैफियतीचे चौदावे कलमांत लिहून दिल्याप्रमाणेंः—श्रीनिवासराव उर्फ रावसाहेब तीर्थ-रुपाचें नांव परशरामपंत रहाणार कसबें औंध, तालुके खानापूर, जिल्हा सातारा, यांणीं मौजें चंचळी व मौजें शेंदुरजणें, तालुके कोरेगांव, या गांवाबद्दल कैफियती देऊन, त्याजबरोबर ही वंशावळ, माहीत असलेले इसमापासून, नमुन्याप्रमाणें लिहून दिल्ली आहे. तारीख १२ माहे मार्च सन १८५८ इसवी.



\* इसम मजकूर, हे भगवतराव यांचे पुत्र असून, त्यांस कुळणाव अमृत यांनी दत्तक घेतले, परंतु कोणते सारी घेतले, याची माहिती नाही.

† इसम मजकूर हरीपंत हिवरकर यांचे मुठगे, शके १७६९ साली, परशुरामराजेन यांनी दत्तक घेतले. ते गोब्रज आहेत, परंतु या वंशावळीत यांचा वंश दाखल झालेला नाही.

‡ सरदरह इसम इंग्रजीत मेले किंवा पेशवाईत मेले, हे माहित नमल्या कारणाने, त्यांचे नांवाजवळ खुण केलेली नाही.

§ इसम मजकूर हे दत्तक गोब्रज आहेत, परंतु कोणाचे चराम्यातीत याची माहिती नाही व कधी घेतले ही माहिती नाही.

## प्रकरण ३ रे.

# स्वामी व सत्पुरुष.

### १ करवीरमठ स्वामी.

यादीदास्त श्रीस्वामी जगद्गुरु संस्थान मठ करवीर याच्या शिष्यपरंपरा वंशावळी-बदल माहिती. सुरुसन इहिदे खमसैन मयतिन व आलरु, सन १२६० फसली. ऐशीजे:—प्राचीन काळीं पृथ्वीवर बौद्ध्यादि नाना मते प्रबळ होऊन श्रुतीस्मृतिपुराणोक्त वैदिक मार्ग विच्छेद जाहला. तंनिमित्त ब्रह्मकर्मास उपाधी येऊन ईश्वरास करुणा आली व महासाधु नारदादि ऋषींच्या प्रार्थनेने वेदमार्ग संरक्षण होऊन, सकल जनांचे कल्याण व्हावे या कारणे श्रीशंकरांनी भूतळीं चिदंबर क्षेत्री. सर्वज्ञ नामा ब्राह्मण व त्यांची पत्नी कामाक्षीबाई या उभयतांनी आकाशलिंग श्रीचिदंबरेश्वर याची आराधना बहुत केली. तेव्हां श्रीचिदंबरेश्वर प्रसाद होऊन त्यास विशिष्टा नामक कन्या उत्पन्न जाहली, व विश्वजीत नामा ब्राह्मण द्रविड यांस विवाह करून दिल्या. तिचा पती वेदांत दृढान्याशी होऊन निष्प्रपंच, सातंग परित्याग करून तपश्चर्येप्रत जाता झाला. सदर्ी विशिष्टाबाई चिरकाल श्रीचिदंबरेश्वराची आराधना करित असतां, भाग्योदय काळ प्राप्त होऊन देवसंनिध रात्री ब्रह्मवृंद यांसमक्ष ईश्वरीतेज बाईचे वदनकमलीं प्रवेश करिते जाहले. नंतर तो प्रासादिक अवतार गर्भ पूर्णमास जाहल्यावर, श्रीचिदंबरेश्वर, श्रीशंकराचार्य नामें करून बाईचे उदरीं युविधिर शके २७२३ सर्वधारीनाम संवत्सरं अवतीर्ण जाहले. याप्रमाणें श्रीआचार्य स्वामींचा आवतार होऊन बौद्ध्यादि नाना मते निरासपूर्वक सरस्वतीसह मंडणमिश्रास यथाशास्त्र विवादे पराजीत करून, शृंगेरी क्षेत्री आगमन होऊन षण्मत स्थापना करित आले ते:—शिव=विष्णु=शक्ति=गणपती=सूर्य=भैरव=अशी आराधना स्थापिली. नंतर चार शिष्य—१ त्रोटकाचार्य, २ हस्तामलकाचार्य, ३ पादपद्माचार्य, ४ विश्वरूपाचार्य, असे चौघांसी चार मठ करून धर्मसंरक्षणार्थ चार शिष्य स्थापन करिते जाहले. नंतर शृंगेरी मठांत किंचित्काल वास्तव्य करून सरस्वती वचन सत्य करावे याकरितां, श्रीकरवीरक्षेत्र दक्षणकाशीस आगमन होऊन तेथें मठ असावा, आणि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र, इत्यादि हिंदु जातींतील धर्माधर्म आचार, व्यवहार, प्रायश्चित्तादिक करवून यथाशास्त्र ज्ञात-रिवाजाप्रमाणें सर्वांनीं भवस्थापीत शिष्य यांचे आज्ञेनें वर्तवें, अशी राजाधिकारी व ब्रह्म-वृंद इत्यादि सर्वत्रांस होऊन, विमळ, निर्मलक्षेत्रापती गमन करून, समाधिस्थ राहते जाहले. श्रीआचार्यस्थापित शिष्यांनीं मठी अधिकार करून महायज्ञेस जावे, असा मनोदय धरून सर्व प्रांतीं आचार, विचार, प्रायश्चित्तादि धर्माधर्मविचार आचारक्षेत्री आगमन

होऊन, कांहीं दिवस वास्तव्य करून, पुन्हा संस्थांनीं आगमन करिते जाहले. कारवीरक्षेत्रीं राजाधिकारी समस्त ब्रह्मवंद यांनीं सेवा करून, मठीं धर्मकृत्यें चालवावीं याजबद्दल स्वास्थ्य ग्राम व भुमी इत्यादि देऊन संस्थानाची मर्यादा संरक्षण करीत आले. संस्थांनीं शिष्यपरंपरा आचार, व्यवहार, प्रायश्चित्तादिक सर्व धर्माधर्म विचार ज्ञाती-रिवाजाप्रमाणें संस्थांनीं श्रीचे आज्ञेवरून होत आला. शिष्यपरंपरेची पिढी लागत नसून अलीकडील कांहीं श्रीदेवस्वामी शंकरभारती यांजपासून माहिती मिळती. शिष्यपरिणालिका खालीं लिहिली आहे. परंतु श्रीआचार्यस्वामीस आश्रम कधीं होऊन समाधिस्थ जाहल्याचे सन, शक लागून, कोणते स्वामींनीं किती वर्षे संस्थानचा अधिकार केला, याचा तपशील लिहावयाचा; परंतु याबद्दल करवीरचा मठ दग्ध जाहला; त्यांत कितेक दाखलेचें कागदपत्र जळालें. देव-स्वामीपासून दहावे स्वामी पुणेंकर नरसिंहभारती यांचे अलीकडे सन, शक, महिना व अधिकार किती वर्षे केला, याविषयींचा दाखला मिळाला, तो खालीं तपशील लिहिला आहे. त्याप्रमाणें:—

- १ देवस्वामी, श्रीविद्याशंकरभारती यांची पुण्यतिथि माघ शुद्ध ७.
- २ तैलंगस्वामी, श्रीविद्यानरसिंहभारती स्वामी यांची पुण्यतिथि पौष शुद्ध ९.
- ३ लाटकर स्वामी, श्रीविद्याशंकरभारती स्वामी यांची पुण्यतिथि चैत्र शुद्ध १.
- ४ काशीकर, श्रीविद्यानरसिंहभारती यांची पुण्यतिथि मार्गशीर्ष वद्य १२.
- ५ अष्टेंकर स्वामी, श्रीविद्याशंकरभारती यांची पुण्यतिथि अश्विन वद्य ४.
- ६ नूलकर स्वामी, श्रीविद्यानरसिंहभारती यांची पुण्यतिथि माघ वद्य ३०.
- ७ मुताळकर, श्रीविद्याशंकरभारती यांची पुण्यतिथि पौष वद्य १२.
- ८ नांदवडेंकर स्वामी, श्रीविद्यानरसिंहभारती यांची पुण्यतिथि वैशाख वद्य ९.
- ९ बाबदेव भट लाटकर स्वामी, श्रीविद्याशंकरभारती यांची पुण्यतिथि चैत्र वद्य ३.
- १० पुणेंकर स्वामी श्रीविद्यानरसिंहभारती यांची पुण्यतिथि यांसी सन समानीन शके १७०१ महिना लागत नाहीं. ते वेळीं गुरुशंकरभारती यांची प्रकृति बिघडून अति अवस्था जाहल्यामुळें, आश्रम झाल्यानंतर गुरुशंकरभारती हे पुन्हा बरे होऊन चवदा वर्षे अधिकार पाहिला. ते वेळीं नरसिंहभारती हे उत्तर देशीं संचार करून हतनुरास होते. नंतर सन आर्बा तिसैन शके १७१६ चैत्र वद्य ३ दिवशीं गुरुशंकरभारती हे समाधिस्थ जाहल्यापासून श्रीनरसिंहभारती स्वामी, हे सन समान मयातैन शके १७३० चैत्र शुद्ध १२ पर्यंत, चवदा वर्षे, ११ महिने, चौबीस दिवस संस्थानचा अधिकार करून समाधिस्थ जाहले. चैत्र शुद्ध १२.
- ११ सरस्वती भट लाटकर, श्रीविद्याशंकरभारती यांसी सन समान मयातैन शके १७३१ चैत्र शुद्ध १० स आश्रम जाहला. शुद्ध १३ पासून संस्थानचा अधि-कार सन इसचे अशर शके १७३३ भाद्रपद वद्य ३० पर्यंत, तीन वर्षे, चांच महिने, सतरा दिवस संस्थानचा अधिकार करून, शरीरीं समाधान नसल्यामुळें

सदर मिर्त्तीस बाडीकर रामशास्त्री श्रीविद्यानरसिंहभारती यांसी आश्रम दिल्यापासून ते संस्थानचा अधिकार पाहूं लागले. शंकरभारती स्वामी दुखणाईत असून त्याच सालीं माघ वद्य २ स समाधिस्थ झाले. पुण्यतिथि माघ वद्य १२.

१२ बाडीकर श्रीविद्यानरसिंहभारती स्वामी यांसी सन इसचे अशर शके १७३३ भाद्रपद वद्य ३० स आश्रम प्राप्त जाहला. त्यापासून सन सव्वा सलासीन चैत्र शुद्ध ९ शके १७५९ पंचवीस वर्षे, साहा महिने, आठ दिवस संस्थानचा अधिकार पाहून सदर मिर्त्तीस समाधिस्थ झाले. चैत्र शुद्ध ९.

१३ कऱ्हाडकर श्रीविद्याशंकरभारती गुरुस्वामी यांसी सन सव्वा सलासीन शके १७५९ चैत्र शुद्ध ८ स आश्रम जाहला. शुद्ध १० दशमीपासून शके १७६८ वैशाख वद्य १४ पर्यंत, नऊ वर्षे, एक महिना, एकोणीस रोज संस्थानचा अधिकार पाहून सदर मिर्त्तीस समाधिस्थ जाहले. पुण्यतिथि वैशाख वद्य १४.

१४ आह्लांस शके १७६८ सन सीत सलासीन वैशाख वद्य १४ रोजीं श्रीगुरुशंकरभारती स्वामी यांनीं उपदेश देऊन संस्थानअधिकारी केल्यापासून, संस्थानची मालकी अनुभवून हिंदुजातीरिवाजाप्रमाणें आचार, व्यवहार, प्रायश्चित्तादिक संस्थानचे पूर्वसंप्रदायाप्रमाणें चालवीत आहों.

येणेंप्रमाणें हकीगत आहे. तारीख छ २० माहे सपटंबर, मार्गशीर्ष वद्य ५ शके १७७२ साधारणनाम संवत्सरें. निशाण मोर्तब असें.

## २ चाफळकर रामदासी.

श्री रामदासस्वामी, तर्फ चाफळ.

पूर्वीं कसबें जांब परगणे आंबड इलाखा मोंगलाई, येथील कुळकर्णी सूर्याजी त्रिंबक आडनांव ठोसर हणून असून त्यांनीं श्रीसूर्यनारायणाची आराधना केली. त्याजरून त्यांजला श्रीसूर्यनारायण यांनीं प्रत्यक्ष दर्शन देऊन, मनुष्यदेहानें मी एक व दुसरे मारुती याप्रमाणें तुझें पोटीं जन्मास येऊं हणून वरप्रदान दिल्लें. पुढें सूर्यनारायणाचे अंशेंकरून गंगाधर उर्फ रामीरामदास एक, व दुसरे मारुतीचे अंशेंकरून नारायण उर्फ रामदासस्वामी हणून दोन पुत्र झाले. त्यांपैकीं वडील पुत्र गंगाधरबावा उर्फ रामीरामदास हे कसबें जांब येथील संस्थानीं तेथेंच राहिले, व दुसरे नारायणबावा उर्फ रामदासस्वामी हे महान् पराक्रमी सत्पुरुष होते. ते मारुती अंश सबब त्यांजला मारुतीप्रमाणें पुच्छ हणजे शेषूट होतें. ते लग्न न करितां ब्रह्मचारी आश्रमानें असोन, त्यांनीं नरदेह धारण केला. सबब तपश्चर्या केल्यावरून, त्यांस श्री रामचंद्रजी देव साक्षात् येऊन. मंत्रोपदेश देऊन, रामदासी सांप्रदाय दिल्ला; व आपले शिष्य असें त्यांजला समजून, रामदास हणून नांव ठेवून देव अदृश्य झाले. पुढें रामदासस्वामी हे संचार करीत करीत, कसबें चाफळ तालुके तारगांव

येथें येऊन, त्यांनीं कसबें चाफळ व किल्ले सज्जनगड येथें श्री रामचंद्रजी व मारुतीच्या मूर्ती स्थापन केल्यानंतर त्यांचे शिष्य शिवाजी महाराज यांनीं स्वपराक्रम करून, गुरुकृपेनें राज्य मिळविलें. तें राज्य श्री रामदासस्वामी आपलें गुरु ह्मणोन संपूर्ण राज्य स्वामींस अर्पण केलें. तेव्हां स्वामींनीं, आह्मांस विशेष उपावीचें कारण नाहीं ह्मणून, सदरहू राज्य पाळणार्थ राजास दिलें. तत्रागी तुमचें मनात श्रीरामचंद्र देवाची व मारुतीची सेवा घडावी अशी इच्छा असेल तर काही गांव व भूमी नेमावी, ह्मणोन आज्ञा दिल्यावरून, शिवाजीमहाराज यांनीं इनामगांव, व गांवगन्ना इनामजमिनी, व नक्तनेमणुका वगैरे उत्पन्न राज्याभिषेक शके ५ कालयुक्ताक्षीनाम संवत्सरे अश्विन शुद्ध १० ची सनद करून दिली. त्याप्रमाणें सदरहू कसबें चाफळ व सज्जनगड येथील देवाचें हरदो संस्थानास स्वर्च होत असून नंतर सदरहू रामदासस्वामी हे शके १६०३ दुर्मतीनाम संवत्सरांत किल्ले सज्जनगड उर्फ परळी येथें समाधिस्थ जाहले. पुढे सदरहू संस्थानची व्यवस्था स्वामींचे शिष्यांपैकीं अकाबाई वगैरे मंडळी यांनीं शके १६३१ पर्यंत करून, सदर अकाबाई यांचा वद्दापकाळ झाल्यामुळे अकाबाईंनीं, स्वामींची आज्ञा, आमचे बंधूच नातू गंगाधरबाबा यांजला आणून संस्थानचा बंदोबस्त ठेवावा, असा मजकूर शाहू महाराज याजला सांगितला. नंतर शाहू महाराज यांनीं शके १६३२ साली सदर गंगाधरबाबा हे गृहस्थाश्रमी असून मोगलांस कसबें जांब परगणे आंबड येथील संस्थानांतून आणवून चाफळ व सज्जनगड येथील संस्थानची व्यवस्था पहाण्यास स्थापना केल्यापासून आजपर्यंत गृहस्थाश्रमीच असून वंशविस्तार वहिवाद करीत आहां.

### सनद.

#### श्री

श्रीसद्गुरुवर्य, सकळतीर्थरूप, श्री कैवल्यधाम, श्रीमहाराज, श्री स्वामी

स्वामीचे सेवेसी.

चरणरज शिवाजी राजे यांनी चरणावर मस्तक ठेऊन विज्ञापना जें—मजवर कृपा करून सनाथ केले. आज्ञा केली कीं, तुमचा मुख्य धर्म, राज्य साधन करून, धर्मस्थापना, देव-ब्राह्मणांची सेवा, प्रजेची पीडा दूर करून, पाळण, रक्षण करावे. हें व्रत संपादून त्यांत परमार्थ करावा. तुम्हीं जें मनीं धराल तें श्री सिद्धीस पाववील. त्याजवरून जो जो उद्योग केला व दुष्ट तुरुख लोकांचा नाश करावा; विप्ल द्रव्यें करून, राज्य परंपरा अक्षय चालें ऐसीं स्थळीं दुर्धट करावीं, ऐसें जे जें मनीं धरिलें; तें तें स्वामींनीं आशिर्वादप्रतापें मनोरथ पूर्ण केलें. याउपरी राज्य सर्व संपादिलें, तें चरणीं आर्पण करून, सर्व काळ सेवा घडावी, ऐसा विचार मनीं आणिला. तेव्हां आज्ञा झाली कीं, तुम्हांस पूर्वी धर्म सांगितले, तेंच करावें, तीच सेवा होय. ऐसें आज्ञापिलें. यावरून निकट वास घडून, वारंवार दर्शन घडावें; श्रीची स्थापना कोठें तरी होऊन, सांप्रदाय, शिष्य व भक्ती दिगंत विस्तीर्ण

घडावी, ऐसी मार्यना केली. तेही आसमंतात गिरी गंधरीं वास करून, चाफळी भीची स्थापना करून, सांप्रदाय शिष्य दिगंत विस्तीर्णता घडली. त्यास, चाफळीं, भीची पूजा, महोत्सव, ब्राम्हणभोजन, अतीथि, इमारत सर्व यथासांग घडावें. जेथें जेथें श्रीच्या मूर्ती स्थापना जाहल्या तेथें उत्सव, पूजा घडावी. यास राज्य संपादिलें, त्यांतील ग्रामभूमी कोठें काय नेमावी ते आज्ञा व्हावी. तेव्हां आज्ञा झाली कीं, विशेष उपाधीचें कारण काय? तथापि तुमचे मनीं श्रीची सेवा घडावी, हा निश्चय जाहला. त्यास यथावकाशें जेथें जें नेमावेंसें वाटेल, तें नेमावें; व पुढें जसा सांप्रदायाचा व राज्याच्या वंशाचा विस्तार होईल, तसें करित जावें. या प्रकारें आज्ञा जाहली. यावरून देशांतरीं सांप्रदाय व श्रीच्या स्थापना जाहल्या, त्यास ग्राम भूमीचीं पत्रें करून पाठविलीं. श्रीसन्निध चाफळीं, एकशें एकवीस गांव, सर्वमान्य व एकरों एकवीस गांवीं, आकरा बिघेप्रमाणें भूमी व आकरा स्थळीं श्रीची स्थापना जाहली, तेथें नैवेद्य, पूजेस भूमी, आकरा बिघेप्रमाणें नेमिली आहे. ऐसा संकल्प केला आहे, तो सिद्धीस नेण्याविषयीं विनंती केली. तेव्हां संकल्प केला, तो परंपरें शेंवटास न्यावा, ऐसी आज्ञा झाली. त्यावरून सांप्रत गांव व भूमी नेमिलें. तपशील.

१ मौजे चाफळ, मौजे नाणेगांव, × × × वगैरे गांव ३३.

१ मौजे दहीफळ बुद्रुक, परगणे ढेवळी, श्रीश्रिष्टाचे समाधीकडे वेहे १.

१ गांवगन्ना जमीन बिघे चारशे एकोणीस.

धान्य, गळ्हा हरजिनशी, खंडी १२१ एकरें एकवीस.

एकूण दरोबस्त सर्वमान्य गांव तेहत्तीस व जमीन बिघे गांवगन्ना चारशें एकूणीस व कुरण एक, श्रीचे पूजा, उत्साहाबद्दल संकल्पांतील सांप्रत नेमिलें व उत्साहाचे दिवसास व इमारतीस नप्पी ऐवज व धान्य समयाचे समयास प्रविष्ट करीन. येणेंकरून अक्षय उत्साहादि चालविण्याविषयीं आज्ञा असावी. राज्याभिषेक शके ५ कालयुक्ताक्षीनाम संवत्सरें आश्विन शुद्ध दशमी, बहुत काय लिहिणें हे विज्ञापना.

मयदिय  
विराजते.

### ३ चिंचवडकर देव.

कैफियत संस्थान श्रीदेव चिंचवडकर, मूळ मोरया गोसावी. चिंचवड येथें अरण्या होतें. तेथें वडाचीं व चिंचेचीं झाडें होती. तेथें श्रीगणपतीची बंदगी करित होते, आणि चतुर्थी गणपतीचा दिवस, ते रोजीं, श्रीमोरगांवीं गणपती आहे, तेथें दर्शनास जाऊन पूजा करित असत. याप्रमाणें बहुत वर्षे करित असतां, एक रोज श्रीगणपती मोरगांवचा प्रसन्न होऊन एक गणपतीची मुहूर्त गोसावी यांस दिव्ही, आणि सांगितलें कीं, तुमपारीं मी आहे, आजपासून

वर महिन्याचें चतुर्थीस मोरगावीं येऊं नये. वर्षांत एक वेळ भाद्रपद शुद्ध चतुर्थीस येत जावें. झणून आज्ञा जाहली. त्याप्रमाणें आजपावेतों वहिवाट चालवीत आहेत. श्रीचिंचवडास वस्ती करून राहून श्रीची पूजा उत्साह करून नंतर जिवंत समाधि घेतली. नंतर त्यांचे पुत्र:-

मोरयागोसावी १

चिंतामणदेव २

नारायणदेव ३

चिंतामणदेव ४

धरणीधरदेव ५

नारायणदेव ६

चिंतामणदेव ७

धरणीधरदेव (हल्ली दत्तक आहेत) ८

यांपैकीं श्री मोरयादेव यांनीं गांव वगैरे कांहीं घेतलें नाहीं. त्यांचे पुत्र चिंतामणदेव यांनीं कांहीं गांव श्री शाहू महाराजांजवळून संपादिले, व नारायणदेव यांनींही कांहीं गांव संपादिले. पुढेंही पुत्रांनीं गांव वगैरे संपादिले. त्यास मूळ मोरया गोसावी यांस वर्षे अजमासें सुमारे १५० जाहली. झणोन माहितगार यांचे सांगण्यांत आहे.

#### ४ डोमगांवकर रामदासी.

( मौजें गोडरें तालुके करमाळें जिल्हा सोलापूर येथील अंमलाबद्दल हणमंतबोवो गुरु महारुद्रबोवा रामदासी डोमगांवकर यांनीं तारीख २० माहे जानेवारी सन १८५४ इसवी रोजीं असिस्टंट इनाम कमिशनर याच कचेरीत कैफियत लिहून दिल्ली आहे त्यांपैकीं खालील कलमं. )

४ सदरहू अंमल मुळी कोणी, कोणते सालीं, इनाम करून दिलें, तें साल व देणाराचें नांव माहित नाहीं. परंतु सदरहूबद्दल दुमाले पत्रें वगैरे आहेत, त्यांजवरून पाहतां १४० एकशें चाळीस वर्षांपलीकडे दिलें असें होत आहे; व आमचे गुरूंचे सांगण्यांत सदरहू अंमल शिवाजी राजे यांनीं दिले, असें माहित आहे. सदरहू अंमलाचा मूळ संपादक कल्याणस्वामी, गुरु रामदासस्वामी हे होते.

५ सदरहू अंमल मौजें डोमगांव परगणे हवेली परांडा इलाखा मोंगलाई. या गांवांत कल्याणस्वामीचा मठ आहे. त्या मठाचे स्वर्चाकरितां झणजे आल्या-गेल्या ब्राह्मणांस अन्नोदक देण्याकरितां व रामदासस्वामींची पुण्यतिथि माघ



वद्य ९ नवमी रोजीं होते, त्याचे खर्चाकरितां इनाम दिल्लें. त्याप्रमाणें सदर संपादन करणार हे हयात होते तोंपर्यंत कामें बगैरे चालून, ते शांत झाल्यामुळें त्यांचे शिष्य मुधोबा गोसावी यांचें नांवें दुमाले पत्रें झालीं. त्यांत सदरहु अंमल सदरहु गांवीं सदर कल्याणस्वामी यांची समाधि आहे, त्या समाधीचें पूजा, नैवेद्य व नंदादीप व सालांतून माघ वद्य ९ ची पुण्यतिथि व आषाढ वद्य १३ चे रोजीं कल्याणस्वामींची पुण्यतिथि, व आलेगळे ब्राह्मणांस अन्नोदक द्यावें याकरितां खर्चास ह्मणोन करार करून दिल्यावरून त्या दिवसापासून आजपर्यंत सदरहु कामें चालत आहेत. सदर कल्याणस्वामी हे कधीं शांत झाले याविषयीं सालाची माहिती आह्मांस नाही.

केफियतीचे तेरावे जबाबांत लिहून दिल्याप्रमाणें:—

हणमंतबाबा गुरु महारुद्रबाबा गोसावी रामदासी राहणार मौजें डोमगांव परगणे हवेली परांडा इलाखा मांगलाई. यांनी मौजे गोडरे तालुके करमाळे जिल्हा सोलापूर येथील चौथाई व सरदेशमुखी अंमलाबद्दल आलाहिदा केफियत लिहून त्याजबरोबर सदरहु अंमल संपादन करणारांचे आज  $\times \times \times$  गुरूंचे नांव माहित नाही, सबब संपादकाचे गुरूंपासून ही वंशावळ लिहून दिली असे. तारीख २१ मोहे जानेवारी सन १८५४ इसवी मुक्काम पुणें.

\* \* गोडरें येथील मोकासे अंमल ह्मणजे चौथाई व सरदेशमुखी अंमलाचा संपादक.

श्री रामदासस्वामी \*

कल्याणस्वामी \* \*

मधाजाबाबा \*

भिमजीबाबा \*

महारुद्रबाबा \*

हणमंतबाबा का० ( केफियत देणार ).

मुधोजीबाबा का०

## ५ धावडशीकर.

अ.

यादी विष्णू गोपाळ मागवन, संस्थान धावडशी इलाखा सातारा मुरसन खमसैन मयतैन व आलफ, सन १२५९ फसली. श्रीमत्परमहंस श्री भार्गवरामबाबा यांनीं पूर्वी श्री वाराणशीची यात्रा करून, बद्रीनारायणास जाऊन, तिरस्थळीं उत्तरमानस यात्रा करून, श्रीरामेश्वरास जाऊन, दक्षिणमानस यात्रा होऊन, कृष्णातीरास येऊन, कोंकणप्रांतीं मौजें पेठें तर्फे

चिपळूण येथें श्रीदेव परशराम देवाची जागा पाहून, अरण्यांत निवांत स्थळ पाहून बारा वर्षे गुप्तरूपें तपश्चर्या केली. नंतर हें वर्तमान, कसबें चिपळूण येथें हपशी यांजकडून आवजी बळाळ यांस सुभा होता, व बाळाजी विश्वनाथ यांस बंदरचें काम होतें, त्यांस कळल्यावर दर्शनास येऊन विनंती केली कीं, आमचा हेत स्वामीचें चरण आमचे आश्रमास लागावे. पुढील कर्तव्यार्थ चित्तांत आणून, प्रगट रूपें मशारनिल्ले यांचे घरास गेले. तेव्हां श्रीचा सत्कार करून विनंती केली कीं, पर्जन्य काळ आहे, आठ चार दिवस येथेंच वास्तव्य व्हावें. त्यांची निष्ठा मनांत आणून राहिले. परंतु श्री भार्गवरामाचें दर्शन घ्यावयाचा नित्य नेम. मध्यखाडींत पाणी फार, पाय उतार नाही. चिपळूणाहून रात्रौ सर्वांनीं निद्रा केल्यावर केळीचें पानावर आसन घालून खाडी तरून परशरामीं देवदर्शन घेऊन यावें. असं दोन तीन दिवस जाहल्यावर हें वर्तमान बाळाजी विश्वनाथ व आवजी बळाळ यांस कळलें. त्यांनीं आपले दृष्टीनें चमत्कार पाहून फारच भक्ति करूं लागले. याजमुळें श्रीस्वामींचीही कृपा होऊन आशीर्वाद दिल्ला कीं, तुजला महत्पद मिळेल. असें वचन देऊन आह्मी श्रीरानिध जातां, तेथें देवालयाची वगैरे इमारत करावी, ही इच्छा आहे. तुम्हीं सर्वांनीं साहित्य करावें असं सांगून शके १६२९ सर्वजीतनाम संवत्सरे पौष शुद्ध १५ मेस श्रीपरशरामीं प्रगटरूपें राहिले, आणि देवालयाचें काम लाविलें. त्या प्रांतीं हपशी याचा अंमल. त्यांनीं स्वामींची कीर्ति ऐकून करामत पहावी ह्मणोन जंजिऱ्याहून कारकून विनंती करण्यास पाठविला कीं, आह्मांस दर्शन द्यावें. त्यांचे मनांतील हेतु जाणोन रुकार दिल्ला. त्याजवर कारकून जंजीऱ्यास जाऊन हपशी याकूदखान यास. स्वामी येतात असें सांगितल्यावरून, कारकून यास सांगितलें कीं, जाऊन स्वामीस घेऊन यावें. समागमें मनुष्यें येतील तीं तरी उतरून आणावीं. बावा केळीचें पानावर उतरून येतात हा चमत्कार पाहणें आहे. त्याप्रमाणें केळीचें पान पाठवून समागमेंची मंडळी उतरून आणिली. एक स्वामी मात्र पलीकडे राहिले. खानाचें चित्तांतील कल्पना मनांत आणून, केळीचें पानावर आसन घालून जहाज चालतें याप्रमाणें पाण्यांतून जंजिऱ्यास दंडाराजपुरीस गेले. हा चमत्कार याकूदखान यानें आपले दृष्टीनें पाहून किल्ल्यांतून बाहेर येऊन खुरनिषात करून गुन्हा माफ करावा अशी विनंती बहुत प्रकारें करून, किल्ल्यांत नेऊन, मौजें पेटें व मौजें आंढळस हे दोन्ही गांवचें इनामतीच्या सनदा करून दिल्ला. नंतर स्वामी निघोन श्रीपरशरामीं आले. तेथें इमारतीचीं कामें दरोबस्त करून गांवची व ब्राह्मणांची वसाहत केली. दिवसेंदिवस कीर्ति वाढली. आमचे पणज्याचे वडील, चिमणाजी कृष्ण भागवत हे पूर्वी कोकणप्रांती होते. शशिरानें अशक्त, निराश्रित. तेव्हां कोठें तरी सेवेशीं जावें ह्मणोन निघाले. ते देवधामापूर येथें श्रीसोमेश्वर महास्थान पाहून तेथें राहिले. बहुत सेवा जाहलीयावर प्रत्यक्ष दृष्टांत जाहला कीं, तुम्हीं परशरामास जावें, ह्मणजे तेथें सिद्ध पुरुषांनीं भेट होऊन तुमचे पुत्राचें कल्याण होईल. त्याजवर परशरामीं येऊन श्रीचें दर्शन जाहलें. उभयतांचे

गरीबीची वृत्ती पाहून सेवेशीं राहण्याची आज्ञा जाहली. निष्ठा पाहून दिव-  
सेंदिवस कृपा होऊन, चिमणाजी कृष्ण यांचें लग्न केलें. व कामाची देखरेख  
करण्यास सांगितली. स्वामीची कीर्ति ऐकोन कान्होजी आंगरे सरखेल यांनीं मौजें गोठणें तर्फ  
राजापूर हा गांव दरोबस्त इनाम करून दिल्या. तेथें देवालय करून श्रीची स्थापना केली,  
व कोकणप्रांतीं भिक्षाद्रव्य मिळवून बहुत ठिकाणीं देवालयांचीं वगैरे कामें केलीं. नंतर  
इकडे श्रीमन्महाराज शाहू राजे हे. पादशाहाची आज्ञा घेऊन फौजेसुद्धां किल्ला सातारा  
हस्तगत करावा, या उद्देशानें चंदनवंदन किल्ल्याजकीक येऊन राहिले. हें वर्तमान स्वामींस  
कळल्यावर आपली कठीसूत्र व कौपीन महाराजांकडे प्रसाद पाठविला. नंतर सातारा हस्त-  
गत जाहला. मोंगलाई ठाणें उठोन राज्याचा बंदोबस्त जाहला. बाळाजी विश्वनाथ बंदरचें काम  
सोडून चंद्रसेन जाधवराव यांकडे गेले. तिकडोन शाहू महाराज यांस भेटले. महाराज  
यांनीं कर्ते मनुष्य पाहून पेशवाईचीं वखें दिलीं. श्री स्वामी वरधांट सातार प्रांतीं कृष्णा-  
तीरास आल्याचें वर्तमान श्रीमन्महाराज शाहू छत्रपती यांस निवेदन होतांच, दर्शनास येऊन  
साताऱ्यास सन्मानेंकरून बावा यांस वाड्यांत नेऊन, सत्कारानें पूजा करून, मौजें धावडशी व  
मौजें विरमाडें व मौजें आंनवाडी हे तीन गांव राजपत्रीं इनाम करून दिले. स्वामी यांनीं  
मुख्यत्वे धावडशी संस्थान करून, कृष्णातीरी मठ बांधून तपश्चर्येस वास्तव्य  
केलें. स्वामी सिद्धपुरुष जाणून प्रतिनिधी यांनीं आपले तालुक्यांतील  
मौजें डोर्ले व मौजें माहुळीं तर्फ पावस हीं दोन्हीं गांवां राजपत्रीं इनाम करून दिलीं.  
स्वामींचा वार्षिक नेम श्रावणमासीं एकासनी गुंफेंत तपश्चर्येस बसावें. त्याप्रमाणें एकवीस  
दिवस वार्षिक नेम. नेहमीं अन्नरहित. बारमाहा गोमूत्र मात्र प्राशन करावें. त्याप्रमाणें  
कांहीं दिवस चालून परशुरामास जाऊन धावडशीस यावें. पुढें हपशी यांनीं हत्तीचे  
खटल्याबद्दल परशुरामीं उपद्रव केल्यामुळे किल्ले रसाळगड येथें सन समान आशरीन  
सालीं देवाची वस्तवानी व कागदपत्र वगैरे गडास नेऊन ठेविले, आणि स्वामी यांनीं  
कारकुनाचे कबीलेसुद्धां धावडशीस रवाना केले; व मागाहून आपणही वरधांटीं आले.  
तेव्हां शाहू महाराज यांनीं बाजीराव पंडित प्रधान यांसी आज्ञा केली कीं, मौजें पिंपरी  
तर्फ कऱ्हेपठार प्रांत पुणें हा गांव इनाम देणें. त्याप्रमाणें दरोबस्त इनाम करून दिल्या.  
सन सलासिनामध्ये महाराज महालसुद्धां प्रतापगडास श्रीचें दर्शनास गेले. येते स्वामी  
धावडशीस येऊन मौजें माळशिरस परगणे सुपें हा गांव दरोबस्त इनाम देऊन स्वदस्तूर  
हातरोखा छ २२ मोहरमचा करून दिल्या. मौजें मजकुरीं श्रीभुलेश्वर महास्थान तेथें  
देवालयाचें शिखर व मंडप वगैरे कामें केलीं. सन इहिदे आर्वीन सालीं चिमणाजी  
कृष्ण यांस देवाज्ञा माली. त्याचें सार्थक कृष्णातीरीं करून मठासंनिध त्यांचें  
वृंदावन बांधून ठेविलें आहे. नंतर मशारनिल्ले यांचे चिरंजीव जगन्नाथ  
चिमणाजी यांस सर्व कारभार स्वामी यांनीं सांगितला. पुढें खमस आर्वीन सालीं शाहू महा-

राज श्रीचें दर्शनास आले. ते समयीं पुढील कर्तव्यार्थ मनांत आणोन विचारिलें कीं, चिमणाजीचें पुत्रवत् पाळण केलें, तो गेला. त्यांचे चिरंजीव जगन्नाथपंत यांचें पाळग्रहण तुझीं करावें. मानवाचा देह आझीं समाधिरथ होणार. असं बोलून जगन्नाथपंताचा हात महाराजांचे हातीं दिल्ला, आणि आज्ञा केली कीं, आतां तुमचे शाहू चालवील. राजांनीं आज्ञा मान्य करून साताऱ्यास गेले, व स्वामीही परशरामास गेले. तेथोन जगन्नाथपंतास पत्र व शाहू महाराज यांस पत्र व प्रसाद नारळ पाठविलें. नंतर सन सीत आर्वेनांत श्रावण-मासीं शुद्ध ९ शके १६६७ सालीं श्री स्वामींनीं कृष्णातीरीं देह ठेविला. नंतर शाहू महाराज यांस वर्तमान निवेदन होतांच, अष्टप्रधान, मुत्सद्दी, मानकरी, शास्त्री, पंडित यांस समागमें घेऊन कृष्णातीरीं घेऊन समारंभानें स्वामींस धावडशींस आणोन समाध दिल्ली. दहा दिवस उत्साहाचा समारंभ होऊन, नंतर महाराज यांनीं जगन्नाथपंतास आज्ञा केली की, संस्थानची सर्व मंडळी व गांवगन्नाचे पाटील, कुळकर्णी यांस बरोबर घेऊन सातारीयास यांव. त्याप्रमाणें मंडळी समागमें घेऊन गेले. महाराज यांनीं सत्कार करून, जगन्नाथपंतास मंदील बांधून, शालजोडी दिल्ली, व दरकदार, कारकून यांस व पाटील, कुळकर्णी यांस अनुक्रमानें वस्त्र दिल्लीं, आणि आज्ञा केली कीं, आजपावेतां स्वामींचे आज्ञेत वागत होतां. त्याप्रमाणें जगन्नाथपंताचे आज्ञेत वागावें. अशी आज्ञा होऊन सर्वत्रांस निरोप दिल्ला. त्या दिवसापासोन श्रीचा उत्साह व गांवगन्ना देवास नैवेद्य, नंदादीप व धर्मादाय वगैरे खर्च मालकाईनं करीत आहो, व सन आर्बा खमसैन मया व अलफ साली संस्थानचें शिलंकचें एंवजाची ठेव एक लक्ष रुपये विष्णु विश्वनाथ पंडित यांचे मारफतीनं, महाराज सरकारांत होती; ती संस्थानीं खर्चास बाळाजी बाजीराव पंडित प्रधान पेशवेसरकार यांनी, आमचें पणजें जगन्नाथ चिमणाजी यांस रुपये देऊन, त्याचें फारखत विष्णु विश्वनाथ यांस शक १६७५ सालीं मालकाईनं दिल्लें आहे. संस्थानचें आधिपत्य आमचें पणजें जगन्नाथ चिमणाजी यांस श्री स्वामींनीं देऊन पेशवेसरकार यांनी पत्रें करून दिल्ली, त्याप्रमाणें अधिकारानें वहिवाट करीत आहां, व संस्थानचा कारभार भाऊपणांत चौघांचे विचारे होत आहे.

### ब.

यादी कैफियत विष्णु गोपाळ भागवत, संस्थान धावडशी सुरसन सलास सलासीन मयातैन व अलफ. आसाहेबांनीं तारीख ८ माह सपटंबर सन १८३२ इसवी या तारखेचें पत्र पाठविलें. त्यांतील मजकूर कीं, सरकारांत रवाना करण्याकरितां थोडक्या मजकुरांत कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे. ऐशीयासः—आमचे निपणजे चिमणाजी कृष्ण यांस पोठदुखीची व्यथा होती. ह्मणून त्यांचे मातुश्रींनीं श्रीअश्वत्थाची सेवा बहुत केली. ते समयीं दृष्टांत जाहला कीं, तूं मौजें पढें येथें जावें. तेथें अरण्यांत कोणीएक योगी आहे, त्याची सेवा करावी. ह्मणजे तुझे पुत्राची व्यथा दूर होऊन कल्याण होईल. त्याजवरून

मातुश्रींनी पुत्रास घेऊन मौजे पेढें येथें गेली. तों तेथें गौळीयांची वस्ती. त्या जाग्यांत राहून योगी याचा शोध केला. तों गौळीयांनीं सांगितलें कीं, रानांत एक बावा आहे, तुझांस दाखवितों. मग गौळीयांचे समागमें मातुश्री व चिमणाजीपंत, योगी यांचे दर्शनास गेले. दर्शन जाहल्यावर चरणावर मस्तक ठेवून नमस्कार करून, सविस्तर वृत्त निवेदन केलें. त्यावर चिमणाजीपंत यांचें मस्तकीं हात ठेवून तुझी व्यथा दूर होऊन कल्याण होईल, असा आशीर्वाद दिल्हा. नंतर उभयतां सेवेत तत्पर राहिलीं. उपरांत श्रीपरशराम देव यांचें देवालय बांधावें. कारखाना चालवावयाचा ह्मणोन चिमणाजीपंत यांस सांगोन कारकून मंडळी आणवून कारखाना चालवावयाची तरतूद केली. नंतर शके १६२९ सर्वजीतनाम संवत्सरीं पौषमासीं देवालयाचे कामास प्रारंभ केला. ते समयीं दंडाराजपुरी येथील अधिकारी सिद्दी साद हपसी यांजकडे भेटीस जाण्याचें. तेव्हां खाडींत केळीचें पानावर आसन घालून खाडींतून जंजिऱ्यास गेलें. हा चमत्कार सिद्दी साद हपसी यांनीं पाहून स्वामींचा सत्कार बहुत करून, आपले तालुक्यांत पट्टी करून द्यावयाची, ते समयीं नामाभिधान विचारलें. तेव्हां स्वामींनीं आपलें नांव ब्रह्मद्रस्वामी सांगितलें. ते समयीं आपण श्रीभार्गवाचा अवतार आहां ह्मणोन आपले तालुक्यांत गांवगच्चा भार्गवपट्टी करून दिल्ली, व मौजे पेढें तर्फ चिपळूण व मौजे आंबडस तर्फ खेड हे दोन्ही गांव इनाम दिल्ले. नंतर स्वामी पेढें मुक्कामीं आले. ते समयीं बाळाजी विश्वनाथही दर्शनास येत होते. त्यांस आशीर्वाद दिल्हा कीं, तुझें कल्याण होईल. उपरांत कांहीं दिवसांनीं पेशवाईचीं वस्त्रे जाहलीं व आंगरे, स्वामींचे दर्शनास येऊन मौजे गोठणें तर्फ राजापर हा गांव इनाम दिल्हा. तदनंतर श्रीपरशरामाचें संस्थान कायम करून घांटावर आलें. हें वर्तमान श्रीमंत राजश्री शाहू महाराज छत्रपती यांस श्रुत होतांच, स्वारी तयार करून, स्वामींस सातार मुक्कामीं आपले वाड्यांत आणून बहुत सत्कार केला, आणि उभे राहून विनंती केली कीं, हें राज्य स्वामींचे आशीर्वादाचें आहे असें बोलून, मौजे धावडशी गांव वगैरे इनाम दिल्लें. त्याचा तपशीलः—

२ हपसी यांनीं इनामगांव दिल्लें तेंः—

१ मौजे पेढें, तर्फ चिपळूण.

१ मौजे आंबडस, तर्फ खेड.

२

शिवाय आपले तालुक्यांत भार्गवपट्टी गांवगच्चा व पन्नास बैलांचें दस्तक, कोठीचे बैलास जकात घेऊं नये ह्मणून दिल्लें तेंः—

१ आंगरे यांनीं मौजे गोठणें, तर्फ राजापर हा गांव इनाम दिल्हा.

५ श्रीमन्महाराज राजश्री शाहू महाराज छत्रपती यांनीं दिलें तेंः—

१ मौजे धावडशी, तर्फ परळी.

१ मौजे अनेवाडी, तर्फ कुडाल.

- १ मौजें विरमाडें, प्रांत कऱ्हाड.
- १ मौजें पिंपरी, तर्फ कऱ्हेपठार.
- १ मौजें माळशिरस, परगणे सुपें.

५

खेरीज कुरणें.

- ० मौजें आंकलें तर्फ सातारा.
- ० डोंगर शूळपाणी नजीक सायगांव.

२ परशराम श्रीनिवास प्रतिनिधी यांनीं दिलें तें:—

- १ मौजें डोरलें, तर्फ पावस.
- १ मौजें माहळुगे, तर्फ पावस.

२

१ मुधोजी नाईक निंबाळकर प्रांत फलटण यांनीं मौजें रावडी खुर्द हा गांव इनाम करून दिल्हा.

पेशवेसरकारांतून चालत होते ( ते ):—

- १ जामदारखान्यापैकीं नक्त रुपये व कापड पांढरत होते.
- १ दस्तक जकातीचें माफीचें शंभर बैलांचें.

येणेंप्रमाणें इनामगांव व कुरणें वगैरे दरोबस्त वहिवाट चिमणाजी कृष्ण यांचे हातें स्वामी करवीत होते. त्यांचा काळ स्वामी असतांच जाहला. त्यापुढें त्यांचे पुत्र जगंनाथपंत यांचे हातून काम चालविलें. श्रीमन्महाराज शाहू राजे छत्रपती व पंत प्रतिनिधी व पंत प्रधान इत्यादि करून स्वामीचे आज्ञेत चालत होते. उपरांत सहा महिने अगोदर स्वामींस भविष्यार्थ समजला कीं, आपलें देहावसान समीप आहे. असं जाणोन, छत्रपती यांस दर्शनास येणें ह्मणोन सांगून पाठविलें. नंतर छत्रपती दर्शनास आले. ते वेळेस स्वामींनीं त्यांस आज्ञा केली कीं, माझे मागें संस्थानास अधिकारी जगंनाथपंत आहेत. हें संस्थान चालवि-  
तील. मीं त्याचें पुत्रवत् चालविलें आहे. त्या अन्वये तूहीं चालवावें. असें सांगून महाराजांचे हातांत जगंनाथपंत यांचा हात दिला. पुढें संकेताप्रमाणें शके १६६७ क्रोधननाम संवत्सरीं श्रीकृष्णातीरीं श्रावण शुद्ध ९ नवमीस समाधिस्थ जाहले. नंतर महाराज छत्रपती अष्टप्रधानासुद्धां कृष्णातीरीं येऊन स्वामींस धावडशी मुक्कामीं आणून समाधीचा समारंभ केला. तेरावे दिवशी जगंनाथपंत मंडळीसुद्धां व गांवगन्नाचे पाटील वगैरे सर्व मंडळी साता-  
न्यास घेऊन गेले. तेथें, संस्थानचे अधिकाराचीं वस्त्रें मंदील देऊन, कारकूनमंडळीस व गांव-  
गन्नाचे पाटील, कुळकर्णी यांस महाराज छत्रपती यांनीं आज्ञा केली कीं, स्वामींचे आज्ञेत चालत होतां त्याप्रमाणें जगंनाथपंत यांचे आज्ञेत चालावें. अशी आज्ञा होऊन सर्व मंड-  
ळीस बहुमानाचीं वस्त्रें देऊन निरोप दिल्हा. त्या अन्वये वहिवाट आमचे पणजे जगंनाथ-

पंत व आज्ञे कृष्णाजीपंत व तीर्थरूप गोपाळपंत व हल्लीं आह्मीं एकूण पांच पिढ्या बहि-  
वाट श्रीमंत महाराज छत्रपती शाहूमहाराज व पेशवेसरकार यांनीं निर्वेध  
चालविली. त्याच अन्वये कुंपणीसरकारही चालवीत आहेत; परंतु अलीकडे मौजें  
माळशिरस परगणे सुपें येथील कुळकर्णी यांनीं नवीन वतनबाब गांवकरी यांजपासून  
करून घेतली. ते खटले परभारे गांवकरी यांजकडे असतां, त्याजबद्दल मौजें मजकूर व  
मौजें पिंपरी तर्फ कहेपठार हे दोन्ही गांव कुळकर्णी यांनें जप्त करविले आहेत. याज-  
मुळें संस्थानचे लौकिकास कमी होऊन बहुत नुकसान जाहलें. याजमुळें संस्थानास कर्ज  
भारी जाहलें, आणि खर्चाची बहुत अडचण आहे. जाहीर होण्याकरितां कलमीं केलें  
असे. तारीख २७ माहे मे, सन १८३३ इसवी, शके १७५५ विजयनाम संवत्सरें.

### ६ स्वामी मंचाली मठ.

यादी मुज्ञानेंद्रस्वामी संस्थान कुंभकोन मठ मंचाली वास्तव्य नजणगुड इलाखा  
म्हैसूर, यांची संस्थानची हकिकत लिहून देण्याविषयीं इनाम वगैरेची कमीटीकडून स्वामी-  
कडील मुखत्यार व्यंकटाचार्य बिन व्यंकटाचार्य पंपू वस्ती हुबळी यांस विचारल्यावरून  
त्यांचे रुबरू ह्मणणें आहे तें खालीं लिहिल्याप्रमाणें:—

१ मुळीं शालिवाहन शके १००० सालीं शंकराचार्य यांचें मत प्रबल होऊन  
वैष्णव सिद्धांतास विरोध करूं लागले. तेव्हां शंकराचार्य यांचे शिष्य यांनीं  
वैष्णव मतास भेद करूं लागले. त्याजवरून सकळ लोक ऐक्य उपासनांनीं,  
योग्य लोक वाईट होतील असें समजलें. त्याजवरून श्रीमारुती देव एकरुपें करून  
मदगेहेभट ह्मणणार ब्राह्मण यांचे पोटीं अवतार १०९५ शकांत घेतला. तें समयीं  
पुष्पवृष्टी जाहली, व श्रीमारुती देव अवतार जाहला ह्मणून आकाशवाणी जाहली.  
नंतर त्याचें नांव मदगेहेभट यांनीं वासुदेवभट ह्मणून ठेविलें. नंतर शके ११०३  
सालीं वासुदेवभट यांची मुंज केली. नंतर वासुदेवभट यांनीं शके ११०७  
सालीं अच्युतप्रेक्षस्वामी यांजकडून संन्यास आश्रम घेऊन त्यांचें नांव आनंद-  
तीर्थस्वामी ठेविलें. त्यांनीं स्मार्तमत निराकरण करून, पुंडरीकपुरीं ह्मणणार पंडित  
स्मार्त होते, त्यांजबरोबर प्रसंग करून जिंकिलें; आणि कांहीं लोक स्मार्तमतास  
अनुसरून होते. त्यांसही जिंकून मुद्रा धारण केलें, आणि बहुतेक देशांत  
प्रसंग करून जिंकिले. लांकांस तम मुद्रा दिल्या. नंतर स्मार्ताचा पक्ष निराकरण-  
पूर्वक आपला पक्ष साधला. अनेक ग्रंथ निर्माण करून बद्रिनारायण देवास  
जाऊन, तेथें ग्रंथ समर्पण करून, पुन्हा या देशांत येऊन, समुद्रतटाकीं बसले  
होते. इतक्यांत समुद्रांतून एक जहाज येत होतें. तें समुद्राचे मध्यें बुडूं लागलें.  
तेव्हां त्याजवरील सर्व लोक घाबरे होऊन ओरडूं लागले, तें स्वामींनीं पाहून

त्या जहाजास अलिकडे ये, ह्मणून अंगावरील छाटीनें खूण केली. त्याजवरून तें जहाज स्वामीजवळ आलें. नंतर जहाजाचे मालक यांनीं स्वामींस विनंती केली कीं, आपणास या जहाजांतील कोणत्या जिनसाची अपेक्षा असेल तें घ्यावें. नंतर स्वामींनीं गोपीचंदन मात्र मागितलें. त्याजवरून त्यांनीं गोपीचंदनाचे खडे दिले. ते घेऊन श्रीविष्णूची स्तुति करीत उडपीस आले, तेव्हां त्या गोपीचंदनाचे खड्यांत श्रीकृष्णाची प्रतिमा सांपडली. ती प्रतिमा उडपीस स्थापन करून, देवालय वगैरे बांधिलें. नंतर तेथें असणारे लोकांस भेदशास्त्र सांगून, श्रीस्वामीजवळ बहुतेक शिष्य होते; त्यांपैकीं एकास संन्यास आश्रम शके ११६९ सालीं देऊन, त्याचें नांव श्रीपद्मनाभतीर्थस्वामी ठेवून त्यांची संस्थानावर स्थापना करून, आपण श्रीबद्रिकाश्रमी जाऊन तेथें अट्शय जाहले. तेव्हांपासून कोण-कोणते स्वामी यांनीं किती वर्षे संस्थान केलें, त्यांचीं नांवें व वर्षे खाली लिहिल्याप्रमाणें:—

| नंबर. | स्वामीचें नांव.               | वर्षे. | नंबर. | स्वामीचें नांव.                | वर्षे. |
|-------|-------------------------------|--------|-------|--------------------------------|--------|
| १     | मूळ आनंदतीर्थ स्वामी .....    | ६२     | १५    | विजयेंद्रतीर्थ स्वामी .....    | ५७     |
| २     | पद्मनाभतीर्थ स्वामी .....     | १६     | १६    | सुधिइंद्रतीर्थ स्वामी .....    | २८     |
| ३     | नरहरीतीर्थ स्वामी .....       | ९      | १७    | राघवेंद्रतीर्थ स्वामी .....    | ४२     |
| ४     | माधवतीर्थ स्वामी .....        | १७     | १८    | योगेंद्रतीर्थ स्वामी .....     | १७     |
| ५     | आक्षोभ्यतीर्थ स्वामी .....    | १७     | १९    | सुरेंद्रतीर्थ स्वामी .....     | ४      |
| ६     | जयतीर्थ स्वामी .....          | २१     | २०    | सुमतींद्रतीर्थ स्वामी .....    | ३३     |
| ७     | विद्याधिराजतीर्थ स्वामी ..... | ४      | २१    | उपेंद्रतीर्थ स्वामी .....      | ३      |
| ८     | कवींद्रतीर्थ स्वामी .....     | ४१     | २२    | वादिंद्रतीर्थ स्वामी .....     | २२     |
| ९     | वामीशतीर्थ स्वामी .....       | ३०     | २३    | वसुधेंद्रतीर्थ स्वामी .....    | ११     |
| १०    | रामचंद्रतीर्थ स्वामी .....    | ३३     | २४    | वरदेंद्रतीर्थ स्वामी .....     | २४     |
| ११    | विभुजेंद्रतीर्थ स्वामी .....  | ४९     | २५    | भुवनेंद्रतीर्थ स्वामी .....    | १४     |
| १२    | जितामित्रतीर्थ स्वामी .....   | २१     | २६    | सुबोधेंद्रतीर्थ स्वामी .....   | ३६     |
| १३    | रघुनंदनतीर्थ स्वामी .....     | २७     | २७    | सुजनेंद्रतीर्थ स्वामी .....    | २      |
| १४    | सूर्येंद्रतीर्थ स्वामी .....  | ११     | *२८   | सुज्ञानेंद्रतीर्थ स्वामी ..... | १४     |

वर्षे सुमारे ६६५

येणेंप्रमाणें सदरी लिहिल्याअन्वये २७ सत्तावीस स्वामी, यांनीं मूळपासून ६५१ वर्षेपर्यंत संस्थानची वहिवाट केली व आह्मांस शके १७५८ दुर्मुखीनाम संवत्सर सालांत आश्रम मिळाल्यापासून, आजपर्यंत १४ वर्षे वहिवाट करीत आसां. एकूण आजपर्यंत मुळापासून ६६५ वर्षे सुमारे संस्थान निरंतर चालत आहे व नंबर २४ वरदेंद्रस्वामी षण्ण्नीं वीरेंद्रतीर्थस्वामी यांस संन्यास आश्रम देऊन, संस्थानचा अधिकार न देतां मठांत

\* हल्लीं हकीकत लिहिणार.



ठेविलें होतें. तेव्हां त्यांचें व वरदेद्रतीर्थस्वामीचें बनेना, तेव्हां वरदेद्रतीर्थस्वामी यांनीं दुसरे शिष्य भुवनेंद्रतीर्थस्वामी यांस संन्यास देऊन ठेविलें. मठांत पुढें कांहीं दिवसांनीं हिरेंद्रतीर्थ स्वामी यांनीं मृत्यु पावले. नंतर वरदेद्रतीर्थस्वामी यांनीं भुवनेंद्रतीर्थस्वामी यांची संस्थानावर स्थापना करून, आपण देवाधीन झाले. येणेंप्रमाणें संस्थानची हकिकत लिहून दिल्ली. तारीख ९ माहे मे सन १८५० इसवी.

### ७ सिद्धेश्वरबोवा महाराज.

यादी श्री हरिहर पंडित उर्फ तात्या महाराज यांचे घराण्याची एकंदर माहिती समजणेंकरितां लिहिली ती. सुरुसन इसचे खमसैन मयातेन व अलफ, शके १७७३ विरोध-कृतनाम संवत्सरें.

१ मूळ पुरुष आमचे आज श्री सिद्धेश्वरबोवा महाराज. हे अवरंगाबाद प्रांतीं वृत्तीचें गांवीं राहून, विद्याभ्यास आपण करून, त्याप्रमाणें लोकांकडूनही करवीत हांत, व ब्राह्मण आदिकरून. सर्व लोकांस अन्नोदक देत हांते. नंतर श्री क्षेत्र काशीस जाऊन आणखी विद्याभ्यास करून, तीर्थयात्रा करीत करीत, कन्हाड प्रांतीं श्री कृष्णातीरीं क्षेत्र नरसिंहपूर येथें येऊन तपश्चर्या बहुत केली. जें बोलावें तें व्हावें. असाध्य रोगी दर्शनास आले त्यांचे रोग व समंथादिक उपद्रव वगैरे कोणतींही संकटें आशीर्वादेकरून परिहार जाहलीं, व मृत मनुष्येंही वचनेंकरून उठलीं. असें बहुत प्रकारचें चमत्कार मिद्धि हांत हांत्या. असें केवळ साक्षात् ईश्वरी स्वरूप, मोठे आवलिया, ब्रह्मरूप हांते. हा लौकिक तमाम मुलखांत प्रसिद्ध जाहला. हें ऐकून श्रीमंत महाराज छत्रपती व पेशव, पंत प्रतिनिधी व शिंदे वगैरे थारथार लोक दर्शनास येऊन, आज्ञेनं वागून सत्कार करूं लागलें; व श्रीमंत शिवाजीमहाराज छत्रपती यांनीं क्षेत्र करविरत्स श्रीदेवीचें दर्शनास यावें झणोन विनंति करून, मोठ्या समारंभांनं क्षेत्रास आणोन, आपल्या वाड्यांत ठेवून घेतलें; आणि बहुत प्रकारें सेवा करून अनुग्रह घेतला. पुढें इनामगांवें व जमिनी व हक्क व वतनें व घर, जागा वगैरे इनाम, धर्मादाव करून दिल्लें. नंतर छत्रपती महाराज यांचे दौलतीस सिलसिलें लागून, मोठीं संकटें पडलीं. तेव्हां श्रीबोवा महाराज यांजपाशीं येऊन विनंती केली. त्याजवरून संकटें निवारण होतील, अशी आज्ञा कल्यावरून संकटें निवारण झालीं. पुढें तमाम मुलखांत इंग्रजी राज्य होणार आहे, तुझीं त्याशीं स्नेह करावा झणजे तुमचें चांगलें होईल. असें पूर्वीं पंचवीस तीस वर्षे आज्ञा जाहली होती. त्याजवरून छत्रपती यांनीं आज्ञेप्रमाणें स्नेह करितें अशी विनंती केली. पुढें छत्रपती यांनीं पुत्र संतती व्हावी झणोन विनंती केली. त्याजवरून दोन पुत्र होतील झणोन सांगितलें. त्याप्रमाणें दोन पुत्र जाहले. त्या वेळेस शिवाजीमहाराज यांशीं मोठा आनंद होऊन, आमचे आज श्रीसिद्धेश्वरबोवा महाराज हे गुरुस्थान जाणून, त्यांची मोठी सत्कारपूर्वक पूजा करून चौघडा, व मोर्चलें व आणखी

इनामगांवें व इनामजमिनी धर्मादाव करून दिल्लें, आणि नित्य प्रातःकाळीं दर्शनास येऊन, नंतर भोजन करीत होतें व बहुत सेवा करून आज्ञेत वागत होते. पुढें आमचे आज्ञे श्री सिद्धेश्वर-बोवा महाराज यांसी शके १७२३ दुर्मतीनाम संवत्सरें वैशाख वद्य ६ सोमवारी परधामवास करून समाधिस्थ जाहले. त्यांची समाधी श्रीक्षेत्र करविरी पंचगंगातीरी बांधून, पादुका स्थापन करून, त्यांची पूजा, उरज्या व नैवेद्य, नंदादीप व सालाबाद रथोत्साह व छबिन्याची पालखी, वगैरे मोठा समारंभ छत्रपती महाराज आपण खुद्द येऊन करीत होते. हल्लींही त्याप्रमाणे चाललें आहे. त्यांसी पुत्र त्रिवर्ग बंधू आमचे तीर्थरूप श्रीवासुदेवपंडित उर्फ भाऊमहाराज व आमचे चुलते श्रीरामचंद्रपंडित उर्फ बाबामहाराज व श्रीनारायण पंडित उर्फ नानामहाराज, असे त्रिवर्ग मोठे विद्वान्, लौकिकवान् थोर होते. पुढें शिवाजी महाराज यांनीं आपले पुत्र आबासाहेब महाराज छत्रपती यांसी आमचे चुलते श्रीबाबामहाराज यांजकडून, अनुग्रह देवविला. त्या वेळेस इनामगांवें दिल्लीं, आणि नित्य त्यांचे व आमचे तीर्थरूप यांचें दर्शनास, पेशजीप्रमाणें आबासाहेब महाराज छत्रपती व बोवासाहेब महाराज छत्रपती असे उभय-तांही येत होते. पुढे निपाणीकर यांनी महाराजांचे मुलखांत सिलसिला लावून, दौलत बहुत खराब केली. तेव्हां आमचे आज्ञे श्रीबोवामहाराज यांनी शिवाजीमहाराज यांसी इंग्रजीसरकारचा स्नेह करावा ह्मणजे बंदोबस्त होईल, ह्मणोन आज्ञा केली होती; तें छत्रपती यांनीं मनांत धरून, आमचे तीर्थरूप श्रीभाऊमहाराज यांजकडे येऊन, मजकूर सांगोन विनंती केली कीं, मीच साहेबाकडे जावें, परंतु आमचा वृद्धापकाळ व प्रकृतीसही नीट नाही आणि सर्व भरंवसा आपल्यावर आहे. दौलतीचें संरक्षण जाहलें पाहिजे. याजकरितां माझें ठिकाणीं आपण साहेबाकडे जाऊन, दौलतीचा बंदोबस्त करावा. असें बोलून मालवण किल्ला इंग्रजीसरकारांत दिल्या. नंतर मेहेरबान एलफिस्तनसाहेब बहादूर यास थैली माझें ठिकाणीं श्रीभाऊसाहेब महाराज आले आहेत, अशी दिल्ली. तें समयी महाराज छत्रपती यांशीं संकट जाणोन आमचे तीर्थरूप साहेबाकडे गेले. साहेबांनीं सर्वांपेक्षां मानमरातब चांगला राखून, बंदोबस्त करून देतो ह्मणोन बोलून ठेवून घेतलें, व महाराज छत्रपती यांचा व इंग्रजीसरकारचा तहनामा आमचे तीर्थरूप यांचे विद्यमानें जाहला. पुढें साहेबांनीं पेशवेसरकारांत बोलून निपाणीकराचा सिलसिला दूर करून, कांहीं मुलूखही वसूल-सुद्धां निपाणीकर यांजकडून माधारा देवविला. पुढें चिकोडी, मनोळी तालुके पेशवाईअखेर जाहल्यावर, आमचे तीर्थरूप यांचे विद्यमानें महाराज छत्रपती यांशीं दिल्ले. त्या वेळेस आह्मांस इंग्रजसरकारांतून इनामगांवें करून दिल्लीं व आबासाहेब महाराज यांस, छत्रपती यांनींही आपली इनामगांवें व जमिनी व वतने, व हक्क, व घर, जागा व वाडे, वगैरे इनाम करून दिल्लें. त्याच्या सनदापत्रें पुत्रपौत्रादि वंशपरंपरेनें इनाम, धर्मादाव चालेल ह्मणून करून दिल्ले आहेत; व आमचा मानमरातब आह्मीं अगर आमचे घराण्यांतील खाशी मंडळी कोणी करविरास गेली असतां, महाराज छत्रपती समारंभानें समोरें येऊन,

ठिकाणास पोंचवून जात असतात, व आमचा मानमरातब सर्व प्रकारें वडिलांप्रमाणेंच करितात, व पत्रेही वडिलांप्रमाणेंच लिहितात. व आमचे इनामगांवचे हरएक खटले व न्याय, इनसाफ आमचे आर्ह्यी पाहत होतीं, व हल्लींही पाहत आहों. व आह्मांस स्वास्थ्य महाराजसरकारांतून व कुंपणीसरकारांतून आहे. त्याशिवाय पंत प्रतिनिधी व पंत अमात्य व सेनापती यांनीं इनामगांवें व जमिनी व हक्क वगैरे इनाम करून देऊन सनदा करून दिल्या. त्यांस छत्रपती महाराज यांनींही दुमाल राजपत्रें करून दिल्लीं आहेत; व देशमुख व देसाई व देशपांडे वगैरे वतनदार यांनींही इनामजमिनी व हक्क व घर, जागा वगैरे इनाम करून दिल्ले आहे; व कऱ्हाडप्रांतीं श्रीक्षेत्र नरसिंहपूर येथें सेवेकरी यांनीं वाडा बांधून देऊन गांवगऱ्या इनामजमिनी, मळे वगैरे करून दिल्ले; व श्री कृष्णेश घाट बांधून दिल्ला व वाड्यांत श्रींच्या पादुका आहेत, तेथेही पूज्या, उरज्या, नैवेद्य, नंदादीप वगैरे हल्लीं चालले आहेत, याप्रमाणें आह्मांस इनामगांवें व जमिनी व हक्क वगैरे इनाम, धर्मादाव, खैरात, पुत्रपौत्रादि वंशपरंपरेनें स्वास्थ्य चालत आहे. त्याचा अनुभव आम्हीं करीत आहों. त्याची याद तारीखवार सनदापत्रें पेशजी धारवाड मुक्कामी सरकलेक्टर पोलीटिकल एजंट बेबर साहेब बहादूर यांनीं मेहेरबान हनराबल गव्हर्नर एलफिस्तन साहेब बहादूर यांचे हुकुमावरून पाहून व सनदांवर सही करून सनदाबरहुकूम याद रजिस्टर करून, आपले सहीसुद्धां थैलीबरोबर इकडे पाठाविले व त्याप्रमाणेंच रजिस्टर यादीचा दाखला कुंपणी-सरकारांत मुंबईत व बेळगांवांत ठेऊन, छत्रपती महाराज सरकारांतही दिल्ला आहे. यादी-बरहुकूम इंग्रजीसरकारची बहादरी पुस्त दरपुस्त इनाम, धर्मादाव चालवावे असें श्रीमन् बोवासाहेब छत्रपती व कुंपणीसरकारचा तहनामा अलीकडे जाहला त्यांत आहे, व सरकारांतून इकडील नांव अव्वल दरज्यांत दाखल आहे; व मेहेरबान एलफिस्तन साहेब बहादुर गवर्नर यांनीं आमचे तीर्थरूप यांसी पुण्यास अगत्यानें बोलावून नेऊन, ठेऊन घेतले आणि तेथें बंगल्याचा बाग व कुर्णे वगैरे बक्षीस, इनाम, धर्मादाव करून देऊन सनदा करून दिल्ला आहेत. व मानमरातब सालाबाद दसरेचं रोजीं पोषाख शालजोडी वगैरे साडेतीन सनगें देऊन, हरएक प्रकारें चांगला राखीत होते. त्याप्रमाणें आज तागाईत हल्लीं सरकारांतून चाललें आहे. याप्रमाणें आमचे आज श्रीसिद्धेश्वरबावा महाराज यांज-पासोन बढती व लौकिक महशूर होऊन, आज तागाईत सरकारांतून मानमरातब व मुख-त्यारी वगैरे सर्व यथास्थित चाललें आहे. पुढेंही वंशपरंपरेनें चालविणें सरकारांकडे आहे. तारीख २५ माहे सपटंबर सन १८५१ इसवी रोज गुरुवार.

## प्रकरण ४ थें. मुसलमान सरदार.

### १ नवाब कविजंग बहादूर.

कैफियत नवाब कविजंग बहादूर बमय बिरादरान.

- १ खाजे अमानतरखां उमर वर्ष.
- १ खाजे महंमद जाफरखां उमर.
- १ हसन मिरजाखां उमर.
- १ खाजे महंमद हुसेन.

४

यांजकडील श्रीनिवास गोविंद वकील यांणीं हुजूर नगर मुकामीं विदित केलें कीं. आमचे यजमानाचे संपादक नवाब टेकेताजखां हे बुखाराचे बादशाहाचे बंधु, हे रुसवा करून दिल्लीचे बादशाहापाशीं आले. त्यांणीं आपलेंजवळ ठेवून घेतलें. त्यांस पुत्र दोघे:—वडील नवाब खाजेखां व धाकटे नवाब तुरकताजखां. हे उभयतां बंधु यांचे वडील नवाब टेकेताजखां मृत्यु पावले. त्यांचे जाग्यावर नवाब खाजेखां वडील पुत्र राहिले. नंतर आसफजा नवाब निजामअल्लीखां यांचे बाप यांची रवानगी बादशाहांनीं दक्षणेस केली. त्याजवर आमीन तुरकताजखां करून बराबर दिले. पुढें दक्षणेंत येऊन काबीज करून, उभयतां अंमल बसविले. नंतर हैदराबादची सरद नवाब आसफजा यांजकडे व तुरकताजखां यांजकडे औरंगाबाद बालाघाट पुणें देशपरीयंत संस्थान दिल्लीहून हुकूम परस्परें येईल त्याप्रमाणें करीत असावा. पुढें नवाब तुरकताजखां मृत्यु पावले. त्यांस पुत्र तिघे:—वडील नवाब कविजंग बहादूर व मधले खाजे अमीदखां व धाकटे खाजे शेरीफखां. या त्रिवर्गाकडे वहिबाद चालली. पुढें दिल्लीचें संस्थान बादशाहापासून पेशवे यांणीं घेतलें. सबब नगरचा किल्ला गोळी न वाजवितां, पेशवे यांचे स्वाधीन करून, आमचे जातीस कुटुंबाचे बेगमीस जहागीर होती ती कायम ठेवून, संस्थान पेशवे यांचे हवालीं केलें असें.

### २ नवाब बेहेकर उर्फ शिवनेरकर.

अ.

यादी नवाब मृहमुद अलमखान साहेब बहादूर शिवनेरकर सुरुसन सलास सलासीन मयातैन व अलफ. अकरम फर्मायाकडून आफ्फाकनामा तारीख ८ माहे सपटंबर सन १८३२—इसवीचा सादर जाहला. त्यांत मजकूर कीं, हजरत बंदेगानअल्ली रेट हनराबल गौरनर कौंसल चाहात आहेत कीं, दक्षिणेंतील जहागिरदार लोक यांची कैफियत करी आहे

त्याची वाकबगारी व्हावी. ह्मणोन कलमीं केलें जातें जें, आपण मेहेरबानी करून सरकारांत रवाना करण्याकरितां थोडे मजकुरांत कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे. त्यांतील तपशीलः—आपली खानदानाची बढती कोणते तारखेस व खानदानीचा लौकिक महशूर जाहला तें, व फौज व जातसरंजाम आपले वडिलांकडे चालत होता व सदरहू सरंजाम कोणते तारखेस दिल्या ती तारीख, व आपले जहागिरीचे वहिवाटींत पेशवेसरकारांतून कोणते तऱ्हेनें दखलागिरी केली तें, व आपलेकडे सरंजाम हल्लीं काय चालत आहे तें, व पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती व हल्लीं कुंपणीसरकारांतून चालत आहे त्यांत कंपेश व तफावत काय आहे तें, वगैरे या यादींत दाखल करून रवाना केलें पाहिजे. ह्मणोन ऐशास, आमचे खानदानांतील मूळपुरुष नवाब मकबुल अलमखान ऊर्फ आबदुल आजीजखान बहादूर यांस पुत्र चारः—

१ नवाब महमुद अलमखान बहादूर  
यांचे पुत्र नवाब गुलाम मोहिदीखान सा-  
हेब बहादूर. पुढें नकल.

१ नवाब मसूद अलमखान बहादूर  
यांस पुत्रः—

१ बडेमिया.

१ बक्षुमिया.

२

सदरहू उभयतां मयत. पुढें नकल.

ऐशास आमचे खानदानांतील नवाब आबदुल आजीजखान बहादूर यांजपासून बढती व लौकिक महशूर जाहला.

१ नवाब आसिफदौला सैद महमदखान बहादूर जेफरजंग यांनीं माजी आबदुल आजीजखान मामलेदार यांजला तगीर करून आमचे वडील नवाब आबदुल आजीजखान बहादूर यांचे नांवें सनद किल्ले शिवनेर येथील सन ६ सहा जुलूस, तारीख २९ माहे सफर. खेरीज देहे येथील अंमल. कलम.

१ नवाब आसिफजा निजामुनमुलुक यांणीं माजी मामलेदार आबदुल रसूलखान यांजला तगीर करून, नवाब आबदुल आजीजखान बहादूर यांचे नांवें सनद परगणे मोमिनाबाद ऊर्फ चाकण किल्लेदारी व फौजदारी व झहागीर छ १ माहे जमादिलाबल सन १६ सोळा जुलूस. कलम.

२

सदरहू महाल फौज व जातसरंजाम मिळून दिल्ले, त्यांचा उपभोग करून होते.

अवांतर महालोमहालाचा ऐवज फौजखर्चास पावत होता. त्याजवर पेशवे पंतप्रधान हे मुलूख काबीज करित चालले, तेव्हां आमचे वडील शिवनेर किल्ला मात्र मजबूत राखून तेथें राहिले. त्याजवर बाळाजी बाजीरावसाहेब पेशवे यांनीं नवाब आबदुल आजीजखान साहेब बहादूर यांचे चिरंजीव नवाब महमुद अलमखान साहेब बहादूर यांसीं तह करून त्याजपासून शिवनेर किल्ला घेऊन, जातीस चाळीस हजार रुपयांची जहागीर शफतपुरस्कर करार करून, सन सव्वा खमसैन मया व अलफ, छ ३ जमादिलावल कराराच्या यादी व सनदा भोगवट्यास दिल्या. देहे सातः—

|                                         |                                      |
|-----------------------------------------|--------------------------------------|
| १ कसबें बेल्लें तर्फ मजकूर परगणे जुन्नर | १ मौजें मखमुलाबाद ऊर्फ आंद्रटे परगणे |
| दरोबस्त अंमल.                           | दिंडोरी इनामीगांव.                   |
| ३ परगणे नसिराबाद प्रांत खानदेश.         | २ तर्फ देपूर परगणे संगमनेर.          |
| १ मौजें भादली बुद्रुक.                  | १ मौजें नादणज.                       |
| १ मौजें नेरी.                           | १ मौजें जऊलकें.                      |
| १ मौजें मुन्हारखेडें.                   | २                                    |
| ३                                       | ३                                    |
|                                         | = ७ = ७                              |

४

१ खेरीज मौजें बारव तर्फ हवेली परगणे.  
जुन्नर पैकीं बाग, जमीन.

येणेंप्रमाणें बाळाजी बाजीराव पेशवे यांनी शिवनेर किल्ल्याचे मुबदला जातीस चाळीस हजार रुपयांची जहागीर दिल्ली. त्याची वहिवाट बाजीराव रघुनाथ पेशवे यांचे कारकिर्दीपर्यंत बाळाजी कुंजीर कारभार करित होते. तोंपावेतों भोगवटा जाहला. त्याजवर बाजीरावसाहेब यांनीं आमचे वडिलांपाशीं घोडा चांगला मातबर होता, तो आणविला. आमचे वडिलीं घोडा पाठविला नाहीं. याजमुळें कुंजीर यांजकडून पांच गांवच्या जप्त्या करविल्या. मौजें भादली व नेरी व मुन्हारखेडें व नादणज व जऊलकें येणेंप्रमाणें. व त्रिंबकजी डेंगळे यांनीं आमचा इनामी गांव मोंगलाईपासून मौजें मखमुलाबाद ऊर्फ आंद्रटे परगणे दिंडोरी हा गांव नाशिक येथील मामलत डेंगळे यांनीं केली, तें काळीं दाबला. गांवचे मोकळिकेविशीं बोलणी आह्मांकडील वकील बोलत होते. पुढें होळकर यांची लढाई पुणें मुकामीं होऊन बाजीरावसाहेब वसईस निघोन गेले. तेथून आल्यानंतर गांव मोकळे करण्याविशीं बोलणें चाललेंच होतें, तों कुंपणीसरकारचा अंमल जाहला. त्यास गांव मोकळे होण्याचें तैसेंच राहिलें. हल्लीं कुंपणीसरकारांतून बेल्लें गांव एक व इनामबाग जुन्नर येथें आहे, असें मात्र चालत आहेत. आमचे जातीस चाळीस हजार रुपयांची जहागीर दिल्ली होती. त्यास पेशजीपासून संस्थानचा खर्च आहे तोच आहे. उत्पन्न एका गांवचें कांहीं पुरत नाहीं. त्यास कुंपणीसरकारांतून मेहेरबानी होऊन

आमचे जातीचे सरजामाचे गांव व आमचा इनामी गांव मखमुलाबाद हे मोकळे करून देण्याविशीं हुकूम जाहला पाहिजे. कुंपणीसरकारचा अंमल जाहल्यानंतर मेहेरबान पाटेजर साहेब बहादूर यांणीं आमचे कागदपत्र पाहून इनामीगांव मोकळा केला होता. एक वर्ष वहिवाट आह्मांकडे जाहली. त्याजवर मेहेरबान ब्रिग साहेब बहादूर यांणीं गांवची जमी केली आहे. त्यास साहेबीं करमबक्षी करून आमचा इनामी गांव मखमुलाबादसुद्धां मोकळे करून दिले पाहिजे.

ब.

रफाअत व आलीमर्तबत शौकत व मा अलीमंजलत करम फर्माय आले मिया हेनरी ब्रौणसाहेब बहादूर एजंट प्रांत दक्षण दाम आलताफ हू.

ॐ अजदिल येकलास नवाब महमुद अलमखान बहादूर ठाणें कसबे बेल्हें सलाम बादज सलाम मजमुन अंकी येथील खैरसला जाणून, आंकरम फर्माय यांची शादमानी हरहमेशा कलमीं करून, मौरजेन्य व मुत्फखेर करीत असिलें पाहिजे. दरिविला आंकरम फर्माय यांजकडून आलताफनामा सादर जाहला. त्यांत मजकूर कीं, आपणांस किताब नवाब हें पद आहे. हें कधीं, कोणत्या सबबेन, कोणाकडून प्राप्त जाहलें, ह्मणोन वगैरे मजकूरचें पत्र तारीख २६ माहे आगष्ट सन १८५१ इसवी नंबर १०५३ चें आलें. ऐसीयास आमचे पणजे नवाब मकबुल अलमखान बहादूर हे दिल्लींत बंदगान अल्ली नवाब मुस्तताब मो आल्ला आलकाब नवाब आशफतदवला सैयद महंमदखान बहादूर जफरजंग सिपाहसाला निजामसरकार यांचे तीर्थरूप यांचे सरकारांत सरदारीचे हुद्यानें होते. दिल्लीहून हैदराबादेस आल्यानंतर आमचे पणजे यांजला या जिल्ह्यांतील बावन लक्ष रुपयांचा मुलूख तोडून देऊन, नवाब व बहादुरीची मरातब देऊन या मुलखांत पाठविलें. त्याजवर दहा वीस वर्षांनीं आमचे आज, पणजे यांचा व सुरतवाले नवाब साहेब यांचा वांकडेपणा आल्यामुळें, हे सुरत अठाविशी जिल्ह्यांत गेले. नंतर त्यांची व यांची लढाई होऊन आमचे पणजे तेथें लढाईतच मारले गेले. त्याजवर आमचे आज या मुलखांत होते. ते वेळेस निजामसरकार व पेशवेसरकारची लढाई जाहली. तेव्हां पेशवेसरकार आमचे आज यांस निजामसरकार यांजकडे जाऊ देईनात; आणि त्यांसीं लढाई करून शिवनेर किल्ला वगैरे मुलूख घेतला. जातीचे खर्चास मात्र सात आठ गांवें ठेविलीं. त्या लढाईचे गर्दीत कागदपत्र बहुत अफरातफर जाहले, व कुंपणीसरकारचा अंमल जाहला, तेव्हां निजामसरकारचें पत्र आमचे आजचे नांवें मात्र आलें होतें; तें बंदगान अल्ली नवाब मुस्तताब मो आल्ला आलकाब गौरनर बडे साहेब बहादूर यांचें हुजुरांत, बाबजी मल्हार जुन्नरकर हे वकिलीचें काम करीत होते, त्यांजबराबर पाठविलें. तेव्हां अल्लीशान बुलंद मकान गौरनर साहेब बहादूर मवसूफ यांणीं आह्मांवर करमबक्षी करून नवाब व बहादुरीचा मरातब दिल्ला. हल्लीं गौरनर कौसलांतून पत्रें आमचे मावें आज-

परीयंत येतात. त्यांत नवाब व बहादूर करमबक्ष करम फर्माय बडे साहेब बहादूर यांचे हुकुमाबमोजिब पत्रांत नवाब बहादूर लिहीत आहेत. त्यास बडे साहेब बहादूर यांणीं खुद आह्मांस मरातव दिल्हा आहे. हें चालविणें सरकाराकडे आहे. अस्सल कागदपत्र पाठवावे, तों बाबजी मल्हार वकील हे मयत जाहले. त्यांचे पाठी-मागें त्यांचे बंधु बाबुराव मल्हार यांजपाशीं होते. ते आह्मांस न देतां, कोणते मुलखांत निघोन गेले त्यांचा आजपरीयंत ठिकाण नाहीं, व जुने माहितगार मनुष्य कोणी-एक राहिलें नाहीं. जाहला मजकूर हुजुरांत जाहीर होण्याकरितां लिहिला आहे. तारीख २३ माहे सप्टेंबर सन १८५१ इसवी. जादा दरयाचे मेहेरबानी मौजदर मौजबाद.

### ३ सावनूरकर नवाब.

अ.

साहेब मुषफक मोकरम मेहेरबान आलताफ फर्माय बेगीरा हेनरी ब्रौणसाहेब बहादूर एजंट जिल्हा दक्षण दाम आषफाक हू.

ॐ आ ल्यानिब नवाब आबदुल दलेलखां दलेरजंग बहादूर सावनूर सलाम बादज सलाम खैर व पैक मुलाकात बहुजत आयात मषहूद जमीर मुनीर गर्दानीदाके आहेद. येथील हकिकत तारीख छ ३० माहे जिल्हाद सन १२६७ हिजरी, तारीख २७ सप्टेंबर सन १८५१ इसवीपावेतों, खेरीयत जाणोन आसाहेबांनीं आपले खैरीआफीयतेस हमेषा कलमीं करून दिलषाद करीत असलें पाहिजे. दरी आयाम आसाहेबांनीं तारीख २६ माहे आगट सन १८५१ इसवीचे थैली इबलाग फर्माविणें जाहलें कीं, सरकारचा हुकूम तारीख ३० माहे जुलई सन १८५१ इसवीचा आल्या-वरून कलमीं केलें जातें कीं, आपणास मरातव नवाब दलेरजंग बहादूर पद आहे. तें केव्हां, कोणत्या सबबेनें व कोणाकडून प्राप्त जाहलं, त्याचा व एकंदर पदवीचा, थोरवीचा व खानदानीचा इतिहास दाखलेनिशीं लिहून यावें व त्याजबराबर दाखला असेल तोही पाठविला पाहिजे ऐकीव मजकुराची हकिकत असेल व त्याजविषयीं कांहीं पुरावा नसेल तर तसेंही साफ लिहून यावें. परंतु जुने कागदावरून व माहितगार लोकांकडून जितके प्रयत्नपूर्वक माहिती सांपडेल तितकी सर्व लिहून यावी, ह्मणोन कलमीं करणें जाहलें. त्यास, पेशजी आमचे पूर्वज यांजकडे जवेरासा भवरासा कदीम पातशाहांकडून जागीर चालत आलेल्हा आहे. त्याजवर मलक आबदुल करीमखां याणें बहादूर लागथित पंधरावे खुरशीचा मलक अवतारखां मयाणे बहादूर तयमूरशाहा पातशाहा याचे जमानेपरी-यंत सदरहू जागीर अनुभवून पादशाही हुजुरांत होत. सीक्त (?) व खुरशीचा मलक माहूरखां मयाणे बहादूर यांणीं बाबरशाहा पादशाहाचे जमानेंत सदरहू जागीर अनुभविले.



तोंपरीयंत किताब मलक होता. मलक सारक्यां मयाणे बहादूर यांस हुमायून बादशाहा यांणीं नवा-  
बगिरीचा किताब दिल्ला. नवाब दोडाखां मयाणे बहादूर यांस शेरशा पादशाहा यांणीं आपले  
विजारत देऊन सरफराज केलें. एकोणिसा खुरशीचा नवाब आबदुल हसनखां मयाणे बहादूर  
यांस अकबर पादशाहा दिल्ली यांणीं आपले विजारत देऊन सविसावे खुरशीचा नवाब बहलोलखां  
मयाणे बहादूर यांणीं कितीएक वजिराचे नाईतिकाकी सबब जहागीर पादशाहा  
यांचे जमानेंत दिल्लीहून विजापुरासी आले. विजापुरीं अल्ली आदिलशा यांनीं पादशाहात  
करीत होते. नवाब साहेब याच सुभ्यांतील व नामवारीवर मेहेर नजर फर्माऊन, नांदेड बसवंत  
जहागीर नेमणूक करून देऊन सरफराज केलें. एकविसावे खुरशीचा नवाब आबदुल रही-  
मखां मयाणे बहादूर यांनीं सदरहू पादशाहा मोसूक यांचे जमानेंत सदरहू जहागीर तसरुक  
करून घेऊन हुजुरांत होते. बाविसावे खुरशीचा नवाब आबदुल करीमखां मयाणे बहादूर  
यांसी शिकंदर बादशाहा विजापुर यांजी आपली विजारत देऊन सरफराज केलें, व नवा-  
बसाहेब यांणीं मसूद्वा वजीर यांचे लडकीशी शादी करून घेतली. सबब परगणे बागलकोट  
तैनात दिल्ली होती. त्या वलीं प्रांत कर्नाटकांत जमीदार वगैरे यांणीं बागी होऊन पाद-  
शाही हुकूम न मानतां, काटकाई करून मुलकाची ताराण केले. प्रांतांत शाडी बाहून  
मुलक पायमल्लास आला, सबब जमीदारांचे तंत्रीवासे तालुके सरकार बंकापूर मध्ये बावीस  
महालची बंदोबस्तीकरितां नवाबसाहेब यांस कर्नाटक प्रांतीं रवाना फर्माविलें. त्याजवरी आल-  
मगीर पादशाहा दिल्लीहून विजापूरची पादशाहात घेणेकरितां येऊन विजापुरास वेढा घालून  
मोर्चे बसविले. कितेक दिवस हरदो पादशाहाचे लढाई जाहली. नंतर आलमगीर पाद-  
शाहा खुद्द मुतवजें होऊन किं३ हळा करणेंस हुकूम लष्करास दिले. मुळ गलबा होऊन  
विजापूरचे शिकंदर आदलशाहा पादशाहा यांणीं घाबरा होऊन तेविसावे खुरशीचा आबदुल  
रौफखा साहेब वसुलाचे पेगामकरितां आलमगीर पादशाहाचे हुजुरांत पाठविले. खान मोसु-  
फांनीं फार मेहनत करून सुख ठराव करून विजापूर पादशाहास व आलमगीर पाद-  
शाहाची भेट करवून विजापूर पादशाहास सालीना लाख रुपये नगद नेमणूक ठराव  
करून देऊन विजापूरचा किळा आलमगीरी पादशाहाचे स्वाधीन देवविला. या मेहनती  
व सुजाआती व कदिमी खानदानवर मेहेरनजर फर्माऊन, सदर आबदुल रौफखान  
साहेब यांस मनसब हम हजारी व सहा हजार स्वार इनायत करून, 'तैरेखां बहादूर  
दलेरजंग' ऐसे किताब सरफराज फर्माऊन, सरकार बंकापूर व सरकार अजमनगर वगैरे  
बावीस महालची सनद १०९७ हिजरींत देऊन, कर्नाटक प्रांतीं रवाना फर्माविलें. ते नवाब  
साहेब यांणीं कर्नाटकप्रांतास येऊन येथील जमीदार वगैरेसी तंत्री मोहवाऊन, शेर मसे-  
केस एक शेत देऊन या बमोजीब रयतासी कौल करार देऊन, तालुकेची आबादी करून  
कमाल आकारासी आणिलें. तें एकूण कसवें वेळगांव किल्ले जात जागीर व ठाणेजात  
सहित एकंदर बेरीज नाणे रुपये १७५५०७॥॥ सतरा लाख पंचावन हजार पावणे आठ

रुपये दोन आणेची जहागीर. सविसावे खुरशीचा नवाब आबुल गफारखां बहादूर दलेरजंग याजपरीयंत, फरुखशेर बादशाहाचे जमानेपावेतो सन ११५९ हिजरीपर्यंत, सुदामतपणानें चालला. सन ११६० सालीं पंचविसावे खुरशीचे नवाब मजीदखां साहेब बहादूर दलेरजंग याच वस्तीं बापुजी नाईक सरदार निसबत पेशवे यांजकडून, लाख दीड लाख फौजेनिशीं सावनूर प्रांतीं येऊन स्वारी केली, सबब लढाई कामील होऊन अखेर तह ठरला जें:—सदरहू प्रांतासी दरसाल पौण लाख रुपये बतरीक तसरीफ द्यावे. त्यांनीं सबबजहेनें दोस्ती ठेऊन नवाबसाहेबाचे पुस्तपन्हा ठेवीत असावा. याप्रमाणें करार मदार ठरोन तहनामा लिहून दिल्या. त्या बमोजीब सन ११६९ सालपरीयंत, सुदामतपणानें हरदो तर्फेनें चालला. सन ११७० सुरुसन सीत खमसैन मया व अलक सालीं, सविसावे खुरशीचे नवाब आबदुल हकीमखां साहेब बहादूर दलेरजंग यांनीं तख्तनसीन होते. त्यावेळीं मुजफरजंग नामें सरदार निसबत श्रीमंत पेशवे यांजकडून, यागी होऊन नवाब हकीमखां साहेबाचे पाठीसीं येऊन पडला. मशारनिव्हेचे तंबी वास्ते खुद्द नानाराव व सदाशिवराव व रघुनाथराव पेशवे दोन तीन लाख फौजानिशीं सावनूर मुक्कामीं आले. मुजफरजंग यांसी मागितलें. पाठीसीं पडला आहे, त्यां स दिल्या असतां नामोसी जातो, यावास्ते लढाई अखत्यार केले. सहा महिने कामील लढाई. होऊन शेवटीं तह ठरला जें:—मुजफरजंग यांसी पेशवेकडे देऊं नये. पार करून द्यावें. त्याबद्दल नवाब साहेबांकडे मुख्य होता त्यापैकीं निमे तालुके पेशवेकडे सलहेत द्यावे; निमे तालुके नवाबसाहेबांकडे चालावे. हरदो तर्फेनें दोस्ती राहावी, सबबजहेनें पेशवे यांनीं नवाबसाहेब यांसी दोस्ती ठेऊन, मसलतच्या वस्तीं मदतगारी करीत असावें. या बमोजीब आहद शरत होऊन, तहनामा ठरोन तालुकेची वांटणी जाहली. ते पेशवे यांचे हिसेस तालुका दिल्या तो एकद्वर रुपये ८५९१३९८० वजा जातां, बाकी नवाबसाहेबांकडे राहिला तो ८८५८६८॥॥ रुपयेचा. सदरहू तालुके वांटणी जाहली. त्याचा तहनामा तपशिलवार अलाहिदा असे. तहनाम्याचा करार बमोजीब सन ११९९ परीयंत, सदरहू जहागीर नवाब हकीमखां साहेब बहादूर दलेरजंग यांजकडे सुदामतपणानें चालला. सन १२०० सालीं पेशवे यांनीं आपले खंडणीकरितां टिपुसुलतान यांजवरी स्वारी करावयाबद्दल परशराम पंडित पटवर्धन व हरीपंत फडके व गणेशपंत ठेरे व होळकर ऐसें चौवे सरदारांची नेमणूक ठराऊन, दोन लाख फौजेनिशीं कर्नाटकप्रांतीं रवाना केलें. ते सावनूर मुक्कामीं येऊन उतरले. पठाणाकडून टिपुसुलतान यांनीं आपले जमावसहित मौजें हुरलीकोपानजीक शहर सावनूर येथें येऊन उत्तरेले. पेशवेकडील सरदारांसी मिळूं नये म्हणोन नवाब हकीमखां साहेब बहादूर दलेरजंग यांसी खत लिहून पाठविलें होतें. परंतु पेशजी पेशवे यांसीं आहद शरत होऊन तह ठरला आहे, त्यापैकीं इमान सोडूं नये. म्हणोन आपले इमानावरी कायम होऊन, बाबजयुद्ध टिपुसुलतानाचें व आमचें घराणेंसी निसबत असतां, टिपुसुलतानांसी न मिळतां पेशवेकडील सरदारांसीं मुलाखत करून शहरांत राहिले. पेशवे सरदारांसीं व सुलतानांसीं लढाई सावनूर

मुक्कामी जाहली. शेवटीं पेशवेचे सरदाराचे ठराव न होतां निघोन जाऊं लागले, त्यावस्तीं नवाब हकीमखांसाहेब बहादूर दलेरजंग यांसी शहरांतून हमरहा घेऊन गेले. तीन चार करोड रुपयांची जिंदगी व मुलख व दौलतेसहित पेशवे यांचे दोस्तीत आबारा करून, नवाब साहेब पुणेंस गेले. तेथें माधवराव पेशवे व नाना पंडित फडणीस होते. त्यांनीं नवाबसाहेबांसी बहुत वजहेनें खातरीजमा सांगोन करार केलें कीं, सुलतानाचा तह पांच सालचा आहे. नंतर मोहीम त्याजवरी होतो. मोहीम वस्तीं आपले तालुके कबजेंत घेतांच सुफुर्द करून देववीत आहों. तोपरीयंत जियाफत तरीक आम्हीं नगदी खर्चास देववितों. ते घेऊन पुणें मुक्कामीं स्वस्थ असावें. या बमोजीब करार ठरल्यावर नवाबसाहेब पांच वर्षेपरीयंत पुणें मुक्कामीं राहिले. याजवर चंदरोजांनीं टिपुसुलतान यांजवरी मोहीम कराव-याबदल आणिवीं दुसरे मोहिमेस परशराम पंडित पटवर्धन याजला हमरहा जरीपटका देऊन लाख दीड लाख फौजेनिशी कर्नाटक प्रांतेसी रवाना केलें. रवानगीचे वस्तीं नाना पंडित फडणीस व माधवराव पेशवे यांणीं सरदार मोसुफापाशीं ताकीद केले कीं, नवाबसाहेब यांसी हमरहा घेऊन जावें. त्यांचा तालुका कबजेंत घेतांच त्यांचे सुफुर्द करून देणें. पेशवे यांचे हुकुमावरून नवाबसाहेब यांसी हमरहा बोलावन घेऊन, शहर सावनूर येथें राहविले आणि तालुका कबजेंत आलाच होता. तालुका सुफुर्द करून देणें ह्मणोन परशराम पंडित यांसी नवाबसाहेब बहादूर दलेरजंग यांणीं बोलिलें. याजवरून त्यांणीं करार केले कीं, मोहीम अखेर होऊन पुणेंस जाते वस्तीं तालुका जिमेसी देऊन जाऊं. बिलफेल कारडिगी महाल सत्तर हजार होनांचा आहे. आपले कबजांत ठेवावा ह्मणोन नवाबसाहेब बहादूर दलेरजंग यांसी खातरीजमा सांगोन, कारडिगी महाल सुफुर्द करून देऊन, परशराम पंडित यांणीं पट्टणांसी निघोन गेले. तेथें लॉर्ड कार्नवालीस, मेडस (मेडोज?) सरदार निसबत कंपनी इंग्रेज बहादूर यांजकडून आले होते. सुलतानाची व सरदाराची लढाई कामील होऊन शेवटीं तह ठरला होता. परशराम पंडित यांणीं सावनूर तालुका पेशवे यांजकडे हिशेंत लावून घेतले. मोहीम अखेर होऊन पुणेंस जाते वस्तीं तालुका सुफुर्द करून द्यावा ह्मणोन, नवाब साहेब बहादूर दलेरजंग यांचें बोलणें पडलें. त्यास पेशजी करार ठरला होता ते बदलून परशराम पंडित यांनीं बोलूं लागले जे, मोहीमच्या खर्चास पन्नास लक्ष रुपयेपरीयंत सावकारी कर्ज जाहलें आहे, सबब तालुका कर्जांत आहे. श्रीमंतांचे सरकाराकडून सावकारी कर्जाचा उलगडा करून घेऊन, मुलूख आपलेकडे देऊं. तूर्त कारडिगी महाल मात्र आपलेकडे आहे तैसा असों द्यावा. या बमोजीब करार करून परशराम पंडित पुणेंस गेले. दोन सालपरीयंत कारडिगी महाल दरोबस्त नवाब साहेबांकडे चालला. तिसरे सालीं रामचंद्रपंत पटवर्धन यांनीं तालुकेची दरीयाफत वास्ते सावनूर प्रांतीं आले हाते. त्या वस्तीं कारडिगी महालची जमी करून, नगदी चार हजार रुपये दरमहा सरसुभेकडून नेमणूक ठराऊन देऊन गेले. कांहीं दिवस

चालले. नंतर नवाब आबदुल हकीमखां साहेब बहादूर दलेरजंग यांचा अंतकाळ सन १२०८ हिजरी साली जाहला. तेव्हां इजानिबेचे कबलगा सत्ताविसावे खुरशीचे नवाब आबदुल खैरखां साहेब बहादूर दलेरजंग यांनी पट्टणांत टिपूमुलतान यांजपाशी होता. हें खबर समजल्यावर सुलतान यांनी आमचे कबलगा साहेब यांस रुकसत देऊन, सावनुरासी रवाना केलेंवरून त्यांनीं येथें येऊन तख्तनिसीन जाहले. येथें श्रीमंत पेशवे यांजकडून मोरो बापूजी सरसुभेचे कामावरी होते. पेशजी नवाब साहेब बहादूर दलेरजंग यांजकडे कारडिगी महाल चालत होता. त्याबमोजीब चालवावा अथवा खर्चास नगद द्यावा. या बमोजीब जाबसाल केले असतां, ताजा सनद पाहिजे म्हणोन उजूर केलें, तरी पुणेंत जाबसाल करवून आठेचाळीस हजार रुपयेची सनद आपले नांवीं आणोन सरसुभेस दिल्या, त्याजवरी कांहीं दिवस चालला. नंतर नवे सरसुभे येऊ लागले. नेमणुकीचे रुपये सनदबरहुकूम सुदामतपणानें पोहेंचेनात, सबब तकलीफ नेहायत गुजरु लागले. तों इतक्यांत बफजलइलाही मेहेरबां दोस्त जनरल वसली साहेब बहादूर इंग्रज, यांची स्वारी भोंडजी वाघ याचे तंबीकरितां सावनूर प्रांतेस आली. त्या वस्तीं सरसुभा बाळकृष्ण पंडित पटवर्धन यांजकडे होता. इकडील आहवाल दरीयाफत फर्माऊन मेहेरबानगी करून सरसुभेसी ताकीद केले कीं, सनदबरहुकूम आठेचाळीस हजार रुपये नगदीच्या पुरवण्या तुम्हांकडून होत नाहीं. त्यापक्षीं सदरहू रुपयेची ऐवजी हाल वसुली तालुका लाऊन देणें, म्हणोन ताकीद करून त्यांनीं गेले. नंतर सरसुभे यांनीं आठेचाळीस हजार रुपयेची ऐवजी शहर सावनूर व देहे २५ सुद्धां कमाल आकारानें इजानिबेचे वडिलांचे नांवानें दिल्ले आहे, ते चालतात. परंतु खेडीं अगदीं उजाड आहेत. जुजबी लावणी आहे. आमचा खर्च भारी आहे. आमदनी जुजबी, यांत बिलकुल निभावणी होत नाहीं. या बाईस बहुत हलाखी गुजरत आहे. कदीमपासून आमचा घराणा पादशाहीकडून सरफराज होऊन, पादशाहाकडून परवर्ष जाहलेला आहे. बिलफेल हकताकजी खुषफी व तरीच पादशाहींत आपलें घर दिल्लें आहे, यांत आपलेसी मुनासब दिसेल त्या बमोजीब आमचा बंदोबस्त ठराऊन द्यावा. यांत आपली नेकनामी आहे, ह्मणोन इजानिबचे कबलगा साहेब यांनीं अल्लीषान एलफिस्टन साहेब बहादूर गवरनर यांस जाहीर केलेंवरून, साहेब मोसुफांनीं या दौलतीचा आहवाल व पेशजी मुख चालत होते ते दाखला दरीयाफत करवून, सालीना साहा हजार रुपये पेनसीन करून दिल्लें होतें. इजानिबचे वडील नवाब आबदुल खैरखां साहेब बहादूर दलेरजंग यांचा अंतकाळ जाहलेवर, अठाविसावे खुरशी इजानिबचे वडील बंधू नवाब फयजखांसाहेब बहादूर दलेरजंग यांनीं तख्तनिसीन जाहले. नंतर सुमारे दोन महिन्यानें त्यांचा अंतकाळ जाहला. त्यांचे पोटीं फर्जद नसणेंकडून इजानिबचे दुसरे वडील बंधू २९ एकोणितिसावे खुरशीचे नवाब मुनवरखांसाहेब बहादूर दलेरजंग यांसी गादीनिषीन जाहले. त्यांनीं सुमारे साहा वर्षे

दौलत करून अंतकाळ जाहला. त्यांचे पोटीही फर्जद न होणेंकडून अल्लीषान सरकार मेहेरबानगी करून इजानिबास गादीनिषीन केलें आहे. आंमुषफाकांनीं एकंदर लिहिलें तें आहवाल खालीं लिहिलेल्या सनदपत्राच्या नकला व खुरशीनामा मुतालेंत आणून, सुदामदपासून चालत आलेले मर्यादेप्रमाणें, किताब आलकाब वगैरे चालवणेंचे बोजे आंमुषफाकडे आहे. पूर्वी इजानिबचे दौलतीस मुख्य पुष्कळ चालत होते, ते सारे जाऊन जुजबी राहिला. परंतु मर्यादा व आलकाब किताब जें सुदामदपासून चालत आहे, त्याच-प्रमाणें आ अल्लीषान सरकारही आजपरीयंत चालवीत आहेत. येइंदाही चालवितील अशी इजानिबास उमेद आहे. सब वजहेनं इजानिबावर आंमुषफाकांची मेहेरबानगीच नजर असली पाहिजे. आंमुषफाकाचे मुतालेकरितां सनदपत्राच्या नकला पाठविल्या तें तपशलिः—

१ आलमगीर पादशाहा गाजी यांनीं नवाब आबदुल रौफखां साहेब यांस मनसब हप्त हजारी व साहा हजार स्वार सरकार बंकापूर, सरकार आजमनगर वगैरे मुख्य व दलेरखां बहादूर दलेरजंग ऐसे किताबसहित सरफराज करून सन १०९७ हिजरींत सनद दिल्ली, त्याची नकल.

२ आलमगीर पादशाहाचे वजीर आमिरुल—उमराव यांनीं सरकार तोरगलची सनद, नवाब दलेरखां बहादूर दलेरजंग यांस इनायत फर्माऊन सन ४८ जुलुस दिल्ली. त्याची नकल.

३ आहमदशाहा पादशाहा गाजी यांचे वजीर गाजोदीखां बहादूर फेरोजंग निजामुलमुलक यांनीं पादशाह यांवरून, पालखी झालरदार देऊन, सन ११६४ हिजरीत सनद दिल्ली. त्याची नकल.

४ इजानिबाचे पडदादा नवाब आबदुल मजीदखां साहेब बहादूर दलेरजंग यांस श्रीमंत बाळाजी बाजीराव पेशवे यांस सुरुसन सच्चा आबैन मया व अलफ सालीं तहनामा जाहला, त्याची नकल.

५ सव्विसावे खुरशीचा नवाब आबदुल हकीमखां साहेब बहादूर दलेरजंग यांनीं आपले लेक दलेलखां हणून होता तो आपले समक्ष वारला. मूळ ते देलरखां, यांचे लेक आजीजखां हणोन होता, त्याचें नांवीं शहाआलम पादशाहा गाजी यांकडून सनद दिलावरजंग हणून किताब सन ११९१ हिजरींत आणविले. त्याची नकल. आजीजखांही पांच वर्षे उमरेचा होऊन सदरहू नवाब हकीमखां साहेब बहादूर दलेरजंग यांचे समक्ष वारला.

६ श्रीमंत बाजीराव पेशवे यांनीं इजानिबचे वडिलांस चार हजार रुपये मुक्रर करून मोरो बापूजी यांचें नांवीं सुरुसन मयातेन व अलफ सालीं सनद दिल्ली, त्याची नकल.

७ श्रीमंत बाजीराव यांची सदरहू चार हजार रुपयांविशीं परशराम रामचंद्र यांचे नांवीं सुरुसन मयातेन व अलफ सालीं सनद दिल्ली, त्याची नकल.

८ श्रीमंत बाजीराव यांनीं सदरहू चार हजार रुपयांविशीं धोंडो बळाळ यांचे

नांवीं सुरुसन मयातैन व अलफ सालीं सनद दिल्ली त्याची नकल.

९ सदरहू नेमणुकींत शहर सावनूर-मुद्दां २५ गांव नेमून दिल्लीविशीं बाळ-कृष्ण लक्ष्मण यांनीं कृष्णाजी वेंकाजी याचे नांवीं लिहिलें, ती सनदेची नकल.

१० इजानिबचे वडिलांस सालीना ६००० रुपये पेनसीन आअल्लीषान सर-कारांतून करून दिल्लीविशीं सन १८२० इसवीत सनद दिल्ली, त्याची नकल.

११ इजानिबानीं गादीनिषीन जाहल्या वस्तीं मेहेरबां बाबर साहेब बहादुर यांनीं सन १८३४ इसवीत जाहिरनामा दिल्ली, त्याची नकल.

१२ इजानिबास सनदेशिवाय दिवाणी व फौजदारीचा आस्लीयार पुरा आहे, हणोन आअल्लीषान सरकारांतून सुरुसन सीत मयातैन व अलफ सालीं पत्र आलें, त्याची नकल.

१३ खुरशीनामा.

येणेंप्रमाणें यांत मलफुजआस आमुषफकांनीं मुलाहिजा फर्मावितांना जाहिरात येईल. हमेषा खत खडीं पाठऊन दोस्तीचीं तरकी करित असलें पाहिजे. ज्यादाचे नवी सद आयाम षादमानी मुदाम मुसादामबाद.

ब.

नवाबसाहेब सावनूरकर यांजकडोन, त्यांचे वंशजापैकीं कोणी राज्य मिळविलें व तेव्हांपासून एकमेकांपुढें कोणकोणते सालीं पुरुष गादीवर बसले व त्यांचे शिके कशाप्रकारचे होते त्याजबदलः—

अवक नंबर ११६ पैवस्ती तारीख ८ आकटंबर सन १८५३ इसवी. मुक्काम बेळ-गांव, साहेब मुषफक मोकरम मेहेरबान आलताफ फर्मायबंगश मेस्तर येथरीजसाहेब बहादुर इस्कोयर, असिस्टंट इनाम कमिशनर दाम आशफाम हू.

छे अजजानिब नवाब आबदुल दलेरखां दलेरजंग बहादुर सावनूर, सलाम बादज सलाम. षरहषौक मुलाकात बहुजत आयात मषहुद जमीर मुनिर गर्दानीदाम आयेद येथील हकीकत तारीख छ २५ जिल्हेज सन १२६९ हिजरी, ता. २९ माहे सपटंबर सन १८५३ इसवीपावेतों खैरयत जाणोन, आसाहेबांचे खैर व आफयतेस कलमीं करून, दिलषाद करीत असलें पाहिजे. दरीआयाम आसाहेबांनीं तारीख २५ माहे जुलै सन १८५३ इसवीचे थैली इबालाग फर्माविलें, तें पोहोंचून मजमून जाहीरेंत येऊन, जबाब कलमीं करणेंत येतो कींः—आम्हचे मूळपुरुष दिल्लीहून या कर्नाटक प्रांतास येऊन, सन हिजरी १०९७ सालीं, नवाब आबदुल रऊफखांसाहेब, किताब 'दिलेरखां दलेरजंग बहादुर' यांनीं दौलत संपादन करून, सदरहू सनापासून, सन ११३९ हिजरी सालपरीयंत, दौलत अनुभवून इंतिकाळ जाहले. नंतर सदरहू नवाबसाहेब यांचे ज्येष्ठ पुत्र नवाब आबदुल फताखांसाहेब बहादुर दलेरजंग यांणीं वडिलांचे जागेवर मसनदनसीन होऊन, तीन महिनेंत इंतिकाळ जाहला.

नंतर सदरहू फताखांसाहेब बहादूर यांचे पोटीं अबलाद नसल्यामुळे त्यांचे लहान बंधू नवाब आबदुल महमदखांसाहेब बहादूर दिलेरजंग यांणीं सहा महिनेपरीयंत, दौलत अनुभवून इंतिकाळ जाहले. नंतर नवाब आबदुल गफरखांसाहेब बहादूरखां दिलेरजंग यांणीं सन ११३८ हिजरीपरीयंत दौलत करून, इंतिकाळ जाहले. नंतर नवाब आबदुल मजीदखांसाहेब बहादूर दलेरजंग यांणीं गादी नसीन होऊन सन ११६८ हिजरी परीयंत दौलत अनुभवून इंतिकाळ जाहले. नंतर सदर सन ११६८ हिजरी नवाब आबदुल हकीमखांसाहेब दिलेरजंग बहादूर हे गादीनसीन जाहले, तों सन १२०० हिजरीपर्यंत दौलत अनुभवली. येणेंप्रमाणें आमचे पूर्वज लोकांनीं दौलत अनुभविली आहे; परंतु मूळपुरुष नवाब आबदुल रऊफखांसाहेब बहादूर दलेरजंग बिन नवाब आबदुल करीमखांसाहेब यांस, बादशाह-कडून किताब होणेंपूर्वीं, आपलें नांव आबदुल रऊफ इवने आबदुल करीम ह्मणोन, मोहर तयार करवून तीच मोहोर चालवीत होते. नंतर आलमगिरी पादशाहा गाजी यांजकडून दलेरखां दलेरजंग बहादूर ह्मणोन, सन १०९७ हिजरींत किताब जाहलेवर, सदरहू किताब दलेरखां बहादूर दलेरजंग ह्मणोन मोहर तयार करविली, ती कितेक दिवस चालली आहे. नंतर जे ज्या सनांत गादीनसीन जाहले त्या सनांची नवी मोहर करवून पूर्वीचा किताब दिलेरखां बहादूर दिलेरजंगचे किताब कायम ठेऊन, शिक्षा करून चालवीत होते. येणेंप्रमाणें ही दौलत सन १२०० हिजरीपर्यंत चालत आली; तेच सालीं टिपु सुलतान यांचा आमचा आज्ञा नवाब आबदुल हकीमखांसाहेब बहादूर दिलेरजंग यांचा नाइतफाकी होते. सबब लढाई होऊन शेवटीं टिकाव न होतां, शहर सोडून जातांना करोडों रुपयांची जिंदगी व जवाहीर, वगैरे सोडून गेले. तेव्हां खजानेंत असतील त्या मोहराही साऱ्या सोडून गेले. ते वस्तीं स्वारीबरोबर दोन मोहोरा मात्र लहान १, व थोरली १; ऐशा दोन मोहोरा होत्या. त्या शिलकींत असतील त्या दोन मोहोरा हल्लीं इजानिबापारीं आहेत. अलाहिदा एका कागदावर छापून त्याचे बाजूस शेरा लिहिला आहे. तो या लगत आहे. मुताला फर्मावितांना जाहीर होईल. याशिवाय इकडील दौलतींत दिवाणगिरी केली ते लोकांस, इनाम वगैरे देणेंचें स्वतंत्र कांहीं नाहीं; परंतु जें इनाम वगैरे देणेंचें असल्यास, गादीवर असणार नवाबसाहेब यांस अर्ज करून, नवाबसाहेब यांचा परवाना करवून, त्या बमोजीब ताकीद दिवाण यांनीं देणेंचा दस्तूर आहे व ही दिवाणगिरी केली त्या लोकांच्या मोहरा कांहीं शिलकेंत नाहींत. हमेशा खत खुतूत पाठवून दोस्तीची तरकी व मेहेरबानगी करीत असलें पाहिजे. ज्यादा छे नवीसद. आयाम बादमानी मुदाम मुस्तताम बंद.

क.

यादीदास्त साबनूर नवाब यांचें संस्थानचा सिलसिला कैफियत, वंशावळी वगैरे तपशील सुभा धारबाड.



१ अवरंग चवथामध्ये सावनूरचे सिलसिला पादशाहाची कैफियत तारीफ करीत आहे. ज्यानीसारखां आफगाण पठाण आडनाम मयाणा ह्मणणार अमीर, विजापूरची पादशाहात ही आदिलशाहाची आहे. इसमाईल आदिलशाहांनीं २५०० स्वाराची मनसब देऊन ठेविले होते. खानमजकूर फार काळा होता. कारण काळा पाहडा ह्मणून नांव ठेविलें होतें. इबराहिम आदिलशाहाचे सरकारांत बहुत बढती होऊन होता. अहमदनगरचे लढाईत बादशाहाचे बुरहान निजामशाहाचे मोकाबिलेंत फार मेहनत करून मरून गेला. त्याचे लेक दोघे होते. थोरले लेकाचें नांव अजीजमिया किताब. त्याचे फते हे लष्कर खालील लेकाचें नांव नबीखां किताब, त्याचे रणमस्त हजारी मनसबेनें ७०० स्वार, उंटावरी नगरा, लष्करचे मक़ेसरी यासी देऊन शिंदे बाजूवालेंत दाखल केले. थोर लेकास बापाचे जागेवरी बसविला. सदरी आजीजमियांनीं लष्करांत सामील होऊन लढाईत फार मेहनत केली. करितां तीन हजारी मनसब, थोर झेंडा, नगरात इनायत केलें. खानमजकुरांनीं गुलबर्गाचेजवळी पादशाहा कुतुबशाहाचे लढाईत गोळीचा मार लागून मरून त्याचे लेक जबरखान बापाचे जागेवरी बसला. यानें शिपाई लोकांस दिलासा करून फार हुषीयारीनें ठेविलें होतें. फार शाहणूण करून राहत होता. जेव्हां बादशाहाचे हुकूम जे होतील ते बजाऊन फार हुषीयारी करून राहत होता. सर्वत्र मनसबदारांचे मध्ये फार बुद्धिवंत ह्मणवून घेऊन राहत होता. मागून कितेक दिवसांनंतर विजापूरची पादशाहागिरी अल्ली आदिलशाहास जाहल्यानें तमाम मनसबदारास जहागीर मोकरर पावली. तेव्हां यासही बंकापूर वगैरे २२ महाल कमाल ५००००० लाख आणखी कितेक हजार इतकी जहागीर देऊन पंजे हजारी मनसब्याचे नांवीं मोकरर केलें. यांनीं चार हजार स्वारांनिशीं चाकरी केली होती. आपला लेक बहलोलखां यास नायबी मोकरर करून मुलकाचे बंदोबस्ताकरितां पाठविला. हा आपले जहागिरीचे मुलकास आला. तो काळा होता, त्याजवरी मलिन वस्त्र नेसत होता. करितां लष्करचे लोकांनीं तमाम काळा पाहडा ह्मणून नांव ठेविलें होतें, आणि लोकांस उपद्रव देत होता. अंतःकरण ह्मणायाचें तो नाहींच नाहीं. याजकरितां रकटे बहलोलखां काळा पहाड ह्मणून लोकांनीं नांव ठेविलें होतें. याचा बाप जबरखान यानें आनागोंदीस राजारामराजास मारिलें. याचे हंगामांत कितेक दौलत तोडून टाकिली. अखेरीस लढाईमध्ये भाल्याचे मारेकरून मरून गेला. मागोन पंजे हजारी मनसब २२ महालचे सुभा बापाचे वेळीं जे काय होतें ते सारें बहलोलखांनें आपले नांवें सनद करून घेऊन खिलात वगैरे घेऊन १०२२ हिजरींत येऊन दाखल जाहला. मुलकाची बंदोबस्ती वगैरे लोक पूर्वभागीं आठरा कोसांवरी जान वारनहळ्ळी ह्मणून होते, ते गांवचें पाणी व गांव चांगला आहे ह्मणून थोर थोर घराणदारांस आणून ठेवून, थोर वस्ती करून सावनूर ह्मणून नांव ठेऊन तेथें आपण राहिला. बंकापूरचे किल्ल्यांत ठाणें ठेविलें. किताबामध्ये बंकापूर प्रसिद्ध आहे. तेव्हां वस्ती चांगली होती. बंकापूरचे दोन कोसांवर जाबीनगडा



हणून किल्ला नाही, तो एक पहाड होता. त्या पाहडांत एक गुहा आहे. ती जागा मोठे रम्य स्थळ तपस्वी लोक राहण्याची आहे. पहाड व बंकापुरचेमध्ये बागाईत होती. भरपूर शहर पर्व- ताचेमध्ये हऱ्याली असणेंकडून वेहऱ्ता यांनं वैकुंठसारखे शोभत होते. अलीकडे वस्ती खराब जाहल्यामुळें दोजखां यांनं एक नरक लोकापेक्षां खराब जाहलें आहे असें कांहीं वर्णिलें आहे. कितेक दिवसांनंतर विजापूरचे बादशाहींत आदिलशाहाचे लष्करांत फितूर जाहला. हाही फितूर जाहला. इतक्यामध्ये आवरंगजेब यांनीं दिल्लीचे पादशाहाकडून रुकसत घेऊन मुलकाचे बंदोबस्त करितां निघून अहमदनगर वगैरे किल्ला जयांनं घेऊन येत असतांना कितेक अमिरांनीं जाऊन मिळून नजर वगैरे नेऊन दिल्ली. या खानमजकुराहीं तीन लाख रुपये नजर आणिली. कितेक अपरूप पदार्थ मेवा जिन्नस वगैरे नजर देऊन, पुरातन उमदा मनसबदार आलमगिरींत दाखल जाहले सारखें करून घेऊन, सनदा वगैरे करून घेऊन, करनूलचे इजरे खादनी व बेडे जर्ब यांस शिफारस करून यांणींच करनूलचे मनसबीदारी देवविली. मागून कितेक जमीयत ठेवून खानमजकुरांनं कितेक पाळेगारांस दस्तगीर करून, ४९ वर्षे सुखरूप दौलत करून, विजापूरचे अखेर दौलत शिकंदर आदिलशाहाचे वेळीं बहलोलखान मरून गेला. त्याचा लेक दिलेरखां किताब हाच पिरखां बहादुर बापाचे जागेवरी बसला. मुलकाचा बंदोबस्त केला. आदिलशाहाचे वेळीं जाहीरीयानं पाहणारे लोकांत दोस्ती ठेवणें- सारखे कागदपत्र पाठवून दोस्ती ठेवीत होता. परंतु मनःपूर्वक नाही. कितेक दिवसांत दिल्लीची बादशाहात आलमगिरी बादशाहास जाहल्यानं दक्षणेचे बंदोबस्ताकरितां निघाला. हें वर्तमान ऐकून यांणीं २००० स्वार, ३००० प्यादे जुमला पांच हजार जमीयतसुद्धां घेऊन हुजूरान्त मुलाकात केले. बादशाहाचे खातरदारी ठेविले. ११९७ हिजरींत विजापूर आलमगि- रानं फतेह केला. तेव्हां हा सांगात होता. शाहाजादा सुलतान मोजम अहमदाबाद बिंदरचे किल्ला सोडवणेंकरितां रुकसत जाहला. एक महिना सलह केलें. मागून त्या स्थळाचे किल्लेदार व मीर- जान नबखषी आदिलशाहा किल्लेदार यांणीं बरुद करून जळून गेला. फते जाहला. जफराबाद म्हणून नांव ठेविलें. मागोन हिंमत कलजी सरदारानं खमष मुकरमखां सिराजी मोहमद खलिल आखबरा बंदीयाकेकाफीत नाम उठविणार फंदफितूर केला. ही सर्वत्र दौलत आपण करावी हणोन मनांत करून घेऊन, फितूर करून नानाप्रकारें बोधन करून शाहाजादेस बोलावून घेऊन जाऊन, बिंदरचे शहरांत कुतबाव नेईल, आणखी बहुत ज.ग. शाहाजादेस फिरवील. तेव्हां सुलतान आलमगिरीनं आपले सांगात होते, ते अमीर आणखी दक्षणवाले तमाम अमिरास फुसलकी शाहाजादेस मार लागेनासारखे जाननिरीं कोणी धरून. आणील काय हणून म्हटलें. हें फर्मान ऐकून सर्वत्र अमीर खामोष राहिले; तेव्हां या खानमजकु- रांनीं उठून बंदगी बजा लाऊन, गुलामास हुकूम जालीया बदस्तूर हुकूम शाहाजादेस आणूं म्हणून अर्ज केले. हे अर्ज खातरेस आणून बहुत खुषीकरून दिलेरखां म्हणून किल्ला व हत्ती देऊन जरेचे आंबारी वगैरे इनायत केले. मागून रुकसत घेऊन तो जमीयत-

सुद्धां रातोरात निघून षाहाजादेचे जवळ जाऊन हा बंदा आपला आहे; आपले दौलतेचे सरफराज पावले आहे; आपली दौलत खाऊन आझीं जाइफ यानें वृद्ध जाहलों असों. कांहीं अर्ज लिहून पाठविले. हें ऐकतांच षाहाजादेनें कोणी आमचे आसच असेल म्हणून बार तुम्हींच निमक हलाल आहां, तुम्हीं येणेंचें आम्हास अगत्य आहे म्हणून हुकूम सादर जाहले. बमोजीब हुकूम यांणीं येऊन मिळाले. भेट जाहली. खास सडेच आसपास बघतां गुलाल बड यानें बंदांतच कनाथ तेथें उतरणेंस जागा दाखविली. फार आदर केलें. मागून स्वल्प दिवसांत बादशाहाजादेस व यास अत्यंत मित्रत्व पडलें. एक दिवस स्वारीस जावे म्हणून तजवीज करून खानमजकुरानें आपले हत्तीवर आंबारी सिद्ध करून आणविली. पहिले षाहाजादेस बसवून पाठीमागें आपण बसून हत्ती चालविला. वाटेंत षाहाजादेचे संगतांत बोलत बोलत, आलमगिरी कोट होता त्याची वाट धरली. षाहाजादेचे संगतांत कितेक लष्करवाले तमाम येऊन त्यांणीं हें पाहून दगा जाहला म्हणून लष्करवाले तमाम लोकांस येऊन कोठें जातां म्हणून हरकत केली. त्या सर्वत्रांस मारून नीट येऊन येऊन बादशाहाजवळ लेकास हजर केला. येणेंकरून बादशाहानें फार संतोषें करून गुलाल बड यास मोखमाली कनात कांहीं मरातब इनायत केले. इतके आमिरामध्ये आम्हांस फार बहुमान जाहले म्हणून खानमजकूरास गर्व जाहला मागोन कितेक दिवसांत सोलापूर वेंकटप्पा नाइक म्हणून होता. मोठा मजबूत होता. जमीयतही फार ठेविली होती. सोलापूरचा किल्ला ध्यावा म्हणून दोन तीन वर्षे बादशाहानें खस्त केलेनेंही साध्य जाहलें नाहीं. म्हणून मागून दिलेरखां यास आज्ञा जाहलीया जफर फंदफितूर करून त्यास बोलावून आणून बादशाहाचे रुबरु केले. तेव्हां दोन लाख सत्तर हजार रुपये पेश-कष मोकरीर करून, एक लाख रुपये तकसीर नजरान इतका त्याजकडून वसूल करून, खजानेस दाखल करून त्याचे मुलूक त्यास सुफूद केले. मागून कितेक दिवसांनंतर १११८ हिजरींत आलमगीर पादशाहा मरून गेला. कितेक दिवस भाइबंदाचे इतीफाकरून बरोबर चालिले. मागून स्वल्प दिवसांनंतर महमद आजम बहिरशाहा व सुलतान मोजमशाहा हे उभयतां भाऊ भाऊ आपण दौलत करावी ह्मणून कजीया सुरू जाहला. दोघांचे लढाईमध्ये दिलेरखांचे काका नबीखां रणमस्त यांचे लेक आजमखां यानें बहादुरशाहाचे रुबरु हातीं चालवून मरून गेला. मागून दिलेरखान किनारा होऊन स्थळास येऊन ३२ वर्षे दौलत करून मिजाजचे नादुरुस्तीमुळें मरून गेला. मागून त्याचे जगुगेवरी त्याचा लेक आबदुल गफूरखान जाहला. खान जाहाखान दखनचे ६ सुभेचा बंदोबस्त करणेंस्तव बहादूरषा हे आलमगिरीचे हजुरांतून रुकसत घेऊन निघाला; तेव्हां खानमजकूर अवरंगाबादेवरी होता. यांनीं येऊन खानजाहाचे सांगात मिळून आपले ताबडकेचा बंदोबस्त करून घेऊन त्याचे हातीं रुकसत घेऊन आपले स्थळास येऊन राहिला. कितेक दिवसांनंतर शिरहद्दीवाल्याचें फार माबल्य जाहलें आहे, त्याचें खतल करणें मन्सब

आहे हणून आपले खानजाखानमियास सरदार करून त्याचे संगत कितेक जमीयत देऊन शिरहद्दीवाल्याची खतल करणेंकरितां पाठविलें. शिरहद्दीवालेही जमीयत घेऊन आले. ते खबर ऐकून थोडेबहुत जमीयत करून येऊन रातोरात लष्करावरी पडून, तमाम लोकांस मारून आपआपले स्थळीं जाऊन राहिले. ही खबर खानमजकुरांनीं ऐकून यास मारणें-करितां भारी जमीयत व जंगी सामान सिद्ध करित होता. इतक्यामध्ये मराठे येत आहेत हणून खबर ऐकून याचे संगत लढाई करणेंचे मोकुफ करून, कितेक ऐवज घेऊन सलाह करून तिकडील तयारींत राहिले. इतकीयांत खान जाहाखान मरून गेला. त्याचे बदली हुसेन मिरअल्लीखां अमिरुल उमरा सैदचे जातीचा यासी हुकूम होऊन आला. तेव्हां खानमजकूर आबदुल गफरखां यांणीं आपला लेक गफरमियांसी मैअसबाब तोहफा वगैरे देऊन बुरहानपुरावरी चाल केली. तेथून बहाली मनसब जाग्रीच्या सनदा आणून घेतल्या. मागून २८ वर्षे खानमजकुर दौलत करून मरून गेला. मागून त्याचा लेक गफरमिया बापाचे जागेवरी बसला. रास्ते मराठ्याची फौज घेऊन याचा मुलूख ताराज करणेस्तव निघाले. खानमजकुरांनीं जंगी सरंजाम घेऊन जाऊन तो तेथें दाखल जाहला. तो त्याचे मुकाबिला मिश्रीकोटावरी जाहला. चांगली लढाई जाहली. मराठ्यावरी यानें जबरदस्ती केली. मराठे शिकस्त जाहल्यानें मिश्रीकोट फांते करून घेतला. मागून मराठ्यांनीं बाकी फौज घोरपड्याची, मिरजेचे गोपाळरावसाहेबाची फौज घेऊन खानमजकुरचे तालुके लुटणें सुरू केलें. त्यांनीं त्याचे लष्करास धक्का दिला होता. मागोन मराठ्यांनीं काय उगच खटपट हणून बेजार होऊन मिरजवालेचे मारीफत ६०००० रुपये आह्मीं द्यावें. दिल्लेनंतर खानमजकुरांनीं मिश्रीकोट सोडून द्यावे. असे कांहीं जाबसाल लाऊन मागून कराराप्रमाणें ऐवज घेऊन मिश्रीकोट सोडून घेतले. ते आपले स्थळास गेले. हे आपले स्थळास आले. यांनीं आपले स्थळांत येऊन ९ वर्षे दौलत करून खानमजकुर मरून गेला. त्याच लेक आबदुल महजीदखान बसला. मागोन असफजाही अवरंगाबादेहून गोलकुंडेस आला. तेथून हैदराबादेस येऊन तेथेंच राहणें मोकरर केलें. त्या मैदानांत दोन किल्ले गच्च तयार करविले. असफजाही बहादरनें व सायानें लेकीचे लेक हिदायत मोहदीन यासी दाबा-करितां आणि बंदोबस्तकरितांही विजापुरास पाठविलें. मागून खानमजकुर हुजूरचे हुकूमशिवाय तख्तिनीसीन जाहला आहे म्हणून वर्तमान ऐकून, मर्जी बिघडून रावनूरचे तर्फे कूच केलें. कूच करितांच स्वाराचे खुदलणेंत कितेक गांव पायमाल जाहजे तेव्हां गदगचे व शिरहद्दीचे आणि कितेक पाळेगारांनीं जाऊन मिळून सावनूरवाल्यानें बेइत्तिनें ऐसें काम केलें आहे. त्याचे दवलत बुडवणें म्हणून सलाह दिल्या. नवाब बहादर यांनीं काना बाहोष होत. करितां त्याचे सलाह खातरेस न आणितां कर्नुलवाल्याचे मारीफत खानमजकुर बेइतस येईजे सारखे जाबसाल करविलें. आह्मांस ताजीम दिल्ली तर आह्मीं बेइतस

येऊं म्हणून खानमजकुरांनीं सांगून पाठविलें. मागून सावनूरवाल्यास सांगून पाठविलें कीं, तुम्हीं घराणदार आहां. तुम्हांस ताजीम देणें लाजम आहे म्हणून हुकूम केले. मागून सावनूरवाल्यांनीं कितेक तबकें मेवाजात जिन्नस वगैरे घेऊन जाऊन नजर ठेवून मुलाकात केल्यास हात धरून जवळ बसवून घेतलें. हे तिनी घरवालेस नवाबांनीं हत्तीवरी बसविले तेव्हां हा आंबारींत बसला. तेव्हां थोडा झुकून सलाम करणेंचा कायदा आहे. आमीर बसणेंचे दिवाणखानेंत ह्या तिघांनीं हुक्का पिणेंचा कायदा आहे, हे लोकांनीं जाबसाल केले. तरी मसलतीची बोली जाणून कबूल करीत होते. सावनूरवाला फारसा विचार करीत होता. करितां फार अंतःकरणकरून होता. ११५७ हिजरींत कर्नाटक पाया-घाटेचे बंदोबस्त करणेंस्तव कूच करून तेथून निघाले. तेव्हां खानमजकूरही संगतच होता. तेव्हां नथणी नगर ऊर्फ त्रिचनापल्लीचे किल्ल्यांत मुरारीराव घोरपडे होते. ते किल्ला घेणेंकरितां मैजमीयतसुद्धां आला. तोंही आपली जमीयत घेऊन बाहेर आला. उभयतांचे लष्करांचे इरम्यानेंत सिम्युवर म्हणून जागा आहे त्या जागेंत कावेरी नदी वाहत आहे. तेथें याची त्याची सख्त लढाई जाहली. तेव्हां खानमजकुरांनीं फार मेहनत केली. नवाबचे सरकारांत नामवर जाहला. नवाब तीन वर्षे त्या मुलकांत होते. त्या लोकांकडून पेशकार फार घेतला. कितेक बेहतर जवाहीर, पैसे, कापड वगैरे कितेक पाळेगारांकडून घेऊन हैदराबादेस येऊन दाखल जाहले. चार वर्षे पुरी, चवथी तारीख जमादिसानी ११६१ हिजरींत नवाब मरून गेला. मागून आसफजाहाचे थोरला लेक सैद अहमद नासरजंग बहादर हा बापाचे जागेवरी बसला. पहिले बापाचे वेळीं मुलकाचे बंदोबस्ताकरितां सांगितल्या त्या गोष्टी जवानीचे बाहीरकडून खातरेस न आणितां, मोरोपंत क्षणार फितना उठवणार होता. यास आसफजाहा यांनीं कैद केला होता. करितां मुलुखांत तुफान राहिलें होतें. त्यास यांनीं कैदीतून काढून आपणच पेशकारी दिल्ली. त्याकडून परंतु नफितनापुरु जाहले. कितेक दिवस गेले. नंतर मोहमदशाई बादशाहाचे हुकूम बरहुकूम नासरजंग यांनीं दिल्लीस जातांना आपले भानजे हिदायत मोहदीन मुजफरदौला यासी आपले जागेवर ठेवून आपण गेला. मागून तळघाटचे कितेक अमिरापट्टणची वगैरे आपण दौलत केली तरी बरे आहे म्हणून मुजफरदौलास सलाह देऊन त्याचे संगत ६ सुभेचे बंदोबस्ताकरितां निघाले. हुसेन दोस्त अल्लीखां ऊर्फ चंदासाहेब यांनीं तुफान उठवणार नवयेतच जातचा यानें कृत्रिमपणानें फुलेचरी फरासिसाचे जमीयतसुद्धां बोलावूं पाठवून, गोषामिवाले आलवररीखां षाडमजंग यांसी आरकाटचा सुभा आसफजाहाचे वेळीं बहाल जाहला होता. त्यास मरणें फर्माविलें. हे गोष्टी सर्वत्रांस ठाऊक आहेत. हरकारेनीं हे खबर घेऊन जाऊन दिल्लींत नासरजंगास इतला केला. तेव्हां याचा भाऊ गाजीवदीनखां यास हजुरांत वकिल्याचें काम होतें. यानें जाऊन आपले भाई नासरजंगांनीं हजुरास येतांना भानजा हिदायत मोहदीन यासी कामावरी ठेवून आला असतां, त्यानें मुलकांत फार बखेडा

केला आहे म्हणून आपले भाईस हुकूम व्हावा म्हणून हजुरांत इतल्ला करितांना जाणें म्हणून आज्ञा जाहली. तेव्हां यांनीं निघोन नर्मदातीरावरी येऊन तमाम जमीयतसुद्धां तेथें राहून हिदायत मोहदीन यासी बोलावूं पाठवावे म्हणून तजवीज केली. तेव्हां याणीं चेंजी पायाबांदेत होतां तेव्हां सैद लष्करखां अमिरुल उमराव बाहानवाजखां समसामदौला यांनीं हजूर दिवाणखानेचे बखर्ची व अनवरखां बादशाही लष्कर या तिघांचे संगत मैजमीयत ककमुल्ला सुदा देऊन त्यांस बोलावूं आणणेंकरितां पाठविलें. यांनीं जाऊन येणें ह्मणून हिदायत मोहदीन यासी बोलाविलें. त्यांनीं ककमुल्ला दिल्ला तरी येतो ह्मणाले. तेव्हां ककमुल्ला देऊन बोलाऊं घेऊन येत होता. तेव्हां इकडे नासरजंगजवळ असणारे शुद्र लोक दौलत नासवणार, पाहाणार लोकांस दोस्ती ठेविणेंसारखें, परंतु मनांतून नाहीं. अस्सल कृत्रिम पठाण लोकांनीं तुमचे भानज्यास कैदेत घालून आणितात ह्मणून नासरजंगस इतल्ला केला. हे खबर ऐकून नवाब रागे भरून मैजमीयतसुद्धां निघाला, तेव्हां सावनूरचे खानमजकुरांनीं कृत्रिमपणानें तबीयत नादुरस्त आहे. ह्मणून हीक उठवून आपला लेक करीममियास लष्करचे सांगात पाठविलें. ११६४ हिजरींत पूर्वभागीं चेंजी ह्मणून आहे. त्या किल्ल्यांत फरासिसाचें ठाणे होतें. तेथें पठाणांनीं सर्वत्र एक होऊन नवाब संगत फार लढाई करून नवाबचे डोई मारून शेंडेवरी चढविलें. हिदायत मोहदीन खान हा तेव्हां घटाटोपांत होता. तेव्हां बाहीर काढून सर्वत्र नजर दिल्ली. यांचे मनांत नासरजंगस मारून आपण दौलत करावी ह्मणून नव्हतें परंतु पठाणांचे भयंकरून असें जाहलें. मागून मुसाभुसी आणि कितेक अमीर दगैरेनीं नवाबसहित जमीयत कोतल वाटेत रामळाचेर उडून राचोटीस पाठविली. तेव्हां पठाणांनीं आपले कजियाकरितां हिदायत मोहदीनखांचे संगत नाहीं ते कजीया उचलून लढाई सुरू केली. त्या लढाईत हिदायत मोहदीनखां मरून गेला. खानमजकूरचा लेक करीम हा मरून गेला. ११६४ हिजरींत सूर्य अस्तंगत जाहला आहे ह्मणून वर्णिला आहे. मागून नासरजंगचे ठाई यांचा भाऊ सलाबतजंग याणीं काश्म लोकांना भाडूच जाहले. ५१६ वर्षपावेतों घरांत व मुलकांत बेबंद होते. फरासिसानें आपले दिवाण हैदरजंगाचे हजुरांत रुजू करून चिफा तोन राजमहेंद्री हे मुलक दरोबस्त आपले माहेबार तनखीस घेतले. शहानवाजखां समसामदौला यांनीं नवाब सलाबतजंग याचे वकील यानें कितेक दिवस मुलखाचा बंदोबस्त केला. मागोन हैदरजंगचे सबबेनें कैदेत आले. निजामल्लीखा बसालतजंग या उभयतांनीं एकादिल होऊन हैदरजंगानें इतका तंटा केला आहे त्यास मारून सोडावें ह्मणून मसलहत करून त्याचे डेहरेंत बलावून हैदरजंगस फरासिसाचे हातीं मारविला. मारवून यांनीं बडा डचवट स्वर फरासिसानें हेंवर्तमान ऐकून आपले बकिलास मारिलें ह्मणून वर्तमान ऐकून मैजमीयतसुद्धां सलाबतजंगचे डेरेंत येऊन पाहिले, तेव्हां यांनींही आवरंगबादेची वाट धरली होती. मागून बाहानवाजखां कैदेत होता. यास भुसभुसानें गोळीनें मारिला. मागून कितेंक दिवसांत सलाबतजंग यासी कैद करून निजामल्लीखां

यानें दौलत केली, तेव्हां आबदुल महजीदखां किनारा होऊन आपले स्थळांत होता. हा ३२ वर्षे दौलत करून मरून गेला. त्याचा लेक आबदुल हकीमखान बापाचे जागावरी बसला. मागून कितेक दिवसांत नाजमदखां यास निजामल्लीखां, बाळाजीराव नाना, सवाई माधवराव मिळाले. सावनूर यावें ह्मणून खस्त करून निघाले. निजामल्लीखां आपले भाईस यांचे भाऊ, यांचे बाप मिळून मारून टाकिले ह्मणून याचे मुलकांत ताराज करीत आले. मराठ्यांनीं मिश्रीकोट, गदग घेतले, ते आबदुल हकीमखां यानें इषकबाजींत मग्न होऊन लढाईत बेजार होऊन अखेरीस बसालतजंगाचे दिवाण रुजू करून दौलाचे सांगात दोस्ती करून दोन लाख रुपये नगद देऊन आपले स्थळीं राहून मराठ्यांचे हातीं ११ महाल गेले होते ते निजामल्लीचे सांगात सांगून घेऊन सोडून घेतले. नासरजंगास अपराध नाही ते मारिले. ढागाईत याचे घराणेंत द्रोह येऊन घडला ह्मणून याचे घरांत खलल पडलें. हे गोष्टीचे खुलासा करूनलवालेचे किताबेंत बयाज केला आहे. मागून कितेक दिवसांत हैदरअल्लीखां बहादुर समशेरचे जोरकरून बुद्धिचातुर्य साहसकरून फौज फार जमा करून आजू-बाजू पाळेगारास दस्तगीर करून, हैदरनगर ऊर्फ बिदनूर घेणेंकरितां आला. हकीमखान बिदनूरचे राणीचे कुमकेकरितां दोन हजार फौज देऊन पाठविला होता. नवाबबहादुरांनीं राणीस धरून खानमजकूरचें लष्कर तोडून हैदरअल्लीखांचे सवारी खानमजकूरचे लष्कर-बालेचे पिछाडीस लागून यांचे घरपावेतों दबड करून सावनूरास घेरा घेतला. तेव्हां लाचार होऊन कित्येक ऐवज मोखमली डेरा, उंट, हत्ती वगैरे बापाचे वेळीं जें काय जमा केलें, तें सर्वही देऊन सलहा करून घेऊन चाल गेले. मागून बाळाजीराव नाना यांचा लेक सवाई माधवराव इकडे फौज घेऊन आला. तेव्हां खानमजकूर त्या संगत मिळून आपलें लष्करही त्याचे संगत पाठविलें. तेव्हां त्र्यंबकमामा मराठा फार लष्कर घेऊन चिरकुलीचे मैदानांत आला होता. चिरकोली पट्टणचे दक्षणेस राहत आहे. तेथें लढाई जाहली. नवाब हैदरअल्लीखांचें लष्कर लढाई होऊन शिकस्त जाहलें. १४ सवाराचे संगत नवाब गाजीखां बयखरसदा फरारी होऊन पट्टणास दाखल जाहले. मागून टिपू जखमी होऊन सवाराचे संगत पळून आला. तेव्हां नवाबसाहेबाचें लष्कर फार खराब जाहलें. तेव्हां बहदुरांनीं फार शाहाणपण करून स्नेहभाव करून आपला मुलूक सोडवून घेतला. मागून बहादुरांनीं निजामअल्लीखांचे संगत स्नेह संपादून त्यांनीं यांनीं मिळून पायनवाटेचे सिराजदौला मोहमद अल्लीखां इंग्रेज त्याचे संगत कितेक दिवस गेले. नंतर सलहा करून घेऊन फिरला. येतांना वाटेत कडपेवली करनुल वेच मुस्त कैद करून त्याजकडून पेशकश घेऊन मुरारीराव चिटवलेवालेचे संगत लढाई करून त्याचे मुलक कितेक घेऊन आपले स्थळास घेऊन दाखल जाहले. सावनूरवालेस तंबी करणेंस निघाले. हें वर्तमान ऐकून खानमजकूरानीं आपणाकडून एक वकील नेमणूक करून कितेक जवाहीर अपरूप जिजस पाठविले. नवाबसाहेबांनीं बरे ह्मणून कबूल करून सलहा करून खातरजमेनें राहणें

- १ मौजे वडनेर खुर्व, तर्फ गांजीमोईरें येथील मोकासा वगैरे अंमल.
- १ मौजे पिंपरी जलसेन, तर्फ गांजीमोईरें येथील मोकासा वगैरे अंमल कुरणसुद्धां.
- १ मौजे तावेळें बुद्रुक, व मौजे बाणगांव व मौजे राकडें, परगणे चाळीसगांव प्रांत खानदेश येथील जहागिरीचा अंमल कुलबाब कुलकानू मोंगलाईतून नवाबसाहेबबहादूर यांनीं दिल्हा, तो सरकारांतून करार करून दिल्हा.
- १ मौजे मांजरी बुद्रुक, तर्फ हवेली प्रांत पुणे येथील मोकासा व बाबतीचा अंमल शंभुसिंग जाधवराव यांनीं दिल्हा, तो सरकारांतून करार करून दिल्हा.
- १ मौजे दाळिंब, तर्फ सांडस प्रांत पुणे येथील मोकासाचा अंमल फत्तेसिंग भोंसले राजे यांनीं दिल्हा, तो सरकारांतून करार करून दिल्हा.
- १ मौजे मवरापूर, तर्फ सांडस प्रांत पुणे येथील मोकासाचा अंमल रामचंद्र दामोदर यांनीं दिल्हा, तो सरकारांतून करार करून दिल्हा.

१०

सदरहू अन्वये सरंजाम बहुत वर्षे इनामाप्रमाणें चालत आहे, त्यास आह्वांकडे वंश-परंपरेनें चालवावा. फौजेचा सरंजाम आह्वांकडे नाहीं. कलम.

- १ इनामगांव व जमिनी व कुरणें, वगैरे चालत आहेत. कलम.
- १ जहागिरी गांव व मोकासे वगैरे अंमलाचे याची बहिवाट आह्वां करीत आलों. पेशवेसरकारची दखलगिरी नाहीं. कलम.

१ कुंपणीसरकारचा अंमल झाल्यापासून मोकासे वगैरे अंमलाचे देहे याचा ऐवज सर-कार खजिन्यांतून पावतो. याजमुळें नुकसान झालें. सबब सरकारांतून मोबदला गांव दरोबस्त अंमलाचे लावून देण्याविषयीं हुकूम गौरनरसाहेब यांचा जाहला असतां गांव मिळत नाहीं. खजिन्यांतून ऐवज पावतो, त्यांत आमची नुकसानी आहे. यास्तव गांवचा हुकूम जाहला, त्याप्रमाणें दिलांत आणून मेहेरबानी करणें लायख आहे. कलम.

- १ पेशवेसरकारांतून आपली मातबरी चालत होती, व हल्लीं कुंपणीसरकारांतून चालत आहे, त्यास कंपेश तफावत काय ती वगैरे लिहून पाठवावी त्यांचीं उत्तरेः—

१ मजमुचा दरख आह्वांस छत्रपतीमहाराज राजे यांनीं दिल्हा. तो पेशवे सरकारांतून लढाईअखेर चालला. तोंपावेतों सर्व लोकांत लौकिक व सनदा पत्रे वगैरे सरकारचा जाबता होण्याचा आमचे हातून कायम राहून, परराज्यांतून जहागिरी गांव मिळाले व दरखसंबंधें हजारों रुपयांची प्राप्ती होती. ते अलीकडे कुंपणी-सरकारचा अंमल जाहल्यापासून दरख चालत नाहीं, येणेंकरून सर्वोपरी कमती आहे. दरखसंबंधें महालीं, मुलुखी व संस्थानीं व सरंजामी यांजकडे वार्षिकाचा सालाबादी ऐवज येणें, तो तसाच राडिला; व सरंजाम आह्वांस थोडका दरखावे उत्पन्न मोठें. त्याजवर खर्चवेच व कार्य प्रयोजनें व संभावितपणप्रमाणे



खर्च होत होता. त्यास ते उत्पन्न राहिल्यामुळे देण्याचे खराबीत आहो. एवेशीं मेहरबानी करणें लायख आहे. कलम.

- १ पेशवेसरकारांतून कारकून निसबतीचे यांस तैनात मोईन पावत होती. व महाली आसाम्या दरखी चालत होत्या. त्या कुंपणीसरकारचा अंमल जाहल्यापासून चालत नाही(त). सर्व लोकांस पेनशीली करून दिल्या. आमचे कारकुनांचा बंदोबस्त जाहला नाही. पेशवेसरकारचे कारकिर्दीत मेहनत बहुत केली, असें असतां सर्व बराबर चालविलें नाही. त्यास सरकारांतून कारकुनांचें चालविणें लायख आहे. कलम.

- १ कुंपणीसरकारांतून इदीचा पोषाख सालवार पावत होता तो पावत नाही.
- १ संसार बेगमीस ऐन जिन्नस व गल्ला गांवचा व देशावरील आणावयाविषयी व एक हजार मेंढरें याजविशीं माफीचीं दस्तकें पेशवेसरकारचीं आहेत. त्याप्रमाणें चालत नाही. तीं चालविलीं पाहिजेत.
- १ मौजें निधोली, तर्फे चिमणखल प्रांत साकसें हा गांव आंगरे महा सवाई सरखेल यांनीं आह्मांस इनाम देऊन इनामपत्रें करून दिलीं. त्याप्रमाणें पेशवेसरकारचा उपराळा राहून लढाईअखेर इनामगांव बहुत वर्षे चालला. कुंपणीसरकारचा अंमल जाहल्यापासून गांवचा वसूल आंगरे घेतात. एवेशीं कुंपणीसरकारास समजाविलें असतां उपराळा होऊन चालत नाही. कलम.

५

सदरहूपमाणें उत्तरें लिहिलीं आहेत. त्यांजवरून समजोन घेऊन मेहरबानी केली पाहिजे. तारीख छ २५ मोहरम सन १२४३ फसली.

ब.

साहेब मुषफक मेहेरबान करम फरमाय दोस्ता हेनरी ब्रौण साहेब बहादूर एजंट जिल्हा दक्षण सलमा हू.

⑤ अजीसाहेब जीवनराव नारायण मुजुमदार सलाम बादज सलाम अंकीं येथील खैरीयत तागायत तारीख १९ माहे दिजंबर सन १८५१ इसवीपावेतों जाणोन आपली शादमानी हरहमेषा कलमीं करून दिल आराम करीत असलें पाहिजे. दिगर मजमून आसाहेबाकडून तारीख २६ माहे आगष्ट सन १८५१ इसवीचें पत्र आलें; त्यांतील आभिप्राय कीं, सरकारचा हुकूम तारीख ३० जुलई सन १८५१ इसवीचा आल्यावरून कलमीं केलें जातें कीं, आपल्यास मराठब मुजुमदार पद आहे हें कधीं कोणत्या सबबीनें कोणाकडून प्राप्त जाहलें, याचा एकंदर खानदानीचा व पदवी थोरपणाचा इतिहास दाखलेनिशीं लिहून द्यावा, याबाबें लिहून आलें. व त्याजविषयीं इकडून लिहून जाण्यास आवकाश लागल्यामुळे दुसरें पत्र आ मेहेरबानाकडून तारीख ५ माहे दिसंबर सन १८५१ इसवीचे पहिलें



पत्राचें उत्तर पाठविण्याविषयीं आलें. ऐशीयास, श्रीमन्महाराज शाहू महाराज छत्रपती यांनीं सातार मुक्कामीं श्रीमंत राजश्री बाळाजी विश्वनाथ यांस पेशवाई पदाचीं वस्त्रें सुरुसन आर्बा आशर मया व अलफ सन ११२३ फसली, सन १७१३ इसवी व १४ शके १६३५ माघ मास माहे जिल्काद यांत दिल्ली. त्यासमयीं आमचे पणजे नारो गंगाधर यांस मुजुमदारीचें पद छत्रपती महाराज यांनीं देऊन वस्त्रें दिल्ली, आणि पेशवे यांचे निसबतीस लावून दिल्लें. त्या दिवसापासून मुजुमदारीचें दरकाचें काम पेशवाईचे कारकिर्दीत आमचे पणजे नारो गंगाधर यांचे हातून चाललें; व त्यांचे पाठीमागें त्यांचे पुत्र निळकंठराव नारायण ह्मणजे आमचे आजे यांचे हातून चालले व त्यांचे पाठीमागें त्यांचे पुत्र नारो निळकंठ ह्मणजे आमचे तीर्थरूप यांचे हातून पेशवाईअखेर सन १८१७ इसवी, शके १७३९, या सालापर्यंत मुजुमूचें काम चाललें. असें मुजुमदारी दरकाचें काम सुमारे १०५ एकशेंपांच वर्षे आमचे वडिलोवडिलीं चालत आलें व त्याबाबें दरकाचें उपन्न येत होतें, व शिवाय जातीस सरंजाम व इनामगांव वगैरे सरकारांतून चालत आले आहेत. कुंपणी सरकारचा अंमल जाहल्यावर ते सरंजामी गांव व इनामी गांव वगैरे आमचे तीर्थरूप नारो निळकंठ यांजकडे कुंपणी सरकारांनीं चालविले. आमचे तीर्थरूप शके १७५५ चैत्र वद्य ५ माहे एप्रील सन १८३३ इसवी रोजीं कैलासवासी जाहले. सबब त्यांचे वडील पुत्र निळकंठ नारायण मयत. सबब त्यांचे पुत्र कृष्णराव निळकंठ ह्मणजे आमचे पुतणे यांचे नांवें सरकारांनीं जे आमचे तीर्थरूपाकडे कुंपणीसरकारांनीं चालविलें तें, वडील पुत्राचे पुत्र कृष्णराव सबब त्यांचे नांवें चालविलें. त्यांत निमेचे वारस आम्हीं आहों व त्याप्रमाणें विभागाची वहिवाट त्याप्रमाणें निमेची आमची चालत आहे. हें सरकारास दखल आहे. मुजुमूचे मरातब व मुजुमदारीचें पद आमचे वडिलांस सरकारांतून प्राप्त झालें, त्या दिवसापासून सरकारांत कागदीं आमचे वडिलांचीं निशाणें लागत गेलीं आहेत. तो बहुमान सर्व राखणें. आमचें सरकार समर्थ आहेत. ज्यादा काय लिहिणें प्यार मोहोबत असों दिजे, हे किताबत.

सही. जीवनराव नारायण मुजुमदार दस्तूर खुद.

### २४ मेहेंदळे.

अ.

यादी कृष्णराव बळवंत ऊर्फ आप्पा बळवंत यांची वंशावळ सुरुसन सलास अशरीन मयातैन व अलफ.

मूळ पुरुष बहिरवभट मेहेंदळे हे हरिहरेश्वरास रहात होते. त्यांस पुत्र दोनः—

वडील विश्वनाथभट

दुसरे गणपतराव मेहेंदळे. यांस पुत्र तीनः—

विश्वनाथभट यांचा वंश.

१ वडील रामचंद्रराव ऊर्फ बळवंतराव.

बहिरोपंत मेहेंदळे वगैरे.

१ दुसरा बाबूराव.

१ तिसरे आनंदराव ऊर्फ बजाबा बाबा.

या तिघांचा विस्तार:- विश्वनाथभट व गणपतराव हे बाळाजी विश्वनाथ यांचे सख्खे बहिणीचे लेक. बाळाजी विश्वनाथ यांस सातान्याहून पुण्याकडे सुभ्याचे वगैरे मसलत सांगितली, तेव्हां बाळाजी विश्वनाथ यांनीं, गणपतराव हे भाचे, यांस हरिहरेश्वराहून बहिणीसुद्धां आणिलें. तेव्हां विभक्त होते. पुढें बाळाजी विश्वनाथ यांनीं आपले बहिणीस चोळीस एक गांव मौजें खोर, तर्फ पाटस प्रांत पुणें हा इनाम दिल्हा, आणि गणपतराव यांस पागेचे घोडे देऊन बाळगिलें. कसबें सासवड येथें जमिनी वगैरे इनाम दिल्या व घर बांधावयास तेथें जागा दिल्ली. गणपतराव यांस रामचंद्रराव ऊर्फ बळवंतराव यांनीं थोरले बाजीराव साहेब यांजवळ राहून चाकरी कडप्याची व शिरे मंदगिरी (?) टिपूचे मुलखांत दोन स्वान्या मोठ्या केल्या, व आणखीही स्वान्यांची चाकरी चांगली केली. तेव्हां जातीचे सरंजामास पंचेचाळीस हजारांचे गांव व शागीर्दपेशा चार हजार, एकूण एकूण-पन्नास हजारांचा सरंजाम दिल्हा. पुढें नानासाहेब यांनीं बळवंतराव यांजकडे इतलाखी स्वार दोन चारशें दिल्ले. त्यांची फडणिशी आमचे चुलत आज बाळाजीपंत यांस दिली. बळवंतराव लढाईत पानपतास पडले. त्यांचे चिरंजीव कृष्णराव त्यांस आप्पा बळवंत ह्मणत होते. त्यांनीं उत्तरोत्तर दौलत मिळविली. स्वाराचा सरंजाम दोन लक्षांचा दिला व जातीस तैनात आणखी पंचवीस हजारांची नेमून गांव नेमून दिल्ले. पेशव्यांनीं स्वान्या केन्या तितक्याबरोबर आप्पा बळवंत यांनीं व फौजेनीं कामें चांगलीं केलीं. चौघडा दिला. कृष्णराव यांस औरसपुत्र दोघे होते. ते बीस बीस वर्षांचे होऊन मृत्य पावले. त्यांस संतान नाहीं. तेव्हां आप्पासाहेब मेल्यावर हल्लीं बळवंतराव आहेत, हे दत्तक घेतले. त्यांजकडे दौलत सरंजामसुद्धां चार वर्षे चाललीं. पुढें दहा पंधरा हजारांचे गांव ठेवून सारी जमी बाजीराव पेशव्यांनीं केली. याप्रमाणें मजकूर. दुसरे बाबूराव त्यांचें नकल. तिसरे आनंदराव त्यांस बजाबा ह्मणत होते. त्यांस गणपतराव ऊर्फ बापू मेहेंदळे हल्लीं आहेत. आप्पा बळवंत यांस वाडा व पागा वगैरे बांधावयास जागा पुण्यांत दिली. तेथें मोठ्या इमारती त्यांनीं बांधिल्या. याप्रमाणें विस्तार तपशिलवार छ २४ सवाल.

ब.

यादी राजश्री गणपत आनंदराव मेहेंदळे सुरुसन आर्बा सलासीन मयातैन व अलफ. आसाहेबी तारीख ८ माहे सपटंबर सन १८३२ इसवीचें खत पाठविलें. त्यांत मजकूर, हजरत बंदगानअल्ली रैट हनराबल गौरनर कौंसल चाहत आहेत कीं, दक्षिणेंतील जहागिरदार लोक यांची कैफियत कशी आहे, त्याची वाकबगारी व्हावी म्हणून कलमीं केलें जातें जें:-आपण मेहेरबानी करून सरकारांत रवाना करण्याकरितां कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे. त्यांतील तपशील, आपली खानदानीची बढती व कोणते तारखेस खानदानीचा लौकिक महशूर जाहला तें, व जातीस सरंजाम आपले वडिलोपार्जित चालत आहे तो, कोणते तारखेस

सरंजाम कोणीं दिल्ला व कोणी संपादन केला, हें लिहिण्यांत यावें. त्याजवरून लिहिण्यांत मजकूर येतो बितपशीलः—

१ आमचे आजे गणपतराव बहिरव यांनीं बाळाजी विश्वनाथ यांची चाकरी केली. त्यांनीं त्यांस तैनात जातीस करून दिल्ली. नक्त रुपये ८९०७॥ व गांवही दिल्ला व जमिनी दिल्ला. त्यांचा आमपणाही होता. शके १६३५. गणपतराव आमचे आजे यांस पुत्र तीन. कनिष्ठ पुत्र आनंदराव गणपत ते आमचे तीर्थरूप. व त्यास कन्या एक होती. ती नाना फडणीस यांची मातुश्री. कलम.

१ आमचे आजे कैलासवासी जाहल्यावर त्यांचे नांवें चालत होते त्याप्रमाणें आमचे तीर्थरूप आनंदराव गणपत यांचे नांवें पेशवेसरकारांतून करार करून देऊन बहाल केलें, व ज्यास्ती खानदेशचे गांव नवीन दिल्ले. कलम.

१ आह्मीं आमचे वडिल असतां माधवराव नारायण यांचे कारकिर्दीत सरकारचीं कामें-काजें रामचंद्र गणेश यांजबरोबर केलीं. याजमुळें आह्मांस निराळी तैनात सरकारांतून करून दिल्ली. नक्त रुपये २६०० व गांवही दिल्ला. कलम.

१ आमचे तीर्थरूप आनंदराव गणपत शके १७११ चें सालीं कैलासवासी जाहल्यावर सरकारांतून माधवराव नारायण पेशवे यांनीं, वडिलोपार्जीत तैनात वगैरे जमिनी व गांव चालत होते ते, व आमचे नांवें करून दिल्ले होते ते, दोन्ही एकत्र करून आमचे नांवें सनदा करून दिल्ला व कर्नाटकांत आमचेबरोबर फौज व पायदळ देऊन परशरामभाऊ पटवर्धन तासगांवकर यांस कुंपणीसरकारचे मदतीस देऊन टिपूवर पाठविलें. त्या समागमें आह्मीं जाऊन सरकार कामगिरीही बजाविली. कलम.

१ शके १७१८ सालीं बाजीरावसाहेब यांचे कारकिर्दीत श्रीमंत यांनीं लढाईअखेर पेशजीं चालत होतें त्याप्रमाणें चालविलें. नक्त नेमणूक पावत होती, ती पावली नाहीं. परंतु आह्मांस गांव दोन नवीन दिल्ले. कलम.

१ शके १७३९ चें सालीं कुंपणीसरकारचा अंमल कार्तिकमासी जाहल्यावर शके १७४० चें सालीं कुंपणीसरकारांतून बाजीरावसाहेब यांचे कारकिर्दीत आह्मांकडे गांव व जमिनी वगैरे चालत होते, त्याप्रमाणें बहाल करून चालते केले. बितपशीलः—

१ खेरीज तैनात इनामाप्रमाणेंः—

१ मौजें सुरपान व मौजें हहरूण, परगणे भाकरे प्रांत खानदेश गांव २ खेरीज मोकासा करून तनखा कमाल रुपये १८१६॥.

१ मौजें खोर, तर्फ करेपठार हा गांव निमे तनखा रुपये ६२२.

१ कसबें सासवड, येथील जमिनी बिधे.

१ मौजें मुंजेरी, तर्फ हवेली येथील जमीन रुक्के २। आकार रुपये १३॥.

- १ मौजें बामुळसर खुर्द, परगणे कडें हा गांव दरोबस्त आमचे आज्ञे यांनीं मिळ-  
विला. तनखा रुपये १८१४।.
- १ मौजें पाधवडी, परगणे इंदापूर तनखा रुपये १६००.
- १ मौजें शिवें, तर्फ वाडे हा गांव मोकासा खेरीजकरून तनखा रुपये ८००.
- १ मौजें कानपोली, तर्फ तळोजे प्रांत कल्याण तनखा रुपये ३२०.
- १ मौजें खेराणें, येथील नेमणूक नक्त रुपये ६३॥.
- १ मौजें पूर, तर्फ करेपठार येथील जमीन आकार रुपये १२॥.
- १ तांदुळ तालुके नेरळ पैकीं नेमणूक खंडी २.
- १ पेणचे बंदरीं नेमणूक मिठाची कैली खंडी ६.
- २ कुरणें.
- १ मौजें देवळी.
- १ मौजें भिवडी.

२

- १ दसन्याचा पोषाख आंख ३५०.
- १ दस्तकें तांदुळ व मीठ वगैरे माफीचीं.

येणेंप्रमाणें आह्मांकडे आजपावेतों कुंपणीसरकारांतून चालविलें आहे. दरम्यान समशेनसाहेब यांनीं शके १७४८ चें सालीं मौजें कानपोली, हा गांव व खेराणें येथील नेमणूक व तांदुळ व मीठ महकूब चार कलमें केलीं, व बाकी आह्मांकडे चालत आल्याप्रमाणें चालत आहे. चार कलमें आह्मी असतां सरकारांतून महकूब करूं नये असा कायदा असतां जाहलें. तरी साहेबी मेहेरबानी करून चारी कलमें खुलीं करावीं किंवा त्याचे मोबदला द्यावें.

कलम.

येणेंप्रमाणें खानदानीची कैफियत लिहिली आहे. ही खावंडांनीं दिलांत आणून आजपावेतों आह्मांकडे पुस्त दरपुस्त चालत आलें, त्याप्रमाणें पुढेंही चालविलें पाहिजे. तारीख २ सफर.

क.

साहेब मुषफक मेहेरबान साहेब जान वार्डीन साहेब बहादूर डिपूटी एजंट जिल्हा दक्षण सलमा हू.

६ अजिदिल येखलास दोस्त गजपत आनंदराव मेहेंदळे बाजत सलाम अंकीं येथील खैर सलाम जाणून आपली शादमानी हमेशा कलमी करीत जावी. आपण पत्र तारीख ८ माहे सपटंबर सन १८३२ इसवीचें पाठविलें. त्यांत लिहिलें जे, हजरत बंदगानअल्ली रैट हनराबल गौरनर कौसल चाहत आहेत कीं, दक्षिणेंतील जहागिरदार लोक यांची कैफियत करी आहे त्याची वाकबगारी व्हावी. झणोन कलमीं केलें जातें जें, आपण मेहेरबानगी

करून सरकारांत रवाना करण्याकरितां कैफियत लिहून पाठविली पाहिजे. दिग्वर आमचे आज्ञे गणपतराव बहिरव मेहेदळे कारकीर्द श्रीमंत बाळाजी विश्वनाथ पेशवेसरकार यांज-पार्शी व यांचे चिरंजीव बाजीराव बळाळ व चिमणाजी आप्पा थोरले, यांजबरोबर चाकरी केली व कामेकाजे बहुत केलीं. तेव्हां सरकारांतून हत्ती दिला. गणपतराव यांस पुत्र तीन व कन्या एक. वडील पुत्र बाबुराव यांस पुत्र नाही. दुसरे पुत्र बळवंतराव यांस पुत्र कृष्णराव. त्यांचे पुत्र बळवंतराव. हल्लीं तिसरे आनंदराव यांस पुत्र गणपतराव हल्लीं कन्येचें नांव रख-माबाई त्यांचे पुत्र नानाफडणीस. आमचे आज्ञे गणपतराव हे श्रीमंत नानासाहेब पेशवे यांचे कारकीर्दीत कांहीं दिवस होते. पुढें कैलासवासी जाहले. नंतर त्यांची तैनात व स्वार वगैरे चालत होते ते आमचे तीर्थरूप आनंदराव गणपत यांचे नांवें सरकारांतून करून दिले. पुढें श्रीमंत भाऊसाहेब पेशवे पाणिपतचे स्वारीस गारद जाहले. पुढें कांहीं दिवसांनीं श्रीमंत नानासाहेब कैलासवासी जाहले. पुढें श्रीमंत माधवराव बळाळ यांची कारकीर्द अकरा वर्षे जाहली. पुढें कैलासवासी जाहले. नंतर त्यांचे बंधु श्रीमंत नारायणराव बळाळ यांची कारकीर्द एक वर्ष जाहली. नंतर कैलासवासी जाहले. पुढें श्रीमंत रघुनाथ बाजीराव दादासाहेब यांची कारकीर्द श्रीमंत सवाई माधवराव यांचा जन्म पुरंदरी होई तों पावेतो जाहली. आमचे तीर्थ-रूप सुद्धां आह्मी हुजूर वागत होतां. पुढें कारकीर्द श्रीमंत माधवराव नारायण किल्ले पुरंदर येथील मुक्कामीहून रामचंद्र गणेश यांचे समागमें करवीरचे स्वारीस आम्हांस सरकारांतून रवाना केलें. कांहीं बरोबर स्वार दिले. आमचे तीर्थरूप हुजूर होते. आम्हांस जातीस व पालखीसुद्धां तूर्त रामचंद्र गणेश यांनी नेमणूक करून दिली. ते रुपये ४२०० बेताळीशें. त्या स्वारीत आमचें कामकाज पाहून हत्ती अंबारीसुद्धां आम्हांस दिल्हा. पुढें सरकारांत हुजूर चाकरी करीत होता. त्यानंतर आमचे तीर्थरूप शके १७२१ त कैलासवासी जाहले. तेव्हां तीर्थरूपांची तैनात व स्वार वगैरे जे चालत होते ते, व आमचे नांवें नेमणूक जाहली होती ती, मिळून आमचे नांवें सरकारांतून करून दिली. नंतर सरकारांतून इंग्रज बहादूर यांचे कुमकेस श्रीरंगपट्टणचे स्वारीस परशुरामभाऊ पटवर्धन यांस फौज देऊन रवाना केलें. त्यांचे समागमें आम्हांस दोन हजार स्वार नेहमीं असावे, असा ठराव होऊन आम्हांस रवाना केलें. धारवाडचे मुक्कामी किल्ल्यास मोर्चे लावावे, असं सिद्ध झालें. त्यावेळेस अजम लिटलीन ( क्याप्टन लिटल ? ) साहेब यांनीं भाऊंस सांगितलें कीं, दोन सरदार यांनीं पुढें अंमल बसवीत जावा. मग आपण मोर्चे लावावे. याप्रमाणें ठरून भाऊंचे चिरंजीव रामचंद्रपंत आप्पा यांस हानालीचे वगैरे रोखे रवाना केले व आम्हांस संदेबिद-नूर प्रांती बरोबर तोफा व तीन हजार गाड्द हुजूरची वनामजाद मावळे लोक दोन हजार व कानडे लोक पांच हजार देऊन रवाना केलें. तिकडे आम्हांकडून कामेकाजे काय जाहलीं तीं भाऊंस माहीत होतीं. ते कैलासवासी जाहले. परंतु श्रीमंत सवाई माधवराव पेशवे यांचे पुत्र आम्हांपार्शी आहे तें पहावें. ह्मणजे साहेबांचे दिलांत येईल. भाऊ श्रीरंगपट्टणास गेले.



देसाई प्रमाणें राज्य केलें. एकूण देहे, एकूण वर्षे पस्तीस यांत अंमल जाहले.  
त्याचा तपशील वर्षे:-

३ अल्ली आदिलशा पादशाहा अंमल वर्षे १६ पावेतों.

१४ सुलतान शिकंदर पादशाहा अंमल १४ पावेतों.

१८ आलमगिरी पादशाहाचे अंमल ३३ पावेतों.

३५

१५ नरसप्पा नाईक देसाई गुडद तिमप्पाचे पुत्र यांनीं अनुभव केला. इस्तकबील शके १५६१ लागाईत १५७६ पर्यंत. यांत अमल आलमगिरी बादशाहा वर्षे ३३ पैकीं पंधरा सदरहू अमल चालवीत असतां, मध्यें गुलदगुडकरांनीं किरकाळ उपद्रव केले होते. तरी पुण्यादयेकरून कांहीं जाहलें नाहीं. दौलत यथासांग सुरक्षित चालली. वर्ष.

१७। विजापूर पादशाहाची व मोंगलांची लढाई बहुत विजापूरप्रांतीं होऊन तेव्हां अनुभव केले तपशील.

१७ मुरारी नाईक देसाई यांनीं अनुभव केले. इस्तकबील शके १५७६ लागाईत १५९३ मिनहू वडील दर्जा चालत आल्याप्रमाणें दरोबस्त चालत आले. अनभविलीं वर्षे.

१८। कदंब नाईक देसाई यांनीं तीन महिने दौलत सदरहूप्रमाणें दरोबस्त केली.

१७।

३४।।। अंमल मोंगलाई, विजापूर पादशाही मोडून मोंगलाई जाहली.

२५ हिरपावडी नाईक देसाई याचा अनुभव वर्षे इस्तकबील शके १५९३। लागाईत शके १६१८। मिनहू सदरी वडिलांनीं अनुभव केला.

३४।।। रामचंद्र नाईक देसाई यांनीं, वडिलांनीं अनुभव केलेप्रमाणें नऊ महिने दौलत केली. इस्तकबील १६१८। लागाईत शके १६१९ परीयंत.

९ आचेंपानाईक देसाई यांनीं वडिलाप्रमाणें अनुभव केले. इस्तकबील शके १६१९ लागाईत शके (१६२८).

३४।।।

५१ अमल सावनूर नवाब यांची वर्षे.

२० अमल पेशवे.

१२ बेदर नवाब याचे अमल इस्तकबील १६९९ लागाईत शके १७११ मिनहू.

२८ अमल पेशवे.

२ अमल कुंपणी हल्लीं घेणेचें खुद्द कृष्णवा देसाईणी इस्तकबील शके १७३९ लागा-  
ईत १७४१ मिनहू पेशवे याचे अमलांत चालत आल्याप्रमाणें अनुभवून आहे.  
येणेंप्रमाणें दोनशें सहेतालीस वर्षे सालवार अमलवार चालिलें. कैफियत लिहून  
दिल्ली असें. तारीख छ माहे आगस्ट.

### ३ नंदगडकर सरदेसाई.

कैफियत सन १२३१ फसली विषुनाम संवत्सरें माहे आक्टोबर छ १० रोजीं  
जयंतीबाई व्यंकटाद्री श्रीनिवास बहादुर देसाई व देशकुळकर्णी व नाडगौडा परगणे गदग व  
रौडकुंदा सरदेसाई परगणे शिदनूर व नाडगौडा किल्ले बदामी व नाडगौडा देशकुळकर्णी  
संमत कलकेरा यांनीं लिहून दिल्ली कैफियत पैकीं वंकटपैया यांनीं सन ११८९ फसलींत  
दौलती गादीवर बसल्यावर मोहीम वंगं केल्यापासून सन १२२९ फसलीपर्यंत कैफि-  
यतीचा उताराः—

१ हैदर अल्लीवान नवाब याची पेट्यांत असून मुदतपासून चालल्याप्रमाणें संस्थान  
कायम राखून घेऊन सिरणी सरकारास देणेंचा साल बसाल ३२५०० सोडेंबत्तीस हजार रुपये  
देऊन आठ वर्षे संस्थानचा अविच्छिन्न उपभोग केला. कलम.

१ सन ११९६ फसली पराभव सवत्सरांत टिपुसुलतान याची आमदानी होऊन  
धांदल होऊं लागली. सबब वेंकपैयांनी स्थल सोडून कृष्णा नदीपलीकडे श्रीमंताचे मुलुकांत  
जाऊन रहात असतां. टिपुसुलतान यांनी उबल किल्ला ठाणें घेऊन संस्थान दरोबस्त सर-  
कारांत जमीस ठेविलें. ते ( काहीं ) वर्षे सुलतान याजकडस संस्थानावर जमी अंमल बसला  
होता. नंतर श्रीमंताकडून राजश्री परशरामपंत भाऊ यांस साहेबसुभा होऊन जरीपटका  
फौजसुद्धां टिपुसुलतानास मोडावयाकरितां कर्नाटक धारवाड मोहीम केली. त्यावेळीं सदरी  
वेंकपैयांनीं पुणें मुक्कामीं आपले संस्थानचा मजकूर जाहीर करून, श्रीमंत माधवरावसाहेब यांचें  
पत्र राजश्री परशरामपंतभाऊ यांस घेऊन आले कीं, डंबलकर यांचें संस्थानाचें टिपुसुलतानानें  
जबरदस्तीनें ठाणें घेतलें आहे ते तुझीं देसाई यांचें अंमल बसवून देणें ह्मणोन पत्र दिलें.  
बदस्तूर धारवाडचें सालीं स्वारींत कर्नाटक मुलुकाचे बंदावस्त होऊन टिपुसुलतान यासी काबीज  
करून मोहीम फत्त करून स्वारी परते तोपर्यंत स्वारीत असून सदरहुप्रमाणें आमचें संस्थान आम्हांस  
सुफूर्द करून द्यावें असें वेंकपैया देसाई यांचें बोलणें होत असतां, भाऊसाहेब यांनीं पैक्यावर नजर  
ठेवून अडी घांतली कीं, पुणें मुक्कामीं जाऊन मसलती खर्चाची तोडी जाहल्यावर संस्थान तुम्हांसी  
दुमाला होईल. अजूनपर्यंत दरोबस्त महाल आपल्या खाजगीकडे ठेविले आहेत. येविशीं श्रीमं-  
ताचे हुजूर तुमचा जाबसाल होऊन मग स्वाधीन होईल. असें बोलून पुण्यास स्वारी जात  
असतां, बरोबर वेंकपैयांनीं आपले कारभारी यांस पाठवून खुद्द आपण कुरुंदवाडास राहिले.



पुणें मुक्कामी जावसाल संस्थानसंबंधी लोकर न होतां मुलतमेस पडले. सबब तूर्त पोटगी-खर्चाबिदल चालवावें यासारखे आज्ञा व्हावी. मागाहून संस्थान दुमाला करून देववावें म्हणोन हुजूर विनंती करीत असतां, पंधरा हजार रुपयेची खर्चासीं सरंजामी नेमणूक बेहडा जाहला. बदस्तूर आठ दहा वर्षे नगदी ऐवज सदरहू नेमणुकीप्रमाणें घेऊन कुरुंदवाड मुक्कामी वेंक-पैया होते.

कलम.

१ सन १२१० फसली रौद्रीनाम संवत्सरें सुरुसन इहिदे मयातैन व अलफ पेश-वाईत पुणें मुक्कामी धांदल पडले समयीं वेंकपैया देसाई यांनीं संस्थानचे जावसाल ठेपेस न लागे, सबब त्रास होऊन कुरुंदवाडास राहिले. तें समयीं कर्नाटकांत धोंडजी वाघ यांनीं गद्दम वगैरे ठाणीं घेत होता. त्यासी कुमक करून घेऊन आपलें डंबलचें ठाणें आपण गाढून घेऊन, तीन महिने साबक बदस्तूर दौलत उपभोग करून राहत असतां, हजरत जरनेल वसलीसाहेब बहादूर याची स्वारी वाघ याचें पारिपत्य करावयास येती जाहली. त्या समयीं बापूसाहेब गोखले वगैरे याणीं देसाईवर दाव्यानं नाहींतें गैरवाका वसलीसाहेबास समजावून वाघ याचे खजिना व कारभारी डंबलांत आंहे ऐसें गैरवाका सुनावणी करीत असतां, साहेब मौसुफ याणीं फौजेसह डंबलास येऊन हल्ला करून ठाणें घेतलें. सदरहू गैरवाकाप्रमाणें वाघ याचे निसवतीचा खजिना मोकसर केला. कांणी डंबलांत नव्हतें. नाईक दोषारोपण होऊन अनाहूत जाहला. तेव्हां किल्ल्यांत वेंकपैया देसाई हे हांत. त्यांसी धरून गळीं दिल्लें. ते गर्दी जाहले. सन १२१० फसली रौद्रीनाम संवत्सर.

कलम.

१. सन मजकुरीं हजरत वसलीसाहेब यांनीं नरगुंदच्या मुक्कामी वाघ याचें पारपत्य करून, मोहीम करून परतून जातावेळस संस्थाननिसबत कारकून भिमराव याणीं लष्कर-मध्ये जाऊन राजश्री विष्णोपंत बदामी याचे विद्यमानें साहेबास भेटून अर्ज करून घेतले कीं, आमचे बहुत कदीम जमींदारी संस्थान आसाहेबांनीं उद्धार करून, पुढें काय हुकूम करणें तें करून, मामूलपासून चाललें तें दौलत कायम करवितां, अर्थ करावें. हणून बहुत प्रकारें अर्ज करीत असतां, साहेब मौसुफानें मेहेरबान होऊन देसाई मेला त्याचे बायकांस पालक बेठा करून घेऊन, मामूलप्रमाणें तुमचें संस्थान तुम्हीं करून घ्यावें असा हुकूम करून साहेबाची स्वारी गेली. त्या उपरांतिक भिमराव यांनीं वेंकपैयाची बायका मथुराबाई देसा-इण इजपाशीं येऊन सदरहू मजकूर समजाऊन पूर्वापर संस्थान रिवाज चालत आल्या-प्रमाणें देसाई याची भाई बिरादर याचे लंकास पांच सहा वर्ष उमरच्या मुलास पोषणा आणविलें. ते मथुराबाई देसाईण पोषण पुत्र करून त्यासी दत्तविधान हिंदूंच्या मर्बादानुसार विधान करून सिनपैयास पालक बेठा केला. ते सन १२११ फसली दुर्मुखीनाम संवत्सरें सुरुसन इसजे मयातैन व अलफ.

कलम.

१. सन १२११ फसली सुरुसन इसजे मयातैन व अलफ दुर्मुखीनाम संवत्सरांत सिनपैया व मथुराबाई यांनीं भिमराव तिम्राजी याजकडे संस्थानचा कारभार सारा सोंपून देऊन

आपण डंबळ संस्थान दौलती गादीवर बसून, उपभोग करून मोहीम वगैरे करून वतन इनाम संपादन केल्याचा वगैरे तपशील. कलम.

१ बापूसाहेब गोखले यांनीं सावनूर प्रांत सरसुभांत असतां बाबासाहेब पटवर्धन यांनीं दहा बारा हजार फौजेनिशीं घेऊन सावनुरास वेढोन, गोखले यांसी लढाईत शिकस्त करून, किल्लेंत कोंडून जेर केलें असातां, आह्मांस गोखले यांनीं पत्र लिहून दिल्लें जे:—या मसलतीस तुह्मीं फौजबंदी वगैरे सर्वविशीं कुमक केले पाहिजे ह्मणोन कित्येक प्रकारें निरोपून राजश्री गोविंदपंत तात्या यांसी डंबलास पाठविलें. त्या समयीं आमचे कारभारी भिमराव यांणीं फौज भरती करून, दोन हजार स्वार व पायदळ तीन हजारनिशीं सावनुरास जाऊन बाबासाहेबाचे फौजेस लढाई करून ठाणेंत जें साहित्य कंपेस पडलें तें काफले पुरवणी करून तीन महिने सदरहू गोखले याजबराबर मसलतीस मदत पुरविली. त्या वेळीं लाख रुपये पदरचे खर्च करून कामकाज बजावून, गोखले यांची दौलत काइम राहतसे पुरवणी करून दिल्यावर, गोखले यांनीं बहुतच खुष होऊन, आपली दौलत तुमचे योगानें काइम राहिली असं तारीफ करून, हत्ती बक्षीस बहुमान वस्त्रं वगैरे देऊन, डंबल संस्थान प्रकरणें बहाल सनदा आपले तर्फे करून देऊन पत्र दिल्लें. हे बजिन्नस हजर आहे. सदरहू मोहीम केली ती सन १२१२ फसली सुरुसन सलास मयातैन व अलफ दुंदुभीनाम संवत्सरें. कलम.

१ मोंगलाईत मीर अलम बहादर याजपाशीं कितेक कामकाज करून, त्याची मेहेर संपादून, कोपल तालुके कलकेरा समत आम्हांकडे सुपर्द करून घेऊन, इस्तकबिल लागायत सुभा मजकूरचे वहिवाट करीत असतां, याजबदल कोपल तालुके मामलेदार नागनाथराव म्हणणार यांनीं हरणूक प्रकारें गैर करून लढाई सुरु करूं लागले. त्या समयीं आमच्या मुलकाची व त्याचे मुलकाची बहुत खराबी जाहली. त्यानंतर हैदराबाद सरकारांतून पेशजीपासून गालल्याप्रमाणें आम्हांकडे कलकेरा तालुका कायम असावा हा ठराव जाहला. तधीपासून आम्हांकडे वहिवाटलेला तालुका सरकारांत हल्लीं दाखल जाहला आहे. सदरहू तालुका आपणाकडे जाहला तो सन १२१४ फसली. कलम.

१ कलकेरी इलाखा मोंगलाई येथें जमींदारयांसीं व सरकारासीं बिघाड पडले समयीं, उभयपक्षां जे कुमक करणें ते करून, मसलतीस पुराविल्यासमयीं मोंगलाई तालुक्यापैकीं हालकेरा वगैरे इनाम गांव नवीन संपादिले. ते हल्लीं सरकारांत दाखल आहे. सदरी गांव संपादिले, सन १२१७ फसली सुरुसन मयातैन व अलफ. कलम.

१ श्रीमंत राजश्री बाजीराव साहेबांची स्वारी कर्नाटकप्रांतीं जाहले समयीं, आमचे कारभारी भिमराव स्वारीसह मुक्कामीं जाऊन श्रीमंतांची भेट घेऊन सन्मान, बहुमान वस्त्रें घेतलीं. कर्नाटकाची मोहीम श्रीकुमार स्वामींचें दर्शन घेऊन, श्रीमंतांची स्वारी परतोन पुण्यास जाई तोंपर्यंत, स्वारी बरोबर आह्मीं आपले फौजेनिशीं रुजू राहून, श्रीमंतांची मर्जी बहुत

सुप्रसन्न करून घेऊन सदाशिव माणकेश्वर यांनी निरोप देवविला. यानंतर स्वस्थळास येऊन संस्थान अनुभव करून घेऊन, सालाबादी पेशकश साडेबत्तीस हजार रुपये देऊन सन १२२० फसली सालपरीयंत दौलती गादीवर डंबलास होतो. कलम.

१ त्यानंतर सन १२२० फसली सुरुसन इहिदे अशर सालीं बापू गोखले यांनीं नवलगुंदास लेकाचें लग्न करावयानिमित्त फौज वगैरे सरंजामींसह पुण्याहून निघोन आले. ते नवलगुंदास येऊन चिरंजिवाचें लग्न केलें. मग आमचे कारभारी भिमराव यांस कुत्रमपणानें मतलत सांगून, भुलथापस घालून एकाएकीं गफलतीनें गदग मुक्कामीं कैद केल्याचें कारण जें—आपल्या पेट्यांतील जमींदार यांनीं श्रीमंतांपाशीं भेटून, खर्चें व खडी ताजीम घेतली. त्याची इतःपर बदली श्रीमंतांपाशीं जाहल्यास आपल्यासी बदलतील. ऐसी कितेक प्रकारें तजवीज करून आकसकासीनें गोखले यांनीं भिमराव यास कैद करून, बंदीस सवंदची किल्लेवर घालून, डंबलास फौजेसुद्धां बापूसाहेब गोखले याची स्वारी येऊन डंबल किल्लेस घेवा घालून, जबरदस्तीनें संस्थान निसनतचे दरोबस्त वतनी उमली गांव वगैरे ठाणीं घेऊन, खर्चापुरता सरंजाम पंधरा हजार रुपये खुद्द खर्चास व भिमराव यांचे बंधु व लेकास चार हजार रुपये व कारकुनास दीडशें मार जमीन येणेंप्रमाणें नेमणूक बेहडा करून देऊन, सोरटुगास आणून ठाविलें. ते सन १२२० फसली सुरुसन इहिदे अशर मयातेन व अलफ. कलम.

१ सन १२२० फसलीपासून सिनपेयांनीं सोरटर येथें राहून सदरहू खर्चाचे नेमणुकीप्रमाणें अनुभव करित राहिले. तेव्हां बापूसाहेब पुण्यास जाऊन डंबल संस्थानचें ठाणें आपण घेतलें आहे, त्या महाल सरंजामास फौजेच्या खर्चाबद्दल सरंजाम देववावे असें श्रीमंतांसी समजाविलें. त्यावेळीं राजश्री चिंतापंत देशमुख यांनीं उत्तर सांगितलें कीं, जमींदारी वतन हरण करायाचें नव्हे. देसाई मजकूर यांनीं नजर कबूल करून, ज्या वेळेस सरकारास रुजू होतील, तेव्हां सरंजाम दूर केले जाईल. असें उत्तर करून सरंजामी मखलासी ठराव होऊन याप्रमाणें कलमं मखलासीत उगविले आहे. यानंतर भिमराव यांनीं अंतरंगीं संस्थान प्रकर्णीं परमारें श्रीमंताकडे संधान भेट केली. ते बातमी गोखले यांसी लागली. आणि सदाशिव माणकेश्वरही डंबल निसन्न भिमराव यांस हुजूर आणविणेचें आहे, ऐसें गोखले यास सांगतांना दचक खाऊन, ते हुजूर आले असतां, आपले अपायासी कारण होईल ऐसें ध्यानीं आणून भिमराव यासी जिवानिशीं मारावें असा बेत करून सवंदची मुक्कामीं विष घालून ठार मारविलें. तत्क्षणीं भिमराव ब्रह्महत्या होऊन गोखलेचे लेकास लागले. तर्फीपासून गोखले यांचे लेकास ब्रह्महत्या समंध लागला. निर्दश करतो हणोन रोजरोजीं आपले आपण गोखले बाबासाहेब उच्चार करित होते. अलीकडे आहीं श्रीमंतांपाशीं आपले संस्थान प्रकरणीं रदबदल करावें, तरी गोखले यांनीं सदरहू भिमरायास मारविल्याप्रमाणें आम्हांसही मारवितील हणोन जिवाचे आशेनें “ जीह्म

भग्राणि पश्यति ” अशी शास्त्रमर्यादा आहे, हें ध्यानीं आणून गोखल्यांचे खात्रीस दरद बाळगून पुर्णियास संस्थानचे प्रयत्नासी प्रविष्ट जाहलों नाहीं. सात वर्षे त्यांचा अंमल सन १२२७ फसली मिनहू असीजेपरीयंत जे सदरहू नेमणूक करून दिल्ली, तेच अनुभव करून घेऊन सिनपैया हें होते. कलम.

१ सांप्रत कुंपणी अंमल १२२७ फसली लागईत संस्थान सुकुर्द व्हावें या प्रकर्णी अर्ज हजरत जरनेल मनरोल साहेब व एलफिस्टनसाहेब व चापलीनसाहेब बहादूर यांज-पाशीं करून घेतला. त्यासी दर्यासी होणें ते होऊन चालते खर्चावद्दल पेनशन मोकळर कुंपणीसरकारांतून करून दिल्लें रुपये ३०० - कुंपणी तीन हजार सन १२२९ फसली सुरुसन अशरीन मर्यातैन व अलफ. कलम.

येणेंप्रमाणें सदरहू वंशावळी मोहीम दौलत मिळविल्याची कैफियत लिहिली आहे. हल्लीं जयंतीबाई वेंकटाद्री श्रीनिवास बहादूर देसाई दौलतीस सन १२२९ फसली विक्रम-नाम संवत्सर चैत्रमासपासून सदरहू सरंजाम नेमणूकप्रमाणे अनुभवीत आहे म्हणून लिहून दिल्ली कैफियत. सही तारीख छ १० माहे आक्टोबर सन १२३१ फसली विषु संवत्सरें सुरुसन इसजे आशरीन मर्यातैन व अलफ माहं मोहरम.

रुजू जयंतीबाई वेंकटाद्री श्रीनिवास बहादूर देसाई.

#### ४ बागलकोटकर देसाई.

विक्रमनाम संवत्सरें, चैत्र वद्य १४ तालुके बागलकोट, देसाई व नाडगोडा व देशपांडे यांणीं लिहून दिल्ली कैफियत ऐसाजें.—सुरुसन १२२९ फसली, साहबी हुकूम फर्माविला कीं, बागलकोट किल्ला कोणी बांधिला, बांधिल्यास किती साले झालीं, बांधिला त्याचें नांव काय, कोण कोणत्या, पादशाहाकडें किती किती साल चालिला, ते समर्थी वतनदार कोण कोण झाले, जमी कोण कोणाचे कारकीर्दीत कस कशी झाली, म्हणून त्याजवरून नानाराव मामले-दार यांनीं आह्मांस विचारले. त्यावरून लिहून दिल्लें वितपशील:—

३६ रामराजा नरपती विजयनगर इस्तकवील शके १३६२ रौद्रीनाम संवत्सर लागायत शके १३९७ मन्मथनाम संवत्सर एकूण साल याजपाशीं तिमप्पा प्रधान होता. त्याजवळ रायबाग ह्मणणार होता. त्यास नरपती याची स्वारी तोरगलास आली ते समर्थी कदरूर ऊर्फ हवेली येथील कामकाज सांगितलें व गढी बांधणें म्हणून हुकूम केला. त्याज-वरून रायबाग यांनीं कदरूर ऊर्फ हवेली ही पाडून, ती जागा सोडून दुसरी जागा नाहीं, हें पाहून तेथें शके १३९० विलंबीनाम संवत्सरें प्रारंभ करून गढी तयार करून पेटेची वसाहत करविली; आणि गढीचें नांव बागलकोट म्हणून त्या लागायत परगणे बागलकोट म्हणून नांव चालविलें आहे. ते समर्थी जमीदार यांनीं नरपतीस विजयनगर येथें जाऊन

अर्ज केला कीं, कदरूर ऊर्फ हवेली परगणा सरकार तोरगल येथें झाडी वाढून जंगल गर्द होऊन गेलें आहे. त्यास खावदांनीं आह्वांस कांहीं नूतन इनाम करून दिल्लिया जमिनीचे कीर्दी महामुरी करून परगणे आकारास आणितों. त्याजवरून जमींदार, सरकार-उपयोगी जाणून, शके १३७५ श्रीमुखनाम संवत्सरांत वतन करार करून दिल्लें.

एकूण छत्तीस वर्षे नरपती यांनीं राज्य केलें. नंतर दिल्ली पादशाहा याची फौज येऊन त्याची याची लढाई जाहली. शेवटीं नरपती याचें शिर कापून नेलें. ते दवलत गर्क होऊन गेली.

९. सुलतान महमद अझी बादशाहा बेदर याची पैवस्ती सन ८८६ फसली शके १३९८ दुर्मुखीनाम संवत्सर लागायत सन ८९४ फसली शके १४०६ क्रोधीनाम संवत्सरपर्यंत राज्य केलें. एकूण साल वतनदार कदीम नरपती याचे कारकीर्दीत चालत आल्याप्रमाणें अनुभव केला.

सदर बादशाहा यांनीं विजापूर किल्ला बांधोन तेथें जाऊन गैफ जाहले.

१००. इसुफखां गोगी बादशाहा विजापूर यांनीं राज्य केलें. इस्तकबील सन ८९५ फसली विश्वावसुनाम संवत्सर लागायत सुलतान शिकंदर बादशाहा दौलत अखेर सन १०९५ फसली शके १६०७ क्रोधनाम संवत्सर एकूण साल २००.

२३. बादशाहा सदर इसुफखां गोगी इस्तकबील ८९५ फसली लागायत सन ९१७ फसली एकूण साल २३.

१९. बादशाहा इस्माल गोगी इस्तकबील सन ९१८ फसली लागायत सन ९३७ फसली मिनह एकूण साल सदरी वतनदार कदीम इनाम प्रमाणें सररास चालले.

२६. बज्याम गोगी बादशाहा व मळुखां पादशाहा इस्तकबील सन ९३७ फसली लागायत सन ९६३ फसली एकूण साल. सदर वतनदार कदीम इनाम बमोजीब.

२३. अझी आदिलशा पादशाहा ब्रुदरुक लगर इस्तकबील सन ९६४ फसली लागायत सन ९८७ फसली एकूण साल. त्या वेळीं बारगी देवी नाईक व मली नाईक यांजकडे बागलकोट होता. त्यास सन ९७५ फसली सालीं हुकूम जालहा कीं, बागलकोट ही लहान गढी आहे, ती पाडून किल्ला मजबूद चांगला संगीन बांधणें म्हणून. त्याजवरून उभयतां नाईक यांणीं किल्ला बांधावयास प्रारंभ करून, विजापूर बादशाहा यांजकडे जासूदजोडी पाठविली. तां दोनप्रहर दिवसास विजापुरास बादशाहा यांस पत्र देऊन खबर सांगितली. त्याजवरून बादशाहा यांणीं विचारलें कीं, येथून बागलकोट किती कोस आहे?, तेव्हां जासूद यांणीं सांगितलें कीं, येथून बीस कोस येईल. त्यास पत्र द्यावयास हुकूम जाल्ल्यास सायंकाळीं बागलकोटास जाऊन पोहचतील. त्याजवरून बादशाहा यांणीं हुकूम नाईक यास पाठविला कीं, विजापूर आहे तेलगत संगीन किल्ला बांधावयास कारण नाहीं. कच्ची इमारत बांधून किल्ला तयार करा.

त्याजवरून नाईक यांणीं कच्ची इमारत बांधोन किल्ला तयार केला. त्या वेळीं जमींदार कदीम इनाम वतन सररास अनुभव केलें.

४७. इब्राम आदिलशा जगद्गुरु पादशाहा इस्तकबील सन १८७ फसली लागायत सन १०३४ फसली मिनहू एकूण साल इनाम चाललें.

३०. सुलतान महमद पादशाहा इस्तकबील सन १०३४ फसली लागायत सन १०६४ फसली मिनहू एकूण साल इनामदाराकडे इनाम चाललें.

१९. अली आदिलशाहा बादशाहा इस्तकबील सन १०६४ फसली लागायत सन १०८२ फसली एकूण साल इनाम चाललें.

१३. सुलतान शिकंदर पादशाहा इस्तकबील सन १०८२ फसली एकूण साल.

एकूण दोनशें वर्षे विजापूर पादशाहा यांणां राज्य केलें. नंतर आलमगिरी पादशाहा तख्त दिल्ली फौजसुद्धां येऊन सदर सुलतान शिकंदर पादशाहा विजापूर यास बुडविलें सन १०८६ फसली.

२१. आलमगिरी पादशाहा तख्त दिल्ली सन १०८६ फसली लागायत सन १११६ फसली मिनहू एकूण साल.

४९. नबाब सावनूरकर हे, साहेबी मोक्तीयारीनें करूं लागले. इस्तकबील सन १११७ फसली लागायत सन ११६५ फसली मिनहू एकूण साल ४९.

एकूण एकोणपन्नास वर्षे दोलत मोक्तीयारीनें केल्यानंतर सन ११६५ फसली सालांत श्रीमंत बाळाजी बाजीराव प्रधान व त्यांचा बंधु सदाशिवराव चिमणाजी यांनीं फौजसुद्धां येऊन बागलकोटास मोर्चेबंदी करून महिना पंधरा दिवस बसले. तदनंतर किल्लेदार वगैरे लोक सल्लेनें उतरोन गावनुरास गेले. तेच वेळीं श्रीमंत पेशवे यांचें ठाणें बागलकोटास कायम झालें.

६३. पेशवे बाळाजी बाजीराव प्रधान इस्तकबील सन ११६५ फसली लागायत सन १२२७ फसली मिनहू बाजीराव रघुनाथ प्रधानपर्यंत एकूण साल ६३.

एकूण त्रेसष्ट वर्षे अनुभव केला. नंतर पुणेवर श्रीमंत राजश्री पेशवे यांसी व सरकार कुंपणी यास लढाई झाली. ते समयीं पुणें सोडून निघोन गेले. नंतर जर्नल मंड्रोल साहेब फौजसुद्धां येऊन बदामीस वेढा देऊन मोर्चेबंदी करून हल्ला करून किल्ला घेतला. हें बागलकोटकर किल्लेदार वगैरे यांनीं ऐकून, माघ शु॥ १४ दिवशीं किल्लेदार व लोक व x x x किल्ला मोकळा ठाकून निघोन गेले.

२. सरकार कुंपणी इसवी सन १२२७ फसली माघ वद्य दिवशीं ठाण्यास जर्नल मंड्रोल साहेब येऊन किल्ल्याचा बंदोबस्त करून नानाजीराव यांजकडे मामलत सांगितली. त्या लागायत सन १२२९ फसली मिनहू एकूण साल २.